4Bookworm.blogspot.com
नया उपन्यास
अनिल मोहन
मैं हूं देवराज चौहान
देवराज चौहान
और मोना चौधरी
एक साथ
मोना चौधरी और देवेन साठी को तलाश थी देवराज चौहान की और देवराज चौहान पागल सा हुआ-विलास डोगरा को ढूंढ़ रहा था उसकी हत्या करने के लिये।

देवराज चौहान को तलाश थी विलास डोगरा की जिसने उस पर और जगमोहन पर कठपुतली नाम का नशा इस्तेमाल करके उनके हाथों पूरबनाथ साठी की हत्या करवाई और मोना चौधरी भी उनके हाथों से मरते-मरते बची थी।

देवराज चौहान के दांत भिंचे हुये थे। माथे से खून की लकीर बहकर आंख के बालों तक आ रही थी। टूडे ने सिर घुमाकर उसे देखना चाहा, परन्तु देवराज चौहान ने उसका सिर दबा दिया।

चंद पल इसी मौत भरी खामोशी में निकल गये।

"कौन हो तुम?" टूडे के होठों से निकला।

"मैं हूं देवराज चौहान।" देवराज चौहान के होठों से गुर्राहट निकली।

"तुम? नहीं...तुम तो गोवा से मुम्बई चले गये थे।" टूडे ने जैसे तड़पकर कहा।

"तुम्हें दिखाने के लिए।" देवराज चौहान उसी स्वर में बोला—"जबकि मैं हवेरी आ गया था।"

टूडे उसी प्रकार पड़ा रहा।

"तुमने जगमोहन को मार दिया। ये ही सोचते हो ना? पर वो जिन्दा है।" देवराज चौहान ने दरिन्दगी से कहा—"अब तुम मरने जा रहे हो। मैं गोली चलाने जा रहा हूं। गर्दन पर लगी मेरी एक गोली से ही तुम्हारा काम हो जायेगा। तुमने सोचा था, कभी इस तरह... ।"

उसी पल टूडे ने अपने हाथ नीचे टिकाये खुद को जोरों से झटका दिया और उसकी पीठ पर मौजूद देवराज चौहान तीव्र झटके के साथ पीछे होता चला गया। झटका इतना जोरदार था कि रिवॉल्वर हाथों से निकल गई। वो एक तरफ लुढ़क गया। परन्तु उसी पल खुद को संभालते फुर्ती से उछलकर खड़ा हो गया।

सामने टूडे खड़ा था। खूनी निगाहों से उसे देख रहा था।

हरीश खुदे पूरी तरह देवराज चौहान और जगमोहन का साथ दे रहा था इस लड़ाई में, क्योंकि देवराज चौहान ने उससे वादा किया था कि इस काम को निपटा कर डकैती करेगा उसे लेकर और उसे तगड़ी दौलत देगा।

देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ

अनिल मोहन

उपन्यास : मैं हूं देवराज चौहान
लेखक : अनिल मोहन

प्रकाशक : रवि पॉकेट बुक्स,
33 हरी नगर, मेरठ-250 002
फोन : (0121) 253101, 2521067

लेजर टाइपसैटिंग : मित्तल कम्प्यूटर, मेरठ।

मुद्रक : बालाजी ऑफसैट, मेरठ

मैं हूं देवराज चौहान : उपन्यास : अनिल मोहन

मूल्य : [illegible] रुपये केवल

पाठकों को

अनिल मोहन का नमस्कार!

अब आपके हाथों में है 'मैं हूं देवराज चौहान' इसका पहला भाग 'सबसे बड़ा गुंडा' तो आप पढ़ ही चुके हैं। 'मैं हूं देवराज चौहान' दूसरा एवं अंतिम भाग है। 'सबसे बड़ा गुण्डा' नहीं पढ़ा तो जरूर पढ़िए, मजेदार उपन्यास है और आपको बहुत मजा आएगा कहानी में, दूसरे उसे बिना पढ़े 'मैं हूं देवराज चौहान' पढ़ेंगे तो कहानी समझ में नहीं आने वाली। इसलिए पहले 'सबसे बड़ा गुण्डा' पढ़ना जरूरी है। यूं तो मैं पूरी कोशिश करता हूं कि उपन्यास को दो या तीन भागों में नहीं दूं, परंतु 'देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ' वाले उपन्यास पार्ट के बिना पूरे नहीं हो पाते। क्योंकि दोनों पात्र होने की वजह से कहानी की लंबाई बढ़ जाती है। फिर इस बार मैंने दो भागों में ये कहानी समाप्त की है। बातें अभी और करते हैं, परंतु पहले मैं उन पाठकों का जिक्र कर देना चाहता हूं जिनके ई-मेल आए और जिन ई-मेल का जवाब देना जरूरी है। मैं उनके बारे में जिक्र कर रहा हूं। सुप्रिया खोसला ने उड़ीसा से ई-मेल भेजा। इन्हें उपन्यासों की लिस्ट चाहिए। तो मैं इनसे कहूंगा कि हर उपन्यास में लिस्ट होती है, वो देख लें, इसके अलावा मैं अपने सम्पूर्ण उपन्यासों की लिस्ट जल्दी ही किसी उपन्यास में प्रकाशित करने वाला हूं। आरूष गोयल, दिल्ली से, इन्हें मेरे उपन्यास अच्छे लगते हैं। राजसिंह, आगरा से ई-मेल में लिखते हैं कि 'जाल' बढ़िया रहा। 'सबसे बड़ा गुण्डा' का इंतजार है। जबकि 'सबसे बड़ा गुण्डा' बाजार में उपलब्ध है। आप देख सकते हैं। भुपेंद्र कुमार की ई-मेल, इन्होंने जगह का नाम नहीं लिखा, ये रवि पॉकेट बुक्स में प्रकाशित उपन्यासों को मंगवाना चाहते हैं तो मैं इनसे कहूंगा कि हर उपन्यास में प्रकाशक का फोन नम्बर होता है, आप फोन पर कहकर उपन्यासों को मंगवा सकते हैं। बीजू चंचल जी का ई-मेल जगह का नाम नहीं लिखा ये कहते हैं कि 'सबसे बड़ा गुण्डा' बहुत बढ़िया रहा। 'मैं हूं देवराज चौहान' का इंतजार है ये पूछते हैं कि विजय बेदी कहां पर है, और मंगोलिया पर लिखने को भी कहा। विजय वेदी का उपन्यास भी जल्दी ही आएगा और मंगोलिया के बारे में अभी कुछ नहीं कह सकता। सबसे खास इस बार ई-मेल रहा, राजीव कुमार सिंह, लखनऊ का। इन्होंने उपन्यास 'सबसे बड़ा गुण्डा' में हुई, इतनी बड़ी गलती पकड़ी है कि मेरा दिमाग उस गलती की तरफ, उपन्यास के छप जाने के बाद भी नहीं गया और अन्य किसी पाठक का ध्यान भी इस तरफ ही गया। हालांकि उस गलती से कहानी पर कोई असर नहीं

पड़ा, किंतु गलती तो गलती है, मामला ये रहा कि 'सबसे बड़ा गुण्डा' में मैंने भूल से मोना चौधरी, महाजन और पारसनाथ को मुम्बई में रहते दिखा दिया, जबकि वो दिल्ली में रहते हैं। इस गलती को उपन्यास के आगामी संस्करण में ठीक कर लिया जाएगा। राजीव कुमार सिंह जी लखनऊ का बहुत-बहुत धन्यवाद! अब मैं आपका ध्यान 'हरीश खुदे' नाम के पात्र की तरफ लाना चाहता हूं जो कि 'सबसे बड़ा गुण्डा' में देवराज चौहान और जगमोहन के साथ शुरू से ही है और 'मैं हूं देवराज चौहान' इस उपन्यास में भी है। इसकी पत्नी का नाम टुन्नी है। याद आ गया होगा आपको। इस हरीश खुदे में मुझे कुछ खास लगा। ऐसा खास कि मैं इसे आगे भी साथ लेकर चलना चाहता हूं परंतु देवराज चौहान के साथ नहीं, अलग से। देवराज चौहान से खुदे की कभी-कभार मुलाकात होती ही रहेगी। सही बात तो ये है कि मेरे दिमाग में हरीश खुदे को लिखते-लिखते ऐसा आईडिया आया कि सोचा कि पाठकों के सामने एक नई चीज पेश की जाए और मेरा दावा है कि पाठक उस रूप में हरीश खुदे को बहुत पसंद करेंगे। बहरहाल अभी तो हरीश खुदे देवराज चौहान और जगमोहन के साथ कंधा-से-कंधा मिलाए चल रहा है। देवराज चौहान का साथ देने की एवज में देवराज चौहान ने हरीश खुदे से वादा कर रखा है कि ये काम ठीक-ठाक ढंग से खत्म होते ही वह उसे लेकर डकैती करेगा और डकैती में से हासिल दौलत में से उसे इतना पैसा दे देगा कि जिंदगीभर वो मौज करता रहे। इस बात से खुदे बहुत खुश है मैं हूं देवराज चौहान वाला कहानी तो इसी उपन्यास में खत्म हो जाएगी। रवि पॉकेट बुक्स में प्रकाशित देवराज चौहान सीरीज के मेरे अगले उपन्यास 'जिंदा आंखें' में देवराज चौहान, हरीश खुदे को लेकर डकैती करता है और डकैती में ऐसा कुछ हो जाता है कि खुदे की जिंदगी पलट जाती है। उसके बाद तो खुदे, खुदे है, पर खुदे नहीं है। कोई उसे हरीश खुदे मानने को तैयार नहीं। टुन्नी भी उसे अपना पति मानने से इंकार कर देती है। तब शुरू होती है हरीश खुदे की नई जिंदगी। एक नया संघर्ष नए रास्ते, नया सफर। मुझे पूरा यकीन है कि आगामी उपन्यास 'जिंदा आंखें' आपको बहुत पसंद आएगा तो अब शुरू करते हैं 'मैं हूं देवराज चौहान' अब मुलाकात होगी रवि पॉकेट बुक्स के आगामी सैट में प्रकाशित देवराज चौहान सीरीज के नए उपन्यास 'जिंदा आंखें' में।

शेष फिर।

अनिल मोहन

e-mail : anilmohan 012@yahoo.co.in

महाजन ने कार रोकी और इंजन बंद किया। सामने कॉफी शॉप थी।

"बेबी।" महाजन दरवाजा खोलते बोला—"कॉफी लेते हैं। मैं यहीं पर कॉफी लेकर आता हूँ। जल्दबाजी में गलत फैसला नहीं लेना है हमें। पारसनाथ जो कह रहा है, उस पर भी गम्भीरता से सोचना चाहिये। इसकी बात में भी दम हो सकता है। मुझे तो पारसनाथ की बात जंच रही है, लेकिन इसका ये भी मतलब नहीं कि तुम गलत हो। आगे जो भी करना है सोच-समझ कर करना है।" कहने के साथ ही महाजन कॉफी शॉप की तरफ बढ़ गया।

मोना चौधरी आगे वाली सीट पर बैठी थी।

पारसनाथ पीछे वाली सीट पर था। उसने दरवाजे का आधा शीशा नीचे किया और सिग्रेट सुलगा ली। शांत बैठा कश लेने लगा। मोना चौधरी ने पुश्त से सिर टिकाकर आँखें बंद कर ली थी।

महाजन के वापस आने तक दोनों में कोई भी बात नहीं हुई। दोनों के चेहरों पर सोचें दौड़ती दिख रही थी। महाजन आया तो तीन कॉफी लिए हुए था। उसने मोना चौधरी और पारसनाथ को एक-एक कॉफी का गिलास दिया और तीसरा गिलास खुद थामे ड्राइविंग सीट पर आ बैठा। दरवाजा बंद कर लिया। घूंट भरा।

"क्या फैसला लिया?" महाजन ने मोना चौधरी को देखा।

मोना चौधरी चुप रही।

महाजन ने गर्दन मोड़कर पीछे बैठे पारसनाथ को देखा।

"तुम कहो।"

"इस मामले में मुझे देवराज चौहान ज़रा भी कसूरवार नहीं लगता।" पारसनाथ ने सपाट स्वर में कहा—"सब कुछ कठपुतली की वजह से हुआ। विलास डोगरा ने अब्दुल्ला से कठपुतली नाम का खतरनाक नशा तैयार करवाया और देवराज चौहान और जगमोहन को धोखे से पिला दिया। उसके बाद देवराज चौहान और जगमोहन को कुछ भी होश नहीं रहा कि वे क्या कर रहे हैं? ये हालत उनकी तीन दिन तक रही। उन तीन दिनों में, दोनों ने मुम्बई अंडरवर्ल्ड किंग पूरबनाथ साठी की हत्या की और मोना चौधरी की जान के पीछे भी पड़े। मोना चौधरी को पाने के लिये, देवराज चौहान और जगमोहन ने तुम्हें और राधा को बंधक बना लिया। उस कठपुतली नाम के नशे की वजह से दोनों तीन दिनां तक बहुत हिंसक रहे। इस पर मुझे एतराज नहीं। परन्तु उनसे ये सब कुछ विलास डोगरा करा रहा था, जो पर्दे के पीछे आराम से बैठा सब कुछ देखता रहा और— ।"

"तुम्हें कैसे पता कि विलास डोगरा— ।"

"मैं पहले ही बता चुका हूं कि मैं अब्दुल्ला से मिल चुका हूँ और उसके मुँह से सब कुछ निकलवा किया। अब्दुल्ला का कहना है कि कठपुतली नाम के नशे का सेवन करते वक्त, जिस मुद्दे पर बात की जा रही हो, कठपुतली का असर शुरू होने पर वो ही मुद्दा दिमाग पर सवार रहता है और फिर उसी पर चलने लगता है। देवराज चौहान और जगमोहन को जब धोखे से कठपुतली नाम के नशे का सेवन कराया जा रहा था तो विलास डोगरा तब उनसे पूरबनाथ साठी को खत्म करने और मोना चौधरी को खत्म करने की बात कर रहा था। इसी कारण... ।"

"ये बात तेरे को अबदुल्ला ने बताई?" महाजन ने पूछा।

"हाँ। इसी कारण कठपुतली नाम के नशे की गिरफ्त में आते ही देवराज चौहान और जगमोहन, पूरबनाथ साठी और मोना चौधरी को मारने निकल पड़े। पूरबनाथ साठी उनके हाथों मारा गया। परन्तु मोना चौधरी ने खुद को किसी तरह बचा लिया, हालांकि देवराज चौहान और जगमोहन ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी मोना चौधरी को मारने की। परन्तु यह सब कुछ कठपुतली ही करा रही थी उनसे। उन्हें नहीं होश था कि वो क्या कर रहे हैं। अब होश आया तो वो नहीं जानते कि बीते तीन दिनों में उन्होंने क्या-क्या किया। ये कठपुतली की खासियत है कि नशा उतरने के पश्चात् कुछ भी याद नहीं रहता कि नशे में उन्होंने क्या-क्या किया।" पारसनाथ गम्भीर स्वर में कह रहा

था—"अब नशा उतरने के बाद उन्होंने जरूर पता कर लिया होगा कि नशे में उन्होंनें क्या-क्या किया। उनके साथ हरीश खुदे नाम का आदमी भी रहा। खुदे से उन्हें काफी कुछ पता चल गया कि वो क्या कर बैठे हैं। यही वजह है कि वो होश आने के बाद से छिपे बैठे हैं। बीते दो-तीन दिनों से उनकी कोई हवा भी नहीं मिली। ये जुदा बात है कि अब बिल्ले ने एक करोड़ रुपया लेकर बता दिया है कि वो उसके घर में ही छिपे बैठे हैं।" ये सब बातें जानने के लिए रवि पॉकेट बुक्स से प्रकाशित अनिल मोहन का उपन्यास सबसे बड़ा गुण्डा 'पढ़े'—"परन्तु मुझे देवराज चौहान और जगमोहन किसी भी तरफ से कसूरवार नहीं लगते। ये सारा खेल विलास डोगरा का है। मोना चौधरी ने खुद माना है कि विलास डोगरा ने, दुबई से बंदा उठवा लाने का सौदा किया परन्तु फिर ये काम पूरबनाथ साठी के हवाले कर दिया था। विलास डोगरा को इससे बेइज्जती महसूस हुई और उसने देवराज चौहान और जगमोहन द्वारा ये खेल, खेल डाला। यानी कि सारा किया धरा विलास डोगरा का है, देवराज चौहान और जगमोहन निर्दोष हैं।"

महाजन के चेहरे पर गम्भीरता नज़र आ रही थी। उसने मोना चौधरी को देखा।

मोना चौधरी के चेहरे पर कठोरता थी।

कार में चंद पल सन्नाटा छाया रहा।

"बेबी, तुमने पारसनाथ की बात सुनी। अगर इसकी बातें सच हैं तो तुम्हें ये सोचकर देवराज चौहान और जगमोहन का पीछा छोड़ देना चाहिये कि तब वो कठपुतली के नशे की गिरफ्त में थे और उन्हें नहीं पता कि वो क्या कर रहे थे। उनके पीछे बैठा विलास डोगरा ये सब खेल खेल रहा था। हमें विलास डोगरा की गर्दन पकड़नी...।"

"मुझे देवराज चौहान और जगमोहन ने मारने की कोशिश की।" मोना चौधरी कठोर स्वर में बोली।

"वो तो ठीक है परन्तु।"

"तुम्हें और राधा को भी वे मारने जा रहे थे। ये बात क्यों भूलते...।"

"मैं कुछ भी भूला नहीं हूँ परन्तु पारसनाथ की बात में दम है। पारसनाथ ने जो कहा है, अपनी तसल्ली करने के बाद ही कहा है। इसकी बात को हम हवा में नहीं उड़ा सकते। तुम चाहो तो एक बार अब्दुल्ला से बात कर लो।"

"मुझे पारसनाथ की बात पर भरोसा है।" मोना चौधरी होंठ भींचे कह उठी।

"तो समस्या कहाँ है...।"

"मुझे देवराज चौहान ने मारना चाहा, विलास डोगरा ने नहीं...वो...।"

"तब देवराज चौहान और जगमोहन कठपुतली नाम के नशे की गिरफ्त में...।"

"तो उन्हें भूल जाऊँ?" मोना चौधरी गुर्रा उठी।

"भूलना ही ठीक होगा। क्योंकि वे खुद नहीं जानते कि उन तीन दिनों में उन्होंने क्या किया।"

"व दोनों निर्दोष हैं।" पारसनाथ ने सपाट स्वर में कहा।

"वो दोनों तब तुम्हारे पास भी आये थे पारसनाथ।" मोना चौधरी बोली।

"हाँ। तब तुमने उनकी हालत नहीं देखी। मैंने देखी थी। उनकी लाल सुर्ख आँखें, होंठों पर गालियाँ, मरने-मारने पर आमादा थे। तब मुझे नहीं पता था कि कठपुतली नाम का नशा उन्हें नचा रहा है। पता होता तो एक-दो दिन के लिए उन्हें रैस्टोरेंट में ही कैद कर लेता और वो ठीक हो जाते। पारसनाथ गम्भीर स्वर में कह रहा था—"अब बिल्ला को एक करोड़ देकर तुम्हें ये तो पता चल गया है कि वो बिल्ला के एक कमरे वाले घर में छिपे पड़े हैं। परन्तु मैं इस हक में ज़रा भी नहीं हूँ कि तुम उन्हें कुछ कहो।"

"मेरे चुप बैठने से भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा।" मोना चौधरी ने दाँत भींचकर कहा—"बिल्ला ने एक करोड़ में ये खबर देवेन साठी को भी बेची है। देवेन साठी उन्हें नहीं छोड़ेगा।"

"मैं देवेन साठी को तो नहीं समझा सकता, परन्तु तुम्हें समझा सकता हूँ। अब देवराज चौहान और जगमोहन के मामले में मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँ। क्योंकि उनकी कोई गलती नहीं है। ये सब किया-धरा विलास डोगरा का है। अगर तुम विलास डोगरा की तरफ वढ़ो तो मैं हर कदम पर तुम्हारे साथ हूँ।"

"विलास डोगरा कभी भी नहीं मानेगा कि उसने ऐसा कुछ किया है।" मोना चौधरी बोली।

"वो बेशक ना माने। परन्तु हम तो जानते हैं कि देवराज चौहान और जगमोहन को नचाने के पीछे वो है। उसे ढूंढो और खत्म कर दो। हमारा असली शिकार वो ही है।" पारसनाथ ने कहा।

"ये बात तो अब तक देवराज चौहान और जगमोहन को भी पता लग गई होगी कि विलास डोगरा ने गड़बड़ की है।" महाजन ने कहा—"अगर उन्हें मौका मिले तो वो विलास डोगरा को नहीं छोड़ेंगे।"

"शायद उन्हें मौका ना मिले।" पारसनाथ गम्भीर था—"देवेन साठी आज ही उन दोनों को निपटा देगा। इस वक्त वो उन्हें मारने

की तैयारियाँ कर रहा होगा। उसके आदमी उस इलाके में पहुंचने शुरू हो गये होंगे जहाँ वे दोनों मौजूद हैं।"

"ये गलत हो रहा है।" महाजन कह उठा।

"पर हम देवेन साठी को ये बात नहीं समझा सकते।" महाजन ने मोना चौधरी से कहा।

"तुम्हें पीछे हट जाना चाहिये बेबी। वो दोनों निर्दोष हैं और अब तो देवेन साठी उन्हें घेर रहा है। तुम कुछ मत करो। देखो वहां पर आज क्या होता है। देवेन साठी इस समय बेकाबू हो रहा होगा।"

मोना चौधरी के होंठ भिंचे रहे।

पारसनाथ ने नई सिग्रेट सुलगा ली।

खामोशी रही कार में।

"अगर तुम मेरी बात से सहमत नहीं हो तो मैं अभी कार से बाहर निकलने जा रहा हूँ।" पारसनाथ बोला—"फिर इस मामले में तुम जो भी करो। उससे मेरा कोई मतलब नहीं होगा।"

मोना चौधरी ने गर्दन घुमा कर पारसनाथ से कहा:

"तुम गलत कर रहे हो।"

"तुम्हें मेरी बात मान लेनी चाहिये कि देवराज चौहान और जगमोहन निर्दोष...।"

"मान ली।" मोना चौधरी एकाएक कह उठी।

पारसनाथ ने गहरी सांस ली। बोला।

"अब ठीक है, हमें विलास डोंगरा की गर्दन पकड़नी है। मैं तुम्हारे साथ इस काम में...।"

"पहले देवराज चौहान का हाल देखो। वो देवेन साठी के हाथों से बचने वाला नहीं।" मोना चौधरी बोली।

"इस बारे में देवेन साठी से बात करके देखें।" महाजन कह उठा।

"कोई फायदा नहीं।" पारसनाथ ने इन्कार में सिर हिलाया—"देवराज चौहान और जगमोहन के हाथों उसका भाई पूरब नाथ साठी मारा गया है। वो अपने भाई की मौत का बदला लेकर रहेगा।"

"लेकिन हमें ये तो देखना चाहिये कि बिल्ला के घर पर आज होता क्या है।" महाजन बोला—"वैसे मुझे नहीं लगता कि देवराज चौहान और जगमोहन बचेंगे। देवेन साठी पागल हुआ पड़ा है और उसके पास ताकत भी है।"

"वहां चलते हैं। परन्तु हम इस मामले में दखल नहीं देंगे।" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में कहा।

इनकी कार से सौ कदम पीछे...

□□□
□□□

कार में बांके लाल राठौर और रुस्तम राव मौजूद थे, जो इन पर तब से निगाह रखे हुए थे जब मोना चौधरी माटुंगा के मेन चौराहे के पास, बस स्टॉप पर बिल्ला से मिली थी और उसे एक करोड़ देकर, देवराज चौहान, जगमोहन और हरीश खुदे के बारे में जानकारी ली थी कि वो इस वक्त कहाँ छिपे हुए हैं।

"बाप।" रुस्तम राव सामने वाली कार पर नज़रें टिकाये बोला।

"कह दे छोरे।"

"आपुन की समझ में नेई आईला,कि वो तीनों क्या करेला।" रुस्तम राव ने कहा।

"कॉफी पियो हो वो तीनों। महाजनों उधरो सो कॉफी लाकर दयो हो उन्हें।"

"आपुन का मतलब वो नेई होईला। मतलब होईला कि सड़क किनारे कार में बैठ कर कॉफी पीने का क्या मतलब होईला। आपुन की समझ में ये बात नेई आईला बाप। माटुंगा बस स्टॉप पर उसे (बिल्ला) ब्रीफकेस क्यों देईला। कोई चक्कर होईला बाप। इधर आपुन की समझ में नेई आईला।" रुस्तम राव गम्भीर था।

बांके ने अपने हाथ की उंगली मूंछ को लगाई।

"छोरे। महारे को तो लागे हो कि यो तीनों किसो गम्भीर विषयों पर बातों करो हो।"

"आपुन भी येई सोचेला।"

"ऐसो गम्भीर विषयों कि फैंसलो भी तुरन्त-फुरन्त करनो होवे। सड़कों पर कॉफी पीनो का तो यो ही मतलब हौवे।"

"अब आपुन क्या करेला?"

"महारे को तो वहणो बोल्लो हो कि पारसनाथो और महाजनो को उठाना हौवे। पण यो मोननो चौधरी साथो चिपके हो तो कामो कैसे हौवे। थारे दिमाग में कोईयो प्लॉन हौवे का?"

"आपुन दीदी (नगीना) को पोज़िशन बता के बात करेला।" रुस्तम राव ने फोन निकाला।

"कर लयो बातो। बहणो (नगीना) बोल्लो हो कि पारसनाथो और महाजनो पर हाथ डालनो का मौको बढ़िया मिल्लो तो तब उसे फोन करो हो। वो खुदो आवे महारे पास, इस कामो के वास्ते...।"

रुस्तम राव ने नम्बर मिलाया और फोन कान से लगा लिया।

दूसरी तरफ बेल जाने के बाद नगीना की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो।"

"दीदी। आपुन रुस्तम।" रुस्तम राव ने कहा—"इधर मौका नहीं मिलेला उन पर हाथ डालने का।"

"क्या पोज़िशन है?" उधर से नगीना ने पूछा।

रुस्तम राव ने सब कुछ बताया।

कुछ पलों की चुप्पी के बाद नगीना की आवाज कानों में पड़ी।

"मोना चौधरी ने किस आदमी को ब्रीफकेस दिया था। उसे पहले देखा है कभी?"

"नेई दीदी।"

"ब्रीफकेस में क्या हो सकता है?"

"आपुन को तो ब्रीफकेस में नोट लगेला। ख्याल है ये आपुन का।"

"तुम दोनों उनके पीछे लगे रहे। वो क्या करते हैं, बताते रहना और जब महाजन और पारसनाथ पर हाथ डालने को मौका सही हो तो मुझे तुरन्त फोन कर देना।" उधर से नगीना ने कहा और फोन बंद कर दिया था।

"बाप, दीदी कहो, इन पर नज़र रखेला।"

"नज़रों तो उनहों पर ही टिकी हौवे।" बाँके का हाथ मूंछ पर पहुँचा।

"देवराज चौहान बुरा फंसेला।"

"बोत बुरो फंसो हो वो दोनों। महारे को तो बचते ना दिखो हो।" बाँके लाल राठौर ने गहरी सांस ली—"वो उधर से चलेला है बाप।"

मोना चौधरी वाली कार को उन्होंने वहाँ से आगे बढ़ते देखा।

बांके ने फौरन कार स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी। पुनः पीछा शुरू हो गया।

"सतर्कता से बाप।" रुस्तम राव बोला—"आपुन के पीछा करने का उन्हें पता लगेला तो पंगा खड़ा होईला।"

"पंगो हौवे तो अंम सब को 'वड' दयो छोरे।" बांकेलाल राठौर का स्वर सख्त हो गया था।

❑❑❑

❑❑❑

नगीना ने फोन बंद किया तो सोहनलाल और सरबत सिंह की निगाह उसने अपने पर पाई। ये जगह सरबत सिंह का घर था और देवराज चौहान ने सरबत सिंह को फोन करके, नगीना की सहायता करने के लिए कहा था, जिसकी एवज में सरबत सिंह इस वक्त नगीना के साथ, उसकी सहायता के लिए मौजूद था।

"रुस्तम था।" नगीना बोली—"वो बांके के साथ मिन्नो और महाजन पारसनाथ के पीछे हैं।" कहने के साथ ही नगीना वहाँ से निकलकर अन्य कमरे में पहुँची जहाँ पाटिल बंधा पड़ा था।

"मुझे इस प्रकार बंधे हुए बहुत तकलीफ हो रही है।" पाटिल कसमसाकर कह उठा।

नगीना शांत भाव से उसे देखती रही।

"मुझे इस तरह बांधने से क्या फायदा?" पाटिल पुनः बोला।

"तुम देवेन साठी के खास आदमी हो और देवराज चौहान को मारने के लिए उसे ढूंढ रहे हो और देवराज चौहान मेरा पति है। इसलिए तुम्हारा अपहरण करवा कर, तुम्हें यहाँ रखना पड़ा।" नगीना ने सामान्य स्वर में कहा—"तुम्हें इस बात पर खुशी होनी चाहिये कि हमने तुम्हारी जान ना लेकर, तुम्हें संभाल रखा है।"

पाटिल ने सूखे होठों पर जीभ फेरी। फिर बोला।

"देवेन साठी की पत्नी के साथ तुमने क्या किया?"

"तुम्हें कैसे पता कि हमने उसके साथ कुछ किया है।"

"कल दोपहर को मैंने उसे यहाँ देखा था। वो उसकी पत्नी आरु ही है ना?"

"हाँ। वो देवेन साठी की पत्नी आरु ही है। देवेन साठी के दोनों बच्चे गुंजन और अर्जुन भी यहाँ हैं।"

पाटिल व्याकुल सा नगीना के खूबसूरत चेहरे को देखने लगा।

"क्या देख रहे हो तुम?" नगीना कह उठी।

"तुम बहुत खतरनाक खेल, खेल रही हो। क्या तुम इस खेल के काबिल हो?"

"पूरी तरह।"

"देवेन साठी को तुम ठीक से जानती नहीं, वो।"

"देवेन साठी इन्सान ही है ना?" नगीना बोली—"मैं इन्सानों को अच्छी तरह जानती हूँ। वो कितने भी ताकतवर हों, परन्तु कहीं ना कहीं आकर वो कमजोर हो जाते हैं। मुकाबला नहीं कर सकते।"

"तो तुमने उसकी पत्नी और बच्चों को इसलिए उठवा लिया कि देवराज चौहान की तरफ बढ़ते देवेन साठी के कदमों को रोक सको।"

"सही कहा।"

"देवेन साठी को पता है कि उसकी पत्नी बच्चों का अपहरण हो गया है।"

"मैं नहीं जानती।"

"नाम क्या है तुम्हारा?"

"नगीना।"

"तुमने शेर के खुले मुँह में हाथ डाल दिया है। देवेन साठी घायल शेर की तरह... ।"

"साठी इस वक्त जिसके पीछे पड़ा है वो शेर से भी ज्यादा खतरनाक है। तुम अभी—?"

पाटिल, नगीना को गम्भीर नज़रों से देखने लगा।

"देवराज चौहान ने देवेन साठी के भाई पूरब नाथ साठी को बे-वजह मारा। तो वो अपने भाई की मौत का बदला... ।"

"खामोश रहो। इस बारे में तुम कुछ नहीं जानते।"

"और है ही क्या जानने को?"

"विलास डोगरा ने देवराज चौहान और जगमोहन को कठपुतली नाम का नशा देकर, उनकी दिमागी शक्ति छीन कर, उनसे ये काम करवाया है। हर बात का जिम्मेवार विलास डोगरा है।" नगीना का स्वर कठोर हो गया।

"तुम्हारी इस बात पर कौन विश्वास करेगा।"

"इस वक्त तो तुम करोगे।"

"मैं—क्यों?"

"तुम मेरी कैद में हो और मैं तुम्हें बुरी मौत भी दे सकती हूँ। ऐसे में मैं तुम्हें सफाई क्यों दूंगी, जबकि तुम्हें छोड़ने का मेरा इरादा ज़रा भी नहीं है।" नगीना ने शब्दों को चबाकर कहा—"तुम ही सोचो कि, तुमसे गलत बात क्यों कहूँगी।"

पाटिल नगीना को देखने लगा।

नगीना जाने के लिए पलटी तो पाटिल कह उठा।

"अपनी बात को तुम साबित कर सकती हो?"

"क्या साबित करना है?"

"यही कि विलास डोगरा... ।"

"मैं साबित कर सकती हूँ। विलास डोगरा की गर्दन पकड़ कर उसके मुँह से सच निकलवा सकती हूँ। परन्तु ऐसा कुछ भी करने से देवराज चौहान ने मुझे मना कर दिया है। विलास डोगरा से वो खुद ही निपटेगा।"

"ऐसा देवराज चौहान ने कहा?"

"हाँ। देवराज चौहान हालातों को मेरे से बेहतर जानता है। वो ही विलास डोगरा को— ।"

"साठी की पत्नी आरू और उसके बच्चों का क्या करोगी तुम?"

"उनके दम पर मैं साठी को, देवराज चौहान से पीछे रखूंगी और देवराज चौहान तब विलास डोगरा को बुरी मौत देगा।"

"तुमने साठी को, उसके परिवार के दम पर रोक भी लिया तो मोना चौधरी को कैसे रोकोगी। वो भी तो देवराज चौहान और जगमोहन के पीछे है। देवराज चौहान ने उसे भी मारने की कोशिश—।"

"वो भी इन्तज़ाम हो जायेगा।"

"तुमने साठी को बताया कि उसकी पत्नी-बच्चे तुम्हारे पास हैं।"

"अभी नहीं बताया। मोना चौधरी पर भी काबू पा लूं फिर दोनों से बात।"

"तुम सच कहती हो कि सारी शरारत विलास डोगरा की है।" पाटिल ने पूछा,

"तुम्हें सफाई देने का मेरा कोई इरादा नहीं है।" नगीना ने तीखी निगाहों से उसे देखा।

"तुम अगर मुझे साठी से फोन पर बात करने दो तो शायद मैं उसे समझा सकूं विलास डोगरा के बारे में कि—।"

"जरूरत नहीं। मुझे हालात संभालने आते हैं।" नगीना ने कहा और कमरे से बाहर निकल कर एक अन्य कमरे के दरवाजे के पास पहुँची, जिसका दरवाजा बंद था और बाहर से कुंडी लगी हुई थी।

नगीना ने कुंडी हटाकर दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश कर गई।

भीतर बैड पर आरू बैठी थी और पास में ग्यारह बरस का गुंजन और सात बरस का अर्जुन बैठा था।

नगीना को आया पाकर आरु ने दोनों बच्चों को बाँह से थाम लिया। आरु का चेहरा फक्क-सा था।

"तुम इतनी घबराई हुई क्यों हो?" नगीना एकाएक मुस्करा कर कह उठी।

आरु और दो बच्चे नगीना को देखते रहे।

"मैंने तुमसे पहले भी कहा था और अब भी कहती हूँ कि अगर तुम कोई शरारत नहीं करती तो मेरी बहन बनकर रहोगी। मुझसे डरो मत। मैं तुम्हारा या तुम्हारे बच्चों का ज़रा भी बुरा नहीं करूंगी।" नगीना ने कहा।

"हमें छोड़ दो।"

"अभी नहीं।" नगीना ने इन्कार में सिर हिलाया—"अभी मेरा काम नहीं हुआ। तुम्हारे पति देवेन साठी को कुछ समझाना है। उससे बात करनी है। लेकिन ये मेरा वादा है तुमसे कि तुम्हारा पति मेरी बात माने या ना माने, कैसी भी स्थिति में तुम्हें या तुम्हारे बच्चों को कोई

नुकसान नहीं होगा। बाद में तुम तीनों को छोड़ना ही है। साठी पर दबाव बनाने के लिए तुम तीनों को उठाया गया है।"

"मेरे पति से बात कर ली?" आरु ने सूखे होठों पर जीभ फेर कर कहा।

"अभी नहीं। पहले उसे तड़प लेने दो। तुम लोगों की तलाश में भाग दौड़ कर लेने दो फिर उससे बात की जायेगी।"

"पाटिल को मैंने दूसरे कमरे में देखा था।"

"हाँ। वो भी हमारी कैद में है।"

"पाटिल ने ही तुम्हें मेरे बंगले का पता बताया होगा।"

"वो ना बताता तो मैं सच में उसे मार देती।" नगीना बोली।

"बात क्या है?"

"तुम्हारा पति, मेरे पति की जान के पीछे पड़ा है और...।"

"वो तो आजकल देवराज चौहान के पीछे...।"

"देवराज चौहान ही मेरा पति है।"

"ओह। देवराज चौहान ने तो पूरबनाथ साठी की हत्या की...।"

"जरूर। ऐसा ही हुआ।" नगीना सिर हिलाकर कह उठी—"परन्तु देवराज चौहान की पूरबनाथ साठी से कोई दुश्मनी नहीं थी। इस मामले के पीछे विलास डोगरा है। विलास डोगरा ने धोखे से देवराज चौहान और जगमोहन को 'कठपुतली' नाम का नशा दे दिया। वो नशे की गिरफ्त में फंस गये। विलास डोगरा ने उसे पूरबनाथ साठी और मोना चौधरी को मारने को कह दिया। नशे में फंसे वो नहीं जानते थे कि वो क्या कर रहे हैं। उन्होंने पूरबनाथ साठी को मार दिया परन्तु मोना चौधरी हाथ से बच निकली और तीन दिन तक बचती ही रही। उस नशे का असर तीन दिन बाद खत्म हो गया तो देवराज चौहान और जगमोहन के कदम रुक गये। उस नशे की खास बात तो ये थी कि नशा उतरने के बाद उन्हें नहीं पता कि नशे के दौरान उन्होंने क्या-क्या किया।"

आरु बच्चों की बाँहें पकड़े नगीना को देखे जा रही थी।

"नशे से होश में आने पर, खबरों से उन्हें पता चला कि उन्होंने क्या-क्या कर डाला। पूरबनाथ साठी को बेशक देवराज चौहान ने मारा है, परन्तु उससे ये सब विलास डोगरा ने करवाया।" नगीना ने पुनः कहा।

"तुमने देवेन को ये बात बताई?" आरु के होठों से निकला।

"वो मानेगा इस बात को?"

आरु चुप रही।

"तुम मानती हो इस बात को?"

हौले से आरु की गर्दन इन्कार में हिली।

"इसी वजह से ये बात देवेन साठी को नहीं कही कि वो मानेगा नहीं। इसी कारण तुम लोगों को उठा कर मंगवा लिया कि तुम तीनों मेरे कब्जे में होंगे तो साठी को मेरी बात सुननी पड़ेगी। अपने कदम पीछे हटाने पड़ेंगे। इससे देवराज चौहान को मुनासिब वक्त मिलेगा कि विलास डोगरा से अपना हिसाब-किताब बराबर कर सके।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम भी ऐसे कामों में दिलचस्पी रखती हो।"

"कैसे काम?"

"ये ही, खून-खराबा और...।"

"नहीं। बिल्कुल नहीं। देवराज चौहान ने मुझे शांत जिन्दगी दे रखी है। उसे पसन्द नहीं कि मैं ये सब करूँ। जबकि इन कामों का मुझे तजुर्बा बहुत है। परन्तु इस बार हालात ऐसे हो गये कि देवराज चौहान के कहने पर ही मुझे खुलकर सामने आना पड़ा और यह सब करना पड़ रहा है। इस मामले में देवराज चौहान का कोई दोष नहीं, परन्तु विलास डोगरा ने उसे बुरी तरह फंसा डाला है। मैं तो ऊपरी तौर पर देवराज चौहान के काम निपटा रही हूँ। एक बार देवराज चौहान खुले में घूमने को आजाद हो जाये उसके बाद मामला वो ही संभालेगा।" सोचों में डूबी नगीना कह उठी—"आज पहली बार मैंने उसके मामले में दखल दिया है।"

"मुझे अपने बच्चों की चिन्ता है।" आरु व्याकुल स्वर में कह उठी।

"तुम और तुम्हारे बच्चों को कुछ नहीं होगा। ये मेरी जुबान है, अगर तुम सहयोग के साथ आराम से रहती हो यहाँ।"

"मैं...मैं कुछ नहीं करूँगी। आराम से इस बंद कमरे में बैठी हूँ।" आरु ने जैसे अपनी सफाई दी।

"ऐसे ही कुछ दिन और बिता लो।"

"बच्चों को भूख लगी है।"

"मैं अभी खाने को...।"

"वे पिज्जा खाना चाहते हैं।"

"अभी मंगवा देती हूँ।" कहकर नगीना कमरे से बाहर निकली और दरवाजा बंद कर दिया।

वो उस कमरे में आई जहाँ सोहन लाल और सरबत सिंह थे।

"सरबत भैया।" नगीना ने कहा—"बच्चों को खाने को पिज्जा ला दो।"

सरवत सिंह पिज्जा लेने चला गया।

नगीना सोफे की कुर्सी पर बैठती सोहनलाल से बोली।

"अब तुम्हारी तबीयत कैसी है मोहन भैया?"

"पहले से तो काफी अच्छा हूं।" सोहनलाल ने मुस्कराकर अपने शरीर को टटोला।

"महाजन और पारसनाथ ने तुम्हें खासी यातना दी।" नगीना गहरी सांस लेकर मुस्कराई।

"देवराज चौहान और जगमोहन ने महाजन और राधा को तकलीफ दी थी तो मेरे साथ ऐसा करके उन्होंने कुछ गलत नहीं किया।"

नगीना ने कुछ नहीं कहा। चेहरे पर गम्भीरता और सोच उभरी हुई थी।

❑❑❑

❑❑❑

देवेन साठी ने कलाई पर घड़ी में वक्त देखा। शाम के चार बज रहे थे। वो कमरे में टहलने लगा। होंठ भिंचे हुए थे। चेहरा सुलग रहा था। वो अपने होटल के कमरे में मौजूद था और जाफर से सारे इन्तज़ाम करा रहा था जहाँ पर देवराज चौहान, जगमोहन और हरीश खुदे मौजूद थे। घंटेभर से जाफर का फोन नहीं आया था, वो अब फोन के इन्तज़ार में था।

फोन आया। देवेन साठी ने बात की। दूसरी तरफ जाफर ही था।

"साठी साहब।" उधर से जाफर ने कहा—"आपने जैसा कहा था, वैसा ही इन्तज़ाम कर दिया गया है। उस पूरे इलाके में हमारे आदमी फैल चुके हैं। सब हथियार बंद हैं। बिल्ला के घर आसपास हमारे आदमियों की तगड़ी घेराबंदी हो चुकी है।"

"वो तीनों वहीं पर हैं?"

"मुझे पूरा विश्वास है कि वो भीतर ही हैं। उस एक कमरे वाले घर का दरवाजा खुला हुआ है। भीतर एक से ज्यादा लोगों के होने का पता चला है। हमारा जो आदमी उस घर के सबसे करीब है, उसने बताया कि थोड़ी देर पहले एक भीतर से निकला और खुले दरवाजे के पास ही बैठकर नहाने लगा।"

"बहुत गंदी जगह है वो।"

"एक कमरे के घर हैं उधर। वहां बाथरूम नहीं है। बाथरूम का काम सब बाहर ही करते हैं। कुछ लोगों ने कमरे के बाहर कच्चा-पक्का बाथरूम बना रखा है।" दूसरी तरफ से जाफर ने कहा।

"मैं कुछ ही देर में वहाँ आ रहा हूँ। तब तक शान्ति रहनी चाहिये।" देवेन साठी ने कहा।

"अगर उनमें से कोई वहाँ से निकलकर, कहीं जाना चाहे तो?"

"पकड़ लो।"

"गोली चलाने की जरूरत पड़े तो—।"

"तुम इतने लोग हो। अगर कोई वहाँ से निकलकर जाना चाहे तो क्या उसे पकड़ नहीं सकते।" देवेन साठी ने होंठ भींच कर कहा।

"पकड़ने-पकड़ने के चक्कर में अगर उसने गोली चला दी तो—?"

"तू उल्लू का पट्ठा है।" साठी गुर्रा उठा।

जाफर की आवाज नहीं आई।

"पाटिल होता तो मुझे कोई समस्या ही नहीं आनी थी। उसने सब संभाल लेना था। पता नहीं वो कहाँ मर गया? जो कहा है, वो ही करो। वैसे ही मामला संभालो। मैं पहुँच रहा हूँ।" कहकर देवेन साठी ने फोन बंद कर दिया। चेहरे पर कठोरता नाच रही थी। वो बड़बड़ा उठा—"देवराज चौहान! आज मैं तेरे से अपने भाई पूरबनाथ साठी की मौत का बदला लूंगा।"

तभी हाथ में पकड़ा फोन बज उठा।

"हैलो!" साठी फोन पर गुर्रा पड़ा।

"साठी साहब—।"

देवेन साठी फौरन संभला। फोन पर दूसरी तरफ जाखड़ था, जो कि आरू और बच्चों की देखभाल के लिए बंगले पर मौजूद रहता था। इन कामों में ऐसा उलझा था कि आरू और बच्चों को जैसे भूल ही गया था।

"हाँ जाखड़—?"

"मैडम और बच्चे आपके पास हैं क्या?" उधर से जाखड़ ने परेशान स्वर में पूछा।

साठी बुरी तरह चौंका।

"क्या बकवास कर रहा है। वो तो बंगले पर—।"

"कल से मैडम और बच्चे बंगले पर नहीं हैं।"

"जाखड़—।" साठी गुर्रा उठा।

"कल सुबह कोई मैडम आई और आपकी मैडम बच्चों को लेकर उसके साथ चली गई। उसके बाद ना तो वो लौटी और ना फोन—।"

"किसके साथ गई आरू?"

"कह नहीं सकता। मैं उस वक्त बाथरूम में था। नौकर ने

बनाया कि वो आने वाली मैडम ने अपनी मैडम का रिश्तेदार बताया... ।"

"आरु का ऐसा कोई रिश्तेदार नहीं है जिसे मैं ना जानता होऊँ। आरु मुझे बताये बिना किसी के साथ नहीं जायेगी। वो बंगला नहीं छोड़ेगी। क्या वो औरत पहले भी आरु से मिलने आई थी?"

"मैडम से मिलने कोई नहीं आता फिर अभी तो अफगानिस्तान से लौटी है। वो तो— ।"

"आरु और बच्चों की तलाश करो जाखड़ ।" देवेन साठी गुर्रा उठा—"जरूर कोई गड़बड़ है। कब गई आरु बच्चों को लेकर?"

"कल सुबह। तब बच्चे स्कूल जाने वाले थे।"

"आरु और बच्चे किसी मुसीबत में पड़ गये हैं?" देवेन साठी शब्दों को चबाकर कह उठा—"मुझे बताये बिना आरु बंगला नहीं छोड़ सकती? जबकि वो बच्चों को भी साथ लेकर गई है, तुमने ये बात पहले क्यों नहीं बताई?"

"मैंने सोचा मैडम किसी रिश्तेदार के साथ गई— ।"

"आरु और बच्चों की तलाश करो जितने आदमी चाहिये ले लो। मुझे जल्दी से खबर दो उनके बारे में— ।" देवेन साठी ने कहा और फोन बंद कर दिया। चेहरे पर परेशानी टपक रही थी।

❑❑❑

❑❑❑

नगीना उस वक्त चाय के घूंट ले रही थी जब उसका मोबाइल बजने लगा।

सोहनलाल और सरबत सिंह सामने ही सोफों पर धंसे हुए थे। कुछ देर पहले ही वो पाटिल को खाना खिलाकर हटे थे। इसके लिए उसके बंधन खोले गये थे। तब तक सरबत सिंह रिवॉल्वर हाथ में थामें खड़ा रहा था। खाना खाने के बाद पाटिल बाथरूम गया तो सरबत सिंह बाथरूम के खुले दरवाजे पर रिवॉल्वर थामें जा खड़ा हुआ था। जब पाटिल सब कामों से फारिग हुआ तो पुनः उसके हाथ-पांव बांध दिए गये थे। इस काम में उन्हें आधा घंटा लग गया था।

नगीना ने फोन पर बात की। दूसरी तरफ बांकेलाल राठौर था।

"बहणा।" उधर से बांके ने कहा—"मोनना चौधरी, महाजनों और पारसनाथो, एको घटियो इलाके में पहुँचो है ओरो एको गली को मोड़ो पर खड़ो हो गयो। पर महारे को कुछो ठीको ना लागे हो— ।"

"क्यों?"

"इधरो मनने को और ना आदमी दिखो हो।"

"बेला, महाजन, पारसनाथ ने वहाँ किसी से बात की?"

"ना बहणो—।"

"तुम्हें क्या लगता है, वो क्या करने वाले हैं?"

"म्हारी समझ में तो कुछो ना आवे। पर ठीको ना लागे हो।"

"कौन-सा इलाका है वो?"

उधर से बांकेलाल राठौर ने बताया।

सुनते ही नगीना चिहुँक उठी।

"ओह...।" नगीना के होठों से बेचैनी भरा स्वर निकला।

"क्या हो गयो?"

"देवराज चौहान और जगमोहन इसी इलाके में छिपे हैं।" नगीना के होठों से निकला।

"यो तो गड़बड़ हो गयो।"

"बेला, पारसनाथ और महाजन के अलावा और लोग भी दिखे तुम्हें उधर?"

"हाँ। म्हारे को इधरो कुछो ठीको ना लागो हो।"

"तुम दोनों वहीं रहो। मैं पहुँच रही हूँ वहाँ—।" नगीना ने होंठ भींचकर कहा।

"थारे पौंचने से पैले ही कुछो हो गया तो?"

"तुम दोनों ने कुछ नहीं होने देना है।" नगीना कठोर स्वर में बोली—"खुलकर सामने आ जाओ। वो तीनों तुम लोगों को देख लेंगे तो सम्भल जायेंगे। तब फौरन कुछ नहीं करेंगे।"

"ठीको। अंम समझो थारी बातो—।"

नगीना ने फोन बंद किया तो सोहनलाल बोला।

"क्या हुआ?"

"शायद बेला को पता चल गया है कि देवराज चौहान और जगमोहन कहाँ छिपे हुए हैं। वो महाजन और पारसनाथ के साथ उस जगह पर जा पहुँची है। हमें तुरन्त वहाँ चलना है। तुम यहीं रुको सोहन भैया। तुम्हारी तबीयत ज्यादा ठीक नहीं है और फिर किसी को तो यहाँ रुकना ही है पाटिल, आरु और उन बच्चों की निगरानी के लिए। तुम मेरे साथ चलो सरबत भैया। अब हालात बिगड़ने लगे हैं।"

❑❑❑

❑❑❑

"इसी पतली गली के भीतर पांच नम्बर का वो मकान है, जहाँ देवराज चौहान, जगमोहन और हरीश खुदे मौजूद है।" मोना चौधरी ने गली के किनारे खड़े हुए पारसनाथ और महाजन को देखकर कहा—"लेकिन मुझे लगता है देवेन साठी अपना काम शुरू कर चुका है। इधर-उधर टहलते हमें कई आदमी दिखाई दे रहे हैं, जिनकी

मौजूदगी यहाँ गैर जरूरी है। वो साठी के आदमी हो सकते हैं। इस गली में ही यहाँ-यहाँ फैले ऐसे तीन लोग हमें दिखाई दे रहे हैं। दो हमसे कुछ दूर गली के बाहर खड़े हैं।"

"तो देवेन साठी, देवराज चौहान और जगमोहन पर हाथ डालने जा रहा है।" पारसनाथ बोला।

"देवराज चौहान बचने वाला नहीं।" महाजन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मेरे बस में कुछ नहीं है।" पारसनाथ ने सख्त स्वर में कहा—"वरना मैं देवराज चौहान को बचाने की कोशिश जरूर करता।"

महाजन ने मोना चौधरी को देखा।

मोना चौधरी होंठ भींचे शांत खड़ी थी।

"तुम्हारा क्या ख्याल है बेबी?" महाजन ने पूछा।

"मैं इस मामले में दखल नहीं देना चाहती। ये ही बहुत है कि मैं इस मामले से पीछे हट गई हूँ।" मोना चौधरी बोली।

"देवराज चौहान तुम्हारी पूर्व जन्म की बहन बेला का पति है और—।"

"पर वो मुझे कभी पसन्द नहीं आया। देवराज चौहान ने हमेशा—।"

"बांके...।" पारसनाथ के होंठों से निकला—"रुस्तम राव—।"

मोना चौधरी और महाजन की निगाहें भी उधर घूमी।

सामने से बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव इसी तरफ आ रहे थे।

"ये-ये यहाँ कैसे?" महाजन कह उठा।

"अब हालात खतरनाक हो जायेंगे।" मोना चौधरी होंठ भींचे बोली—"देवराज चौहान भी यहाँ और साठी भी दूर नहीं होगा। वो देवराज चौहान को खत्म करना चाहेगा और ये, ऐसा ना हो, उसकी कोशिश करेंगे?"

"इसका मतलब इन्हें पता है कि देवराज चौहान यहाँ है।" पारसनाथ ने सपाट स्वर में कहा।

बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव उनके पास आकर रुके। दोनों के चेहरों पर गम्भीरता और तीखे भाव मौजूद थे। उन्होंने तीनों को देखा और बांकेलाल राठौर कह उठा।

"म्हारे को अब सीधो बातो करनो चाहिये।"

जवाब में तीनों खामोश रहे।

"तंम इधरो का करो हो?" बांकेलाल राठौर के चेहरे पर सख्ती थी।

रुस्तम राव का चेहरा भी कठोर दिखाई दे रहा था।

"म्हारे को खूब पतो हौवे कि तंम इधरो का करो हो। म्हारी बातो मानो तो भाग लयो इधरो से।"

"क्या मतलब?" मोना चौधरी बोली।

"तंम देवराज चौहान को मारने के वास्ते इधरो आयो हो। अंम यो ना होने दयो। तंम म्हारा कुछो ना बिगाड़ सको हो और अंम थारे को 'वड' दयो। देवराज चौहान थारे बस में ना आये हो।"

"हम कुछ नहीं कर रहे।"

"तंम करो हो।"

"नहीं। हम यहाँ देवराज चौहान को मारने के लिए नहीं आये बल्कि ये देखने आये हैं कि वो कैसे मरता है।" मोना चौधरी ने होंठ भींचकर कहा—"हम सिर्फ तमाशबीन हैं। दूर खड़े होकर सब देखेंगे।"

"थारा का मतलब हौवे?" बांकेलाल राठौर की आँखें सिकुड़ी।

रुस्तम राव के माथे पर बल दिखने लगे थे।

"देवेन साठी को पता है कि देवराज चौहान यहाँ है।"

"उसे कैसो पतो?"

"जैसे हमें पता लगा।"

"थारे को देवराज चौहान के बारों में कैसो पतो लगो?"

"बिल्ला ने एक करोड़ लेकर हमें ये खबर बेची कि देवराज चौहान, जगमोहन और हरीश खुदे उसके घर पर छिपे हुए हैं। उसने ये खबर देवेन साठी को भी बेची है।"

बांकेलाल राठौर की आँखें सिकुड़ी।

"उस बस स्टॉप पर तुमने ब्रीफकेस में उसे करोड़ रुपया दिएला। वे बिल्ला होएला?" रुस्तम राव ने कहा।

"हाँ। वो ही बिल्ला था।"

"तो तुम लोग हम पर नज़र रखे हुए हो।" महाजन कह उठा।

"थारो कोईयो प्रोग्राम ना हौवे देवराज चौहानो पर हाथो मारणे का?"

"नहीं।" मोना चौधरी बोली।

"ये काम साठी करो हो।"

"हाँ। उसके आदमी हरकत में आ चुके हैं।"

"किधरो है वो?"

"गली में देखो, यहाँ-वहाँ तीन आदमी खड़े हैं। गली के बाहर की तरफ देखो इधर-उधर खड़े दो आदमी दिख रहे हैं और भी आदमी

यहाँ फैल चुके हैं। उन्हें तलाश करोगे तो वो दिख जायेंगे।" मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा—"इस वहम में मत रहो कि तुम लोग देवराज चौहान और जगमोहन को बचा लोगे। आज उनकी जिन्दगी का आखिरी दिन है। देवेन साठी अपने भाई की हत्या का बदला, उनकी हत्या करके लेगा।"

बांकेलाल राठौर के होंठों से गुर्राहट निकली। हाथ मूंछ पर पहुँच गया।

"अंम सबो को 'बड' दयो।" वो गुर्रा उठा।

"इतना भी आसान नेई होईला, जितना आसानी से तुम बोएला।" रुस्तम राव का स्वर खतरनाक हो गया।

"मुझे नहीं लगता कि तुम देवराज चौहान को बचा लोगे।" मोना चौधरी गम्भीर दिखी—"यहाँ हर तरफ देवेन साठी के आदमी नज़र आ रहे हैं। घेराबंदी हो चुकी है। साठी भी यहाँ आने वाला होगा। बीच में दखल दिया तो तुम दोनों भी मरोगे।"

"तंम भी तो देवराज चौहानो और जगमोहनो के पाछे होवो—।"

"मैंने अपना इरादा छोड़ दिया है।"

"काये को?"

"तुम्हारे लिए ये जानना ही बहुत है कि मैं देवराज चौहान के पीछे नहीं हूँ।"

बांकेलाल राठौर कठोर निगाहों से मोना चौधरी को देखने लगा।

तभी पारसनाथ सपाट स्वर में बोला।

"तुम दोनों को ये सोचना चाहिये कि देवराज चौहान और जगमोहन को कैसे बचाना है।"

"देवराज चौहानो कितनो नम्बर मकान में होवो?"

"413—।"

"अंम अभ्भी उसो के पासो जाके बाहर के हालात बता दयो। वो—।"

"ये गलती मत करना बांके।" पारसनाथ कह उठा—"सब कुछ जानकर देवराज चौहान और जगमोहन यहाँ से खिसकने की कोशिश करेंगे और बाहर फैले आदमी उन्हें भूनकर रख देंगे।"

बांकेलाल राठौर का चेहरा सख्त हो गया।

"कितने आदमी इधर फैलेला बाप?"

"पाँच तो यही से नज़र आ रहे हैं।" महाजन ने कहा—"बाकियो की तलाश में हमने नज़रें नहीं घुमाई। परन्तु कम से कम भी यहाँ पर तीस-पैंतीस आदमी तो जरूर होंगे। उनका मुकाबला नहीं किया जा सकता।"

"तुम लोग किसकी तरफ होईला?"

"किसी तरफ भी नहीं।" महाजन बोला—"हम यहाँ सिर्फ देखने आये हैं कि क्या-कैसे सब कुछ होता है।"

"मेरी जरूरत हो तो मुझे बता देना।" पारसनाथ कह उठा।

मोना चौधरी और महाजन की निगाह पारसनाथ की तरफ उठी।

"तंम म्हारे साथी होवे?"

"कहोगे तो मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

"तंम तो मोन्नो चौधरी के बगली हो। तंम म्हारा साथ क्यों दयो हो?"

"क्योंकि देवराज चौहान ने कुछ नहीं किया। उसे इन हालातों में फंसाया गया है।"

"किसने बाप?"

"विलास डोगरा ने—।"

"म्हारे को पता ना होवे, तंम म्हारे को सारो मामलो बता दयो।"

"तुम दोनों यहाँ वक्त खराब कर रहे हो। देवराज चौहान और जगमोहन की जान खतरे में है।" पारसनाथ ने कहा।

बांके और रुस्तम राव की नज़रें मिलीं।

"छोरे तुरन्त-फुरन्त कुछ करनो की जरूरतों होवे।"

"आपुन जरा दीदी से बात करके पोज़िशन बनायेगा।" कहने के साथ ही रुस्तम राव ने फोन निकाला और वहाँ से हट गया।

"देवराज चौहानों बे-कसूरों होवे तो थारे को भी म्हारा साथ देना चाहो।" बांके ने मोना चौधरी से कहा।

"उसने मेरी जान लेने का भरसक प्रयत्न किया था।" पढ़ें 'सबसे बड़ा गुण्डा'—"ऐसे में मैं उसके खिलाफ कुछ नहीं कर रही, ये ही बहुत है। उसने महाजन और राधा को भी मारना चाहा था।" मोना चौधरी पूरी तरह नाराज थी।

"जो थारा मन चाहो।" बांके लाल राठौर बोला—"वो बिल्ला किधर मिल्लो हो, पतो होवे कुछो।"

"नहीं।"

"क्या करोगे बिल्ला का?" महाजन ने पूछा।

"देवराज चौहानो और जगमोहनो बिल्लो के घरो में होवे हो और बिल्लो ने गद्दारी करके, ये बात देवेन साठी को बता दयो। अम बिल्लो की गर्दनों तोड़ दयो। 'वड' दयो उसो को।"

"वो तो कहीं बैठा नोट गिन रहा होगा।" महाजन ने गहरी सांस लेकर कहा।

तभी रुस्तम राव पास आता बांके लाल राठौर से बोला।

"बाप। दीदी पन्द्रह मिनट में इधर पौंचेला। इधर का सब मामला बतायेला उसे।"

"दीदी कौन?" मोना चौधरी ने पूछा।

"थारी पूर्व जन्मों की बहनो वेला।" बांके ने बताया फिर बोला—"इधरो से चल्लो छोरे। इनो का संग छोड़ देना चाहो। महारी इनो का लेन अलगो-अलगो हौवे।"

बांके और रुस्तम राव उनके पास से दूर चले गये।

"तो तुम देवराज चौहान के लिए इनका साथ देने को तैयार हो पारसनाथ।" मोना चौधरी कह उठी।

"क्योंकि देवराज चौहान को इन हालातों में विलास डोगरा ने फंसाया है। वो निर्दोष है। अगर तुम भी इनका साथ दो तो मुझे खुशी होगी मोना चौधरी।" पारसनाथ ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं जरूरत नहीं समझती। वैसे भी बाजी देवेन साठी के हाथ में है। आज देवराज चौहान और जगमोहन की जिन्दगी का आखिरी दिन है। देवेन साठी के रास्ते में जो भी आया, वो उसे कुचलकर रख देगा। दूर रहकर ही मामले को देखना ठीक है।" मोना चौधरी ने बेहद शांत स्वर में कहा—"ऐसे में हम चाहें भी तो, तो भी कुछ नहीं कर सकते। देवेन साठी हमें भी रगड़ देगा। उसके पास ताकत है।"

❑❑❑

❑❑❑

हरीश खुदे ने घड़ी पर निगाह मारी। पाँच बज रहे थे।

जगमोहन कुर्सी पर बैठा था जबकि देवराज चौहान बैड पर लेटा सिग्रेट के कश ले रहा था।

"बिल्ला का इन्तज़ार कर रहा है?" जगमोहन ने पूछा।

"हाँ। वो पाँच बजे तक आने को कह गया था।" खुदे बोला—"खाना भी लाना था। आज हमने लंच भी नहीं किया। पता नहीं साले को ऐसा क्या काम पड़ गया जो घंटों से दफा हुआ पड़ा है।"

"ज्यादा भूख लग रही है तो तू खाने को ले आ।" जगमोहन ने कहा।

"ऐसी बात नहीं। मैं तो बिल्ले के बारे में सोच रहा हूँ कि इतने घंटे वो कभी बाहर नहीं रहा। कमीना कहीं दुन्नी के पास ना चला गया हो।" खुदे ने कलप कर कहा—"हर समय दुन्नी-दुन्नी की रट लगाये रहता है।"

"तुम्हारी पत्नी का तो वो दीवाना है।" जगमोहन मुस्कराया।

"हरामजदा है साला।" खुदे ने कड़वे स्वर में कहा—"अगर हमें छिपने के लिए उसके इस एक कमरे वाले घर की जरूरत नहीं होती तो दो मिनट में उसे सीधा कर देता। मैं तो चुपचाप वक्त टपा रहा हूँ। लेकिन जाते वक्त उसकी खोपड़ी तोड़ कर जाऊँगा।" कहने के साथ ही खुदे ने मोबाइल निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

"बिल्ला को फोन।"

"उस कंगाल के पास फोन कहाँ, मैं तो टुन्नी को फोन कर रहा हूँ. बिल्ला कहीं उसके पास ना बैठा हो।" खुदे ने चिन्ता भरे स्वर में कहा और फोन कान से लगा लिया—"ऐसी कोई जगह नहीं, जहाँ बिल्ला इतनी देर बिता सके।"

फोन लग गया। बेल जाने के पश्चात् टुन्नी की आवाज कानों में पड़ी।

"शुक्र है, तुमने फोन तो किया। आ रहे हो अब।"

"तुम्हें बता तो चुका हूँ कि मैं घर पर नहीं आ सकता। देवेन साठी के आदमी घर पर नज़र रख रहे—"

"हाँ, वो तो अभी भी हैं। बाजार गई थी तो गली के बाहर उन्हें देखा था। तुमने कहा था कि अपना सामान तैयार रखूं हमें मुम्बई से फौरन निकल जाना होगा। कब चलना है?" उधर से टुन्नी ने पूछा।

"अभी नहीं।" खुदे ने गहरी सांस ली।

"क्या मतलब अभी नहीं?"

"थोड़ा सा प्रोग्राम बदल...।"

"तुम अभी भी देवराज चौहान और जगमोहन के साथ हो?" टुन्नी ने बीच में ही पूछा।

"हाँ।"

"जब से वो तुम्हें ले गये हैं, तब से मैं तुम्हें देख भी नहीं पाई।" टुन्नी की आवाज में नाराजगी थी।

"ये ही बड़ी बात है कि मैं अभी जिन्दा बचा हुआ हूँ।"

"तुम किस प्रोग्राम की बात कर रहे थे?"

"मैं तुम्हें बता रहा था कि देवराज चौहान ने मुझसे वादा किया है कि इस मामले से निकलने के बाद वो बड़ी डकैती करेंगे और मैं भी उस डकैती में हिस्सा लूंगा और मुझे बड़ी रकम मिलेगी। इसलिए मुझे इन दोनों के साथ रहना पड़ रहा है। डकैती के बाद हम अमीर बन जायेंगे टुन्नी। बस थोड़ी देर की बात है।"

"कितनी देर?"

"थोड़ी देर—महीना या डेढ़ महीना।" खुदे, देवराज चौहान और जगमोहन पर नज़र मारता कह उठा।

"तो क्या इतनी देर में अकेली रहूँगी?"

"रह ले टुन्नी। कोई फर्क नहीं पड़ता। उसके बाद तो हम हमेशा ही एक साथ रहेंगे। बहुत पैसा होगा हमारे पास। कार होगी, बंगला होगा। हमारे बच्चे भी होंगे। मौज ही मौज होगी।"

"पर डेढ महीना, मैं तेरे बिना।"

"समझा कर टुन्नी। मैं वहाँ आया तो देवेन साठी के आदमी मुझे पकड़ लेंगे या मार देंगे। हालात बहुत खराब हुए पड़े हैं। कुछ वक्त निकल जाने दे, उसके बाद सब ठीक हो जायेगा।" खुदे ने समझाने वाले स्वर में कहा।

"तेरे बिना मेरा दिल नहीं लगेगा।" टुन्नी उदास स्वर में, उधर से बोली।

"लग जायेगा। तू ये सोच कि जैसे मैं हांगकांग गया हूँ और डेढ महीने बाद वहां से दौलत लेकर लौटूँगा।"

टुन्नी के गहरी सांस लेने की आवाज आई।

"मेरी प्यारी टुन्नी, तू तो बहादुर–।"

"चल-चल, बच्चों की तरह मुझे बहला मत। मेरा तो मन खराब हो गया है ये सुनकर कि तू अभी डेढ़ महीना और मुझे नहीं मिलेगा। शादीशुदा होकर भी, कुंवारों सी जिन्दगी बितानी पड़ रही है।"

"थोड़ी दिनों की तो बात... ।"

"इन बातों से तू दिल लगाने की कोशिश मत कर। मैं सब समझती हूँ। अब देवराज चौहान या जगमोहन तेरी ठुकाई तो–।"

"नहीं-नहीं। अब तो वो बहुत अच्छे हैं मेरे साथ। सब ठीक है।" खुदे ने जल्दी से कहा।

"ठीक है, अब जैसा तू चाहे, मैं तो।"

"आज बिल्ला तो नहीं आया तेरे पास?" एकाएक खुदे ने पूछा।

"वो कमीना क्यों आयेगा। लेकिन वो हाथ धोकर पीछे पड़ा है। पता नहीं मुझमें उसे क्या दिख गया। दो घंटे पहले उसने फोन जरूर किया था मुझे। उल्टी-पुल्टी बकवास कर रहा–।"

"क्या कह रहा था?" खुदे के दाँत भिंच गये।

"पागल हो गया है वो। मुझे कह रहा था तेरे को रानी बनाकर रखूंगा। कहता है दो करोड़ रुपया है उसके पास। ये भी कहा कि खुदे की तू चिन्ता मत कर, उसका इन्तज़ाम हो जायेगा। वो और भी जाने क्या भौंकता, मैंने पहले ही फोन बंद कर।"

खुदे के माथे पर बल दिखे।

"बिल्ला की इन बातों का क्या मतलब हुआ?"

"ये तू सोच। मुझे तो वो पागल लगा... ।"

"वो तेरे से ये बात गलत नहीं कहेगा कि उसके पास दो करोड़ रुपया है।" खुदे तेज स्वर में कह उठा—"तेरे को रानी बनाने को कह रहा था। उसने तेरे से कहा कि खुदे का इन्तज़ाम हो जायेगा, ये कब की बात है?"

देवराज चौहान और जगमोहन की निगाह भी खुदे पर जा टिकी।

"दो घंटे हो गये उसका फोन आये।"

"तूने उससे पूछा नहीं कि दो करोड़ उसके पास कहाँ से आये?"

"मैंने उसकी बकवास पर ध्यान नहीं।"

"वो तेरे से बकवास नहीं कर सकता। वो तो हमेशा तेरे सपने देखता है। वो कमीना...।" खुदे के होंठ भिंच गये—"तू आराम से रह। किसी बात की चिन्ता मत कर। बंद करता हूँ।" कहकर खुदे ने फोन बंद किया और देवराज चौहान और जगमोहन को देख कर बोला—"दो घंटे पहले बिल्ला ने टुन्नी को फोन करके कहा कि उसके पास दो करोड़ रुपया है। बिल्ला टुन्नी से ये बात गलत नहीं कहेगा। वो टुन्नी को फंसाने के चक्कर में है। ये भी कहा कि खुदे का इन्तज़ाम हो जायेगा। वो दो सौ रुपये का बंदा भी नहीं है तो उसके दो करोड़ कहाँ से मिल...।"

उसी पल देवराज चौहान चौंक कर बैड से नीचे आ खड़ा हुआ।

"निकलो यहाँ से। बिल्ला ने गद्दारी कर दी है। हमारे बारे में उसने मोना चौधरी या देवेन साठी को बता कर दो करोड़ रुपया ले लिया है। वो सुबह से इन्हीं कामों के लिए गायब है। हम खतरे में हैं।" देवराज चौहान ने तेज स्वर में कहा।

जगमोहन हक्का बक्का रह गया।

"क्या-क्या कह रहे हो?" खुदे के होठों से कांपता स्वर निकला।

"बिल्ला हमसे धोखा कर गया है। वो हमसे गेम खेल गया।" देवराज चौहान के होंठ भिंच गये थे।

"वो—वो ऐसा नहीं कर—।"

"सच में।" जगमोहन के होंठों से निकला—"सच में उसने ऐसा किया होगा। तेरे होते वो टुन्नी को नहीं पा सकता, क्योंकि टुन्नी तेरी पत्नी है। ये गेम खेलकर उसने नोट भी पैदा कर लिए और तेरे मरने का भी इन्तज़ाम कर दिया। हमारे बारे में बताने के लिए ही उसे दो करोड़ मिले हैं। देवराज चौहान ठीक कहता है कि उसने मोना चौधरी या देवेन साठी को हमारे यहाँ पर होने की खबर बेची है। हमें फौरन यहाँ से निकल चलना चाहिये।"

खुदे हक्का-बक्का हो चुका था। वो दोनों को देखे जा रहा था।

देवराज चौहान ने जेब से रिवॉल्वर निकाली और उसे चैक करना बोला।

"चलो यहाँ से—अभी, ऐसे ही चलो।"

"साला, हरामजादा।" खुदे का चेहरा एकाएक धधक उठा—"धोखेबाज... ।"

"उसे छोड़ो और चलो।" रिवॉल्वर जेब में रखता देवराज चौहान दरवाजे की तरफ बढ़ने लगा कि तभी जेब में पड़ा मोबाइल बजने लगा। देवराज चौहान ने ठिठक कर मोबाइल निकाला और बात की। दूसरी तरफ नगीना थी।

"कहो।" देवराज चौहान ने फोन पर कहा।

"बाहर के हालात ठीक नहीं हैं। आप बाहर मत निकलना।" नगीना की आवाज कानों में पड़ी।

"क्या मतलब?"

"मैं अभी बाहर ही पहुँची हूँ।" दूसरी तरफ से नगीना ने कहा—"बिल्ले का घर है वो जहाँ आप हैं, हैं ना?"

"हाँ।" देवराज चौहान के होठों से निकला।

"आप लोगों के यहाँ होने की खबर बिल्ला ने मिन्नो और देवेन साठी को दे दी है। बदले में पैसा लिया है। इस वक्त जहाँ पर आप हैं, वहां हर तरफ देवेन साठी के आदमी फैले नज़र आ रहे हैं। मोना चौधरी, महाजन और पारसनाथ भी यहाँ हैं, परन्तु मिन्नो ने आपके रास्ते से हट जाने की सोच ली है, उसे पता चल गया है कि ये मामला कठपुतली से जुड़ा हुआ है और विलास डोंगरा इस मामले के पीछे है। इस वक्त आपको देवेन साठी की तरफ से खतरा है।"

"देवेन साठी कहाँ है?" देवराज चौहान के दाँत भिंच गये।

"मेरे ख्याल में वो यहाँ कभी भी आ पहुँचेगा।"

"बाहर देवेन साठी के आदमी फैले हैं, ये बात पक्का है?" देवराज चौहान गुर्राया।

"हाँ। बांके और रुस्तम यहाँ पहले से ही मौजूद थे। इस वक्त वो मेरे पास खड़े हैं। ये मिन्नो से मिल भी चुके हैं। उन्हीं से काफी बातें इन्हें पता चलीं। सरबत सिंह भी मेरे पास है।" उधर से नगीना की आवाज आ रही थी—"यहाँ मौजूद देवेन साठी के आदमी उसके आने का इन्तजार कर रहे हैं फिर— ।"

"देवेन साठी का परिवार कहाँ है?"

"मेरे पास। मैं सब ठीक कर लूंगी। अभी आप बाहर मत निकलना।" नगीना की आवाज कानों में पड़ी—"ये ही कहने के लिए मैंने फोन किया है। बाहर के हालात आप लोगों के लिए ठीक नहीं हैं।"

देवराज चौहान के होंठ भिंच गये।

जगमोहन आँखें सिकोड़े, देवराज चौहान को देख रहा था।

"मैं फोन बंद कर रही हूँ। फिर बात करूँगी।" उधर से नगीना ने कहा और फोन बंद कर दिया था।

देवराज चौहान ने कान से फोन हटाया। चेहरा सुलग रहा था।

"क्या बात है?" जगमोहन के होठों से कठोर स्वर निकला।

"हमारा ख्याल ठीक था कि बिल्ला धोखेबाजी कर गया है।" देवराज चौहान शब्दों को चबाकर कह उठा—"गद्दारी करने से ही उसके पास दो करोड़ रुपया आया। उसने हमारे बारे में देवेन साठी और मोना चौधरी को बता दिया है। इस वक्त बाहर देवेन साठी के आदमी फैले हैं और वो स्वयं कभी भी यहाँ पहुँच सकता है। हम घिर चुके हैं।"

"साला, कुत्ता।" हरीश खुदे गुर्रा उठा—"बहुत बुरी मौत मारूँगा बिल्ले को।"

जबकि जगमोहन, देवराज चौहान की बात सुनकर ठगा सा रह गया था।

"बाहर देवेन साठी के आदमी फैले हैं। नगीना भाभी ने ये बात बताई?"

"हाँ।"

"सत्यानाश।" जगमोहन के दाँत भिंच गये—"और मोना चौधरी?"

"वो भी बाहर है। परन्तु वो अब हमारे पीछे नहीं है। उसे कठपुतली और विलास डोगरा के बारे में पता चल गया है।"

"अब क्या होगा।" खुदे परेशान सा कह उठा—"हम बच नहीं सकेंगे।"

तीनों एक-दूसरे को देखने लगे।

उनके चेहरों पर परेशानी और क्रोध दिखाई दे रहा था।

"मुझे पता होता कि बिल्ला ऐसा कुछ करेगा तो मैंने कब का उसे मार देना था।" खुदे खतरनाक स्वर में कह उठा।

"उसे जो करना था, वो कर गया।" देवराज चौहान कठोर स्वर में बोला।

"टुन्नी को फोन करके कहा कि दो करोड़ हैं उसके पास। कमीने ने टुन्नी को ही अपने चक्कर में लेने के लिए गद्दारी की। उधर से नोट ले लिए और सोचा देवेन साठी या मोना चौधरी यहाँ मुझे मार देंगे और उसका रास्ता साफ हो जायेगा। मैं उसकी बातों को हल्के में लेता रहा, परन्तु वो हरामजादा, मेरी पत्नी के बारे में गम्भीर था। उसे चाहने के चक्कर में ही बिल्ला ने इतना बड़ा कदम उठा लिया। एक बार वो हरामजादा मेरे हाथ लग— ।"

"अब क्या किया जाये?" गुस्से से भरा जगमोहन बेचैन लहजे में कह उठा।

"हमारा बाहर निकलना खतरनाक है।" देवराज चौहान ने होंठ भींच कर कहा।

"तो?"

देवराज चौहान ने जगमोहन और खुदे पर निगाह मार कर कहा।

"अगर कुछ हो सकता है तो वो नगीना ही करेगी।" देवराज चौहान ने जेब से रिवॉल्वर निकाली और उसे थपथपा कर कठोर स्वर में कह उठा—"हमें हर तरह के हालातों के लिए तैयार रहना चाहिये।"

"कुत्ता-हरामजादा।" खुदे बड़बड़ा उठा।

"भाभी शायद देवेन साठी को रोक ना सके। उसके साथ कौन-कौन है?"

"बांके, रुस्तम, सरबत सिंह।"

"मेरे ख्याल में भाभी के लिए ये मामला संभालना कठिन हो जायेगा।" जगमोहन बोला।

"नगीना हर तरह के हालातों में काम करती है। लगता है तुम उसे भूल गये।"

"मैं भूला नहीं हूँ।"

"वो पूरी कोशिश करेगी, मामला संभालने की।"

"बाहर देवेन साठी के आदमी मौजूद हैं?"

"हाँ।"

"अच्छी तरह घेरा डाल रखा होगा। साठी ने तसल्ली से पूरी तैयारी की होगी कि हम किसी भी हाल में बच ना सकें। उसके पास पूरा वक्त रहा, तैयारी करने का।" जगमोहन ने दरिन्दगी भरे स्वर में कहा—"बिल्ला ने गलत किया। हमें बुरी तरह फंसा डाला। उसका दिमाग खराब हो गया था जो उसने ऐसा कर डाला। पैसा तो हम भी उसे दे सकते थे।"

"बिल्ला के हाथ पैसा कमाने और खुदे को रास्ते से हटाने का आसान मौका हाथ लगा था। वो खुदे की पत्नी को पाना चाहता है। इससे बढ़िया मौका और क्या होगा कि पैसा मिलने के साथ खुदे भी मारा जाये। वो जानता है कि देवेन साठी खुदे को नहीं छोड़ेगा। क्योंकि पूरब नाथ साठी की हत्या के वक्त ये हमारे साथ था। साठी इसे भी हत्या का जिम्मेवार मानता है।"

"मैं कहाँ फंस गया।" खुदे कह उठा।

"बिल्ला ने गड़बड़ ना की होती तो इतने बुरे हालात नहीं होने थे।" जगमोहन ने कहा।

"उसे हरामजादे को तो मैं बुरी मौत—।"

"अभी तो अपनी जान की फिक्र करो।" जगमोहन गुर्राया—"हम लोग इस वक्त बुरे फंस चुके हैं।"

"वो भाभी शायद हमें बचा ले।" खुदे ने सूखे होठों पर जीभ फेरकर कहा।

जगमोहन गहरी सांस लेकर रह गया।

"देखते हैं अब क्या होता है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा और रिवॉल्वर जेब में रखते हुए सिग्रेट सुलगा ली—"हमें हर तरह के हालातों के लिए तैयार रहना है। किसी भी पल कुछ भी हो...।"

तभी खुदे का फोन बजा।

"हैलो।" खुदे ने जल्दी से बात की।

"ये बिल्ला क्या पागल हो गया है।" उधर से टुन्नी का तीखा स्वर कानों में पड़ा।

"क्या हुआ?" खुदे के होठों से निकला।

"अभी फोन आया उसका। फोन पर कहने लगा टुन्नी अब कुछ ही देर की बात है। उसके बाद हमें मिलने से कोई नहीं रोक सकता। मैं पूछती वो कमीना क्या कहना चाहता है मुझे। कुछ मेरी भी समझ में आये।"

"तुमने उससे नहीं पूछा।" खुदे कड़वे स्वर में बोला।

"पूछने से पहले ही उसने फोन बंद कर दिया।"

"वो अगर तेरे सामने आ जाये तो कुछ भी पूछे बिना उसका सिर फोड़ देना कि वो जिन्दा ना रहे।" खुदे गुर्रा उठा।

"मैं समझी नहीं।"

"उसने हमारे ठिकाने के बारे में देवेन साठी को बताकर, उससे पैसे लिए हैं। अब हालात ये है कि बाहर देवेन साठी के आदमी फैले हैं और कभी भी कुछ भी हो सकता है। बिल्ला सोचता है कि साठी मुझे मार देगा और बिल्ला तुझे पा लेगा।"

"पा लेगा?" टुन्नी का कड़वा स्वर कानों में पड़ा—"मैं क्या सड़क पर पड़ी कोई चीज हूं जो मुझे उठाकर जेब में रख लेगा। उस कुत्ते का तो मैं बुरा हाल करूँगी। एक बार मेरे सामने पड़—।"

"मैं फोन बंद करता हूं।" खुदे गम्भीर स्वर में बोला—"फिर बात करूँगा।" कहने के साथ ही खुदे ने फोन बंद किया और देवराज चौहान, जगमोहन को देखकर बोला—"बिल्ला भी बाहर ही कहीं मौजूद है और यहाँ के हालातों पर नज़र रखे हुए है।"

तीनों की नज़रें मिलीं।

वहाँ मौत सा सन्नाटा ठहर चुका था।

□□□
□□□

उस तंग गली के बाहर एक के बाद एक पाँच कारें आकर रुकीं और उसमें से धड़ाधड़ आदमी बाहर निकलने लगे। सब के सब खतरनाक इरादों से भरे लग रहे थे। वे सब हथियारबंद थे। शाम के छः बजने वाले थे। एक कार से देवेन साठी और जाफर बाहर निकले। देवेन साठी का चेहरा कठोर हुआ पड़ा था।

तभी एक आदमी तेज-तेज कदमों से चलता पास पहुँचा।

"साठी साहब, वो तीनों भीतर ही हैं।" उसने कहा।

"तुमने देखा।"

"जगमोहन दो घंटे पहले कमरे के बाहर नहा रहा था और भीतर दो और थे तब। बाहर से भीतर काफी कुछ दिख पाता है। दरवाजा तो दोपहर से ही खुला हुआ उनका। यहाँ सब एक कमरे के घर हैं।" वो बोला।

"घेराबंदी ठीक है हमारे लोगों की?" साठी ने पूछा।

"एकदभ बढ़िया। वो बचकर भाग नहीं सकते।"

तब तक साठी की निगाह पचास कदम दूर खड़ी मोना चौधरी पर पड़ गई थी। वो उसकी तरफ बढ़ गया।

मोना चौधरी पारसनाथ के साथ खड़ी थी। महाजन कुछ दूर खड़ी कार के भीतर पिछली सीट पर अधलेटा सा पड़ा था। मोना चौधरी और पारसनाथ की निगाह भी साठी पर टिक गई थी।

साठी पास पहुँचा और सख्त स्वर में बोला।

"मैं जानता हूँ कि देवराज चौहान के ठिकाने की खबर बिल्ला ने तुम्हें भी बेची है।"

मोना चौधरी खामोश रही।

"लेकिन तुम्हें कुछ भी करने की जरूरत नहीं। मैं सब संभालने जा रहा हूँ। अब देवराज चौहान बुरी मौत मरेगा।"

"मैं अब इस मामले में नहीं हूँ।" मोना चौधरी ने कहा।

"इस मामले में नहीं हो, क्या मतलब?" साठी बोला।

"देवराज चौहान ने जो किया, वो उससे नशे में करवाया गया है। मुझे पता लगा वो बे-कसूर है।"

साठी के चेहरे पर जहरीले भाव उभरे।

"वो दूध पीता बच्चा है जो उससे उसकी मर्जी के खिलाफ कुछ करवाया जा सके।"

"कठपुतली नाम के नशे के आगे वो बच्चा ही है।" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में कहा—"इस सारे मामले के पीछे विलास

डोगरा है। मुझे किसी पार्टी के लिए दुबई से एक बंदा यहाँ मंगवाना था। इस काम के लिए मैंने पहले विलास डोगरा से बात की फिर ये काम तुम्हारे भाई पूरबनाथ साठी को दे दिया। इससे विलास डोगरा के अहम को चोट पहुँची और उसने सारा मामला प्लॉन करके कठपुतली नाम के नशे का इस्तेमाल देवराज चौहान और जगमोहन पर किया। वो खास तरह का नशा है उसके बारे में सुनेंगे तो समझ जाओगे कि ऐसा हो सकता है और तुम।''

''अपनी ये बकवास मुझे मत सुनाओ।''

''ये सच है साठी।'' पारसनाथ कह उठा—''परन्तु इस सच को मानने में काफी कठिनाई पेश आती है। फिर हम...।''

''देवराज चौहान, जगमोहन और हरीश खुदे ने मेरे भाई को मारा है।'' साठी गुर्रा उठा।

''हरीश खुदे के बारे में तो हम नहीं जानते...।''

''मैं जानता हूँ उसे अच्छी तरह। आठ साल तक खुदे ने मेरे लिए काम किया...।''

''देवराज चौहान और जगमोहन ने जब तुम्हारे भाई को मारा, तो वो अपने होश में नहीं थे और विलास डोगरा का इशारा उन्हें चला रहा था। विलास डोगरा ने अपनी बेइज्जती का बदला लिया है देवराज चौहान और जगमोहन को मोहरा बना कर। इस मामले में असली खिलाड़ी विलास डोगरा है। बदला लेना है तो उससे लो।'' पारसनाथ ने सपाट स्वर में कहा।

''देवराज चौहान ने मेरे भाई को मारा—।''

''मेरे ख्याल से देवराज चौहान ने नहीं, विलास डोगरा ने तुम्हारे भाई को मारा है।'' पारसनाथ बोला।

''मैं तुम्हारी ये बकवास सुनने नहीं आया यहाँ।'' कहकर साठी पलट कर जाने को हुआ।

''देवराज चौहान को मारने की तेरी राह इतनी भी आसान नहीं रहेगी साठी।'' मोना चौधरी कह उठी।

साठी फौरन पलटा और खतरनाक निगाहों से मोना चौधरी को देखने लगा।

मोना चौधरी चेहरे पर गम्भीरता समेटे साठी को देख रही थी।

''क्या कहना चाहती हो मोना चौधरी?'' साठी की आँखें सिकुड़ गई।

''यहाँ पर देवराज चौहान की पत्नी नगीना भी मौजूद है, उसे बचाने के लिए।'' मोना चौधरी बोली।

''देवराज चौहान की पत्नी। पत्नी भी है उसकी?'' साठी उपहास भरे स्वर में कह उठा।

मोना चौधरी कुछ नहीं बोला।

पारसनाथ अपने खुरदरे चेहरे पर हाथ फेरने लगा था।

"कहाँ है वो?" कहते हुए साठी ने नज़रें घुमाई।

"कुछ देर पहले वो मुझसे यहीं पर मिली थी।"

साठी की निगाह, मोना चौधरी पर आ ठहरी।

"तेरा मतलब कि वो मुझे देवराज चौहान को मारने से रोक लेगी। ये ही कहना चाहती है ना तू?"

"हाँ।"

"तू अभी यही है ना मोना चौधरी। यहीं रह—देवराज चौहान की लाश देखकर जाना, कुछ ही मिनटों में, समझी ना।" साठी गुर्राया।

"मैं तुझे सतर्क कर रही हूँ साठी कि देवराज चौहान की पत्नी को तू हल्के में ना ले।" मोना चौधरी बोली।

"तो क्या करूँ?" साठी ने जहरीले स्वर में कहा।

"तेरे को देवराज चौहान तक पहुँचने में बहुत मेहनत करनी—।"

"इधर देखती है ना तू। हर तरफ मेरे आदमी फैले हैं, जो भी सामने आया, उसे चीर-फाड़ कर सुखा देंगे।" देवेन साठी ने दरिन्दगी भरे स्वर में कहा—"मुझे अपने भाई की मौत का बदला लेना है और देवराज चौहान की ज़ान लेकर रहूँगा। देवराज चौहान की पत्नी की मुझे ज़रा भी परवाह नहीं है। एक औरत मेरा बिगाड़ ही क्या सकती है।"

"मैं भी तो औरत हूँ साठी।"

साठी ने मोना चौधरी को घूरा।

"देवराज चौहान की पत्नी साधारण औरत नहीं है। जो काम तुम करते हो, इन कामों में वो महारथी है।" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में कहा—"वो क्या करेगी मैं नहीं जानती, परन्तु इतना पता है कि देवराज चौहान को बचाने के लिए वो पूरी ताकत लगा देगी। मेरा ख्याल तो ये है कि वो तुझे किसी भी कीमत पर सफल नहीं होने देगी।"

देवेन साठी के होंठों से गुर्राहट निकली और पलट कर अपनी कारों और अपने आदमियों की तरफ बढ़ गया। तभी उसकी निगाह सड़क पार दूसरी तरफ खड़े विल्ला पर पड़ी जिसने अपने दोनों हाथों में एक-एक ब्रीफकेस उठा रखा था। साठी ने उस पर से नज़रें हटा ली और अपने आदमियों के पास जा पहुँचा।

पारसनाथ ने भी बिल्ला को देख लिया था।

"मैं अभी आया।" कहकर पारसनाथ सड़क पार खड़े बिल्ला की तरफ बढ़ गया।

बिल्ला फुटपाथ पर सतर्क सा खड़ा हर तरफ नज़रें घुमा रहा था। हाथों में थमे ब्रीफकेसों में एक-एक करोड़ रुपया भरा पड़ा था। साठी को देखकर उसे खुशी हुई कि सब ठीक चल रहा है। मोना चौधरी को भी वो देख चुका था और सोच रहा था कि खुदे साठी से बच गया तो मोना चौधरी से नहीं बच सकेगा। उसने पारसनाथ को आते देखा और देखता रहा।

पारसनाथ उसके पास पहुँच कर कड़वे स्वर में बोला।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"तुम कौन हो?" बिल्ला बोला।

"मेरी आवाज से भी नहीं पहचाना?"

"नहीं।"

"मैं पारसनाथ हूँ। उसने मुझसे फोन पर बात की थी।"

"ओह, पहचान गया।" बिल्ला ने दाँत फाड़े—"पर तूने मुझे कैसे पहचाना?"

"जब तू मोना चौधरी को देवराज चौहान के खबर बेंचकर ये ब्रीफकेस ले रहा था तो तब मैं कुछ दूर कार में बैठा तुझे देख रहा था।"

"समझ गया— ।"

"तूने ऐसा क्यों किया? पहले तो देवराज चौहान, जगमोहन और हरीश खुदे को अपने घर में ठहराया फिर उनके बारे में देवेन साठी और मोना चौधरी को बता दिया।" पारसनाथ के सपाट स्वर में कठोरता थी।

"मैंने उन्हें अपने घर में नहीं ठहराया। खुदे खुद ही देवराज चौहान और जगमोहन को मेरे यहाँ ले आया... ।"

"जो भी हो तूने गद्दारी क्यों की उनके साथ?"

बिल्ले की आँखों में चमक आ गई। बोला कुछ नहीं।

"देवराज चौहान और जगमोहन से तेरी क्या दुश्मनी है?"

"कोई दुश्मनी नहीं। मेरे यहाँ आने से पहले तो मैंने उन्हें देखा भी नहीं था।"

"फिर उन्हें मुसीबत में क्यों डाला?"

"मेरी बात तो खुदे से है। खुदे की पत्नी टुन्नी मुझे चाहती है।" बिल्ला ने दाँत फाड़कर कहा।

"तुझे चाहती है?"

"हाँ— ।"

"मुझे तो तेरे में ऐसा कुछ दिखता नहीं कि कोई शादीशुदा औरत तेरे पर फ़िदा हो।"

"वो मुझे बहुत चाहती है। मैं भी टुन्नी को बहुत चाहता हूँ। दो दिल मिलने को बेकरार है, हम तड़प रहे हैं एक-दूसरे के बिना। टुन्नी खुदे को फोन करके मेरे से बात करने को कहती है, पर वो बात कराता नहीं। आग दोनों तरफ बराबर लगी हुई है। लेकिन जब तक खुदे जिन्दा है, मेरा और टुन्नी का मिलन नहीं होने देगा।"

"तो तूने खुदे को मरवाने के लिए उनकी खबर साठी और मोना चौधरी को बेची।" पारसनाथ ने कड़वे स्वर में कहा।

बिल्ले ने सहमति से गर्दन हिलाई।

"तूने ये नहीं सोचा कि ऐसा करने से देवराज चौहान और जगमोहन खामखाह फंस जायेंगे।"

"मुझे क्या।" बिल्ले ने दाँत दिखाए—"अब तो मुझे दो करोड़ रुपया भी मिल गया। एक करोड़ मोना चौधरी से, दूसरा करोड़ देवेन साठी से। टुन्नी और मैं अब जीवनभर बहुत खुश रहेंगे। हम दोनों एक साथ रहेंगे और घूमा करेंगे। उसे ऊटी घुमाऊंगा। पूना और खंडाला घुमाऊंगा। महबालेश्वर की सैर करेंगे—आह, कितना मजा आयेगा टुन्नी के साथ। वो कीमती-कीमती साड़ियां पहनेगी उसे स्कर्ट भी पहनवाऊँगा। जींस भी पहनेगी। मैंने सब सोच रखा है कि हमने क्या-क्या करना है। खुदे के मर जाने पे वो भी बहुत खुश होगी। मेरी आज की रात टुन्नी के साथ ही बीतेगी। जश्न होगा हम दोनों के बीच। जिस्मों के मिलने का जनून। एक साथ पीने का जश्न और नई जिन्दगी की शुरुआत का जश्न—।"

पारसनाथ, बिल्ला के खुशी से चमकते चेहरे को देख रहा था।

"टुन्नी को पता है कि तूने ये सब किया है?" पारसनाथ ने उसे घूरा।

"उसे क्या जरूरत है बताने की। सरप्राईज दूंगा उसे, खुदे की मौत की खबर सुनाकर।"

"यहाँ क्यों आया है?"

"क्यों नहीं आऊँगा। खबर पक्की तो कर लूं कि खुदे मर गया, तभी तो टुन्नी के पास जाकर उसे बताऊँगा कि...वो देख, साठी अपने आदमियों के साथ गली में जा रहा है, अब खुदे की खैर नहीं।"

पारसनाथ ने उस तरफ निगाह मारी।

साठी अपने आदमियों के साथ तंग गली में प्रवेश कर गया था।

तभी पारसनाथ की निगाह बांके और रुस्तम पर पड़ी, जो अभी-अभी जाने कहाँ से आकर गली के किनारे के पास पहुँचते जा

रहे थे। फिर पारसनाथ ने बिल्ला को देखकर कहा।

"मुझे तेरी जिन्दगी ज्यादा लम्बी नहीं दिखती।"

"तेरी आंखें खराब हैं।" बिल्ला ने मुँह बनाया—"मैं और दुन्नी पूरे सौ साल तक जिएंगे।"

"दुन्नी तो जरूर जी लेगी। पर तेरी ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं।" कहकर पारसनाथ वहाँ से हटा और बांके-रुस्तम की तरफ बढ़ गया। चेहरे पर गम्भीरता और चिन्ता दिख रही थी।

बांके और रुस्तम गली के किनारे खड़े, भीतर देख रहे थे।

"कुछ सोचा है देवराज चौहान और जगमोहन को बचाने के लिए?" पारसनाथ पास पहुँचकर बोला।

दोनों ने फौरन पारसनाथ को देखा।

"साठी अपने आदमियों के साथ देवराज चौहान की तरफ गया है।" पारसनाथ होंठ भींचकर बोला।

"म्हारे को पतो नाही का होना हौवे।" बांके लाल राठौर चिन्तित स्वर में कह उठा—"म्हारे को तो नगीना बहणो बोल्लो हो तंम पीछो को रहो अंम मामलो संभाल लयो। म्हारी तो खोपड़ी में कुछ भी ना आयो हो कि का हौवे ईब—।"

"नगीना क्या करेगी, बताया नहीं?"

"म्हारे को कुछो ना बोल्लो हो।" बांके बोला।

"मैं तुम दोनों को बिल्ला के बारे में बताना चाहता हूँ। तुम उसे पूछ रहे थे ना?"

"वो किधर होईला बाप?" रुस्तम राव के होठों से गुर्राहट निकली।

"उस तरफ। सड़क पार। फुटपाथ पर खड़ा है। दोनों हाथों में ब्रीफकेस थाम रखे हैं, दिखा वो—।"

बांके और रुस्तम की निगाह बिल्ला पर जा टिकी।

"वो कबूतरों सा दिखो हो, विल्ला हौवे वो?"

"वही है।" कहकर पारसनाथ, मोना चौधरी की तरफ बढ़ता चला गया।

□□□

□□□

उस पतली गली के लोग अपने घरों में दुबक गये थे। देवेन साठी और उसके आदमियों की भीड़ से जैसे वो गली भर गई थी। गली के लोगों को जैसे एहसास हो गया था कि कुछ होने वाला है।

देवेन साठी ने वहाँ पहले से ही खड़े आदमी पर निगाह मारी।

उस आदमी ने एक कमरे की तरफ इशारा कर दिया। जिसका

दरवाजा पहले से ही खुला था और दस कदमों की दूरी पर था। देवेन साठी के चेहरे पर दरिन्दगी नाच उठी। उसने पास खड़े जाफर से कहा।

"नाप ले उसे।" स्वर में गुर्राहट थी—"वो हथियार डालकर बाहर निकलने वाले नहीं, कमरे से ही गोलियाँ चलायेंगे। उनकी जगह मैं भी होता तो ऐसा ही करता। परन्तु उनके पास गोलियाँ ज्यादा नहीं होंगी। वो जल्दी मर जायेंगे।"

जाफर फौरन रिवॉल्वर निकालकर एक आदमी के साथ आगे बढ़ा और वो दोनों खुले दरवाजे से दायें-बायें खड़े हो गये। दोनों के चेहरों पर खतरनाक भाव और हाथ में रिवॉल्वरें थी। बाकी के साथियों के हाथों में भी रिवॉल्वरें दिखने लगी थी और वे भी दीवारों के साथ चिपक गये थे। माहौल खतरनाक हो उठा था।

दाँत भींचे देवेन साठी आगे बढ़ा और खुले दरवाजे से एक तरफ खड़ा होकर गुर्रा उठा।

"देवराज चौहान।"

जवाब में कोई आवाज नहीं उभरी।

हर तरफ जैसे सन्नाटा छा गया था।

"देवराज चौहान, मेरी आवाज सुन रहा है?" देवेन साठी ने पुनः कठोर स्वर में आवाज लगाई।

"देवेन साठी हो तुम?" भीतर से देवराज चौहान की आवाज आई।

"तो बाहर की खबर है तुझे। पता है तुझे कि ये मैं हूँ।" देवेन साठी ने दाँत भींचकर कहा।

"सब पता है।" देवराज चौहान की आवाज भीतर से आई।

"तो भागा क्यों नहीं यहाँ से?"

"खबर जरा देर से मिली। तब तक तेरे आदमी बाहर फैल चुके थे।"

"तेरी मौत आ गई है कुत्ते।" देवेन साठी मौत भरे स्वर में कह उठा—"तूने मेरे भाई पूरबनाथ साठी को मारा। उसकी कीमत तुम्हें अपनी जान देकर चुकानी पड़ेगी। जगमोहन और खुदे भी तेरे साथ हैं?"

"हाँ—।"

"अब तू बाहर आता है या मेरे आदमी भीतर आयें?" साठी ने वहशी स्वर में कहा।

"मैंने तेरे भाई का जरूर मारा। परन्तु उसका मेरे हाथों मरना एक हादसा था, विलास डोगरा ने ये खेल—।"

"सुन चुका हूँ ये बकवास। मुझ पर इस बकवास का असर नहीं

होने वाला।" साठी ने दाँत पीसकर कहा—"तूने मेरे भाई की हत्या की। बदले में तुझे, जगमोहन और खुदे को अपनी जान गंवानी होगी। ये बात तेरे को पहले ही पता होनी चाहिये थी कि मेरे भाई की जान की कीमत, तुझे जान से चुकानी होगी। उस वक्त तेरे को मेरा ख्याल भी नहीं आया होगा हरामजादे—।"

जवाब में देवराज चौहान की आवाज नहीं आई।

कुछ पल बाद जगमोहन का स्वर सुनाई दिया।

"साठी। मैं जगमोहन हूँ।"

"बाहर निकल आओ तुम सब। आसान मौत दूंगा।" साठी ने खतरनाक स्वर में कहा—"वरना कुत्ते की मौत मरोगे।"

"तुझे हमारी बात सुननी चाहिये। समझनी भी चाहिये।"

"बाहर निकल—।"

"ये सब विलास डोगरा का—।"

"बाहर निकल—।"

"पहले तेरे को हमारी बात सुननी होगी साठी।" जगमोहन का तेज स्वर कमरे से बाहर आ रहा था—"विलास डोगरा ने नशीली दवा देकर हमसे चाल चली और हमें तुम्हारें भाई की हत्या करने को कह दिया। तब हम होश में नहीं थे और तुम्हारे भाई को मार बैठे। हमसे ये सब विलास डोगरा ने करवाया था। उस वक्त हमे किसी बात का होश नहीं...।"

"ऐसी बात थी तो सीधे मेरे पास क्यों नहीं आये?" साठी गुर्राया।

"तुम हमारी बात का यकीन नहीं करते।"

"तो अब क्यों बता रहे हो। अब कैसे यकीन कर लूंगा।" साठी ने दरिन्दगी भरे स्वर में कहा—"तुम्हारी इस बकवास पर कोई भी यकीन नहीं करेगा। इस तरह तुम लोग बच नहीं सकते। तुम तीनों अभी मरने वाले हो। मैं तीन तक गिनूंगा। अगर तुम लोग बाहर आ गये तो ठीक, नहीं तो मेरे आदमी भीतर आते हुए गोलियाँ चलाने लगेंगे। एक:...।"

एकाएक वहाँ मौत-सा सन्नाटा छा गया।

धधक रहा था देवेन साठी का चेहरा।

हर कोई रिवॉल्वर थामें कमरे में घुसने को तैयार खड़ा था।

तभी सुनसान पड़ी गली में कदमों की आवाज गूंजी।

"दो—।" कहते हुए साठी ने कदमों की आवाज की तरफ नज़रें घुमाई।

सामने से मोबाइल पर बात करती नगीना आ रही थी।

देवेन साठी खूंखारता भरी निगाहों से करीब आती नगीना को देख रहा था।

सन्नाटा बिखरा था वहाँ।

नगीना ने कान से फोन हटाया और साठी के पास आकर रुकी।

दाँत भींचे देवेन साठी, नगीना को देख रहा था।

नगीना ने हाथ में दबा फोन साठी की तरफ बढ़ाते शांत स्वर में कहा।

"अपनी पत्नी आरु से बात कर लो।"

"आरु—।" देवेन साठी बुरी तरह चौंका।

नगीना ने फोन वाला हाथ उसकी तरफ कर रखा था।

"बात करो, वो लाइन पर है।"

"तुम कौन हो?" साठी के होठों से गुर्राता स्वर निकला।

"नगीना। देवराज चौहान की पत्नी—।"

साठी एक बार फिर चौंका। नगीना को देखता रह गया।

"बात करो।" नगीना बोली—"वो कष्ट में है। उसे तुम्हारी सहायता की जरूरत है साठी।"

साठी ने मोबाइल थामकर बात की।

"अ-आरु—।" देवेन साठी के होठों से भिंचा स्वर निकला।

"ये क्या हो रहा है देवेन।" उधर से आरु की आवाज कानों में पड़ी—"ये जो चाहती है तुम मान क्यों नहीं लेते?"

साठी ने सुलगती निगाहों से नगीना को देखा।

नगीना का चेहरा शांत था।

"तुम ठीक हो?"

"हाँ, अभी तक तो ठीक—।"

"कब से हो तुम इनके पास?"

"कल से।"

"जाखड़ का फोन आया था दो घंटे पहले कि तुम और बच्चे गायब हो। गुंजन और अर्जुन कैसे हैं?"

"वो ठीक है तुम—।"

"इन्होंने तुम लोगों को कोई तकलीफ तो नहीं दी?" साठी गुर्राया।

"नहीं। ये—।"

"कहाँ हो तुम तीनों?"

"किसी घर में हैं। यहाँ पर पाटिल भी कैद है। हमें यहाँ से निकालो देवेन। बच्चे घबरा रहे हैं।" दूसरी तरफ से आरु ने परेशान स्वर में कहा।

"फिक्र मत करो। मैं सब ठीक कर दूंगा।" कहकर देवेन साठी ने फोन बंद किया और सुलगती नज़रों से नगीना को देखते हुए रिवॉल्वर निकाली और पलक झपकते ही नगीना की गर्दन से लगाकर गुर्राया—"आरु और बच्चे कहाँ हैं?"

नगीना ने हाथ बढ़ाकर साठी से मोबाइल लिया और जेब में रख लिया।

इस दौरान रिवॉल्वर की नाल नगीना की गर्दन से लगी रही।

"बोल।" साठी ने दाँत पीस कर कहा—"आरु और मेरे बच्चे—।"

"रिवॉल्वर हटा ले मुझ पर से।" नगीना गम्भीर स्वर में बोली—"गलती से गोली चल गई तो समझ ले तेरी बीवी-बच्चे गये। इस वक्त तेरे को उनके बारे में सोचना चाहिये। मेरे साथी हथियार लेकर उनके सिरों पर खड़े हैं।"

"बता वो कहाँ... ।"

"तूने कैसे सोच लिया कि मैं बता... ।"

तभी गली में दौड़ते कदमों की आवाज आई।

साठी ने तुरन्त गली में देखा।

सरवत सिंह तेजी से पास आता जा रहा था।

साठी के बाकी आदमी सतर्कता से पोज़िशन लिए खड़े थे।

"ये कौन है?" साठी ने गुर्राकर नगीना से पूछा।

"मेरा साथी—।" नगीना का स्वर शांत और सामान्य था।

"मेरे बीवी बच्चे कहाँ पर हैं।" साठी ने धधकते स्वर में कहा—"वरना तू नहीं बचने वाली—।"

"रिवॉल्वर हटा ले साठी।" सरवत सिंह पास पहुँचकर सख्त स्वर में बोला—"तूने ज़रा भी गड़बड़ की तेरा पूरा का पूरा परिवार गया। यहाँ पर हमारे और लोग भी हैं। बात बढ़ी तो तू ज़िन्दा गली से बाहर नहीं निकल सकेगा।"

साठी के होंठों से गुर्राहट निकली।

सरवत सिंह ने अपना हाथ आगे बढ़ाया कि उसका रिवॉल्वर, नगीना की गर्दन से हटा सके।

"रुक जा।" नगीना बोली—"ये खुद ही रिवॉल्वर हटायेगा।"

साठी ने दाँत पीसते हुए रिवॉल्वर हटाई और गुर्राकर कह उठा।

"क्या चाहते हो तुम?"

"अभी भी नहीं समझे कि मैं देवराज चौहान की सलामती चाहती हूँ।" नगीना ने कहा।

"वो हरामजादा मेरे भाई का हत्यारा है। वो बच नहीं—।"

"तुम्हारे भाई का असली हत्यारा विलास डोगरा है। तेरे को ये बात माननी चाहिये।"

"मेरे भाई को देवराज चौहान– ।"

"साठी।" नगीना ने ठोस स्वर में कहा–"तेरे को अपनी पत्नी और बच्चों की जान प्यारी है कि नहीं?"

साठी होंठ भींचकर खूनी निगाहों से, नगीना को देखने लगा।

"देवराज चौहान की तरफ टेडी आँख करके भी देखा तो तेरा परिवार खत्म।" नगीना का स्वर सख्त हो गया–"ये फैसला तेरे को ही करना है कि अपने परिवार की तुझे जरूरत है कि नहीं– ।"

साठी ने कुछ लम्बी सांसें ली और अपने पर काबू पाने की चेष्टा की।

नगीना और सरबत सिंह की निगाह, साठी पर ही थी।

"तुम्हारा ख्याल गलत है कि इस तरह तुम देवराज चौहान और जगमोहन को बचा लोगी।" साठी खुद को संभालने के प्रयत्न में था।

"मतलब कि तुझे अपने परिवार की जरूरत नहीं– ।" नगीना के होंठ भिंच गये।

"जरूरत है।"

"तो खामोशी से यहाँ से चला जा।"

"इस तरह तुम देवराज चौहान को कब तक बचाओगी?" साठी नगीना को सुलगती निगाहों से देखता कह उठा–"मैं जल्दी ही अपने परिवार को ढूंढ लूंगा और फिर तुम में से कोई भी जिन्दा नहीं बचेगा।"

"तू वहाँ तक कभी नहीं पहुँच सकता, जहाँ तेरी बीवी-बच्चे हैं।" नगीना ने सिर हिलाकर कहा–"पहुँच सकता है तो पहुँच के दिखा देना। अब ये खेल खतरनाक हो गया है साठी। मैं सिर्फ ये तेरे को बताना चाहती हूं कि देवराज चौहान निर्दोष है। जगमोहन ने भी कुछ नहीं किया। तुम्हारे भाई की मौत का मुझे अफसोस है। देवराज चौहान ने तेरे भाई को गोली मारी थी। मैं इस बात से इन्कार नहीं करती। परन्तु तब देवराज चौहान और जगमोहन, विलास डोगरा द्वारा धोखे से पिलाई गई नशीली दवा के असर में थे और होशो-हवास में नहीं थे। तब उन्होंने वो ही किया जो कि विलास डोगरा ने करने को कहा था।"

"तुम्हारी ये बात मैं कभी नहीं मान सकता।"

"सच्चाई जानने के लिए तेरे को अब्दुल्ला से मिलना चाहिये, जिसने 'कठपुतली' नाम का वो खतरनाक नशा तैयार करके विलास डोगरा को दिया था। अब्दुल्ला के बारे में पारसनाथ से पूछ लेना कि वो कहाँ मिलेगा।"

साठी आग में सुलगता तिलमिला रहा था। नगीना को खा जाने वाली नज़रों से देख रहा था।

"अपने आदमियों को ले जा यहाँ से। देवराज चौहान से दूर रहना।" नगीना बोली।

"ये कब तक चलेगा।" साठी गुस्से से बोला—"मेरी पत्नी, मेरे बच्चे कब तक तुम लोगों के पास... ।"

"जब तक देवराज चौहान विलास डोगरा से हिसाब बराबर नहीं कर लेता।"

"इसमें तो बहुत वक्त... ।"

"ज्यादा वक्त नहीं लगेगा और इस बीच तेरे सामने भी विलास डोगरा का सच लाया जायेगा।"

"मुझे विलास डोगरा से कोई मतलब नहीं, मेरे भाई को देवराज चौहान ने मारा— ।"

"ये ही बात तो तेरे को समझानी है।" कहने के साथ ही नगीना ने सरवत सिंह को इशारा किया।

सरवत सिंह आगे बढ़कर उस खुले दरवाजे से भीतर प्रवेश कर गया।

"तुमने मेरी पत्नी और बच्चों का अपहरण क्यों किया था। कल तक तो मुझे पता भी नहीं था इस जगह के बारे में।" साठी बोला।

"मैं तेरे को समझाने की तैयारी कर रही थी कि आज तू यहाँ पहुँच गया।"

"अब तुम भी मेरे हाथों से नहीं बचोगी।" साठी ने दाँत भींचकर कहा।

तभी सरवत सिंह, देवराज चौहान, जगमोहन और हरीश खुदे बाहर निकले।

खुदे का चेहरा घबराया हुआ, फक्क दिख रहा था।

देवराज चौहान और जगमोहन के चेहरों पर गम्भीरता थी।

देवेन साठी ने तीनों को मौत की सी निगाहों से देखा।

"तेरा दुश्मन विलास डोगरा है, मैं नहीं।" देवराज चौहान बोला।

"तुम तीनों मेरे हाथों बहुत जल्द बुरी मौत मरोगे।" साठी दाँत किटकिटा कर, सुलगते स्वर में कह उठा।

"मैं तेरे से जल्दी मिलूंगी साठी।" नगीना बोली।

साठी ने मौत से भरी निगाहों से नगीना को देखते हुए कहा।

"मेरी पत्नी और बच्चों को कुछ हुआ तो... ।"

"वो आराम से है। तुम्हें उनके बारे में चिन्ता करने की जरूरत नहीं। नगीना कह उठी।

साठी के क्रोध से भरे चेहरे पर कुछ बेचैनी उभरी।

"अपनी पत्नी और बच्चों की खातिर मैं तुम लोगों के लिए विलास डोगरा को मार सकता हूँ।" साठी ने कहा।

"जरूरत नहीं।" देवराज चौहान का स्वर कठोर हो गया—"विलास डोगरा से मेरा हिसाब है, वो मैं ही निपटाऊँगा।"

साठी की निगाह हरीश खुदे की तरफ उठी।

खुदे घबराकर जगमोहन के पीछे हो गया।

होंठ भींचे, अपने पर काबू पाते साठी ने अपने आदमियों को इशारा किया। उसके आदमी इशारा पाते ही वहाँ से हटे और गली के बाहर की तरफ बढ़ते चले गये। साठी ने नगीना को देखकर भिंचे स्वर में कहा।

"मेरे परिवार की खबर देने तेरे को मेरे पास आते रहना होगा।"

"जरूर आऊँगी।" नगीना बोली।

"मेरे परिवार को छोड़ दे। वादा करता हूँ कि एक महीना, इन तीनों को कुछ नहीं कहूँगा।" साठी बोला।

"अभी ऐसे ही चलने दे। बाकी बात फिर करेंगे।" नगीना कह उठी।

होंठ भींचे देवेन साठी पलटा और गली के बाहर की तरफ बढ़ता चला गया।

□□□
□□□

बिल्ला अभी तक दोनों हाथों में ब्रीफकेसों को थामें खड़ा था। अब तो ब्रीफकेस थामें-थामें उसकी बाँहें भी दर्द होने लगी थी। लेकिन बाँहों के दर्द को थोड़ी देर की तकलीफ सोच कर मजे से सह रहा था। टुन्नी का खूबसूरत चेहरा रह-रहकर आँखों के सामने नाच रहा था। उसे ऐसा लगता जैसे टुन्नी बाँहें फैलाये उसकी तरफ बढ़ी चली आ रही हो तो कभी लगता उसे देखते ही टुन्नी ने शर्माकर सिर झुका लिया। ऐसे ही सपनों में तैर रहा था बिल्ला। साथ ही उसके कान गोलियों की आवाजों को सुनने के लिए तरस रहे थे। साठी को उसने अपने आदमियों के साथ गली में जाता देख लिया था। परन्तु इस बात को लेकर वो उलझन में था कि मोना चौधरी गली के किनारे पर क्यों मौजूद है। वो देवराज चौहान को मारने क्यों नहीं गई?

किसी भी पल वो गोलियाँ चलने की आशा कर रहा था। नज़रें गली पर थी। बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव की तरफ उसने खास ध्यान नहीं दिया जो कि उसके दायें-बायें कुछ फासले पर खड़े थे।

तभी बांकेलाल राठौर उसके पास आ पहुँचा और गली को देखता बोला।

"थारे को का लागे कि देवराज चौहानों मारो जाये।"

"वो मरे ना मरे, पर खुदे जरूर मर जाये।" अपनी सोचों में गुम बिल्ला कह उठा।

"इन्हों ब्रीफकेसों में नोटो भरो हौवे।"

"पूरे दो करोड़ हैं, आज तो मजा आ...।" कहते-कहते बिल्ला ठिठका और बांके को देखा। चेहरे पर अजीब से भाव आ गये—"तुम कौन हो?"

"बोत देर बादो महारा ख्याल आयो हो। अंम बांके लाल राठौर हौवे हो।"

"तुम्हें कैसे पता कि गली में क्या होने वाला है।"

"महारे को सबो पतो हौवे।" बांके लाल राठौर का स्वर कठोर हो गया—"तनने देवराज चौहानों के इधरों होने की खबरो को साठो और मोननो चौधरी को बेचो हौवे। वो ही नोटो को ब्रीफकेसों में ठूंसे तंम घूमो हो।"

"उसकी बात पर बिल्ला क कर उसे देखने लगा।

"ला महारे को दे दयो अपणा बोझो।" बांके ने ब्रीफकेसो की तरफ हाथ बढ़ाया।

"खबरदार।" बिल्ला एक कदम पीछे हटा—"हाथ मत लगाना ब्रीफकेसों को।"

"थारी मर्जी। अंम तो सोचो हो, तंम थक गयो हो, बोझा उठा-उठा के। थारे को पतो हौवे अंम कोणो हौवे?"

"कौन हो तुम?"

"देवराज चौहानों का भलो चाहनो वालो, उसो के दोस्त हौवे अंम। तनने देवराज चौहानों को मुसीबतों में डालो हो। ईब उधरो जो भी हौवे, पर तंम तो किसी भी सूरतों में बचों ना। अंम थारे को 'वड' दयो।" बांके के स्वर में खतरनाक भाव आ गये थे।

"त-तुम मेरे को जान से मारने की धमकी दे रहे हो। म-मैं पुलिस को बुला...।"

"पुलिस वालो महारे बगल के घरो में रहो हो। अंम उसो को बुला लयो, तबो तम...।"

तभी रुस्तम राव पास पहुँचा और बिल्ला को घूरते कह उठा।

"तेरा मौत आईला बाप।"

"तुम?" बिल्ला ने घबराकर रुस्तम राव को देखा फिर बांके को देखा—"तुम लोग मेरे से दो करोड़ लेना चाहते हो, लेकिन मैं नहीं दूंगा। पुलिस को बुला लूंगा। ये पैसा टुन्नी के लिए है। वो खुश हो जायेगी, इतना पैसा देखकर और मेरे से प्यार—।"

"तेरी मौत आईला बाप।" रुस्तम राव के स्वर में खतरनाक भाव थे—"तू देवराज चौहान को फंसाईला। पर वो नेई फंसेला। उधर देख गली में, वो सब लोग वापस आईला। गोली नहीं चलेला।"

बिल्ला की निगाह गली की तरफ उठी।

गली में से देवेन साठी और उसके आदमियों को वापस आते देखा।

बिल्ला के चेहरे पर अजीब से भाव आ गये।

"ये क्या हो रहा है। वो वापस क्यों लौट रहे हैं। उन्होंने उन तीनों को मारा क्यों नहीं?" बिल्ला के होठों से निकला।

"दीदी मामला संभालेया बाप। पर तेरे को अब कौन संभालेगा।"

"दीदी।" बिल्ला ने रुस्तम राव को देखा।

रुस्तम राव कठोर निगाहों से बिल्ला को देख रहा था।

"वो तेरा घर होईला जिधर देवराज चौहान, जगमोहन छिपेला।"

"हाँ। वहाँ पर हरीश खुदे भी है।"

"तूने ये खबर बेचेला साठी और मोना चौधरी को कि वो उधर होईला।"

"हाँ। मैंने टुन्नी से मिलना है। वो भी मुझे चाहती है। पर हरीश खुदे की वजह से हम मिल नहीं पा।"

"छोरे।" बांके लाल राठौर गुर्राया—"वड दयो इसो को।"

तभी रुस्तम राव का हाथ घूमा और कैरेट की शेप में, वेग के साथ बिल्ला की गर्दन पर पड़ा।

'कड़ाक'

मध्यम सी, घुटी सी, हड्डी टूटने की आवाज उभरी। बिल्ला की आँखें फटती चली गई। वो नीचे गिरने को हुआ कि बांके ने फौरन उसे संभाल कर सहारा दिए खड़ा रखा।

बिल्ला मर चुका था।

हाथों में थमें दोनों ब्रीफकेस छूटकर नीचे जा गिरे थे।

रुस्तम राव ने तुरन्त ब्रीफकेसों को उठा लिया। चेहरे पर कठोरता नाच रही थी।

बांकेलाल राठौर ने आहिस्ता से बिल्ला के शरीर को फुटपाथ पर लिटा दिया। उन्हें इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं थी कि कोई उन्हें देख रहा है कि नहीं।

"छोरे काम तमाम हो गयो।"

"निपटेला बाप।"

दोनों की निगाह सामने गली की तरफ थी।

गली के बाहर खड़ी कारों की तरफ साठी और उसके आदमी बढ़ रहे थे। साठी के चेहरे पर गुस्सा दूर से ही नज़र आ रहा था। कार के पास पहुँचकर ठिठकते फिर उसे पलटकर फुटपाथ पर मोना चौधरी की तरफ बढ़ते देखा।

"बहनो ने मामलों को संभाल लयो हो छोरे—।"

"अपुन को भी ऐसा ही लगेला—।" रुस्तम राव की सतर्क निगाहें हर तरफ जा रही थी—"चलेला बाप—।"

दोनों गली की तरफ, सड़क पार करते, बढ़ गये।

मोना चौधरी के पास पारसनाथ और महाजन खड़े थे।

देवेन साठी उनके पास पहुँचते ही सुलगते स्वर में कह उठा।

"तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि देवराज चौहान की पत्नी ने मेरे परिवार को बंधक बना रखा है।"

साठी के शब्दों पर तीनों चौंके।

"परिवार को बंधक?" मोना चौधरी के होठों से निकला।

"मेरी पत्नी और दोनों बच्चे उसकी कैद में है। ये बात मुझे पहले बता देती तो मैं कोई और तैयारी—।"

"मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता। मुझे तो ये भी नहीं मालूम कि तुम्हारा परिवार भी है।"

साठी दाँत भींचे मोना चौधरी को देखता रहा।

"हुआ क्या?" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"देवराज चौहान और जगमोहन की मौत से ज्यादा मुझे अपने परिवार की जरूरत है।" देवेन साठी गुर्राया।

"तो उन्हें जिन्दा छोड़कर वापस जा रहे हो।" मोना चौधरी गम्भीर थी।

"वो ज्यादा दिन जिन्दा नहीं रहेंगे।" साठी ने दाँत भींचकर कहा—"तुम नहीं जानती कि मेरे परिवार को कहाँ रखा गया है?"

"मैं कुछ नहीं जानती।"

"मेरी खातिर अगर तुम ये बात पता करो तो बहुत मेहरबानी होगी।" देवेन साठी बहुत गुस्से में था।

"तुम्हें विलास डोगरा के बारे में उन्होंने कुछ नहीं कहा?"

"उनकी बकवास नहीं सुनना चाहता मैं—।"

"शायद वो बात सच है।"

"ये तुम कहती हो कि वो सच कह रहे हैं। हैरानी है मुझे।" साठी ने गुस्से से झल्लाकर कहा—"कल तक तो तुम देवराज चौहान की जान के पीछे थे और अब तुम ऐसी बातें कर रही हो।"

"ये बात पारसनाथ ने पता लगाई है कि वो सही कह रहे हैं।"

"मेरे भाई को गोली किसने मारी?"

"देवराज चौहान ने।"

"तो मेरे भाई का हत्यारा कौन हुआ?"

"देवराज चौहान—।"

"ये ही बात—।"

"साठी।" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में कहा—"ये काम विलास डोगरा ने देवराज चौहान से करवाया। पहले उसे 'कठपुतली' नाम की नशे की दवा दी, जिसका असर तीन दिन तक रहता है। उस नशे में जो भी किया जाये, होश आने पर कुछ याद नहीं रहता। उस दौरान विलास डोगरा ने उन्हें तुम्हारे भाई और मुझे मारने के लिए कहा। देवराज चौहान और जगमोहन को तब नहीं पता था कि वो क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे थे। विलास डोगरा ने कहा और उन्होंने तुम्हारे भाई पूरबनाथ साठी को मार दिया और मेरी जान भी लेने के लिए मेरे पास आये। परन्तु मैं खुद को किसी तरह बचा गई। इसी दौरान उस पर चढ़ा 'कठपुतली' का नशा उतरा तो वो सामान्य हो गये और उन्हें कुछ नहीं पता चला कि उन्होंने बीते तीन दिनों में क्या किया।" ये सब जानने के लिए पढ़ें अनिल मोहन का पूर्व प्रकाशित उपन्यास 'सबसे बड़ा गुण्डा'—"ये तो अच्छा हुआ कि वक्त रहते पारसनाथ ने मामले को भांप लिया और सच्चाई हमें पता चल गई। मेरे ख्याल में तुम्हें इस बात पर यकीन कर—।"

"मेरे भाई को देवराज चौहान ने गोली मारी—।" देवेन साठी ने दाँत पीसकर कहा।

"तब वो विलास डोगरा का आदेश मान रहा था। खुद अपने होश में नहीं था।"

"तुम उसकी साइड क्यों ले रही हो?"

"मैं तुम्हें सच बता रही हूँ कि तब असल में क्या हुआ था। देवराज चौहान की दुश्मनी थी तुम्हारे भाई से?"

"नहीं—।"

"तो उसने क्यों मारा पूरबनाथ साठी को?"

देवेन साठी के चेहरे पर दरिन्दगी नाच रही थी।

"तुम सब समझ रहे हो, परन्तु सच को स्वीकार नहीं कर रहे।" महाजन कह उठा—"तुम्हें मान लेना—।"

"मैं तभी मानूंगा जब विलास डोगरा अपने मुँह से ये बात कहेगा।"

"तुम क्या सोचते हो कि विलास डोगरा अब क्या ऐश करेगा।" महाजन ने गम्भीर स्वर में कहा—"अब देवराज चौहान और जगमोहन की जान वक्ती तौर पर बच गई है। वो विलास डोगरा की ऐसी-तैसी कर देगा। मुझे नहीं लगता कि विलास डोगरा जिन्दा बच पाये। हो सकता है कि देवराज चौहान तुम्हारी एक मुलाकात विलास डोगरा से भी करा दे कि जो सच है, वो तुम उसके मुँह से जान सको। देवराज चौहान जानता है कि वो वक्ती तौर पर तुमसे बचा है। तुमने अपने परिवार को पा लिया तो उसे मार दोगे। ऐसे में वो फुर्ती से विलास डोगरा की तरफ बढ़ेगा कि अपने काम को जल्दी से जल्दी पूरा कर सके।"

"मुझे सिर्फ अपने परिवार को वापस पाने और देवराज चौहान, जगमोहन और खूदे की मौत से मतलब है। मेरे भाई को गोली देवराज चौहान ने मारी और इस बात से वो इन्कार नहीं कर रहा।" देवेन साठी गुर्राकर कह उठा—"इसके अलावा मुझे किसी बात से मतलब नहीं है।"

"तुम्हारे भाई का असली हत्यारा विलास डोगरा है।" पारसनाथ ने कहा।

"पहले देवराज चौहान।" साठी ने मौत भरे स्वर में कहा—"उसके बाद विलास डोगरा से बात करूंगा।"

"देवराज चौहान तेरे लिए विलास डोगरा को जिन्दा नहीं छोड़ने वाला।" पारसनाथ ने कहा—"अगर अपने भाई की मौत का बदला लेना है तो देवराज चौहान से बात करके, उसे विलास डोगरा से दूर रहने को कह दे फिर...।"

"मेरे भाई को देवराज चौहान ने गोली मारी—।" साठी ने खतरनाक स्वर में कहा।

"भाड़ में जा।" महाजन के होठों से निकला—"तेरे को बात समझ में नहीं आने वाली—।"

"तेरी ये हिम्मत कि मुझसे इस तरह बात करें।" दाँत पीसते हुए साठी ने फौरन रिवॉल्वर निकाल ली।

उसी पल मोना चौधरी आगे आ गई।

देवेन साठी और मोना चौधरी की नज़रें मिली।

"अपने पर काबू रख साठी। पहले ही तू मुसीबत में है। ये सब करके अपनी मुसीबत क्यों बढ़ाता है। हमारी कही बात तेरे को समझ में नहीं आ रही तो महाजन का इस लहजे में कहना, सामान्य बात है।"

साठी के चेहरे पर क्रोध नाच रहा था।

उसे रिवॉल्वर निकालते देख, जाफर और बाकी सभी भी वहाँ पहुँचने लगे थे।

"हुक्म साठी साहब?" जाफर कठोर स्वर में बोला। उसकी निगाह इन तीनों पर जा रही थी।

देवेन साठी ने खुद पर काबू पाया और रिवॉल्वर जेब में रखते महाजन से कहा।

"दोबारा कभी मुझसे इस तरह बात मत करना।"

"अगर मुझे पता होता कि तू इस तरह चिढ़ जायेगा तो मैं इस तरह बात ना करता।" महाजन बोला।

देवेन साठी पलटकर अपनी कारों की तरफ बढ़ गया।

बाकी [illegible] उसके साथ चल पड़े।

"[illegible] साठी ने कहा—"अपने लोगों को देवराज चौहान के पीछे ल[illegible]

"मैं [illegible] चुका हूँ।" जाफर ने कहा।

"मेरे बीवी-बच्चों का पता कर कि उन्हें कहाँ रखा है इन लोगों ने। देवराज चौहान की पत्नी ने मेरी कमजोरी पर हाथ रख दिया। वरना आज देवराज चौहान, जगमोहन और खुदे ना बचते। अब तक मर चुके होते।" साठी मौत भरे स्वर में कह रहा था—"इस बात की मुझे बहुत तकलीफ हो रही है, लेकिन अपने परिवार की खातिर मुझे सब्र करना पड़ा।"

❑❑❑

❑❑❑

मोना चौधरी, पारसनाथ, महाजन, साठी और उसके आदमियों को कारों में बैठकर जाते देखते रहे। तीनों के चेहरों पर गम्भीरता ठहरी हुई थी। महाजन उस खामोशी को तोड़ते हुए कह उठा।

"साठी ये मानने को तैयार ही नहीं कि तब देवराज चौहान और जगमोहन से विलास डोगरा ने काम लिया था। वो कठपुतली के नशे में थे।"

"वो ठीक कहता है कि उसके भाई को गोली देवराज चौहान ने मारी। वो आसानी से दूसरी बात क्यों सुनेगा।" मोना चौधरी ने कहा—"उसकी नज़रों में उसके भाई का हत्यारा देवराज चौहान ही है।"

"जो कुछ भी हुआ था, वो वास्तव में बहुत अजीब और खतरनाक रहा था।" पारसनाथ ने कहा।

"अब हमें ये देखते रहना है कि देवराज चौहान क्या करता है।"

मोना चौधरी ने कहा—"मेरे ख्याल में वो विलास डोगरा की तरफ बढ़ेगा। हमें इस मामले का अंत देखना है कि अब क्या होगा। बेला ने साठी के परिवार को कैद करके, साठी के पांवों को बांध दिया है। परन्तु साठी भी ज्यादा देर बंधे रहने वाला नहीं। हो सकता है वो जल्दी ही अपने परिवार को तलाश कर ले। ऐसा हो गया तो साठी का बुरा कहर देवराज चौहान पर टूट पड़ेगा आने वाले व कल में कुछ भी हो सकता है।"

तभी उन्हें गली में से बाहर आते देवराज चौहान, जगमोहन, नगीना, खुदे, सरबत सिंह दिखे और दूसरी तरफ से बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव आकर उनसे आ मिले। रुस्तम राव के हाथ में दोनों ब्रीफकेस देखकर पारसनाथ के होंठ सिकुड़े।

"वो दोनों ब्रीफकेस रुस्तम राव के पास कैसे।" महाजन बोला—"वो तो बिल्ला के पास थे।"

"बिल्ला का काम कर दिया लगता है इन्होंने।" पारसनाथ ने कहा—"उसने जो किया, वैसी ही सजा दी होगी इन्होंने।"

"लेकिन ये तो बिल्ला को पहचानते नहीं थे।" महाजन ने पारसनाथ को देखा।

"मैंने उन्हें बताया था कि बिल्ला किधर खड़ा है।" पारसनाथ ने सपाट स्वर में कहा।

"ओह।"

तब तक देवराज चौहान की निगाह, इधर इन पर पड़ चुकी थी। फिर वो इसी तरफ बढ़ आया।

"हमारे पास क्यों आ रहे हैं ये?" महाजन कह उठा।

मोना चौधरी गम्भीर, शांत सी देवराज चौहान को आते देख रही थी।

देवराज चौहान पास पहुंचा और तीनों को देखने के बाद, गम्भीर स्वर में मोना चौधरी से कहा।

"मैं नहीं जानता कि मैंने कब तुम्हें मारने की कोशिश की। तब का मुझे कुछ भी याद नहीं है। विलास डोगरा ने मुझे और जगमोहन को खास तरह का नशा दे रखा था। परन्तु बाद में मुझे पता चला कि मैंने ऐसा कुछ किया है। मेरे से तुम्हें जो तकलीफ हुई, उसके लिए माफी चाहता हूं।"

मोना चौधरी शांत सी, देवराज चौहान को देखती रही।

देवराज चौहान पलटा और वापस चला गया।

"इस पर नज़र रखकर हमें देखना है कि ये क्या करता है अब।" मोना चौधरी गम्भीर स्वर में कह उठी।

□□□
□□□

वे सब बंगले पर पहुंचे।

देवराज चौहान और जगमोहन को अब जैसे होश आ रहा था। उस नशे से उभरने के बाद उन्होंने खुद को मुसीबत में पाया था और अब उन्होंने चैन से भरी सांस ली थी कि वे खुले घूम सकते हैं। परन्तु वो ये भी जानते थे कि उनकी ये आजादी उधार की है। जब तक देवेन साठी का परिवार उनके कब्जे में है, तब तक ही साठी चुप है। परन्तु उन्हें एक हद से ज्यादा कब्जे में नहीं रखा जा सकता। साठी के सब्र का पैमाना कभी भी फूट सकता है।

देवराज चौहान ने नगीना से पूछा।

"साठी का परिवार कहां है?"

"सरबत सिंह के घर।"

देवराज चौहान ने सरबत सिंह को देखकर गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम मेरे बहुत काम आ रहे हो।"

"तुम भी तो मेरे बहुत काम आये थे।" सरबत सिंह कह उठा।

"लोग भूल जाते हैं।" जगमोहन बोला—"खुशी की बात है कि तुम्हें याद तो है।"

"मैं भूलने वालों में से नहीं हूं।"

"तुम।" देवराज चौहान ने नगीना से कहा—"साठी के परिवार के पास जाओ। बाकी का मामला देखना मेरा काम है।"

"मैं नहीं जा सकती। सरबत सिंह भी नहीं जायेगा।" नगीना बोली—"देवेनं साठी अब सतर्क हो चुका है। वो हम पर नज़र रखवा रहा होगा कि हम कब उस जगह पर जाते हैं, जहां उसका परिवार है।"

देवराज चौहान के होंठ भिंच गये।

"भाभी ठीक कह रही है।" जगमोहन बोला—"साठी को अपनी पत्नी बच्चे मिल गये तो वो हमको नहीं छोड़ने वाला। वैसे भी वो ज्यादा देर चुप नहीं बैठेगा। हमारे पास वक्त कम है। हमें विलास डोगरा को निपटा देना चाहिये।"

देवराज चौहान के चेहरे पर दरिन्दगी मचल उठी।

"भाभी, सोहन लाल, वहां उन सब लोगों को संभाल लेगा?" जगमोहन ने पूछा।

"उसके लिए कुछ दिक्कत तो जरूर आयेंगी। वहां पाटिल भी है।" नगीना ने सोच भरे स्वर में कहा—"उसे सामान लाने बाहर भी जाना पड़ेगा। उसके पास एक और कोई होता तो ज्यादा ठीक था।"

"आपुन उधर जाईला बाप।" रुस्तम राव कह उठा।

सबकी निगाह रुस्तम राव की तरफ उठी।

"आपुन को घर का पता बताईला कि वो किधर होईला।" रुस्तम राव ने कहा—"आपुन सीधा उधर नेई जायेला इधर से आफिस पौंचेला और उधर से अपने घर पर रात टिकेला सुबह फिर आफिस पौंचेला। उसके बाद सावधानी से उधर पौंचेला आपुन पर कोई नज़र भी रखेला तो गच्चा खाईला बाप। आपुन सब फिर करेला बाप।"

देवराज चौहान और जगमोहन की नज़रें मिली।

"सोहनलाल भैया के पास रुस्तम का पहुंच जाना ठीक रहेगा।" नगीना बोली—"अगर ये खामोशी से वहां पहुंचे तो।"

"आपुन उधर सेफ पौंचेला।"

"रुस्तम।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"अगर तुम्हारे पीछे-पीछे साठी के आदमी भी वहां पहुंच गये तो खेल खत्म हो जायेगा। साठी को अपना परिवार मिलने की देर है कि उसने हमारे पीछे पड़ जाता है।"

"आपुन पर भरोसा करेला बाप। साठी को कुछ भी पता नेई लगेला।" रुस्तम राव ने दृढ़ स्वर में कहा।

"सरबत भैया, रुस्तम को अपने घर का पता समझा दो।"

सरबत सिंह, रुस्तम राव को लिए कुछ कदम दूर हट गया।

"यो म्हारा बोझा भी हलको करो हो।" बांके लाल राठौर कह उठा।

"तेरे को क्या हुआ?" जगमोहन बोला।

"अंम कबो से यो दोनों ब्रीफकेसों को उठाये घूमो हो। भोत से नोट भरो हो। यो संभालो ईव।"

"ये कहां से आये?"

"बिल्ला से।"

खामोश खड़ा खुदे हड़बड़ा कर कह उठा।

"बिल्ला? वो हरामजादा कहां है, सबसे पहले मैं उसे... ।" खुदे ने कहना चाहा।

"वो तो भगवानों के घरों में पौंच के चैनी की बंसी बजायो हो।"

"भगवान के घर?" खुदे नहीं समझा।

"महारे छोरे ने बिल्ला को 'वड' दयो हो।"

"मार दिया?"

"हां। वो गद्दारों को उसी की सजा दे दयो हो।"

"हरामजादा।" खुदे दांत भींचकर कह उठा।

"तुम म्हारे को गाली दयो हो?" बांके लाल राठौर का हाथ मूंछ पर पहुंच गया।

"विल्ले को दे रहा हूं। उसने धोखेबाजी कर के हमें साठी के हाथों फंसवा दिया था।" हरीश खुदे ने कठोर स्वर में कहा—"मरते-मरते बचे हैं हम। साठी तो मुझे घूर रहा था जैसे कच्चा खा जाना चाहता हो मुझे।"

"उसे बातों का थारे को ईव डर लागे हो?"

"रहने दो। तब तो मेरी टांगें जोरों से कांप रही थी।" खुदे ने गहरी सांस ली।

"अभी भी तुम खतरे से बाहर नहीं हो।" जगमोहन बोला—"साठी कभी भी कुछ भी कर सकता है।"

खुदे सूखे होठों पर जीभ फेर कर रह गया।

तभी सरबत सिंह और रुस्तम राव वापस पास आ पहुंचे।

"आपुन को सही से सरबत सिंह के घर का पता लगेला बाप।" रुस्तम राव ने कहा।

"तो तुम अभी यहां से चले जाओ।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"सोहनलाल को फोन पर बता देंगे कि तुम उनके पास आने वाले हो। सतर्कता बरतना। अगर साठी के आदमी तुम पर नज़र रखे हों, वहां मत जाना।"

रुस्तम राव वहां से चला गया।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगा कर कश लिया। चेहरे पर दरिन्दगी नाच उठी थी।

"हमारे पास वक्त कम है।" जगमोहन क्रोध भरे स्वर में कह उठा—"अब क्या करने का विचार है तुम्हारा?"

"विलास डोगरा।" देवराज चौहान के होठों से गुर्राहट निकली—"वो हमारा सबसे बड़ा मुजरिम है। हम आराम से जिन्दगी बिता रहे थे और उसने हमें यें कहकर बुलाया कि वो किसी मुसीबत में फंसा है। हमारी सहायता की जरूरत है।" पढ़ें 'सबसे बड़ा गुण्डा'—"और हमारे वहां पहुंचने पर उसने हमें स्कवैश में कठपुतली नाम की नशीली दवा मिला कर पिला दी। हम होश खो बैठे और उसके इशारों पर चलने लगे। हमारे द्वारा वो पूरब नाथ साठी और मोना चौधरी से अपनी बेइज्जती का बदला लेना चाहता था। उसने हमें मुसीबतों से भरे कुएँ में धकेल दिया और अपनी इस हरकत को वो मेरे सामने फोन पर शान से स्वीकार भी कर चुका है। विलास डोगरा अब हमारे हाथों से नहीं बचेगा। साठी गलतफहमी में हमारी जान के पीछे है, जबकि उसकी हत्या में विलास डोगरा का ही हाथ है। हमें तो अब उनके द्वारा दिए गये नशे में ये भी नहीं पता था कि हम क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं। पूरबनाथ साठी को मारना है तो मारना

है मार दिया। मोना चौधरी को मारना है, ये ही धुन दिमाग में रही और उसके पीछे पड़े रहे। परन्तु वो—।"

"विलास डोगरा पर हाथ डालना मजाक की बात नहीं है।" खुदे ने कहा—"वो साठी से भी खतरनाक—।"

"इन हालातों में वो हमारे लिए, हमारे सामने कुछ भी नहीं है।" जगमोहन दांत भींचकर कह उठा—"हमारे पीछे साठी है। वक्त कम है, हमें बहुत तेजी दिखानी होगी विलास डोगरा तक पहुंचने और उसे खत्म करने में।"

"कोशिश करेंगे कि एक बार देवेन साठी से उनका सामना करा दें।" देवराज चौहान सुलगते स्वर में बोला।

"क्यों?" जगमोहन के होठों से निकला।

"ताकि साठी को अच्छी तरह पता चल सके कि हम जो कह रहे हैं वो ही सच है।"

"शायद हमें मौका न मिले ऐसा करने का।" जगमोहन गुर्रा उठा—"मैं विलास डोगरा को देखते ही खत्म कर दूंगा।"

"देवराज चौहान ठीक कह रहा है कि विलास डोगरा और साठी की एक मुलाकात करा देनी चाहिये, जिसमें कि डोगरा इस बात को मानेगा कि उसने ही तुम दोनों को नशीली दवा पिलाकर, ये सब करने को मजबूर किया।" खुदे कह उठा।

जगमोहन होंठ भींचे हरीश खुदे को देखने लगा।

"जब विलास डोगरा हमारे हाथ लगेगा। तब जो हालात होंगे, वैसे ही करेंगे।" देवराज चौहान कह उठा।

"इस काम में मैं आपके साथ रहूंगी।" नगीना कह उठी।

"मैं भी।" सरबत सिंह दृढ़ स्वर में कह उठा।

देवराज चौहान ने दोनों को देखा।

"म्हारे को काये को छोड़ो हो।" बांकेलाल राठौर का हाथ मुंह पर जा पहुंचा—"अंम सबो को 'वड' दयोगे।"

"हम सब मिलकर ये काम करेंगे तो रास्ता लम्बा हो जायेगा।" देवराज चौहान ने कहा—"हमें अलग-अलग इस काम पर लगना होगा। इससे रास्ता छोटा हो जायेगा। मैं हरीश खुदे और जगमोहन एक साथ काम करेंगे। तुम तीनों एक साथ विलास डोगरा को तलाश करोगे। सिर्फ तलाश ही करना है, उसे कुछ कहना नहीं है। उसका पता लगते ही हमें खबर देना। विलास डोगरा से हम आखिरी मुलाकात करेंगे। बहुत हिसाब चुकाना है उसने। हमसे मिलने से पहले, उसकी जान नहीं जानी चाहिये।"

□□□
□□□

"रीटा डार्लिंग।" विलास डोगरा ने रीटा का हाथ पकड़ा और चूमकर बोला—"तुम तो मेरी जान हो, जान।"

रीटा खिलखिलाकर हंस पड़ी और अदा के साथ मुस्करा कर बोली।

"फिर मजाक करने लगे डोगरा साहब।"

"कसम से। तेरे बिना मैं खुद को अधूरा पाता हूं।" विलास डोगरा ने गहरी सांस ली।

"अब तो आप मुझे बनाने भी लगे।"

"विश्वास नहीं आता तुम्हें।" विलास डोगरा ने उसके हाथ को झटका दिया तो रीटा उसकी गोद में आ गिरी और खिलखिला उठी। डोगरा रीटा के खूबसूरत चेहरे को देखने लगा।

"ऐसे क्या देख रहे हैं डोगरा साहब।" रीटा ने डोगरा के गाल पर हाथ फेरा।

"तुम दिन-ब-दिन खूबसूरत होती जा रही हो। मेरा दिल लूट लिया है तुमने।"

"बातें बनाना तो कोई आपसे सीखे। आपकी आशिकी देखकर कोई नहीं कह सकता कि अण्डरवर्ल्ड डॉन हैं आप।"

"वो काम अपनी जगह और तुमसे प्यार करना अपनी जगह उम्र पैंतालिस की है, पर दिल पन्द्रह साल के लड़के की तरह जवान है। ये सब तुम्हारा कसूर है। तुम ना होती तो मैं कब का बूढ़ा हो चुका होता। तुमने ही मुझे जवान रखा हुआ है, रीटा डार्लिंग।"

"ऐसी बातें करके तो आप मेरी जान ही निकाल लेंगे डोगरा साहब।" रीटा उंगली से डोगरा की नाक दबाकर कह उठी।

"तेरी जान में तो, मेरी जान अटकी है। उसे कैसे निकलने दूंगा।" विलास डोगरा ने लिपिस्टिक से रंगे रीटा के होठों को चूमा—"मैं हमेशा सोचता हूं कि अगर तू ना होती तो मेरा क्या होता।"

"कितनी बार तो कहा है आपसे कि मैं न होती तो कोई दूसरी होती।"

"पर वो मेरी जान ना बन पाती। जो तुझमें है, वो किसी और में ना मिलता।"

"भूल है आपकी। जो मुझमें है, वो ही सब में है। ज़रा भी फर्क नहीं।" रीटा ने हंसकर कहा।

"तेरा दिमाग हर किसी में नहीं हो सकता रीटा डार्लिंग। खबसूरत तो तू जी भर के है। लेकिन तेरा तेज दिमाग, जैसे खूबसूरती

की काकटेल बनाकर, हर वक्त मेरे सिर पर सवार रहता है। मेरे ज्यादातर काम तूने अपने सिर पर ले रखे हैं। मेरे धंधे का भी तू ख्याल रखती है और मुझे बढ़िया-बढ़िया सलाह देती है। मैं जब भी परेशानी में पड़ता हूं तो तेरे से सलाह लेना नहीं भूलता। तभी तो कहता हूं कि तू ना होती तो मैं कब का बरबाद हो चुका होता। तू तो मेरी जान है, जान।"

रीटा पुनः खिलखिला कर हंसी।

"जब तू हंसती है तो तेरे मुंह से फूल झड़ते हैं। तेरे ऊपर के दांतों की लड़ी मेरी जान ही निकाल देती है। कभी-कभी तो सोचता हूं कि तू इतनी खूबसूरत क्यों है।" विलास डोगरा ने गहरी सांस लेकर कहा।

"आपका दिल लगाए रखने के लिये भगवान ने मुझे इतना खूबसूरत बनाया है।"

"आह, जरूर ये ही बात होगी। तेरे बिना तो मैं पागल हो जाता। मेरी सलामती का राज ही तू है। तू ही मेरी जान है, जिन्दगी है और मेरे दिल की धड़कन है। तेरे बिना तो डोगरा बिल्कुल बेकार है।"

"हवा दे रहे हैं मुझे।"

"तेरी कसम रीटा डार्लिंग।" विलास डोगरा ने आंखें बंद करके उसकी छातियों पर सिर रख लिया—"तू मेरी सांस है। मुझे तेरे से ऑक्सीजन मिलती है और मेरी सांसें चलती हैं। तू मेरे पास है तो मुझे सब कुछ हरा-हरा नज़र आता...।"

"आपको तो अण्डरवर्ल्ड किंग नहीं, शायर होना चाहिये। दीवानों की तरह बातें कर रहे...।"

"तूने मुझे दीवाना बना दिया है रीटा डार्लिंग। आह, कितना अच्छा लग रहा है तेरे सीने में मुंह छिपाकर, लगता है जैसे—।"

तभी विलास डोगरा का मोबाइल बज उठा।

दो पल के लिए वहां चुप्पी छा गई।

विलास डोगरा इस वक्त अपने उसी ठिकाने पर था, जहां वो अकसर होता था। ये शानदार हाल कमरा था और फर्श पर कालीन बिछा था। इधर सोफे पड़े थे जिस पर वे खुद मौजूद थे। एक कोने में छोटा-सा खूबसूरत बॉर बना था। दूसरी तरफ डबल बैड लगा था। जरूरत की हर वस्तु यहां मौजूद थी। खाने-पीने का सामान रीटा खुद तैयार करके डोगरा को देती थी।

विलास डोगरा ने आंखें खोली और उसके सीने से सिर उठाता बोला।

"कितना अच्छा सपना आ रहा था। सब खराब हो गया देख तो, फोन किसने किया?"

रीटा उसकी टांगों से उठी और सामने सोफे पर पड़े फोन को उठाकर बात की।

"हैलो।"

"डोगरा साहब से बात कराओ।" उधर से आवाज आई।

"बात कीजिये डोगरा साहब।" रीटा आगे बढ़कर डोगरा को फोन दिया—"गोकुल का फोन है।"

डोगरा ने मोबाइल थाम कर बात की।

"बोल गोकुल।"

उधर से गोकुल कुछ बताने लगा।

विलास डोगरा सुनता रहा।

डोगरा के माथे पर बल पड़ते दिखे। फिर बोला।

"तू इसी तरह सब मामले पर नज़र रख और मुझे बताता रह।" कहकर डोगरा ने फोन बंद कर दिया।

डोगरा के माथे पर बल देखकर रीटा कह उठी।

"क्या बात हो गई डोगरा साहब?"

"हमें ये जगह फौरन छोड़नी होगी।" डोगरा सोच भरे स्वर में कह उठा—"देवराज चौहान ये जगह जानता है।"

"वो देवराज चौहान, जिसे आपने चूहा बना दिया।"

"शेर को चूहा बनाया था, पर लगता है शेर, चूहा नहीं बन सकता शेर, शेर ही रहता है।" विलास डोगरा होंठ सिकोड़कर बोला।

"क्या मतलब?"

"बातें बाद में। हमें यहां से इसी वक्त निकल चलना होगा।"

"ऐसी भी क्या बात है। हमारे आदमी यहां पर हैं। फिर देवराज चौहान तो छिपा बैठा है। देवेन साठी और मोना चौधरी से उसकी जान बचने वाली नहीं। वो यहां कैसे आ सकता है।" रीटा ने कहा।

"चाल चल गया है वो।" विलास डोगरा उठता हुआ बोला—"बाकी बातें बाद में करेंगे।"

रीटा के चेहरे पर गम्भीरता उभरी। उसने वैन के ड्राइवर दया को फोन किया।

"वैन तैयार रख दया, हम आ रहे हैं।"

वैन मध्यम रफ्तार से सड़क पर दौड़ रही थी। सड़क पर शाम का वक्त होने की वजह से ट्रेफिक बढ़ गया था। वैन के पीछे लगे कैमरे की वजह से, पीछे का दृश्य वैन में लगी स्क्रीन पर आ रहा था। विलास

डोगरा की नज़रें उस स्क्रीन पर टिकी थी। चेहरे पर शांत भाव थे। पास ही रीटा बैठी थी। उसका एक हाथ डोगरा की टांग पर था।

"अब तो बताइये डोगरा साहब कि— ।"

"रीटा डार्लिंग।" एकाएक विलास डोगरा मुस्कराया और झुककर उसकी गर्दन को चूमा—"एक पैग बना के दे।"

"अभी लीजिये।" कहकर रीटा उठी और वैन के पिछले हिस्से में चली गई।

डोगरा की निगाह स्क्रीन पर टिकी थी।

पीछे ऐसा कोई वाहन नहीं था जो उनके पीछे लगा दिख रहा हो।

विलास डोगरा ने इत्मिनान से सिग्रेट सुलगाई और कश लिया।

"लीजिये डोगरा साहब।" रीटा पैग लिए पास आ पहुंची।

डोगरा ने स्क्रीन से नज़रें हटाकर पैग लिया और घूंट भरा।

रीटा पुनः पास बैठते कह उठी।

"क्या कोई पीछे है हमारे?"

"अभी तक तो कोई नहीं।" विलास डोगरा ने मुस्करा कर उसे देखा।

"अब तो बताइये कि बात क्या है।"

"रीटा डार्लिंग।" विलास डोगरा ने सिग्रेट ऐश ट्रे में रखी और रीटा का हाथ थाम लिया—"मुझे पूरा यकीन था कि देवेन साठी या मीना चौधरी, देवराज चौहान और जगमोहन को कभी भी खत्म कर सकते हैं। हमारा ये सोचना सही भी था। परन्तु देवराज चौहान चाल चल गया, दो घंटे पहले देवेन साठी उस जगह पर जा पहुंचा जहां देवराज चौहान, जगमोहन और खुदे मौजूद थे।"

"तो मर गया देवराज चौहान? जगमोहन भी।"

"देवराज चौहान चाल खेल गया। हरामी बच निकला।" विलास डोगरा ने नाराजगी से कहा।

"ये कैसे हो सकता है।" रीटा के होठों से निकला।

"हो गया ये। देवराज चौहान अपनी पत्नी और दो-तीन लोगों को इस मामले में पहले ही खींच चुका था, जिनके बारे में हमें नहीं पता था। उन्होंने देवेन साठी की पत्नी और दोनों बच्चों को बंधक बना लिया और देवेन साठी को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। इस वक्त देवराज चौहान, जगमोहन और खुदे आजाद घूम रहे हैं।"

"देवेन साठी ने उन्हें नहीं मारा?"

"उसका परिवार देवराज चौहान की पकड़ में है। उसने देवराज चौहान को मारा तो उसका परिवार गया।"

"तो मोना चौधरी तो है। वो उन्हें।"

"मोना चौधरी हमारे बारे में जान गई है, सारा मामला उसे समझ आ गया है जो भी हुआ, उसमें वो देवराज चौहान और जगमोहन की गलती नहीं मानती और वो इस मामले से पीछे हट गयी है।"

"ओह। बुरा हुआ।"

"बुरा क्या, वहुत ही बुरा हुआ। हमारा सारा प्लॉन फेल हो गया।"

"अब देवराज चौहान आजाद है?"

"वो अपने साथियों के साथ अपने बंगले पर जा पहुंचा है।"

"फिर तो देवराज चौहान और जगमोहन हमारे पीछे पड़ जायेंगे।"

"तभी तो हम उस जगह से निकल आये। क्योंकि वो ठिकाना देवराज चौहान जानता है।"

"देवेन साठी के परिवार को उन्होंने कहां रखा है?"

"इस बारे में कुछ नहीं पता।"

"परन्तु इस तरह देवेन साठी कब तक चुप बैठेगा?"

"जब तक उसे उसकी पत्नी और वच्चे नहीं मिल जाते।" विलास डोगरा ने घूंट भरा।

"उनके बारे में हम पता लगाकर, साठी तक ये खबर पहुंचा देते।"

"इन हालातों में देवेन साठी के परिवार के बारे में पता लगाना नामुमकिन काम है। उन्हें बेहद सुरक्षित जगह पर रखा गया होगा। वैसे भी हमें इस मामले में हाथ डालने की जरूरत नहीं। हमें देवराज चौहान से खुद को बचाये रखना है। उसकी उम्र ज्यादा लम्बी नहीं है देवेन साठी का दिमाग कभी भी खराब हो सकता है और वो देवराज चौहान, जगमोहन को मार देगा।"

"अपनी पत्नी बच्चों की परवाह ना करके, वो ऐसा करेगा?"

"वो कुछ भी कर सकता है। नहीं पता कि आगे क्या होगा।"

"और आपका मतलब कि हम देवराज चौहान से बचकर भागते फिरे?"

"हां।"

"ये तो गलत है कि आप देवराज चौहान से डरने लगे डोगरा साहब।"

"इसे डरना नहीं कहते रीटा डार्लिंग।" विलास डोगरा मुस्करा कर प्यार भरे स्वर में कह उठा—"इसे कुछ वक्त बिताना कहते हैं।

देवराज चौहान की जिन्दगी, साठी कभी भी खत्म कर सकता है। वो जरूर उस पर नज़र रखे होगा।"

"हम ही क्यों ना देवराज चौहान को खत्म कर दें?"

"हमें अपनी ताकत का प्रदर्शन करने की जरूरत नहीं है। काम वैसे ही हो जायेगा तो हम क्यों कष्ट करें। वैसे भी देवराज चौहान इस वक्त पागल शेर बन चुका होगा। अब वो मेरे को खत्म करना...।"

"देवराज चौहान ने जरूर साठी को आपके बारे में बताया होगा।"

"उसकी वात पर साठी भरोसा करने वाला नहीं।" विलास डोगरा मुस्कराया—"देवराज चौहान ने पूरबनाथ साठी को खुद गोली मारी थी। साठी उसे ही अपने भाई का हत्यारा मानेगा। वो उनकी बात पर ज़रा भी विश्वास नहीं करेगा।"

"हालात अचानक ही वहुत बदल गये हैं डोगरा साहब।" रीटा सोच भरे स्वर में बोली।

"कोई बात नहीं। हालात फिर बदल जायेंगे।" विलास डोगरा का स्वर सख्त हो गया—"देवराज चौहान साठी के हाथों मरेगा।"

"मेरे ख्याल में हमें साठी के परिवार का पता लगाकर, साठी को बता देना चाहिये।"

"साठी इस बारे में कोई कसर नहीं छोड़ेगा। वो देवराज चौहान पर भी नज़र रखेगा और अपने परिवार को भी ढूंढ निकालेगा।"

"और हमें क्या करना होगा?"

"कुछ दिन देवराज चौहान की नज़रों से बचकर रहना होगा। वैसे भी हमारे पास वक्त कहां है। दो दिन बाद तो वैसे भी हमें काम के सिलसिले में हिन्दुस्तान के कई शहरों मे टूर के लिए निकलना है। कई बातें संभालनी हैं। हमारा पन्द्रह दिन का प्रोग्राम पहले होता है। इतने दिनों में साठी ही देवराज चौहान से निपट लेगा। इस बारे में हमें सोचना ही नहीं पड़ेगा।"

"डोगरा साहब।" रीटा मुस्करा पड़ी—"आपने कमाल का दिमाग पाया है।"

"रीटा डार्लिंग।। मैं तो तेरे दिमाग का कायल हूं। जैसी तू शानदार, वैसा तेरा दिमाग लाजवाब।"

"शरारती लहजे में बात करना तो कोई आपसे सीखे।" रीटा खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"तू तो मेरी जान लेकर रहेगी।" विलास डोगरा उसके खूबसूरत चेहरे को देखता कह उठा।

□□□
□□□

देवेन साठी इस वक्त उस बंगले पर था जहां आरु और बच्चे रहते थे। वो यहां नहीं आता था कि उसका परिवार सुरक्षित रहे। किसी को पता न चले कि उसका परिवार कहां रहता है। बहुत जरूरी काम होने पर आता भी तो रात के अंधेरे में और अंधेरे में ही चला जाता। वहां उसके साथ जाफर भी आया था। उसके आते ही बंगले के नौकर सतर्क दिखने लगे थे।

"जाखड़ कहां है?" देवेन साठी सोफे पर बैठा, एक नौकर से बोला।

"वो तो मालकिन की तलाश में भागा फिर रहा है।" नौकर ने बताया।

"कब का गया है बंगले से?"

"सुबह से ही।"

देवेन साठी ने सोच भरे ढंग से सिग्रेट सुलगा ली।

"कॉफी बना के ला।" साठी बोला।

नौकर चला गया।

"बैठ जाफर खड़ा क्यों है?" साठी ने कश लेते हुए कहा।

जाफर सोफे पर बैठ गया वो गम्भीर था।

देवेन साठी भी गम्भीर दिख रहा था और गुस्से में भी था। परन्तु, अपने गुस्से पर उसने काबू पा रखा था वो वक्त पर देवराज चौहान के करीब पहुंच गया था परन्तु उसकी पत्नी ने वहां पहुंचकर बाजी पलट दी।

साठी को अपने परिवार की चिन्ता थी।

पहले परिवार बाद में देवराज चौहान और जगमोहन की मौत परिवार के खातिर ही उसने अपने कदम पीछे हटा लिए थे

"जाफर।" साठी शब्दों को चबाकर बोला—"मुझे अपने परिवार की चिन्ता है।"

"ये चिन्ता ज्यादा देर नहीं रहेगी साठी साहब।" जाफर विश्वास भरे स्वर में कह उठा—"हम उन्हें ढूंढ निकालेंगे।"

"क्या इन्तज़ाम किए हैं?"

"हमारे सब आदमी आपके परिवार की खबर पाने की दौड़ फिर रहे हैं। अण्डरवर्ल्ड में भी ये खबर दे दी है कि जो भी साठी साहब के परिवार के बारे में जानकारी देगा, उसे पांच करोड़ रुपया नकद दिया जायेगा। ये खबर फैलती जा रही है कि देवराज चौहान ने आपके परिवार को कहीं पर कैद कर रखा है। हम जल्दी उन्हें पा लेंगे।"

साठी ने, भिंचे होंठों वाला चेहरा हिलाया।

"देवराज चौहान की पत्नी नगीना कौन है?" साठी ने पूछा।

"मैं नहीं जानता।"

"वो साधारण औरत नहीं है। खतरनाक है। परन्तु उसका नाम पहले कभी नहीं सुना।"

"एक बार आपका परिवार मिल जाये फिर सबको सबक सिखा देंगे।" जाफर ने गुर्राकर कहा—"उस वक्त गोली में नगीना के साथ सरबत सिंह था। हमारे एक आदमी ने उसका नाम मुझे बताया था।"

"कौन सरबत सिंह?"

"अण्डरवर्ल्ड से ही वास्ता रखता है और अपने लिए भी छोटे-मोटे काम करता है।"

"वो देवराज चौहान को जानता है। तभी मेरे खिलाफ उनकी सहायता की, उसके साथ है। सब रगड़े जायेंगे। एक बार आरु और बच्चे मिल जायें। देवराज चौहान ने गलत किया, मेरे परिवार पर हाथ डालकर मुझे रोकने के लिए उसी ने अपनी पत्नी से कहा होगा कि मेरे परिवार पर हाथ डाले। हमारे कामों में परिवार को बीच में नहीं घसीटना चाहिये।" देवेन साठी कठोर स्वर में बोला।

"हमने भी तो हरीश खुदे की पत्नी से कुछ नहीं कहा। हम चाहते तो उसे अपने पास कैद में रख सकते थे।" जाफर ने कहा।

कठोर अंदाज में देवेन साठी ने सिग्रेट का कश लिया।

नौकर आया। कॉफी के दो प्याले रखे और बोला।

"मालिक रात को खाना खायेंगे?"

"हां।" सोचों में डूबे साठी ने सिर हिलाया।

नौकर चला गया तो जाफर ने गम्भीर स्वर में कहा।

"कुछ बातें मेरी समझ में नहीं आ रही साठी साहब।"

"क्या?" साठी ने उसे देखा।

"देवराज चौहान ये क्या कहता है कि विलास डोगरा ने उसे नशे में रखकर, उससे ये काम कराया।"

"हरामजादा बकवास करता है।" देवेन साठी गुर्रा उठा।

"लेकिन उसकी बात में कुछ तो होगा।"

"क्या मतलब?"

"आपके परिवार को कैद करके, उसने सिर्फ आजादी हासिल की है और कुछ नहीं मांगा। कोई शर्त नहीं रखी। जबकि वो ये बात [illegible] कि ये आजादी लम्बे समय के लिए नहीं है। वक्ती तौर [illegible] कैद में, अपने परिवार को ढूंढ सकते हैं, या फिर [illegible] परिवार को एक तरफ करके उनकी हत्या करके [illegible]

"तुम कहना क्या चाहते हो?"

"देवराज चौहान जो कहता है उस पर एक बार सोचना चाहिये कि।"

"देवराज चौहान ने मेरे भाई को गोली मारी?" गुर्रा उठा सार्ठी।

"हां, ये तो जग जाहिर बात है।"

"तो बात खत्म। मुझे देवराज चौहान से अपने भाई की मौत का बदला लेना है।" सार्ठी ने दांत भींचकर कहा।

"हमारा हर कदम आपके साथ है।" जाफर ने फौरन कहा।

"देवराज चौहान पर नज़र रखने को, अपने कितने आदमी लगा रखे हैं।"

"सात-आठ आदमी हैं। वे हमारी नज़रों से दूर नहीं जाने वाला।"

"उसकी पत्नी और दूसरों पर भी नज़र रखो। वो कभी भी वहां जा सकते हैं, जहां मेरा परिवार कैद है।"

"सब पर नज़र है। इन सब कामों को मैं संभाल रहा हूं। जब कभी ऐसा हुआ तो हमें फौरन पता चल जायेगा।" जाफर ने सोच भरे स्वर में कहा—"परन्तु वो जरूर ये बात जानते होंगे कि हम उन पर नज़र जरूर रखेंगे। ऐसे में वो उस तरफ नहीं जायेंगे, जहां पर आपका परिवार कैद है। वो ऐसी बेवकूफी नहीं करेंगे। शायद कर भी जायें।"

सार्ठी ने कॉफी का प्याला उठाया और घूंट भरा।

"मैं कुछ कहूं सार्ठी साहब।"

"बोलते रहो।"

"आपको एक बार विलास डोगरा से बात करनी चाहिये कि इस बारे में वो क्या कहता है।"

"मेरा विलास डोगरा से क्या मतलब। ये मामला अलग है।"

"परन्तु देवराज चौहान कहता है, इस मामले का विलास डोगरा से सम्बंध है। देवराज चौहान के पास आपका परिवार बंधक है लेकिन उसने आप पर जोर नहीं डाला कि आप उसकी बात मानें। उसने साधारण तौर पर अपनी बात रखी। उसके बाद खत्म। परन्तु आपको एक बार विलास डोगरा से बात जरूर करनी चाहिये।"

सार्ठी जाफर को देखने लगा फिर सिर हिलाया। बोला।

"देवराज चौहान ने मेरे भाई को शूट किया। इसमें विलास डोगरा कहां से आ गया?"

"वो कहता है विलास डोगरा के इशारे पर, उसने ऐसा—।"

"ऐसा कहकर वो अपनी चाल खेल रहा है। वो चाहता है विलास डोगरा के साथ मेरा पंगा खड़ा हो जाये और इसका फायदा

उसे मिले। मैं देवराज चौहान की चाल में फंसने वाला नहीं। विलास डोगरा का इस मामले में कोई मतलब नहीं है। साठी ने दृढ़ और कड़े स्वर में कहा—"सब समझ रहा हूं देवराज चौहान का खेल।"

जाफर ने कुछ नहीं कहा और कॉफी का प्याला उठा लिया।

सोचों में डूबे देवेन साठी ने कॉफी समाप्त की और नगीना को फोन किया।

"हलो।" नगीना की आवाज कानों में पड़ी।

"मेरी पत्नी और बच्चों को कोई तकलीफ मत देना।" देवेन साठी ने बेहद शांत स्वर में कहा।

"तुम देवराज चौहान से जितना दूर रहोगे, वो उतने ही खुश रहेंगे।" नगीना ने उधर से कहा।

साठी के चेहरे पर कसाव आ गया।

"मेरे परिवार को कोई तकलीफ पहुंची तो ये तुम लोगों के लिए बुरा होगा।"

"वो मजे में हैं।"

"ये बात भी कान खोलकर सुन लो कि ये सब ज्यादा देर नहीं चलने वाला। एक वक्त से ज्यादा मैं चुप नहीं बैठ सकता। मुझे मेरा परिवार वापस चाहिये।" देवेन साठी के होंठों से गुर्राहट निकली।

"देवराज चौहान विलास डोगरा को सजा के तौर पर मारना चाहता है। जब वो मरेगा, उसी दिन तुम्हें तुम्हारा परिवार मिल जायेगा।"

"देवराज चौहान के लिए मैं विलास डोगरा को खत्म कर दूं?" साठी बोला।

"भूलकर भी ऐसा मत करना।" नगीना की आवाज कानों में पड़ी—"ये देवराज चौहान का मामला है और वो ही निपटेगा। तुम्हें बीच में दखल देने की जरूरत नहीं। बेहतर होगा कि तुम चुपचाप बैठे रहो।"

साठी कसमसा कर रह गया।

"मैं आरु से बात करना चाहता हूं।" साठी बोला।

"मैं तुम्हारे पास आऊंगी और तुम्हारी पत्नी से बात करा दूंगी।"

"तुम मुझे वहां मौजूद किसी आदमी का नम्बर क्यों नहीं दे देती कि मैं जब चाहूं उससे बात कर लूं।"

"ज्यादा चालाक बनने की कोशिश मत करो साठी। इस वक्त चुपचाप बैठना ही तुम्हारे लिए अच्छा है।" उधर से नगीना ने शांत स्वर में कहा और फोन बंद कर दिया।

देवेन साठी के चेहरे पर कठोरता नाचती रही।

□□□
□□□

हंसराज, भीम प्रसाद और प्रेम लाल।

ये तीनों सरबत सिंह के करीबी थे। करीबी इस तरह कि छोटे-मोटे काम सरबत सिंह इनके साथ मिलकर ही किया करता। छः-सात सालों से ये इकट्ठे ही काम कर रहे थे। इस ग्रुप में हंसराज, हंसा के नाम से जाना जाता तो भीम प्रसाद, जंवाई के नाम से और प्रेमलाल को सब प्रेमा कहते थे।

भीम प्रसाद को जंवाई इसलिये कहते कि वो हमेशा दूसरों से अपने काम करवाने की चेष्टा करता रहता, जबकि खुद कुछ नहीं करता। इसी वजह से उसके साथी उसे जंवाई कहने लगे थे। ये सब इकट्ठे काम करते और ईमानदारी से मिले माल का बंटवारा करते। रुपये-पैसे को लेकर कभी भी तनातनी नहीं होती थी। तीनों के पास रहने को अपने ठिकाने थे और इन सब में सरबत सिंह ही ऐसा था, जिसके पास [illegible] था। अक्सर ये लोग इकट्ठे होते, बेशक काम न भी हो। मिल बैठकर खाते-पीते और बातें करते। फुर्सत के दिनों में इनकी पार्टी रात भर चलती थी।

हंसराज यानी कि हंसा अपने दो कमरे के मकान में मौजूद था, जो कि कच्ची कालोनी में बना था। दो साल पहले हंसा को एक काम में पांच लाख रुपया हाथ लग गया था तो उस पैसे से उसने मकान ले लिया था कि रहने की जगह पास में जरूर होनी चाहिये। इस वक्त शाम के छः बजे थे और हंसा के दो कमरे के मकान के दरवाजे खुले हुए थे। कमरे के बाहर खिड़की में लगा कूलर धड़-धड़ की आवाज के साथ चल रहा था और हंसा कमरे के भीतर कूलर की हवा के सामने चारपाई पर आंखें बंद किए लेटा था। उसने लुंगी और बनियान पहन रखी थी। बयालीस की उम्र थी, शरीर सामान्य था ना मोटा ना पतला। सिर के बाल काले थे। किसी से माल छीनकर दौड़ने में उस्ताद था वो। कभी छीना-झपटी, राहजनी किया करता था, परन्तु जब से जंवाई, प्रेमी, सरबत सिंह के साथ हुआ तो छोटे काम छोड़ दिए थे और कुछ बड़े काम ही करते। जिसमें कुछ लाख रुपया हाथ लगे और एक-दो-चार महीने आराम से कटें।

बहरहाल किसी तरह खींच-खांचकर उनका वक्त निकल रहा था। उनके हिसाब से तो बढ़िया ही चल रहा था। पन्द्रह दिन पहले उन चारों ने एक जगह हाथ मारा था और हर एक के पल्ले एक लाख बीस हजार पड़ा था और इस वक्त सबका खर्चा-पानी मजे से चल रहा था। चार-पांच दिन से तो चारों में से कोई भी एक दूसरे से मिला नहीं

... ज्यादा से ज्यादा चार-पांच दिन ही एक-दूसरे से अलग ... उसके बाद फिर एक बार मिल बैठते। खाते-पीते। इसी तरह ... इनकी जिन्दगी दौड़ रही थी।

तभी हंसा के कानों में फट-फट की आवाज पड़ी।

"आ गया साला जंवाई।" उसी तरह पड़े हंसा बड़बड़ा उठा।

फट-फट उसके मकान के दरवाजे के बाहर बंद हो गई। ये जंवाई की मोटर साइकिल की आवाज थी। जिसे वो बड़े प्यार से रखता था, परन्तु साइलेंसर की आवाज ऐसी थी कि पूरे मोहल्ले को पता चल जाता था कि जंवाई आ गया।

हंसा वैसे ही लेटा रहा।

चंद पलों बाद भीतर प्रवेश होने की कदमों की आहट उसे सुनाई दी तो उसने फौरन अनुमान लगाया कि ये दो जोड़ी कदमों की आवाजें हैं तो हंसा ने आंखें खोलकर देखा।

जंवाई के साथ प्रेमी भी था।

"आराम हो रहा साले।" जंवाई बोला—"चल, उठकर हमारे लिए चाय बना।"

"चाय सुबह से मैंने अपने लिए नहीं बनाई तो तेरे लिए क्यों बनाऊंगा।" हंसा करवट लेकर बोला।

"उठ जा। बहाने मत लगा।" जंवाई ने प्लास्टिक की दो कुर्सियां खींचकर करीब की और एक पर बैठता कह उठा--"हमने रास्ते में नहीं पी, सोचा तेरे हाथ की चाय पिएंगे। क्यों प्रेमी?"

"हां-हां क्यों नहीं।" प्रेमी ने फौरन सिर हिलाया—"पर रास्ते में चाय वाला तो दिखा नहीं।"

जंवाई ने प्रेमी को घूरा।

प्रेमी दांत दिखाने लगा।

"तू हमेशा बात का सत्यनाश किया कर। साले तेरे को रास्ते में चाय पीने को कहा नहीं था।"

"कहा होगा, मैंने कब मना किया है। पर मैंने सुना नहीं था।" प्रेमी ने पुनः दांत दिखाये।

"उल्लू का पट्ठा।" जंवाई ने तीखे स्वर में कहा।

"उल्लू का पट्ठा होगा तेरा बाप।" प्रेमी बराबर उसे दांत दिखा रहा था।

हंसा मुस्करा दिया।

"सिग्रेट कहां है?" जंवाई ने हंसा से पूछा।

"उधर टेबल पर पड़ी है।"

जंवाई ने उठकर सिग्रेट का पैकिट और माचिस उठाई और वापस कुर्सी पर आ बैठा।

"सरवत सिंह नहीं आया?" हंसा बोला—"उसे भी बुला लेते।"

"तेरे से खास बात करने आये हैं।" प्रेमी बोला। उसके दांत दिखने अब बंद हो गये थे।

"क्या?"

"ऐसे नहीं।" सिग्रेट सुलगाकर जंवाई बोला—"पहले चाय बना।"

"जाकर खुद बना ले।" हंसा ने कहा फिर प्रेमी से बोला—"बात बता।"

"मैं बताऊंगा।" जंवाई फौरन बोला।

"तू हर बात में मत कूदा कर जंवाई। प्रेमी ने उसे घूरा—"ये मेरा आईडिया था।"

"ठीक है तू ही बता।" जंवाई ने सिर हिलाया।

"तू चाय बना तब तक।"

"मैं क्यों बनाऊं।" जंवाई ने मुंह बनाया—"मैं क्या यहां चाय बनाने आया हूं।"

"हम सब तुझे ठीक ही करते हैं जंवाई कहकर। कभी तो खुद भी काम किया कर।"

"मेरी आदत नहीं है ऐसे काम करने की।"

"खाने-पीने को पहले आ जाता है।"

"वो मेरी आदत है।" जंवाई मुस्करा पड़ा।

"कीचड़ के नाले में धक्का दूंगा। देख लेना एक दिन।"

"तुझे साथ लेकर गिरूंगा, धक्का देकर देख ले।" जंवाई हंस पड़ा।

"कमीना ही बना रहियो। इंसान मत बनना कभी।"

"इंसान नहीं हूं तो तेरे को क्या नज़र आता हूं।" जंवाई ने व्यंग से कहा।

हंसा शांत-सा दोनों को देखे जा रहा था।

जब दोनों का पेट भर गया तो हंसा बोला।

"क्या खास बात है।"

"देखा जाये तो खास बात है। ना समझो तो प्यारे कुछ भी नहीं है बात में।" प्रेमी बोला।

हंसा प्रेमी को देखता रहा।

खामोश बैठा जंवाई सिग्रेट के कश लेने लगा।

"सरबत सिंह ने हमें कई बार छाती ठोककर बताया है कि उसने डकैती मॉस्टर देवराज चौहान के साथ छोटा-सा काम किया था।"

"ये तो पुरानी बात हो गई।"

"इतनी भी पुरानी नहीं। छः-आठ महीने हो गये होंगे।" प्रेमी बोला।

"तो?"

"मैं ये कहना चाहता हूं कि सरबत सिंह का वास्ता देवराज चौहान से तो है ही।"

"आगे बोल।"

"पता चला है कि देवराज चौहान ने देवेन साठी की पत्नी और बच्चे का अपहरण कर लिया है।"

"देवेन साठी और देवराज चौहान में पंगा पड़ा हुआ है। मैं जानता हूं। दस-बारह दिन पहले या हफ्ता पहले देवराज चौहान ने पूरबनाथ साठी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। इतनी खबर तो मुझे भी है।"

"अब देवेन साठी, देवराज चौहान की जान के पीछे है।"

"वो तो होगा ही।"

"देवराज चौहान ने बचने के लिए देवेन साठी के परिवार का अपहरण करके कहीं छिपा दिया है। पता चला है कि देवराज चौहान ने देवेन साठी को धमकी दी है कि अगर उसे कुछ किया तो, उसका परिवार नहीं बचेगा। अब हालात ये हैं कि देवराज चौहान खुला घूम रहा है और देवेन साठी अपने परिवार की वजह से तिलमिलाया-सा, हाथ पर हाथ रखे बेबस बैठा है। ये खबर आज की ही है।"

"इन बातों से हमारा क्या वास्ता प्रेमी। वो डकैती मास्टर देवराज चौहान है और वो अण्डरवर्ल्ड किंग...।"

"बात तो सुन लो।"

"सुना।"

"देवेन साठी ने पांच करोड़ का इनाम रखा है जो उसके परिवार की जानकारी देगा।"

"मतलब कि जो उसे ये बतायेगा कि देवराज चौहान ने उसके परिवार को कहां पर रखा है।" हंसा बोला।

"सही समझा तू।"

"कहीं तेरे दिमाग में ये तो नहीं कि पांच करोड़ के लिए हम देवेन साठी के परिवार को ढूंढें।"

"हमें ढूंढने की क्या जरूरत है। अपना सरबत सिंह है ना। वो देवराज चौहान को जानता है। सरबत सिंह से कहते हैं कि देवराज

चौहान से मिलकर वो किसी तरह देवन साठी के परिवार के बारे में पता करे।"

"सरवत सिंह करेगा ऐसा?"

"क्यों नहीं करेगा। पांच करोड़ का सवाल है। काम बन गया तो सवा-सवा करोड़ हर एक को मिलेगा।"

"मुझे नहीं लगता सरवत सिंह इस काम को राजी हो।"

"क्यों?"

"देवराज चौहान ने उसे, उसकी बहन की शादी के लिए पैसे दिए थे। ऐसे में वो देवराज चौहान से गड़बड़ नहीं करेगा।"

"तेरे को ज्यादा पता है कि वो ऐसा करेगा कि नहीं।" प्रेमी ने नाराजगी से कहा।

हंसा ने जंवाई को देखा, जिसकी सिग्रेट खत्म होने को थी।

"अब तू बोल जंवाई।" प्रेमी ने कहा।

"तू चाय बनाकर ला।" जंवाई बोला।

"चाय छोड़, शाम हो गई है, अभी बोतल खोलेंगे।" प्रेमी ने कहा।

"ठीक है। बोतल लेकर आ।"

"पहले इस बारे में हंसा से बात कर। ये कहता है सरवत सिंह नहीं मानेगा ऐसा करने को।"

"पांच करोड़ का मामला है। वो जरूर मानेगा।"

"तो उससे बात करते।" हंसा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"फोन किया था उसे। फोन का स्विच ऑफ कर रखा है उसने।" जंवाई ने कहा।

"वो फोन क्यों बंद करेगा। फोन तो वो तब बंद करता है, जब वो कोई खास काम कर रहा हो।" हंसा बोला—"हमारे बिना वो कोई खास काम करेगा नहीं। करेगा तो कम से कम हमें खबर तो होगी कि वो कुछ कर रहा है।"

"जो भी हो उसका फोन बंद है।"

"क्या पता अब खुल गया हो।" हंसा ने तकिये के नीचे से मोबाइल निकाला और सरवत सिंह का नम्बर मिलाने लगा।

"तू बोतल ले आ प्रेमी।" जंवाई बोला।

"मैं क्यों लाऊं, तू ला।"

"मेरी मोटर साइकिल ले जा। दस मिनट में ले आयेगा।" जंवाई ने दांत दिखाये।

"तू खुद कोई काम करता है।"

"खाने-पीने के काम तो मैं ही करता...।"

"मैं तो नहीं लाने वाला।" प्रेमी ने सिर हिलाया—"तू ही लायेगा।"

"पैसे मैं दे देता... ।"

"वो तेरे को मैं दे दूंगा।" प्रेमी ने कड़वे स्वर में कहा—"पर लायेगा तू।"

तभी हंसा कान से फोन हटाता बोला।

"सरबत सिंह के फोन का स्विच ऑफ आ रहा है।"

"साला, हमें बताये बिना किसी काम में तो नहीं लगा वो।" जंवाई बोला।

"हो सकता है।" प्रेमी ने कहा।

"उसके घर जाना पड़ेगा।" हंसा ने कहा।

"क्या पता वो घर पर भी ना मिले। या हो सकता है फोन बंद करके इन दिनों आराम कर रहा हो।" प्रेमी हंसा।

"उसका घर दूर पड़ता है।" जंवाई ने कहा—"आज तो पीने का मन है। कल सुबह मैं उसके घर जाऊंगा।"

"अभी क्यों नहीं।"

"इतनी भी जल्दी क्या है प्रेमी। मैं... ।"

"पांच करोड़ का सवाल है।" प्रेमी ने उसे घूरा—"तू आज का काम कल पर छोड़ रहा है। ऐसा मौका बार-बार हाथ नहीं आयेगा। तेजी दिखा, तेजी।"

"कल सुबह उठते ही सरबत सिंह के घर पहुंच जाऊंगा। पक्का... ।"

प्रेमी ने हंसा को देखकर कहा।

"समझा इसे।"

"जल्दी क्या है।" हंसा सोच भरे स्वर में बोला—"सरबत सिंह से कल बात हो जायेगी।"

"सुन लिया।" जंवाई ने प्रेमी को देखा—"मेरे और हंसा के विचार मिलते हैं जा बोतल ला।"

"वो तो तू ही लायेगा। मैं नहीं जाने वाला।" प्रेमी ने पक्के स्वर में कहा।

"बोतल रखी है मेरे पास।" हंसा कह उठा—"पीने का शौक है तो बोतल रखना भी सीखो।"

"सुना।" प्रेमी ने जंवाई को घूरा।

"ये बात वो तेरे से कह रहा है।" जंवाई ने मुंह बनाकर कहा।

"पूछ ले। वो तेरे से कह रहा है।" प्रेमी ने हाथ आगे बढ़ाया—"शर्त लगा ले।"

"पहले पी लेने दे। उसके बाद शर्तें लगाएंगे।"

"बकवास बंद करो।" हंसा ने दोनों को घूरा—"मैं देवेन साठी के परिवार के बारे में सोच रहा हूं।"

"क्या?"

"यही कि देवराज चौहान ने उन्हें कहां छिपा रखा होगा। तुम में से कोई देवराज चौहान का ठिकाना जानता है?"

प्रेमी और जंवाई ने एक-दूसरे को देखा।

दोनों के सिर इन्कार में हिले।

"हमें देवराज चौहान को ढूंढ कर उस पर भी नज़र रखनी चाहिये। कभी तो वो वहां जायेगा, जहां उन लोगों को रखा है।"

"मेरे ख्याल में हमें इतने परेशान होने की जरूरत नहीं।" जंवाई बोला—"सारी समस्या को सरबत सिंह हल कर देगा। वो देवराज चौहान का ठिकाना भी जानता होगा और वो पता भी लगा लेगा कि साठी का परिवार कहां पर है। बहुत ही आसान मौका हाथ आया है पांच करोड़ कमाने का सवा करोड़ मेरे हिस्से में आयेगा। आज तक मैंने शादी नहीं की कि ढंग के नोटों का जुगाड़ नहीं हो पाया। सवा करोड़ हाथ में आते ही मैं शादी करूंगा और कोई दुकान [illegible] जाऊंगा। दुकान का सारा काम मेरी बीवी संभाला करेगी [illegible] करूंगा।"

"तेरी बीवी दुकान संभालने में लगी रहेगी तो तू कैसे मौज कर लेगा?" प्रेमी कह उठा।

"तेरे को नहीं पता।" जंवाई मुस्कराया—"मैं कर लूंगा।"

"तो असली जंवाई बनने की सोच रहा है तू!"

"हां, ससुराल वालों से अपनी खूब सेवा कराऊंगा। मजे में रहूंगा।"

"सुन लिया।" प्रेमी ने हंसा को देखकर कहा—"ससुराल वालों से सेवा करायेगा अपनी।"

"तुम दोनों की बेकार की बातों से मुझे कोई मतलब नहीं। मैं तो साठी के परिवार के बारे में सोच रहा हूं कि उसे कहां रखा होगा देवराज चौहान ने।" हंसा ने कहा—"मुझे ये काम आसान नहीं लगता।"

"क्यों?"

"काम आसान होता तो देवेन साठी पांच करोड़ का इनाम क्यों रखता। देवेन साठी के पास ताकत की कमी नहीं है। काम टेढ़ा है तभी तो उसने पांच करोड़ का इनाम रखा है इस मामले में।"

"काम कितना भी टेढ़ा हो।" प्रेमी बोला—"सरबत सिंह के

लिये काम आसान है। वो देवराज चौहान को जानता है और उससे मिलकर पता कर सकता है कि देवेन साठी का परिवार कहां है। ये काम करना सरबत सिंह के लिये मामूली बात है।"

"सुबह जाऊंगा सरबत सिंह के घर।" जंबाई सिर हिलाता कह उठा—"अब बोतल खोलो, देर क्यों लगा रहे हो?"

❑❑❑

❑❑❑

रात के ग्यारह बज रहे थे।

देवराज चौहान, जगमोहन और खुदे अभी-अभी उस चार मंजिला इमारत के बाहर पहुंचे थे जो कि विलास डोगरा का वो ही ठिकाना था जहां देवराज चौहान और जगमोहन को बुलाकर उसने कठपुतली नाम की नशीली दवा पिलाई थी। कार उन्होंने दूसरी इमारत के पास खड़ी कर रखी थी। सड़क पर ट्रेफिक निकल रहा था। हैडलाइटें चमक रही थीं।

देवराज चौहान और जगमोहन के चेहरे पर दरिन्दगी नाच रही थी। गुस्से से भरे चेहरे। आंखों में वहशी भाव उनकी हर हरकत से जैसे मौत के भाव टपक रहे थे। जगमोहन के कंधे पर छोटा-सा बैग मौजूद था, जिसमें ग्रेनेड और बम थे।

इमारत के भीतर रोशनी थी।

नीचे का हिस्सा खाली था और वहां कारें पार्क की जाती थी। पूरी इमारत पिलरों पर खड़ी थी। दूसरी और तीसरी मंजिल पर रोशनी हो रही थी और मध्यम सी रोशनियां नीचे पार्किंग वाले हिस्से में फैली थीं।

"डर लग रहा है खुदे?" देवराज चौहान ने खतरनाक स्वर में पूछा।

"त—तुम लोग साथ हो तो डर क्यों लगेगा।" खुदे ने खुद को संभालते हुए कहा।

"हम भीतर जा रहे हैं।" देवराज चौहान भिंचे स्वर में बोला—"विलास डोगरा भीतर मिल गया तो आज ही ये मामला खत्म हो जायेगा।"

"ठ-ठीक है।" खुदे के होंठों से निकला।

"तुम बाहर अंधेरे में गेट के पास रिवॉल्वर लिए खड़े रहोगे। फालतू मैगजीनें तुम्हारी जेब में है। भीतर वालों को हम संभाल लेंगे। इस दौरान कोई गेट से निकलकर बाहर भागना चाहे तो उसे तू भागने नहीं देना। शूट कर देना।"

"मैं ऐसा ही करूंगा देवराज चौहान।" खुदे का स्वर सख्त हो गया।

देवराज चौहान और जगमोहन सामने गेट की तरफ बढ़ गये।

खुदे की निगाह उन पर थी और जेब में पड़ी रिवॉल्वर पर उसने हाथ रखा और सिर घुमाकर सड़क की तरफ देखा, जहां से ढेरों ट्रैफिक निकल रहा था फिर वापस गेट की तरफ देखने लगा। देवराज चौहान और जगमोहन वहां पहुंच चुके थे और गेट पर दो आदमी टहलते दिखाई दे रहे थे। खुदे वहीं खड़ा देखता रहा। फिर उसने उन दो आदमियों को गिरते देखा।

खुदे समझ गया कि देवराज चौहान और जगमोहन ने साइलैंसर लगी रिवॉल्वर से उन पर फायर किए हैं। फिर उसने दोनों को गेट खोलकर भीतर जाते देखा तो खुदे ने रिवॉल्वर निकाली और गेट के पास सरक आया। उसके रिवॉल्वर की नाल पर भी साइलैंसर चढ़ा था। भीतर निगाह मारी तो गेट के भीतर की तरफ दो लोग गिरे दिखे।

तभी खुदे का फोन बज उठा।

"मुसीबत।" खुदे बड़बड़ाया और फोन निकालकर बात की—"हैलो।"

"कैसे हो?" टुन्नी के गहरी सांस लेने का स्वर कानों में पड़ा—"आ क्यों नहीं जाते।"

"नहीं आ सकता। तेरे को सब पता तो है कि मैं मुसीबत में पड़ा हूं।" खुदे की निगाह गेट से भीतर जा रही थी।

"क्या कर रहे हो?"

खुदे ने हाथ में पकड़ी रिवॉल्वर को देखा फिर कह उठा।

"बाहर सड़क पर टहल रहा हूं।"

"बाहर क्यों निकले। साठी के आदमियों ने तुम्हें देख लिया तो मार देंगे।" टुन्नी का तेज स्वर कानों में पड़ा।

"अब साठी की चिन्ता नहीं है कुछ दिन तो।"

"क्यों?"

"देवराज चौहान की पत्नी ने साठी के परिवार को बंधक बनाकर, कुछ वक्त के लिए उसे चुप रहने को कहा है।"

"सच?" उधर से टुन्नी खुश हो उठी—"फिर तो तुम मेरे पास आ सकते हो।"

"इधर बहुत काम है।"

"ऐसा क्या काम है जो तुम अपनी पत्नी के पास भी नहीं आ सकते। कितने दिन हो—।"

"समझा कर टुन्नी। इधर जान को जंजाल पड़ा हुआ है। मैं इस

वक्त देवराज चौहान और जगमोहन के साथ विलास डोगरा के ठिकाने पर धावा बोल रहा हूं। एक मिनट की भी फुर्सत नहीं।"

"अब तुम्हें क्या जरूरत है इन दोनों के साथ रहने... ।"

"मेरी प्यारी टुन्नी। समझाकर।" खुदे सब्र के साथ बोला—"देवराज चौहान ने मुझसे वादा किया है कि ये काम निपटाकर वो डकैती करेगा और मुझे अच्छी खासी रकम मुहैया करायेगा। उन पैसे से हमारे सारे कलेश कट जायेंगे। थोड़ी दिनों की बात है और सब कुछ तुझे पहले भी बता चुका हूं। महीने भर की तो बात है उसके बाद हम चैन से रहेंगे।"

"तेरे बिना मेरा दिल नहीं लगता।" उधर से टुन्नी ने मुंह बनाकर कहा।

"मेरा कहां लगता है, पर काम में फंसा हूं तो उसे भी निपटाना है। देवराज चौहान के साथ डकैती करूंगा तो सारी उम्र का खर्चा एक ही झटके में वसूल हो जाएगा। उसके बाद तो हमेशा तेरे ही पास... टुन्नी एक खुशखबरी सुन।" खुदे एकाएक बोला।

"क्या?"

"विल्ले का काम हो गया।"

"काम हो गया?"

"मेरा मतलब मर गया। किसी ने उसे मार... ।"

"तूने तो नहीं मारा?"

"मेरे मारने से पहले ही वो किसी और के हाथों मारा गया।" हरीश खुदे ने कड़वे स्वर में कहा—"हरामजादे ने बहुत बड़ी गद्दारी की हमारे साथ। देवराज चौहान के बारे में टेवेन साठी और मोना चौधरी को, एक-एक करोड़ लेकर बता दिया कि हम कहां छिपे हैं?"

"सत्यानाश हो उसका।"

"वो तो हो गया जैसा काम किया था वैसा ही उसे फल मिला।"

"अच्छा हुआ मेरे पीछे तो हाथ धोकर पड़ा था। बहुत घटिया दोस्त था तुम्हारा।"

"भूल जाओ, मर गया वो।"

"वो मुझे याद ही कब था जो भूलूं। तू वादा कर कि बीच में वक्त लगा तो तू मेरे पास जरूर आएगा।"

"पक्का आऊंगा।" खुदे ने कहा और फोन बंद करके जेब में रख लिया।

उसी पल उसके कानों में एक धमाकेदार आवाज पड़ी।

खुदे समझ गया किसी ने देवराज चौहान या जगमोहन पर गोली चलाई होगी। परंतु उसके बाद फायर की आवाज नहीं आई तो खुदे

ये भी समझ... कि साईलेंसर लगे रिवॉल्वर बढ़िया काम कर रहे हैं।

ह... खुदे वहीं पर टिका रहा। रिवॉल्वर हाथ में थी, अंधेरा था। वो सु... था।

...धा घंटा बीतने पर एक आदमी गेट की तरफ आता दिखा। वो घा... था। लंगड़ा रहा था। उसी पल खुदे सामने आया और उस पर ...ली चला दी। 'पिट' की आवाज उभरी और वो गेट के भीतर ही गिर गया। खुदे पुनः ओट में हो गया।

इस तरह खुदे ने सात लोगों को मारा। भीतर से यदा-कदा गोली चलने की आवाज आ जाती थी।

उनके बाहर आने से खुदे को समझते देर नहीं लगी कि देवराज चौहान और जगमोहन ने खासा कोहराम मचा रखा होगा। तभी तो वह खुली हवा लेने के लिए बाहर भागे आ रहे हैं।

डेढ़ घंटा बीत चुका था।

खुदे सब्र के साथ ड्यूटी संभाले हुए था।

फिर एक आदमी और भीतर से गेट की तरफ भागता आता दिखा। जबकि खुदे मन ही मन सोच रहा था कि क्या विलास डोगरा भीतर है। भीतर हो तो आज रात ही काम निपट जाएगा। परंतु वो जान लेना चाहता था कि विलास डोगरा भीतर है कि नहीं। उत्सुकता थी मन में। वो रिवॉल्वर थामे फौरन गेट पर आ खड़ा हुआ और भागकर आते आदमी से बोला।

"रुक जाओ।" इसके साथ ही हरीश खुदे ने उस पर रिवॉल्वर तान दी।

वो आदमी रुका। मध्यम रोशनी में उसका चेहरा ज्यादा स्पष्ट नहीं दिख पा रहा था।

"विलास डोगरा भीतर है?" खुदे ने एक खतरनाक स्वर में पूछा।

"नहीं।" वो घबराया सा कह उठा—"मुझे जाने दो, मैं...।"

तभी खुदे ने ट्रेगर दबा दिया तो अगले ही पल वो पीछे जा गिरा।

खुदे पुनः ओट में खड़ा होकर भीतर झांकने लगा। ये अच्छा था कि अभी बाहर से कोई भीतर नहीं आया था। कोई आता तो उसके साथ पंगा खड़ा हो जाना था क्योंकि आने वाले ने उसे छिपे, पहले ही देख लेना था।

कुल मिलाकर दो घंटे बाद देवराज चौहान और जगमोहन बाहर आए। अब जगमोहन के कंधे पर बमों वाला छोटा-सा बैग नहीं था। अंधेरे में उनके चेहरे स्पष्ट नहीं दिख रहे थे।

"यहां से चलो, ये बिल्डिंग उड़ने वाली है।" देवराज चौहान के

होठों से गुर्राहट निकली और वो तीनों तेजी से उधर दौड़ते चले गए जहां उन्होंने कार खड़ी की थी वो कार में जा बैठे।

खुदे ने कार स्टार्ट की कार जल्दी से आगे बढ़ी।

वो वहां से कुछ आगे आ गए।

"बस, यहीं रुको।" जगमोहन ने दरिंदगी भरे स्वर में कहा।

खुदे ने सड़क किनारे कार रोकी तो उसकी निगाहें जगमोहन की बाजू पर पड़ी।

"तुम्हारी बांह को क्या हुआ?" खुदे ने पूछा।

"गोली बांह का मांस उड़ाते हुए निकल गई। सब ठीक है चिंता की कोई बात नहीं है।"

"तुम ठीक हो?" खुदे ने पिछली सीट पर मौजूद चौहान पर निगाह मारी।

"हां।" देवराज चौहान के होठों से गुर्राहट निकली।

"कितने आदमी थे भीतर?"

"बीस के करीब होंगे।" जगमोहन बोला—"सब मारे जा चुके हैं। विलास डोगरा भीतर नहीं था बच गया हरामी।"

तभी कानों को फाड़ देने वाले धमाके हुए।

एक, दो, तीन, चार, पांच...।

अजीब सी गर्जना जैसी आवाज उभरी, जैसे इमारत हिली या गिरी हो।

"चलो।" जगमोहन ने होंठ भींचकर कहा।

खुदे ने कार आगे बढ़ा दी।

❑❑❑

❑❑❑

"साठी साहब!" जाफर ने फोन बंद करते हुए कहा—"खबर आई है कि देवराज चौहान और जगमोहन ने विलास डोगरा के एक ठिकाने पर हमला किया। पहले वहां मौजूद लोगों को मारा फिर बम से बिल्डिंग उड़ा दी।

"बहुत जल्दी देवराज चौहान मैदान में आ गया।" देवेन साठी के होंठ सिकुड़े।

"डोगरा का ये वो वाला ठिकाना है, जहां वो रातें बिताता था। साठी, जाफर को देखता रहा।

"हमारे आदमी देवराज चौहान पर बराबर नज़र रखे हुए हैं।"

"वो दोनों अकेले थे या उसके साथ और लोग भी थे?"

"खुदे था उसके साथ।"

"बस वो तीन थे, हिम्मत का काम किया उन्होंने। विलास डोगरा हाथ नहीं लगा?"

"वो शाम को ही वहां से चला गया था।"

देवेन साठी ने अपना सोचों से भरा चेहरा हिलाया।

"जाफर! आखिर ऐसा क्या है जो आजाद होने के चंद घंटों बाद ही देवराज चौहान ने विलास डोगरा के यहां हमला बोल दिया?"

"वो ही बात।"

"कठपुतली वाली?"

"जी।"

"वो तो बहाना है, मैं उस बात पर विश्वास नहीं करता। असल बात कुछ और है।" साठी बोला।

जाफर खामोश रहा।

"तेरे को क्या लगता है कि क्या बात है?"

"मेरे को तो वो कठपुतली के नशेवाली बात सही लगती है।" जाफर ने कहा।

"मेरे भाई को किसने मारा?" साठी के चेहरे पर कठोरता नाच उठी।

"देवराज चौहान ने।"

"यहां पर आकर सारी बात खत्म हो जाती है कि हमारा शिकार देवराज चौहान, जगमोहन और हरीश खुदे है।"

"मैं आपकी बात पर इंकार नहीं कर रहा हूं। देवराज चौहान ने खुद माना है कि बड़े साठी साहब को उसने गोली मारी। परंतु मैं मामले की दूसरी तरफ से सोच रहा हूं। जैसा कि देवराज चौहान कहता है कि उसे डोगरा ने नशे की दवा दी, जब वो बेकाबू हो गया था तो उसे बड़े साठी साहब को मारने को कहा, और उसने ऐसा कर दिया। बेशक बड़े साठी साहब को देवराज चौहान ने गोली मार दी परंतु उसके पीछे विलास डोगरा का आदेश काम कर रहा था।"

देवेन साठी खामोश रहा।

"मोना चौधरी दुबई से किसी को उठा लाने का काम पचास करोड़ में विलास डोगरा को सौंप रही थी कि अचानक उसने इरादा बदल दिया और ये काम बड़े साठी साहब के हवाले कर दिया। इस बात का बदला लिया डोगरा ने। मैंने ये बात सुनी है। अब आप आंखें बंद करके फैसला करना चाहते हो तो मैं आपका हुक्म मानूंगा।"

"तेरा मतलब कि देवराज चौहान को छोड़ देना चाहिए?"

"इतना बड़ा फैसला मैं कैसे बता सकता हूं?" जाफर बोला—"सारे हालात तो आपके सामने हैं।"

देवेन साठी के दांत भिंच गए।

"मेरे भाई को गोली किसने मारी?" साठी गुर्राया।

"देवराज चौहान ने।"

"तो फैसला हो गया कि हमने देवराज चौहान से बदला लेना।"

"आपके फैसलों की तामील हो गई, साठी साहब।" जाफर सतर्क स्वर में कह उठा—"लेकिन मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि देवराज चौहान तो उस समय विलास डोगरा का हुक्म बजा रहा था। देवराज चौहान की डोर उस वक्त डोगरा के हाथ में थी।"

देवेन साठी कठोर नज़रों से जाफर को देखने लगा।

"गलती माफ हो। असल में हमारा शिकार डोगरा है, देवराज चौहान नहीं।"

"तेरा क्या मतलब है कि मैं ये सब नहीं समझ पा रहा हूं।" साठी ने शब्दों को चबाकर कहा।

"तो फिर देर किस बात की?"

"देवराज चौहान की बात पर सीधे-सीधे भरोसा कैसे करें? ये सब तो देवराज चौहान ने कहा है। क्या पता सब कुछ झूठ हो। डोगरा इस बात को कभी भी नहीं मानेगा। मैं इन बातों में उलझकर रह जाऊंगा।" देवेन साठी गुस्से से बोला।

"आपने अपने भाई के हत्यारे को सजा देकर बड़े साठी साहब की आत्मा को शांति देनी है। क्या पता देवराज चौहान को मार देने से बड़े साठी साहब की आत्मा को शांति न मिले?" जाफर दबे स्वर में बोला।

देवेन साठी सोचता रहा। चेहरे पर गंभीरता रही। कठोरता रही। फिर बोला।

"हम इस सोच के साथ मैदान में उतरें तो मामला लंबा हो जाएगा। अगर यह बात सच है तो डोगरा कभी इस बात को नहीं मानेगा। परंतु ये सोचकर मैं चुप भी नहीं बैठ सकता। अभी बाहर के हालात देखने दो कि देवराज चौहान क्या करता है? और कहां तक करता है। देवराज चौहान ने अगर खुद को बचाना है तो फिर वो ये बात साबित करने की कोशिश जरूर करेगा कि ये काम उससे विलास डोगरा ने धोखे से करवाया है। वो मेरे सामने इस बात को साबित करने की कोशिश कर सकता है।"

"कैसे साबित करेगा?"

"ये सोचना देवराज चौहान का काम है, मेरा नहीं। देवराज चौहान की खबरें बराबर हासिल करते रहो कि वो क्या-क्या कर रहा है?"

जाफर नें सिर हिलाया।

"आरु और बच्चों की कोई खबर लगी?" देवेन साठी ने पूछा।

"हमारे आदमी ये पता लगाने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं।"

"पाटिल भी वहीं कैद है। देवराज चौहान ने चाल तो बढ़िया चली है, लेकिन ये सब ज्यादा लंबा नहीं चलेगा।" साठी ने दांत भींचकर कहा—"ये खेल कभी भी खत्म हो सकता है। देवराज चौहान पर नज़र रखो।",

❑❑❑

❑❑❑

"रीटा डार्लिंग!" विलास डोगरा एक हाथ में व्हिस्की का गिलास पकड़े, दूसरा हाथ रीटा की कमर में डाले झूमता हुआ कह उठा—"तू ना होती तो मैं खाली-खाली दीवारों से टक्कर मार रहा होता। मेरा दिल कौन लगाता?"

"तो मैं आपका दिल लगाने वाला खिलौना हूं।" रीटा खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"तुम तो मेरी जान हो, मेरा जहान हो।" डोगरा उसे चूमते हुए कह उठा।

"आज चढ़ गई लगती है?"

विलास डोगरा हँस पड़ा।

"ये व्हिस्की क्या चढ़ेगी मुझ पर, मुझ पर तो तुम ही चढ़ी रहती हो हमेशा। मेरे दिमाग पर सवार रहती हो, मेरे दिल पर सवार रहती हो। मैं खुद चाहता हूं कि तुम ही हमेशा मुझ पर सवार रहो। दिल लगा रहे मेरा और इसी तरह जिंदगी भी कट जाए।"

"एक बात कहूं डोगरा साहब?"

"कह।"

"कभी सोचा है कि आपकी इतनी बड़ी दौलत का क्या होगा?"

"हम दोनों ने अभी सौ साल और जीना है रीटा डार्लिंग।"

"मैं जानती हूं, पर क्या ये अच्छा नहीं हो कि हम शादी कर लें। बच्चा पैदा कर लें?"

"नहीं रीटा डार्लिंग, कभी नहीं, मैं तुझे खोना नहीं चाहता। औरत जब पत्नी बन जाए तो उसमें रस खत्म हो जाता है। दोस्त बनकर रहे तो बेशक पचास साल रहे, कोई फर्क नहीं पड़ता। औरत बच्चा पैदा कर दे तो वो बंट जाती है। मैं ऐसे ही ठीक हूं। हम ऐसे ही ठीक हैं। कितनी बढ़िया कट रही है हममें और... ।"

"मैं तो चाहती हूं कि आपकी जायदाद संभालने वाला कोई हो, जो।"

भी चलता है। वहां सब सुरक्षित हैं। फिर परसों तो हमने अपने टूर पर निकल जाना है। हिंदुस्तान के कई शहरों में जाना है, अपने लोगों से मिलने। उनकी समस्याएं निपटाने। हर छः महीने में एक बार मेरा ये टूर होता है और पंद्रह दिन के बाद वापसी होती है। हमारे वापस आने तक हमारे आदमी देवराज चौहान और जगमोहन को खत्म कर चुके होंगे।" विलास डोगरा मुस्कराकर कह उठा।

"उनके साथ हरीश खुदे भी है।"

"वो भी मरेगा।"

तभी रीटा के हाथों में दबा फोन बज उठा।

"हैलो!" रीटा ने बात की।

"डोगरा साहब से बात कराओ।" उधर से मौसम का स्वर सुनाई दिया।

रीटा फोन को डोगरा की तरफ बढ़ाती बोली।

"मौसम [illegible] है।"

डोगरा ने फोन थामा और कुर्सी पर बैठता कह उठा।

"बोलो मौसम।"

"पता चला है कि देवराज चौहान ने [illegible] वाला ठिकाना...।" उधर से मौसम ने कहना चाहा।

"हां, वो जगह बर्बाद हो गई। नुकसान हुआ। बुरा लगा।" डोगरा कह उठा।

"देवराज चौहान का इंतजाम करना होगा।" मौसम के स्वर में गुस्सा था।

"ये काम रशीद संभालेगा, अभी उसे फोन करता हूं।"

"रशीद [illegible] इस काम को बढ़िया ढंग से।"

"रशीद भी ठीक से संभाल लेगा। मैं अभी उससे बात करता हूं।" डोगरा ने कहा—"देवराज चौहान का मामला बहुत मामूली है, एक-दो दिन में सब ठीक हो जाएगा। ड्रग्स ठीक से डिलीवर हो रही है?"

"सब ठीक चल रहा है, मैं अपने काम अधूरे नहीं छोड़ता। आज रात अफगानिस्तान से आया माल तट पर उतरेगा। उसे ही रखने की तैयारी में लगा हूं। सारी रात इसी में बीत जाएगी।"

"[illegible] का दोपहर में फोन आया था, उसे दिल्ली के कॉलेज के बच्चों के लिए ड्रग्स चाहिए। वो तेरे से मिलेगा, उसे कम भाव बताना। वो माल ज्यादा लेता है। मैं चाहता हूं कि ये साठी से माल लेना बंद कर दे।"

"मैं समझ गया डोगरा साहब।"

"तू अपने काम में ध्यान लगा मीला। देवराज चौहान की कोई समस्या नहीं, काम निपट जाएगा।"

डोगरा ने कान से फोन हटाया बंद किया तो रीटा कह उठी।

"देवराज चौहान ने तो सारा मूड ही खराब कर दिया डोगरा साहब।"

"मेरी रीटा डार्लिंग का मूड बिगड़ गया ये तो बुरी बात है।" डोगरा पुनः फोन मिलाता प्यार से बोला—"धंधे में गड़बड़ी तो चलती ही रहती है। मूड भी ठीक हो जाएगा।" कहकर डोगरा ने फोन कान से लगा लिया।

"रशीद को?" रीटा बोली।

विलास डोगरा जवाब में गर्दन हिलाकर रह गया।

"हैलो!" रशीद की नशे से भरी आवाज विलास डोगरा के कान में पड़ी।

"मस्ती कर रहा है।" विलास डोगरा शांत स्वर में बोला।

"ओह डोगरा साहब।" एकाएक रशीद की आवाज में चौकस भाव आ गए थे।

"बहुत आराम कर लिया तूने।"

"आप कोई काम ही नहीं बताते।"

"तो सुन, काम सुन, डकैती मास्टर देवराज चौहान का नाम सुना है कि नहीं?"

"बरोबर सुना है।"

"मेरा उसका कुछ पंगा है। वो मेरे पीछे पड़ गया है।"

"उसकी ये हिम्मत।"

"विले पार्ले वाली चार मंजिला मेरी बिल्डिंग उड़ा दी है उसने। वहां बीस को गोली मारी।"

"आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?"

"अभी पंगा खड़ा हुआ है, तू देवराज चौहान को संभाल। वो तीन हैं। जगमोहन और हरीश खुदे भी उनके साथ है। खुदे को तो तू जानता ही होगा। आठ साल उसने साठी भाइयों के लिए काम किया है।"

"याद है, दो-तीन बार मिला उससे। मैं अभी सबको खत्म करता हूं।" रशीद की आवाज आई।

"कितने आदमी हैं तेरे पास?"

"इस वक्त तो मेरे पास सिर्फ छः आदमी ही हैं, पर अभी फोन करके सौ से ऊपर आदमी को एक घंटे में इकट्ठे करके देवराज चौहान,

जगमोहन और खुदे के पीछे लगाता हूं। सुबह तक उनका काम हो जाएगा डोगरा साहब।''

''काम निपटते ही मुझे फोन कर।'' कहकर डोगरा ने फोन बंद कर दिया। चेहरे पर गंभीरता थी।

''कब तक रशीद काम पूरा करेगा?'' रीटा ने पूछा।

''सुबह तक, सिग्रेट तो पिला।''

रीटा वहां से हटी और कुछ दूर रखा पैकिट उठा लाई।

विलास डोगरा ने सिग्रेट सुलगाकर कहा।

''बहुत नुकसान किया देवराज चौहान ने।''

''आपने भी तो कम नहीं किया, उसे कठपुतली देकर बहुत नचाया।'' रीटा मुस्कराई।

''अगर हमले के वक्त हम वहां पर होते तो न जाने क्या होता। देवराज चौहान पागल हुआ पड़ा है।'' डोगरा कश लेते कह उठा—''अगर हम वहां होते तो देवराज चौहान बचता नहीं।''

''बचेगा तो वो अभी भी नहीं। रशीद ने उसे सुबह तक खत्म कर देना है।''

''मुझे साठी के परिवार के लोगों के बारे में पता लगाना होगा।''

''उसकी क्या पड़ी है आपको?''

''अगर रशीद सुबह तक देवराज को खत्म नहीं कर सका तो देवराज चौहान और भी आगे बढ़ेगा। मुझे नुकसान-पर-नुकसान देता रहेगा। देवेन साठी ने कब का देवराज चौहान को मार दिया होता, अगर उसका परिवार देवराज चौहान के कब्जे में न होता। अगर उसे उसका परिवार मिल जाए तो वो देवराज चोहान को मार डालेगा और हमारा काम हो जाएगा।''

''बात तो आपकी सही है डोगरा साहब। क्यों न सुबह तक इंतजार कर लें। शायद रशीद ही मार दे देवराज चौहान को।''

विलास डोगरा ने रीटा को देखा।

रीटा का खूबसूरत चेहरा कयामत ढा रहा था।

''तू इतनी खूबसूरत क्यों है?'' विलास डोगरा मुस्कराया।

''ताकि आपका दिल लगाकर रखूं।'' रीटा मुस्कराई।

''देखना तू एक दिन मेरी जान निकाल देगी।'' डोगरा ने गहरी सांस ली।

''अब मुझे छेड़ने लगे।'' रीटा शरारती स्वर में कह उठी।

''तू ठीक कहती है सुबह तक देख लेते हैं कि रशीद क्या करता है?'' विलास डोगरा कह उठा।

''तो सुबह तक हमें फुर्सत है?'' रीटा ने बांह फैला दी।

डोगरा मुस्कराकर उठा और पास पहुंचकर रीटा को अपने साथ भींच लिया।

"धीरे।" रीटा के होठों से सिसकारी निकली।

"मेरी जान!" विलास डोगरा जैसे होश गंवाने लगा। उसके हाथ रीटा के जिस्म पर फिसलने लगे।

"अभी डिनर नहीं किया आपने?"

"पहले तेरा डिनर करूंगा। उसके बाद में दूसरा डिनर। उसके बाद फिर तेरा डिनर।"

□□□

□□□

ये विलास डोगरा का वो ठिकाना था, जहां चोरी-छिपे हथियार रखे जाते थे। और उन्हें आगे सप्लाई किया जाता था, इस सारे काम को रशीद संभालता था। वो कई बार पाकिस्तान जा पहुंचा था, सीमा पार करके। पाकिस्तान से ही उसे हथियार मिलते थे। वो खुद सीमा के इस पार पहुंचा देते थे हथियारों को और वहां से रशीद के आदमी हथियार को संभालते, और ठिकाने पर ले आते। रास्ते में पड़ने वाले सब नाके सैट कर रखे थे। माल आए या न आए, हर महीने हर नाके पर नोट पहुंच जाते थे। सब बढ़िया चल रहा था।

रशीद खतरनाक माना जाता था।

पुलिस को आज भी उसकी तलाश थी। आठ हत्याएं उसके सिर पर थीं। परंतु विलास डोगरा की छत्र-छाया में उसका वक्त बढ़िया कट रहा था। उसके बारे में जानकारी होते हुए भी पुलिस वाले उस पर हाथ नहीं डालते थे। यानी कि उनके पास डोगरा की तरफ से वक्त पर नोट पहुंचते रहते थे।

रशीद की उम्र चालीस साल थी। वो एक सेहतमंद और लंबा व्यक्ति था। गहरा सांवला रंग, चेहरे पर चाकू के कटे का पुराना निशान। क्लीन शेवड चेहरा। ताकत उसमें इतनी कि वो एक साथ छः लोगों को भी खाली हाथों से परास्त कर देता था। परंतु अधिकतर वो अपने काम में व्यस्त रहता था। आज शाम को ही एक ट्रक में हथियार भेजे गए थे। रास्ते में हर पहचान के नाके को ट्रक का नंबर बताकर फोन कर दिया था कि इस ट्रक में उसका माल है। ट्रक को रोका न जाए। साथ ही एक पुलिस वाला सादे कपड़े में, मोटरसाइकिल पर ट्रक के साथ चल रहा था। ताकि रास्ते में किसी प्रकार की गड़बड़ हो तो उसे संभाला जा सके। रशीद ने उससे कहा था कि ट्रक गोवा पहुंचने पर उसे एक लाख रुपया देगा। पाकिस्तान से हथियार कम दामों पर मिलते थे, ऐसे में पुलिसवालों को पैसा देने में कोई परेशानी

नहीं आती थी। डोगरा ने उससे कह रखा था कि पुलिसवालों को कभी भी नाराज नहीं किया जाए। उनके दम पर ही उनका काम चलता है।

रशीद इस सच को समझता था।

विलास डोगरा का फोन आने के बाद रशीद फोन पर व्यस्त हो गया और अपने आदमियों को फोन करने में लग गया। आधे घंटे बाद फारिग हुआ। इस दौरान उसने सौ के करीब आदमियों को देवराज चौहान, जगमोहन और खुदे को तलाश करके, मार देने के काम पर लगा चुका था।

रशीद के चेहरे पर थकान नज़र आ रही थी। जो थोड़ी-बहुत ही थी। वो नशा उतर चुका था। इस वक्त वो आफिस जैसे कमरे में था। टेबल पर फाइलें और कागज बिखरे हुए थे। वो कुर्सी छोड़कर उठा और पैकेट से सिगरेट सुलगाने के बाद दरवाजे की तरफ बढ़ गया। चेहरे पर सोचें थी।

बाहर, काफी बड़ा हॉल था और पांच लोग लकड़ी की पेटियां ठोंक रहे थे। पेटियों में हथियारों को पैक किया जा रहा था। वो सब अपने ही आदमी थे। तभी एक तरफ से एक आदमी निकलकर उसके पास पहुंचा।

"काम बंद कर दे गोपाल। आवाजें सिर में बहुत बज रही हैं। अब आराम करने को कह दे।"

"बस करो।" गोपाल ने आवाज लगाकर कहा—"काम बंद कर दो, आराम करो।"

ठोका-पीटी की आवाजें थम गईं। वे अपनी जगहों से उठने लगे। इधर-उधर जाने लगे।

"आप भी आराम कर लीजिए रशीद साहब, अपना ट्रक तो दिन का उजाला निकलने से पहले ही गोवा पहुंच जाएगा।"

"आज रात आराम नहीं हो सकेगा। देवराज चौहान, जगमोहन और खुदे को खत्म करना है। अपने आदमी उन तीनों को तलाश कर रहे हैं। मुझे भी बाहर निकलना होगा। डोगरा साहब का ये काम अर्जेंट है।"

"मैं भी साथ चलूं।" गोपाल बोला।

"चल।" कहकर रशीद वापस अपने केबिन में पहुंचा और एक तरफ रखी बोतल उठाकर गिलास तैयार किया और एक ही सांस में आधा खत्म कर दिया। फिर सिग्रेट सुलगा ली।

तभी दरवाजा खुला और गोपाल ने भीतर प्रवेश किया।

"आ गया। अभी निकलते... ।" रशीद ने उसे कुछ कहना चाहा कि शब्द मुंह में ही रह गए।

गोपाल के पीछे देवराज चौहान, उसकी पीठ पर साइलैंसर लगी रिवॉल्वर लगाए खड़ा था।

वो देवराज चौहान को पहचान गया था।

"तुम?" रशीद के होठों से निकला।

गोपाल को धकेलता देवराज चौहान दो कदम भीतर आ गया।

गोपाल के चेहरे पर आतंक के भाव थे।

देवराज चौहान ने साइलैंसर लगी नाल, गोपाल की पीठ से सटाकर, उसके सिर पर रखी और ट्रेगर दबा दिया।

रशीद की आंखें फैल गईं।

देखते-ही-देखते गोपाल आगे को गिरा, टेबल से टकराया और नीचे गिर गया।

देवराज चौहान की खतरनाक निगाहें रशीद पर टिकी थीं। आंखें शोले बरसा रही थीं।

एकाएक रशीद को होश आया। उसने तेजी से हाथ टेबल की ड्रा की तरफ बढ़ाया।

'पिट'

देवराज चौहान के हाथ में रखे रिवॉल्वर से फायर हुआ।

गोली टेबल पर मौजूद फाइल के रास्ते टेबल में धंसी और नीचे फर्श पर जा टकराई।

रशीद जहां का तहां रुक गया उसके चेहरे पर पसीना उभरा।

"जल्दी मौत चाहता है तो कोई शरारत करना।" देवराज चौहान के होठों से एक गुर्राता स्वर निकला।

देवराज चौहान को देखता रशीद होठों पर जीभ फेरकर रह गया।

"पहचानता है मुझे?" पुनः गुर्राया देवराज चौहान।

रशीद ने हां में सिर हिलाया।

"मैं हूं देवराज चौहान।" देवराज चौहान के लहजे में खूंखारता भरी थी—"वो देवराज चौहान, जिसके साथ विलास डोगरा ने तगड़ी धोखेबाजी की और मुझे मौत के कुएं में धकेल दिया। उस मौत के कुएं से कुछ पल की मोहलत पाकर, मैं विलास डोगरा को खत्म करने निकला हूं। यहां से दो मील दूर, तेरे तीन आदमियों ने मुझे घेर लिया और मुझ पर गोलियां चलाईं। परंतु मैंने उन तीनों को मार दिया। उनमें से एक की सांसें चल रही थीं, मेरे पूछने पर उसने बताया कि तुमने उन्हें ऐसा करने का हुक्म दिया था। मैंने तुम्हारे ठिकाने का पता पूछा और यहां आ गया। यहां आकर मुझे पता चला कि ये विलास डोगरा का ठिकाना है।"

रशीद ठगा सा खड़ा देवराज चौहान को देखे जा रहा था।
"तेरे को ऐसा ऑर्डर विलास डोगरा से मिला?"
"ह...हां।"
देवराज चौहान ने अपना दरिंदगी से भरा चेहरा दिखाया।
"एक कागज पैन उठा।" देवराज चौहान उसी लहले में बोला।
रशीद जरा भी नहीं हिला।
"सुना नहीं।" देवराज चौहान गुर्रा उठा।
रशीद जल्दी से टेबल पर पहुंचा और कागज-पैन ढूंढने लगा।
"सिर्फ कागज-पेन, हथियार की तरफ हाथ बढ़ाने की सोचना भी मत।" देवराज चौहान ने मौत भरे स्वर में कहा।
रशीद कागज पैन थमाकर भय भरी निगाहों से देवराज चौहान को देखने लगा।
"अब बता आराम से मरना चाहता है, या तड़प-तड़पकर?" देवराज चौहान ने दांत भींचकर कहा।
"म...मुझे मत मारना।"
"मरेगा तो तू जरूर क्योंकि तू विलास डोगरा के लिए काम करता है। आराम से मरना चाहता है या तड़प-तड़प के?"
"अ...आराम से।" रशीद का स्वर कांप उठा। गालों पर पसीने की लकीर बह निकली।
"तो इस कागज पर अब विलास डोगरा के ठिकाने के पते लिखने शुरू कर दे।"
रशीद टेबल पर झुका और जल्दी से कागज पर लिखने लगा।
तभी कदमों की आहट गूंजी और जगमोहन ने भीतर प्रवेश किया। उसके चेहरे पर खतरनाक भाव दिखाई दे रहे थे। हाथों में रिवॉल्वर दबी। आहट सुनकर रशीद ने सिर उठाया तो देवराज चौहान गुर्राया।
"सिर नीचे, जो काम कर रहा है वह कर। तेरे को बचाने वाला कोई नहीं आने वाला।"
रशीद पुनः कांपते हाथों से लिखने लगा।
"छः लोग थे इस ठिकाने पर।" जगमोहन गुर्राया—"अब कोई जिंदा नहीं बचा।"
"मतलब कि ये सातवां और आखिरी है।" देवराज चौहान ने रशीद को देखकर कहा।
"हां।"
"खुदे कहां है?"
"वो इस इमारत के बाहरी हिस्से में खड़ा है।"

"तुम यहां से बाहर निकलकर खड़े हो जाओ।"
जगमोहन फौरन पलटकर बाहर निकल गया।
रशीद रुकते हुए बोला।
"म...मुझे जितने पते पता थे, सब लिख दिए।"
"कितनी जगहों के पते लिखे हैं?" देवराज चौहान ने दरिन्दगी से पूछा।
"अ...आठ जगहों के।"
देवराज चौहान आगे बढ़ा और वो कागज उठाकर अपनी जेब में डालता पीछे हटता कह उठा।
"मैं तुझे जिंदा भी छोड़ सकता हूं।"
ये सुनकर रशीद के चेहरे पर कुछ राहत के भाव उभरे।
"जिंदा रहने के लिए विलास डोगरा के बारे में बताना होगा कि वो कहां मिलेगा?" देवराज चौहान ने शब्दों को चबाकर कहा।
"मैं नहीं जानता।" रशीद की आवाज कांप उठी।
"इस सवाल का जवाब देकर तू अपनी जिंदगी बचा सकता है।"
"कसम से नहीं जानता।" रशीद ने अपनी टांगें कांपती महसूस की।
"मैं गोली चलाने जा रहा हूं। अभी भी सोचने का वक्त है तेरे पास।"
"विलास डोगरा इस वक्त कहां है, मैं...नहीं।"
'पिट' हल्की सी आवाज उभरी और रशीद के माथे में छेद दिखने लगे। उसकी आंखें फैलकर जहां-की-तहां रुक गईं। फिर उसका शरीर पास की कुर्सी से टकराया और वह धड़ाम की आवाज़ से नीचे जा गिरा।
देवराज चौहान दांत भींचे पलटकर बाहर निकलता चला गया।

❑❑❑
❑❑❑

रात का डेढ़ बज रहा था।
मुम्बई में आधे से ज्यादा सन्नाटा पसर चुका था। परंतु बाकी की मुम्बई अभी भी तेजी से दौड़ रही थी। सड़कों पर पर्याप्त संख्या में वाहन थे। उनकी हैडलाइटें रात के अंधेरे को दूर करने में, कुछ हद तक सफल थीं। इंजनों का शोर तो कभी-कभार किसी गाड़ी के हार्न की आवाज। सड़क किनारे फुटपाथों पर लोग सोए हुए थे। कुछ ऐसे भी थे जो अभी तक पैदल यात्रा कर रहे थे। दूसरे महानगरों की तरह मुम्बई का भी काफी बड़ा हिस्सा जाग रहा था।

सड़क पर जाते वाहनों म वो कार भी शामिल थी। जिसमें देवराज चौहान, जगमोहन और खुदे बैठे थे। जगमोहन कार ड्राइव कर रहा था। खुदे बगल में बैठा था। देवराज चौहान पीछे वाली सीट पर, उस कागज को मोबाइल टॉर्च की रोशनी में पढ़ने लगा था, जिस पर मरने से पहले रशीद ने डोगरा के ठिकाने के पते लिखे थे।

"दादर पहुंचना है हमें।" देवराज चौहान कागज तय करके जेब में रखता कठोर स्वर में बोला।

"पहुंच गए समझो।" जगमोहन के होठों से गुर्राहट निकली।

"वहां विलास डोगरा होगा।" हरीश खुदे कह उठा।

"डोगरा हमें कहीं भी मिल सकता है।" देवराज चौहान ने दांत भिंचे स्वर में कहा—"शाम तक वो विले पार्ले वाले उसकी ठिकाने पर मौजूद था जहां हमने सबसे पहले शिकार मारे थे। परंतु वक्त रहते उसे पता चल गया होगा कि देवेन साठी को हमने संभाल लिया है। और वो हमें नहीं मार सका। तब डोगरा समझ गया होगा कि मैं उस जगह पर कभी भी पहुंच सकता हूं। और वो जगह उसने तुरंत छोड़ दी। वो कहां गया, ये पता उसके आदमियों को भी नहीं है।"

"वो जहां भी छिपा हो, जल्दी ही वो हमारे हाथ लगेगा।" जगमोहन ने खतरनाक स्वर में कहा।

"वो मिल जाए तो कितना अच्छा हो, सारा झंझट ही खत्म हो जाये।" खुदे ने एक गहरी सांस लेकर कहा—"उसके बाद हम दो-चार दिन आराम करके, किसी जगह डकैती करने की तैयारी करें। अब तो टुन्नी भी मेरे बिना परेशान होने लगी है।"

"बिल्ला का क्लेश कट गया न?" जगमोहन ने पूर्ववतः स्वर में कहा।

"हां, पता चला उसे तुम्हारे साथी रुस्तम राव और बांके लाल राठौर ने मार दिया था।"

"इसी तरह विलास डोगरा का भी क्लेश भी कट जाएगा, कमीने ने हमारा जीना ही हराम कर दिया।" जगमोहन गुर्राया।

"अब तो डोगरा तुम लोगों से डरकर भागता फिर रहा होगा।" खुदे बोला।

"विलास डोगरा को कम मत समझो।" देवराज चौहान के होठों से गुर्राहट निकली—"वो शैतान से कम नहीं है। सोचता भी शैतानों की तरह है। मैं उसकी आदतों को बहुत अच्छी तरह जानता हूं। हमारा वक्त अच्छा रहा तो तभी वो हाथ आयेगा।"

"मैं भगवान से प्रार्थना कर रहा हूं कि वो हमें दादर वाले ठिकाने पर ही मिल जाये।" हरीश खुदे कह उठा।

□□□
□□□

दादर रेलवे स्टेशन से पांच सौ कदमों की दूरी पर वो दो मंजिला इमारत थी। जो कि काफी पुरानी लग रही थी और काफी खुली जगह में बनी थी। उसकी बाहरी दीवारें दस फीट तक ऊंची थी। उस पर हुई पीली सफेदी अब काली पड़ने लगी थी। इस वक्त उस इमारत के माथे पर एक बल्ब जलता दिख रहा था। बाहर दीवार पर 'ओम सोप फैक्ट्री' बड़े-बड़े शब्दों में लिखा नज़र आ रहा था। दिन भर इस इमारत के लोगों का आना-जाना लगा रहता था। गेट पर हर वक्त वर्दीधारी चौकीदार होता जो आने-जाने वालों पर कड़ी निगाह रखता था, खासतौर से आने वालों पर और अकसर वो आने वालों को बाहर ही रोक लिया करता था और पास ही बूथ में रखे इन्टरकॉम पर, उनके बारे में भीतर बात करता। तसल्ली होती तो, आने वालों को भीतर जाने देता।

इमारत के सामने से निकलने वाले ये ही सोचते कि यहां साबुन बनता है।

दिन भर में दो-चार बार टैम्पू भी माल से लदे निकल जाते थे।

चार-दीवारी में लगा आठ फीट ऊंचा और दस फीट चौड़ा लोहे का गेट था जो कि रात को इस वक्त बंद था और भीतर बूथ में रोज रात की तरह रात का चौकीदार पहरा देता बैठा था। भीतर अभी भी काम चल रहा है, वो जानता था, परन्तु रात के वक्त कोई बाहर नहीं जा रहा था, कोई भीतर नहीं आ रहा था। खामोशी ठहरी हुई थी। कभी-कभाद इमारत के भीतर से थोड़ी बहुत आहट उभरकर गेट तक आ जाती थी।

इमारत के भीतर ऊपरी मंजिल पर मौला हुसैन मौजूद था।

थका-सा लग रहा था मौला। परसों से उसे बाहर निकलने का वक्त ही नहीं मिला था। काम ही इतना ज्यादा था। दस दिन पहले ड्रग्स की बड़ी खेप आई थी। आधी तो पार्टियों को डिलीवर कर दी गई थी, जिनके आर्डर पहले से ही तैयार खड़े थे और बाकी की आधी छोटी पैकिंगों में पैक की जा रही थी। पार्टियों ने छोटी पैकिंग में ड्रग्स मांगी थी। यूं ये काम उसके आदमी उसकी गैर मौजूदगी में भी कर सकते थे, परन्तु मौला की आदत थी कि हर काम को अपने हाथों से निपटाना। अब थोड़ा-सा माल ही बचा था पैक होने को और उसे पता था कि सुबह तक काम खत्म हो जायेगा फिर माल को टैम्पुओं में भरकर पार्टी को भेजना भर होगा।

मौला को नींद आ रही थी।

परन्तु अपनी भारी हो रही आंखों को संभाले हुए था। अभी-अभी वो नीचे का चक्कर लगा के आया था। पच्चीस से ऊपर आदमी तेजी से पैकिंग के काम में लगे थे। मौला हुसैन का फोन बजने लगा।

"हैलो।" उसने बात की।

"मौला साहब।" उधर से एक आवाज कानों में पड़ी—"सुबह तक माल हर हाल में चाहिये। आगे पार्टी को वक्त दे रखा...।"

"फिक्र मत कीजिये रोहित साहब। सुबह छः बजे माल एकदम 'टिच' तैयार होगा।"

"कसम से?"

"खुदा कसम। माल आप लेने आयेंगे या हमेशा की तरह भिजवा दूं?"

"उसी ठिकाने पर भिजवा देना। मेरे आदमी माल आने के इन्तजार में वहीं मौजूद रहेंगे।"

"बढ़िया जनाब।" मौला ने कहा और फोन बंद करके, वापस टेबल पर रख दिया।

❑❑❑

❑❑❑

गेट के भीतर, बूथ में गार्ड बैठा था कि एकाएक 'धप्प' की आवाज उसके कानों में पड़ी। वो चौंका और सावधानी से बूथ के बाहर निकला और मध्यम-सी रोशनी में सतर्कता से नज़रें घुमाने लगा। साथ ही उसका हाथ जेब में पड़ी रिवॉल्वर पर जा टिका फिर उसने रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली।

इमारत के माथे पर जो बल्ब जल रहा था। वो कुछ दूर था और उसकी कम रोशनी ही वहां तक पहुंच रही थी। वो जानता था कि उसने 'धप्प' की आवाज सुनी थी जैसे कोई कूदा हो। उसकी नज़रें घूमती रही। दो-तीन मिनट बीत गये, परन्तु उसकी नज़रों की पकड़ में कुछ भी नहीं आया। लेकिन जब तक उसे तसल्ली ना हो कि आवाज किसकी थी, वो चैन से नहीं बैठ सकता था। रिवॉल्वर हाथ में पकड़े वो इमारत और दीवार के बीच, दस फीट चौड़े खाली रास्ते पर चलने लगा। उस रास्ते पर कुछ आगे छोटा टैम्पू खड़ा था। एक तरफ दीवार के पास बोरियों का ढेर था।

वो दस कदम ही अंधेरे में आगे बढ़ा होगा कि एकाएक थम गया।

उसकी निगाह अंधेरे से भरी दीवार के साथ, नीचे पड़ी किसी चीज पर पड़ी। वो नहीं समझ पाया कि वो क्या चीज है। वो गोल-सी

हुई पड़ी थी। दूसरे ही पल गार्ड की आंखों में तीव्र चमक आती चली गई।

वो किसी इन्सान का शरीर था जो गोल-गोल-सा हुआ पड़ा था। दुबका हुआ था।

उसी पल उसने उस उकड़ूं पड़े इन्सान पर रिवॉल्वर तानते हुए कहा।

"मैंने तुम्हें देख लिया है। सीधे खड़े हो जाओ। मेरे हाथ में रिवॉल्वर है।"

वो शरीर हिला फिर धीरे-धीरे सीधा खड़ा होता चला गया।

वो देवराज चौहान था।

गार्ड ने उस पर रिवॉल्वर तान रखी थी और पूरा ध्यान उन पर था।

"कौन हो तुम?" गार्ड ने सतर्क स्वर में पूछा।

"मैं हूं देवराज चौहान।" देवराज चौहान की मध्यम-सी आवाज गूंजी।

"कौन देवराज चौहान?"

उसी पल दीवार की मुंडेर पर अंधेरे में हरकत करता एक और शरीर दिखा।

चूंकि गार्ड का पूरा ध्यान देवराज चौहान पर था, इसलिये दीवार के ऊपर की हरकत नहीं देख पाया। दीवार पर नज़र आने वाला इन्सान पैरों के बल दीवार पर बैठा और मेंढक की भांति नीचे खड़े गार्ड पर छलांग लगा दी।

वो, गार्ड पर आ गिरा।

गार्ड को जर्बदस्त झटका लगा। रिवॉल्वर उसके हाथ से छूट गइ। दोनों नीचे जा गिरे। गार्ड का सिर सीमेंट के फर्श से टकराया और बेहोश हो गया। उस पर कूदने वाला जगमोहन था। जगमोहन ने उसकी बेहोशी को अच्छी तरह चैक किया और उसे खींचकर दीवार के साथ अंधेरे में डाल दिया।

"मैं आऊं।" तभी दीवार के ऊपर चढ़े बैठे खुदे को फुसफुसाती आवाज सुनाई दी।

"आ।" जगमोहन ने ऊपर देखा।

खुदे नीचे कूदा और तुरन्त खड़ा हो गया। साइलैंसर लगी रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली।

"ये गार्ड बेहोश पड़ा है।" देवराज चौहान के लहजे में खतरनाक भाव थे—"इसका ध्यान रखना। गार्ड की जगह ले ले। जो भी बाहर

भागता आये उसे शूट कर देना। कोई भी यहां से बाहर नहीं निकलना चाहिये।"

"ठीक है।"

फिर देवराज चौहान और जगमोहन वहां से गेट वाली दिशा की तरफ बढ़ गये। आगे जाकर वांई तरफ मोड़ था। वो मुड़े तो कुछ आगे उन्हें रोशनी की लकीर दिखी। वहां पहुंचे तो दरवाजा दिखा। जो कि थोड़ा-सा खुला हुआ था और रोशनी की लकीर बाहर तक आ रही थी। दोनों ने साइलैंसर लगी रिवॉल्वरें निकालकर हाथ में ली और दरवाजा धकेलते हुए भीतर प्रवेश कर गये। दायें-बायें बाथरूम किचन बने हुए थे। जहां अंधेरा था। सामने कमरा था रोशनी वहीं से आ रही थी। वे तेजी से चलते हुए कमरे में प्रवेश करते चले गये।

वहां करीब आठ आदमी अपने काम में व्यस्त थे।

फर्श पर काफी बड़ी पन्नी पर सफेद रंग के पाउडर का ढेर लगा था जिसे कि वे सब छोटी-छोटी पैकिंगों में डालने लगे थे। परन्तु उन दोनों को रिवॉल्वरों के साथ आया पाकर वो चौंके।

रिवॉल्वरें उन पर तन चुकी थी।

"हिलना मत।" देवराज चौहान गुर्राया—"जैसे बैठे हो वैसे ही बैठे रहो।"

वे सब स्तब्ध रह गये।

सन्नाटा-सा आ ठहरा वहां।

"विलास डोगरा कहां है?" देवराज चौहान पुनः गुर्राया।

"पता नहीं!" एक के होंठों से निकला।

"यहां पर है?"

"नहीं।"

"तो यहां कौन है तुम्हारा बड़ा?"

"मौला हुसैन। वो अभी-अभी ऊपर की मंजिल पर गया है। परन्तु तुम कौन हो?"

"मैं हूं देवराज चौहान।" दरिन्दगी भरे स्वर में कहने के साथ ही देवराज चौहान के हाथ में दबे रिवॉल्वर से पिट, पिट, पिट, पिट की आवाजें गूंजने लगी और कमरे में बारूद की स्मैल फैल गई।

वो आठों आदमी गोलियों के शिकार हो गये। किसी के सिर में तो किसी के गले और छाती में गोली लगी। उन्हें चीखने का भी मौका ना मिला। मासूमों को ड्रग के नाम पर मौत बेचने वाले खुद ही मौत के मुंह में चले गये थे। जगमोहन आगे के कमरे की तरफ बढ़ गया।

देवराज चौहान उसके पीछे था।

अगला कमरा खाली था। परन्तु उससे अगले कमरे में दस लोग मौजूद थे जो छोटी पन्नियों में ड्रग्स की पैकिंग कर रहे थे। पास में नीले रंग का ड्रम रखा था जो कि ड्रग्स से आधा भरा था।

वे लोग इन दोनों को आया पाकर चौंके!

अगले ही पल देवराज चौहान और जगमोहन के हाथों में दबी रिवॉल्वरों से बे-आवाज गोलियां निकलने लगी।

चंद पलों में ही वो बे-आवाज से ढेर हो गये। उनके गिरने की कुछ आवाजें उभरी और थम गई।

सन्नाटा-सा उभर आया वहां।

लाशें, खून और ड्रग्स ही वहां नज़र आ रही थी।

वो दोनों रिवॉल्वरें थामें कमरे से निकलकर आगे बढ़े तो खुद को छोटे-से बरामदे में पाया। एक तरफ ऊपर जाती सीढ़ियां दिखाई दे रही थी। परन्तु सामने की तरफ कमरा था जहां से कुछ आवाजें आ रही थी।

"तुम आवाजों की तरफ देखो।" देवराज चौहान धीमें स्वर में गुर्राया—"मैं ऊपर जा रहा हूं।"

जगमोहन फौरन उस कमरे की तरफ बढ़ गया।

देवराज चौहान सीढ़ियों की तरफ निकल गया।

मौला हुसैन ने कुर्सी से उठकर अंगड़ाई ली और एक घंटा नींद लेने की सोची। उसे लग रहा था कि नींद नहीं ली तो सुबह तक उसकी तबीयत खराब हो जायेगी। सोने से पहले एक बार वो नीचे का चक्कर लगा लेना चाहता था। उसी पल कमरे के बाहर आहटें उभरी तो नज़रें खुले दरवाजे पर टिकी। दो पलों बाद ही दरवाजे पर देवराज चौहान खड़ा दिखा।

हाथ में रिवॉल्वर। चेहरे पर मौत नाच रही थी।

एक अंजनबी को इस हाल में आया पाकर, मौला चौंका। उसका हाथ फौरन जेब की तरफ बढ़ा।

तभी 'पिट' की आवाज हुई और गोली उसके कान को गर्म हवा देती निकल गई।

"रिवॉल्वर मत निकालना।" देवराज चौहान गुर्राया।

जबकि मौला हुसैन गोली चलते ही हड़बड़ाकर ठिठक चुका था।

"जेब से रिवॉल्वर निकालकर दूर फेंक दो।" देवराज चौहान ने पहले वाले स्वर में कहा।

मौला ने ऐसा ही किया। उसकी गम्भीर निगाह देवराज चौहान पर टिकी थी।

रिवॉल्वर कुछ दूर दीवार के पास जा गिरी थी।

"तुम ऊपर कैसे आ गये?" मौला का लहजा तीखा था।

"नीचे तुम्हारा कोई आदमी जिन्दा नहीं बचा।" देवराज चौहान ने दरिन्दगी से कहा।

"कौन हो तुम?" मौला के माथे पर बल दिखने लगे।

"मैं हूं देवराज चौहान।"

मौला बुरी तरह चौंका।

"देवराज चौहान?" चेहरे पर से कई रंग आकर गुजर गये।

देवराज चौहान की मौत भरी निगाह, मौला पर टिकी रही। होंठ भिंचे हुए थे।

"तुमने रशीद और उसके आदमियों को भी मारा।"

"अब तुम्हारी बारी है। परन्तु तुम बच भी सकते हो। मौका होगा तुम्हारे पास बचने का।"

"तुम बहुत गलत कर रहे हो देवराज चौहान। डोगरा साहब से टक्कर लेकर तुम ज़ीत नहीं...।"

"उस हरामजादे ने मेरे साथ क्या किया है, मालूम है तुम्हें?" देवराज चौहान ने दांत पीसे।

"नहीं।"

"बताया भी नहीं उसने।"

"मुझे तो सिर्फ इतना पता है कि देवेन साठी और मोना चौधरी तुम्हें मारने के लिए, तुम्हारे पीछे हैं।"

"ये सब कुछ विलास डोगरा का ही किया धरा है।" देवराज चौहान ने वहशी स्वर में कहा—"इस वक्त तुम सिर्फ अपने बारे में सोचो। जिन्दा रहना चाहते हो या मरना पसन्द करोगे?"

"कोई भी मरना नहीं चाहेगा।" मौला ने गम्भीर स्वर में कहा।

तभी कदमों की आहट के साथ जगमोहन ने भीतर प्रवेश किया।

"सब ठीक है।" जगमोहन ने मौत भरे स्वर में कहा—"अब कोई जिन्दा नहीं है यहां।"

मौला का चेहरा फक्क पड़ गया था।

"विलास डोगरा कहां है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"पता नहीं।" मौला ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मेरा ये सवाल तुम्हें जिन्दगी दे सकता है अगर तुमने सही जवाब दिया तो।" देवराज चौहान के दांत भिंच गये।

मौला परेशान दिखा। व्याकुलता से उसकी बांहें हिली।

"डोगरा के बारे में बताकर अपनी जिन्दगी बचा सकते हो। तुम डोगरा के कहीं पर भी होने की खबर दो। हमारे साथ चलो। अगर

डोगरा वहां मिल गया तो तुम्हें छोड़ दूंगा। ये ही एक आखिरी मौका है तुम्हारे पास जान बचाने का।"

"मैं वास्तव में नहीं जानता कि वो कहां है।" मौला ने सिर हिलाकर कहा—"वैसे भी डोगरा तुम्हारे हाथ नहीं आने वाला कल या परसों में वो मुम्बई से बाहर जा रहा है देश भर में फैले ठिकानों पर जाता है छः महीने में एक बार और पन्द्रह दिन बाद लौटता है।"

"कहां-कहां जायेगा वो?"

"कई शहरों को कवर करेगा मैं नहीं जानता कि वो किस शहर से अपना दौरा शुरू करने वाला है?"

"कैसे जायेगा?"

"अपनी वैन से।"

"साथ कौन होगा?"

"रीटा और ड्राइवर दया होता है उसके साथ।"—मौला ने गम्भीर स्वर में कहा।

"अकेला जायेगा। तो क्या आज तक उसे मारने की कोशिश नहीं की किसी ने?"

"उसे अकेला मत समझना। उसकी वैन बहुत कमाल की चीज है। उसमें गनें फिट हैं। भीतर बैठे वो हर तरफ गोलियां चला सकता है। बटनों को दबाकर। एक बार में पचासों गोलियां निकलती है। वैन बुलैट प्रूफ है और भीतर बैठे वो हर तरफ का हाल देख सकता है। ड्राइवर दया कहने को ड्राईवर है, जबकि वो पेशेवर हत्यारा है और विलास डोगरा के पसंदीदा लोगों में से एक है, तभी तो उसे हर वक्त अपने साथ रखता है।"

देवराज चौहान, मौला को मौत भरी निगाहों से देखता रहा।

"इस वक्त विलास डोगरा कहां मिलेगा?" देवराज चौहान ने शब्दों को चबाकर पूछा।

"मुझे नहीं मालूम वो कहां है। क्या वो जानता है कि तुम उसके पीछे हो?" मौला ने पूछा।

"हां।"

"फिर तो वो सुरक्षित जगह छिपा होगा उसके खास लोगों को भी उसका पता नहीं होगा।" मौला बोला।

"वो कल मुम्बई से बाहर जा रहा है या परसों?"

"शायद परसों।"

"किससे पता चलेगा कि पहले कौन-से शहर से जा रहा है। कब रवाना हो रहा है, किधर-किधर वो जायेगा?"

"प्रकाश दुलेरा शायद इस बारे में बता सके।"

"ये कौन है?"

"डोगरा का सलाहकार है। उसे राय देने और उसके प्रोग्राम को भी तय करता है।"

"कहां मिलेगा ये?"

"मुझे नहीं मालूम प्रकाश दुलेरा का कौन-सा ठिकाना है। मैं उससे कभी भी नहीं मिला, परन्तु ये बांद्रा वेस्ट में कमल सोसायटी के पन्द्रह नम्बर फ्लैट में रहता है।" मौला की निगाह देवराज चौहान के चेहरे पर थी।

"प्रकाश दुलेरा को पक्का मालूम होगा डोगरा के प्रोग्राम के बारे में?" देवराज चौहान गुर्राया।

"हां।"

"तुमने ये बात इतनी आसानी से क्यों बता दी?"

मौला हुसैन ने देवराज चौहान को देखा। चुप रहा।

"जवाब दे मेरी बात का।"

"मैं अपना ड्रग्स का धंधा शुरू करना चाहता हूं परन्तु डोगरा की वजह से मैं ऐसा नहीं कर पा रहा। उसे मेरे इरादे का भी पता चल गया तो वो मुझे मार देगा। अगर तुम मार सकते हो उसे तो मार दो।"

"परन्तु तुमने कैसे सोच लिया कि मैं तुम्हें जिन्दा छोड़ दूंगा।" देवराज चौहान गुर्राया।

"मुझे मारकर तुम्हें क्या मिलेगा?" मौला हुसैन ने गहरी सांस ली।

"प्रकाश दुलेरा के बारे में बताकर तुमने अपनी जान बचा ली।" देवराज चौहान कठोर स्वर में बोला—"परन्तु इस बात का क्या भरोसा कि मेरे यहां से जाते ही तुम डोगरा को ये बात नहीं बता दोगे।"

"मैं डोगरा को पसन्द नहीं करता।"

"इस वक्त मैं अपने उसूल के खिलाफ तुम्हें जिन्दा छोड़ रहा हूं। डोगरा के मामले में मेरा उसूल है कि उसका आदमी मेरा दुश्मन, लेकिन तुम्हें छोड़े जा रहा हूं। अगर तुमने डोगरा के सामने मुंह खोला तो उसे छोड़कर, सबसे पहले तुझे मारूंगा।"

"तुम्हें ऐसा नहीं करना पड़ेगा।" मौला ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

"तुम सच में इसे जिन्दा छोड़ रहे हो?" जगमोहन गुर्राया—"मुंह खोलकर ये हमारे लिये मुसीबतें खड़ी कर देगा।"

"सुना तुमने?"

"मैं ऐसा नहीं करूंगा। एक बार मुझ पर भरोसा करके तो देखो। मैं डोगरा के लिए काम करता हूं परन्तु उसे पसन्द नहीं करता। मैं

चाहता तो प्रकाश दुलेरा के बारे में कुछ ना बताता। परन्तु मैंने बताया।"

"चलो।" देवराज चौहान ने जगमोहन से कहा और पल्टा।

"सुनो।" मौला सुखे होठों पर जीभ फेरकर कह उठा—"तुम लोगों ने यहां सब आदमियों को मार दिया?"

"हां।" देवराज चौहान वापस घूमा।

"तो मेरी बांह पर गोली मार दो। नहीं तो डोंगरा जरूर सोचेगा कि तुमने मुझे जिन्दा क्यों छोड़ा। क्योंकि तुम लोगों ने वहां रशीद को भी मार दिया था।" मौला ने गम्भीर स्वर में कहा।

देवराज चौहान ने रिवॉल्वर वाला हाथ सीधा किया और ट्रेगर दबा दिया।

"पिट" की आवाज के साथ गोली निकली और मौला की टांग में प्रवेश कर गई।

मौला के होठों से चीख निकली और टांग पकड़ते, वो नीचे जा गिरा।

देवराज चौहान और जगमोहन वहां से बाहर निकलते चले गये।

❑❑❑

❑❑❑

सुबह के साढ़े चार बज रहे थे। रात का अंधेरा अभी बाकी था।

बांद्रा वेस्ट में कमल सोसायटी में गार्ड मुख्य प्रवेश गेट पर अपनी ड्यूटी दे रहे थे। परन्तु रात भर की ड्यूटी के बाद अब उनमें सुस्ती और नींद भर आई थी। सोसायटी के गेट पर और भीतर लाईटें जल रही थीं। एक-दो लोग अभी गेट से बाहर निकलकर सैर पर गये थे। सामने की सड़क पर भी पांच-सात लोग जाते नज़र आ रहे थे। अगले पैंतालिस मिनटों में दिन का उजाला फैल जाना था।

कार सोसायटी के गेट पर जा रुकी। ड्राइविंग सीट पर देवराज चौहान बैठा था। बगल में खुदे और पीछे की सीट पर जगमोहन था। कार रुकते ही एक गार्ड पास आया।

"कहां जाना है साब?" गार्ड ने पूछा।

"फ्लैट नम्बर 15, प्रकाश दुलेरा के यहां।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा—"वो मेरा भाई है, माता जी का स्वर्गवास हो गया है। मैं पूना से आ रहा हूं और उसे साथ ले जाना है पूना।"

"ओह।" गार्ड ने फौरन सहानुभूति से सिर हिलाया कार के भीतर खुदे और जगमोहन को देखा—"जाइये, भीतर चले जाइये।" कहते हुए वो पीछे हटा और आगे बढ़कर दस फीट चौड़ा गेट पूरा खोल दिया।

कार भीतर प्रवेश कर गई।

सामने ही फ्लैटों की इमारतें बनी हुई थी। उसके पास पहुंचकर एक जगह पर कार रोकी। इंजन बंद किया और तीनों बाहर निकल आये। खुदे सामने के फ्लैट को देखता कह उठा।

"ये उनतीस नम्बर फ्लैट है। पन्द्रह नम्बर भी पास ही में कहीं होगा।"

वो फ्लैटों के नम्बर पढ़ते आगे बढ़ने लगे। यहां-वहां लाइटें लगी थी। कुछ और लोग सैर पर जाते दिखे। जल्दी ही वे पन्द्रह नम्बर फ्लैट के दरवाजे पर जा रुके, जो कि पहली मंजिल पर स्थित था।

जगमोहन ने कॉलबैल दबा दी।

भीतर बेल बजने की आवाज सुनाई दी।

देवराज चौहान का हाथ जेब में सरक गया।

खुदे ने बेचैन निगाहों से आस-पास देखा। सब तरफ शान्ति थी।

जगमोहन ने-पुनः बेल बजाई। दो-तीन बार एक साथ बजाई।

कुछ पलों बाद भीतर से कदमों की आवाज के साथ किसी के बड़बड़ाने की आवाज आई और फिर दरवाजा खोला जाने लगा। दरवाजा खुला और पचपन बरस का आदमी नाइट सूट में दिखा। उसकी आंखें सूजी हुई थी। मुंह से व्हिस्की की स्मैल आ रही थी। वो सोया उठकर आ रहा था।

"क्या है?" उसने आंखें मिचमिचाते पूछा।

"दरवाजे से हट।" देवराज चौहान शांत स्वर में बोला—"डोगरा ने भेजा है हमें।"

उसकी आंखें पूरी खुल गई।

"डोगरा साहब ने?"

"प्रकाश दुलेरा नाम है तेरा?"

"हां, लेकिन डोगरा साहब ने तुम लोगों को किस वास्ते भेजा। वो मुझे फोन कर सकते...।"

"एमरजैंसी है।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने उसे पीछे किया और भीतर प्रवेश करता चला गया।

"लेकिन मैं तुम लोगों को नहीं जानता। अभी डोगरा साहब को फोन करता हूं।"

जगमोहन और खुदे भी भीतर आ गये।

इस वक्त उन्होंने आराम से काम इसलिये किया कि अगर किसी की निगाह उन पर पड़ जाये तो उसे गड़बड़ ना लगे। ज्योंही खुदे ने दरवाजा बंद किया। जगमोहन ने रिवॉल्वर निकाली और भीतर कमरे की तरफ जाते प्रकाश दुलेरा पर तानी और उसे आहिस्ता से पुकारा।

प्रकाश दुलेरा पलटा और उसके हाथ में रिवॉल्वर देखकर आंखें फैल गई।

नींद उड़ चुकी थी उसकी। उसने बारी-बारी देवराज चौहान और खुदे को भी देखा।

"कौन हो तुम लोग?" प्रकाश दुलेरा होठों पर जीभ फेरकर कह उठा।

"मैं हूं देवराज चौहान।" देवराज चौहान दरिन्दगी भरे स्वर में कह उठा।

तीनों ने स्पष्ट तौर पर प्रकाश दुलेरा को चौंकते देखा।

"तुम देवराज चौहान हो।" उसके होठों से निकला।

देवराज चौहान उसे घूरता रहा।

"तुमने रशीद और उसके सारे आदमियों को मार दिया। विले पार्ले वाले ठिकाने को बम से उड़ा दिया। वहां के सब लोगों को मार दिया और अब मेरे पास आ गये। मैंने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा?" प्रकाश दुलारे घबराये स्वर में बोला।

"लगता है मौला की खबर तुम तक पहुंची नहीं।" देवराज चौहान ने खतरनाक स्वर में कहा।

"मौला हुसैन" उसके होठों से निकला—"क्या उसे भी मार दिया?"

"मैं हर उस इन्सान को मार रहा हूं जो विलास डोगरा के लिए काम करता है।" देवराज चौहान गुर्राया।

प्रकाश दुलेरा का चेहरा फक्क दिखने लगा।

"अब तेरा नम्बर है। तू भी डोगरा के लिए काम करता... ।"

"नहीं।" मैं नहीं करता। प्रकाश दुलेरा जल्दी से बोला—"मैंने आज ही उसके लिये काम करना छोड़ दिया... ।"

"लेकिन तू बच सकता है।" देवराज चौहान ने भिंचे स्वर में कहा।

"क...कैसे?" उसके होठों से निकला।

"विलास डोगरा कहा पर मिलेगा, ये बता कर।"

"मैं नहीं जानता वो कहां है। शाम को मैंने उससे पूछा भी था परन्तु उसने नहीं बताया।" प्रकाश दुलेरा घबराकर बोला।

"सोच ले। मेरा सवाल तेरी जिन्दगी बचा सकता है।"

"मैं सच में नहीं जानता। जानता होता तो जरूर बता देता। जान से बढ़कर, मेरे लिए कोई चीज नहीं है। मुझे मारने की मत सोचो। मैं तो शरीफ बंदा हूं। खून-खराबे से हमेशा दूर रहता हू। कल मैं तुम्हें पता कर दूंगा कि डोगरा कहां पर है।"

"हमसे सिर्फ आज की बात कर।" जगमोहन गुर्राया—"अब की बात कर। कल का कुछ नहीं।"

"मुझे मत मारना। मैं बोत शरीफ आदमी हूं। कटपुतली तो तुम्हें डोगरा ने दी थी, मैंने तो नहीं दी।"

"ये बात तेरे को किसने बताई?" देवराज चौहान ने होंठ भींचकर कहा।

"डो—डोगरा ने। सारी बात बताई थी।"

"फिर तो तुझे बताने की कोई जरूरत नहीं कि हमें डोगरा की क्यों जरूरत है।"

"मुझे मत मारना।"

"तो तू नहीं जानता कि डोगरा कहां मिलेगा।"

"कसम से नहीं जानता।"

"ठीक है। एक मौका तुझे और देता हूं। जवाब दिया तो तू जिन्दा रहेगा।" देवराज चौहान ने मौत भरे स्वर में कहा—"ये आखिरी मौका है तेरे लिए जीने का। जवाब देने में जल्दी मत करना।"

प्रकाश दुलेरा ने तुरन्त सिर हिला दिया।

"डोगरा मुम्बई से बाहर जा रहा है। कल या परसों...।"

"परसों सुबह जायेगा।" प्रकाश दुलेरा ने जल्दी से कहा।

"तेरे को सब पता है। क्यों पता है ना?"

"ह...हां...।"

"मैंने सुना है डोगरा के प्रोग्राम तू बनाता है।"

"हां।"

"तू उसका सलाहकार है।"

"लेकिन मैंने उसे कठपुतली के बारे में कोई सलाह नहीं दी। वो उसका अपना आइडिया था।" दुलेरा ने जल्दी से कहा।

"डोगरा बाहर जा रहा है, उसके टूर का प्रोग्राम तू ही बनाता है।"

"हाँ। सब कुछ मैं ही सैट करता हूँ।" उसने सिर हिलाया।

"कैसे जायेगा डोगरा।"

"अपनी वैन से।" प्रकाश दुलेरा बहुत घबराया हुआ था।

"हमें बता डोगरा कहाँ-कहाँ जा रहा है। पहले कहाँ जायेगा। उसके बाद कहाँ जायेगा। पूरा प्रोग्राम बता उसका।"

दुलेरा व्याकुल निगाहों से देवराज चौहान को देखने लगा।

देवराज चौहान ने रिवॉल्वर निकाली और उसकी ठोडी पर साइलैंसर लगी नाल रख दी।

"मुझे मत मारो।" दुलेरा काँप उठा।

"मुँह खोल। जो मैंने पूछा है, वो बता। शुरू हो जा।" देवराज चौहान गुर्रा उठा।

प्रकार दुलेरा, विलास डोगरा के टूर का प्रोग्राम बताने लगा। पाँच मिनट तक बताता रहा।

"इस टूर पर उसके साथ दो लोग होंगे। दया और रीटा, है ना?"

"ह-हाँ। रीटा और दया हमेशा उसके साथ ही रहते हैं, बेशक वो कहीं भी जाये।" दुलेरा कह उठा।

"वो अकेला इस तरह निश्चिंत क्यों रहता है?"

"उसकी वैन किसी टैंक से कम नहीं है। सौ लोगों को दो मिनट में खत्म कर सकती है।"

"ये बातें बताने का शुक्रिया।" देवराज चौहान ने क्रूर स्वर में कहा।

"अब तो मुझे नहीं मारोगे ना?"

"मजबूरी है।" देवराज चौहान ने कहा और ट्रेगर दबा दिया।

'पिट' की आवाज उभरी।

गोली दुलेरा की ठोडी की हड्डी तोड़ते हुए मुँह में रास्ता बनाते सिर में कहीं जा अटकी।

प्रकाश दुलेरा कटे पेड़ की तरह नीचे जा गिरा।

चंद पलों के लिए वहाँ गहरा सन्नाटा उभर आया।

दुलेरा के चेहरे से निकलता खून फर्श को रंगने लगा।

देवराज चौहान ने रिवॉल्वर जेब में रखी और फोन निकालकर नम्बर मिलाने लगा। चेहरे पर मौत बरस रही थी। फोन कान से लगा लिया। होंठ भिंचे हुए थे। दूसरी तरफ बेल बजी फिर नगीना की आवाज आई।

"हैलो।"

"मैं हूँ।" देवराज चौहान बोला—"तुम कहाँ हो।"

"बंगले पर।"

"बांके और सरबत सिंह भी साथ हैं?"

"हाँ...।"

"इसी वक्त बंगला छोड़ दो। हम डोगरा के कई ठिकानों पर हमला कर चुके हैं। वो गुस्से में बंगले पर हमला कर सकता है।"

"ठीक है। दस मिनट में हम बंगला खाली कर देते हैं।"

"सरबत सिंह के घर की तरफ मत जाना। देवेन साठी के आदमी तुम पर नज़र रख रहे होंगे।"

"मैं समझती हूँ।" उधर से नगीना ने कहा।

देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया।

जगमोहन और हरीश खुदे की निगाह उस पर थी।

"विलास डोगरा आसानी से हाथ नहीं आने वाला। वो सतर्क हो चुका है।" देवराज चौहान ने शब्दों को चबाकर कहा—"परन्तु उसके बाहर जाने का टूर हमें पता चल गया है। वो कल मुम्बई से निकलेगा। हमें नहीं मालूम कि वो कहाँ से चलेगा। ऐसे में उसे पकड़ने का सबसे बढ़िया रास्ता है कि हम पहले ही वहां पहुंच आयें, जहां उसने आना है।"

"कोल्हापुर।" जगमोहन गुर्रा उठा।

"हां ये महाराष्ट्र का ही एक शहर है जो मुंबई से 10 घंटे की दूरी पर है।"

"डोगरा ने सबसे पहले कोल्हापुर ही जाना है। वहां वो किसके पास जायेगा। ये भी हमें पता है। हमें वहां पहुंच कर वहां की घेराबंदी कर लेनी है। अगर वो सीधे-सीधे हाथ लगे तो ठीक, नहीं तो उसे शूट कर देना है।" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में कहा।

"अगर बच गया तो?" खुदे बोला।

"तो उसका अगला स्टॉप गोवा है। गोवा में उसे घेर लेंगे। वो बचेगा नहीं। प्रकाश दुलेरा ने ही डोगरा का सारा प्रोग्राम तय किया है और दुलेरा से हम उसके प्रोग्राम की हर बात जान चुके हैं। डोगरा, हमसे ज्यादा देर नहीं बचा रहेगा।"

"मैं चाहता था कि डोगरा की मुलाकात एक बार देवेन साठी से करा देते, ताकि साठी अपने भाई की मौत का सच जान लेता।" जगमोहन ने कठोर स्वर में कहा—"ये ठीक नहीं कि साठी और हममें ठनी रहे।"

"अभी हम इस बारे में कुछ नहीं कह सकते।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"हमने डोगरा को खत्म करना है।"

"साठी को हम कोल्हापुर पहुँचने को कह सकते हैं।"

"ये गलत होगा। साठी के आदमियों में, कोई डोगरा का साथी होगा और ये बात डोगरा तक पहुँच गई कि हमें उसके प्रोग्राम की जानकारी है तो वो अपना प्रोग्राम बदल लेगा। हमें सिर्फ अपने काम को अंजाम देना है। ये हमारा हिसाब है डोगरा के साथ।"

"और बाद में हमें साठी से निपटना पड़ेगा।" खुदे ने चिन्तित स्वर में कहा।

"इस बारे में अभी सोचने की जरूरत नहीं।" देवराज चौहान ने होंठ भींच कर कहा।

जब वे तीनों वहाँ से बाहर निकले तो दिन का उजाला फैल चुका था।

□□□
□□□

"रात बहुत बुरी बीती रीटा डार्लिंग।" विलास डोगरा ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—"देवराज चौहान ने विल पार्ले वाला ठिकाना पूरी तरह तबाह कर दिया। रशीद को मार दिया। मौला घायल हो गया, परन्तु उसकी जान बच गई। दुलेरा तक भी पहुँच गया देवराज चौहान। चालीस के करीब अपने आदमियों को एक ही रात में मार दिया। ये सब क्या हो रहा है रीटा डार्लिंग।"

"किसी की बुरी नज़र लग गई है आपको।" रीटा गम्भीर सी उसके सामने आ बैठी।

विलास डोगरा के चेहरे पर सोच के भाव थे।

"देवराज चौहान तो आपकी आशा से कहीं तेज निकला।"

"मैंने ये सोचा था कि उसे साठी या मोना चौधरी मार देंगे और मामला खत्म हो जायेगा। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। ये तो मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ गया है। एक रात में ही उसने तूफान खड़ा कर दिया है। पुलिस वालों के फोन पर फोन आ रहे हैं कि ये क्या हो रहा है। उन्हें बताया कि ये काम देवराज चौहान कर रहा है, ये सुनते ही पुलिस वाले पीछे हट गये कि ये मामला उनका नहीं है। कहते हैं अण्डरवर्ल्ड की लड़ाई में पुलिस कभी दखल नहीं देती।" विलास डोगरा ने रीटा को देखा।

"पुलिस को और नोट दे दो कि वो देवराज चौहान के पीछे पड़ जाये।"

"पुलिस इस मामले में दखल नहीं देगी।" डोगरा बोला।

"तब भी कोई फर्क नहीं पड़ता। आप में तो बहुत ताकत है। देवराज चौहान है ही क्या।"

"देवराज चौहान ने मेरा तगड़ा नुकसान कर दिया है। रशीद को मार दिया। मौला अस्पताल में है। दुलेरा नहीं रहा। लेकिन देवराज चौहान भी तो अब नहीं बचने वाला। मेरे हाथों बुरी मौत मरेगा।"

"बाहर जाने का प्रोग्राम छोड़िये और पहले देवराज चौहान का काम खत्म कीजिये डोगरा साहब।"

"मुम्बई के बाहर के ठिकानों पर जाना जरूरी है। वहाँ पर कई ऐसे मामले रुके पड़े हैं कि उन्हें ठीक करना जरूरी है।" विलास डोगरा सिर हिलाकर कह उठा—"बस एक बात समझ नहीं आ रही कि देवराज चौहान, दुलेरा तक कैसे पहुँच गया?"

"इसमें सोचने जैसी क्या बात है।"

विलास डोगरा ने नज़रें उठाकर रीटा को देखा।

"नहीं समझी रीटा डार्लिंग?"

"नहीं तो।"

"कहीं देवराज चौहान ने दुलेरा से मेरे टूर के प्रोग्राम के बारे में पता ना कर लिया हो।"

"देवराज चौहान को क्या पता कि दुलेरा को आपके टूर के बारे में सब पता है। वैसे भी दुलेरा नहीं जानता कि हम कहां पर हैं। हमने कल अपने रास्ते निकल जाना है। देवराज चौहान को हवा भी नहीं लगेगी।"

"फिर भी हमें सावधानी बरतनी होगी।"

"क्या?"

"हम इस बार अपनी वैन से नहीं जायेंगे। वैन को आसानी से पहचाना जा सकता है।"

"आप देवराज चौहान से भाग क्यों रहे हैं डोगरा साहब। आपके लिए तो वो मामूली चीज है।"

"तभी तो उस पर हाथ नहीं डाल रहा।" विलास डोगरा मुस्करा पड़ा—"देवेन साठी ज्यादा देर तक सब्र नहीं करेगा। कभी भी उसका दिमाग घूम जायेगा और वो देवराज चौहान की गर्दन मरोड़ देगा। अभी तो साठी भी देख रहा होगा कि देवराज चौहान क्या कर रहा है। हमारे मुम्बई से बाहर जाने पर देवराज चौहान के पास करने को कुछ नहीं होगा। वो हमें ढूंढता रहेगा और ये देखकर साठी बोर होने लगेगा। तंग आकर उसने देवराज चौहान को मार डालना है। ऐसे में मेरा देवराज चौहान पर हाथ डालना ठीक नहीं होगा। काम खुद ही निपट जायेगा। लेकिन ये तो पक्का है कि रात बहुत बुरी रही रीटा डार्लिंग।"

रीटा मुस्कराई और प्यार से कह उठी।

"बुरी कहाँ बीती। रात तो बहुत मजेदार रही थी। रात आपने भी पी, मैंने भी पी। आपने मुझे सोने नहीं दिया। मैंने आपको सोने नहीं दिया। कितना मजा आया था हम दोनों एक नई दुनियां में थे। कुछ अलग हट के हुआ रात को। भूल गये क्या?"

"वो कैसे भूल सकता हूं।" डोगरा उसे देखकर मुस्कराया—"ये तो तेरा ही आइडिया था कि उस तरह करते हैं।"

"मेरा तो काम ही आपको खुश रखना है डोगरा साहब।"

"डोगरा तेरे से बहुत खुश हुआ रीटा डार्लिंग। पर ये देवराज चौहान ने तो रात का सारा सपना ही किरकिरा कर दिया। रात की मीठी यादें सुबह दिमाग पर हावी नहीं हो सकी। जरा दया को फोन तो लगा।" डोगरा सोच भरे स्वर में बोला।

रीटा फौरन उठी। मोबाइल लिया और नम्बर मिलाकर फोन डोगरा को दिया।

डोगरा ने फोन कान से लगा लिया। बेल गई फिर दया की आवाज कानों में पड़ी।

"नमस्कार डोगरा साहब।"

"कैसा है तू दया?" डोगरा ने शांत स्वर में पूछा।

"एकदम चोकस।"

"खबर सुनी? रात देवराज चौहान ने क्या गुल खिलाया?"

"पता चल गया। गलत किया देवराज चौहान ने।"

"एक नम्बर का हरामी निकला। निपटना पड़ेगा कुत्ते से।" डोगरा गुस्से से बोला।

"हुक्म दीजिये।"

"हमने कुछ नहीं कहना देवराज चौहान को। वो खुद मरेगा। राह चलते ऐसे कुत्ते भौंकते ही रहते हैं।"

"जी।"

"कल हमने जाना है। पर इस बार वैन से नहीं जायेंगे। वैन देवराज चौहान द्वारा पहचानी जा सकती है। या उसे कहीं से खबर मिल सकती है कि डोगरा की वैन वहाँ देखी गई। तू ऐसी कार को तैयार कर, जिसे लम्बे वक्त से हमने इस्तेमाल नहीं किया। समझ गया दया। ऐसी कार कि कोई सोच ना सके कि उसमें हम सफर कर सकते हैं।"

"मैं आज ही कार तैयार कर लूंगा।" उधर से दया ने कहा।

"साला देवराज चौहान दिखे तो सीधे गोली मारना हरामी को।" कहकर डोगरा ने फोन बंद कर दिया।

"एक बात कहूँ डोगरा साहब।" रीटा कह उठी।

"बोल। पूछा मत कर। कह दिया कर।"

"हमने कोल्हापुर होते हुए गोवा पहुँचना है तो क्यों ना वैन को हम उल्टी तरफ गुजरात के रास्ते पर भेज दें। अगर देवराज चौहान को वैन का गुजरात जाने का पता लगेगा तो वो उस तरफ चला जायेगा। कितना मजा आयेगा तब जब उसको पता चलेगा कि हमने उसे बेवकूफ बना दिया।" रीटा मुस्करा कर कह उठी।

"वाह-क्या आइडिया है। कसम से तू ना होती तो मैं बरबाद हो गया होता रीटा डार्लिंग। ये बात तो मैं सोच भी नहीं सकता था।"

"देवराज चौहान को अगर वैन की खबर मिली तो गलत दिशा की तरफ बढ़ जायेगा। उसका वक्त बरबाद होगा। साठी उसे इधर-उधर नाचते देखकर गुस्से में और भी भड़क जायेगा। मैं कल वैन के गुजरात की तरफ जाने का इन्तजाम कर दूंगा।"

"साठी क्या देवराज चौहान पर नज़र रख रहा होगा?"

"जरूर रखेगा।" विलास डोगरा ने सिर हिलाकर कहा—"देवराज चौहान ने उसकी पत्नी और बच्चों को अपनी कैद में रखा हुआ है। उसके सारे आदमी उसके परिवार की तलाश में लगे हैं और देवराज चौहान पर भी नज़र रखी जा रही होगी। इस बारे में पूरी तरह निश्चिंत हूँ कि देर-सवेर में देवराज चौहान साठी के हाथों ही मरेगा। वो अपने भाई की मौत को भूलने वाला नहीं।"

"पर मोना चौधरी क्यों देवराज चौहान से पीछे हट गई?"

"ये तो मैं भी नहीं समझ पाया। उसे अचानक जाने क्या हो गया। वो तो देवराज चौहान की जान लेने को तैयार थी।" विलास डोगरा ने सिग्रेट सुलगा ली—"आज हमने कोई खास काम तो नहीं करना है?"

"नहीं। आज हम पूरी तरह आराम करेंगे। कल लम्बे सफर पर जाना है।" रीटा बोली और पास आकर डोगरा के गाल को चूमते हुए कहा—"आज रात फिर हम वैसा ही करेंगे जैसा बीती रात को किया था।"

"ओह रीटा डार्लिंग तू तो मेरी जान लेकर रहेगी।" डोगरा ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"मैं आपकी जान हूँ तो आप भी मेरी जान हैं। मुझे आपसे प्यार हो गया है।"

"सच?"

"कसम से।"

"ओह। अच्छा ही हुआ जो हमने शादी नहीं की। शादी करते तो हममें जो आकर्षण है, वो खत्म हो गया होता। हमारी कितनी बढ़िया पट रही है। हमें किसी की नज़र ना ही लगे तो अच्छा है। अब जरा रमेश टूडे का नम्बर मिला के फोन मुझे दे।"

"रमेश टूडे?" रीटा ने डोगरा को देखा—"उससे क्या काम पड़ गया?"

"वो हमारे साथ जायेगा कल।"

"क्यों?"

"हम वैन नहीं ले जा रहे। साधारण कार पर जा रहे हैं तो सुरक्षा का कोई इन्तजाम तो होना चाहिये। रमेश टूडे हमारे आस-पास रहेगा तो हम खुद को सुरक्षित महसूस करेंगे। नम्बर मिला के दे। बात करूँ उससे।"

रीटा ने रमेश टूडे का नम्बर मिलाया और फोन डोगरा को थमा दिया।

फौरन ही बात हो गई।

"कहिये डोगरा साहब।" उधर से बेहद शांत स्वर कानों में पड़ा।

"कैसा है तू?"

"अपना हाल सुनाइये। देवराज चौहान ने एक ही रात में बहुत उठा-पटक कर दी। क्या किया था आपने उसके साथ जो वो इस हद तक तिलमिला रहा है। बिना वजह तो वो ये सब करने वाला नहीं।" उधर से रमेश टूडे का शांत स्वर कानों में पड़ा।

"वो मरेगा। साठी उसे जल्दी ही मार देगा।"

"मैं तो सोच रहा था कि देवराज चौहान को मारने का काम आप मुझे देने वाले हैं।"

"नहीं। वो साठी के हाथों मरेगा। हमें मेहनत करने की जरूरत नहीं। उसे, उसके हाल पर छोड़ देना बेहतर है।"

"मेरे लिए हुक्म?"

"कल मैं टूर पर निकल रहा हूँ। जैसे कि हर छः महीने में एक बार जाता हूँ। परन्तु मैं अपनी वैन में नहीं जा रहा। ताकि देवराज चौहान धोखा खा जाये। साधारण कार में जाऊँगा। तू मेरे साथ रहेगा। तेरे को मेरी सुरक्षा करनी होगी अगर रास्ते में कोई खतरा मुझ पर आ जाये।" विलास डोगरा ने कहा।

"तो कल से मुझे आपके साथ टूर पर रहना होगा।"

"हाँ। परन्तु तुम बिलकुल मेरे साथ नहीं रहोगे। मेरे आगे या पीछे रहोगे। मुझ पर नज़र रखोगे। कल कब रवाना होना है, क्या प्रोग्राम रहेगा, इस बारे में दया से फोन पर पूछ लेना।"

□□□

□□□

देवराज चौहान, जगमोहन और हरीश खुदे ने, सुबह के बाद का वक्त एक मध्यम दर्जे के होटल में बिताया। होटल में पहुँचते ही वो नींद के हवाले हो गये थे। उससे पहले जगमोहन की घायल बाँह पर, खुदे ने होटल से व्हिस्की की बोतल ली और थोड़ी सी जख्म पर डालने के बाद, कमीज को फाड़कर, पट्टी के रूप में बाँह पर बांध दी थी।

दोपहर एक बजे वे उठे।

नहा धोकर, दोपहर तीन बजे तक कुछ खाया और बाहर चला गया। एक घंटे में लौटा तो उसके हाथ में तीन नई कमीज़ें थीं। पहले की पहनी कमीज़ें मैली हो चुकी थीं। जगमोहन की कमीज़ तो पूरी फट गई थी। उसकी बाँह पहले से ठीक थी, परन्तु अभी ज़ख्म था। खुदे ने पुरानी कमीज़ की पट्टी बनाकर उसकी बाँह पर बांध दी थी।

"अब क्या प्रोग्राम है?" जगमोहन के चेहरे पर सख्ती नाच रही थी।

"प्रकाश दुलेरा के मुताबिक डोगरा ने कल सुबह कोल्हापुर के लिए रवाना होना है। उसने कहाँ पहुँचना है, हम सब कुछ जानते हैं। हम आज ही यहाँ से चल देंगे और उसके लिए पहले से ही वहाँ मौजूद रहेंगे।" देवराज चौहान बोला।

"फिर तो हम कल रात तक डोगरा का सफाया कर सकते हैं।" खुदे कह उठा।

"वो हमें नज़र आया वहाँ तो बचेगा नहीं।" जगमोहन गुर्रा उठा।

"मैं तो चाहता हूँ कि जल्दी से ये काम खत्म हो।" खुदे का स्वर गम्भीर था—"एक बात बता देवराज चौहान। डोगरा को हमने खत्म कर दिया तो देवेन साठी का क्या होगा, जो तुम्हारी जान के पीछे है।"

"उसे समझाना पड़ेगा कि ये सब खेल डोगरा का था।" देवराज चौहान होंठ भींच कर बोला।

"वो ना समझा तो?"

"तो दूसरा रास्ता इस्तेमाल करना पड़ेगा।" देवराज चौहान का स्वर खतरनाक हो गया।

"उसे मारोगे?" खुदे की निगाह देवराज चौहान पर जा टिकी।

"वक्त आने पर ये करना पड़ा तो, ऐसा भी किया जायेगा।"

"फिर तो मामला और भी लम्बा हो जायेगा।" खुदे गम्भीर दिखा।

देवराज चौहान ने खुदे को देखा और कह उठा।

"खुदे। तूने बहुत साथ दिया है हमारा। किसी का किया मैं भूलता नहीं। तू हमसे ये आशा लगाये हुए है कि हम किसी बड़ी डकैती में तेरे को साथ लेंगे और तुझे मालामाल कर देंगे। ऐसा ही होगा। हम ऐसा ही करेंगे। तेरे लिए हम डकैती को अंजाम देंगे। उस डकैती में तू हमारे साथ रहेगा और तेरे को इतनी दौलत मिल जायेगी कि तू मजे से जिन्दगी बिता सके।"

"शुक्रिया।" खुदे की आँखों में चमक आ गई—"मैं यही तो चाहता हूँ।"

"परन्तु तब तक हमारा जिन्दा रहना जरूरी है।" जगमोहन सख्त स्वर में बोला।

"हाँ। ये जरूरी है।" खुदे ने गहरी सांस ली—"हमें आगे के काम सतर्कता से करने होंगे।"

"अव हमने कोल्हापुर रवाना होना है।" देवराज चौहान बोला—"किराये की गाड़ी लेने से बेहतर है किसी गाड़ी को उठा लें और।"

"पर गाड़ी हमारे पास है तो।" खुदे ने कहा।

"हमारी वो कार विलास डोगरा के लोगों द्वारा पहचानी जा सकती है। हमें इस तरह कोल्हापुर पहुँचना है कि डोगरा को हवा भी ना लगे।"

"ठीक है। मैं आधे घंटे में किसी बढ़िया गाड़ी को उठा लाता हूँ।" खुदे उठ खड़ा हुआ।

"गाड़ी लाकर बाहर से ही हमें फोन कर देना। हम बिल चुकाकर, वहीं पहुँच जायेंगे।"

खुदे बाहर निकल गया।

"साठी की निगाह हम पर जरूर होगी।" जगमोहन बोला।

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वो डोगरा को बताने वाला नहीं कि हम क्या कर रहे... ।"

देवराज चौहान का फोन बज उठा।

"हैलो।"

"ठीक हैं आप।" नगीना की आवाज कानों में पड़ी।

"हाँ।"

"एक ही रात में आपने जो किया उससे डोगरा जरूर हिल गया होगा।" उधर से नगीना का स्वर आया।

"डोगरा की कोई खबर मिली?" देवराज चौहान ने पूछा।

"उसी के लिए फोन किया है। ये तो पता नहीं चल रहा कि वो इस वक्त कहां पर है। सरबत सिंह और बांके अभी-अभी ये खबर लाये हैं कि डोगरा कल कुछ दिन के लिये मुम्बई से बाहर जा रहा... ।"

"मालूम है। पहले वो कोल्हापुर जायेगा फिर गोवा के कुछ शहरों में... ।"

"नहीं, वो गुजरात जा रहा है।"

देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

"तुमसे किसने कहा कि वो गुजरात जा रहा है।"

"सरबत सिंह और बांके खबर लाये हैं।"

देवराज चौहान ने आंखें बंद कर ली। कुछ पल आंखें बंद ही रखी। वो प्रकाश दुलेरा से बातचीत याद करता रहा जो आज सुबह उसे मारने से पहले हुई थी। वो सोच रहा था कि क्या दुलेरा ने सच कहा था?

उसे महसूस हुआ उस वक्त दुलेरा सच ही कह रहा था।

"आप चुप क्यों हो गये?" नगीना की आवाज पुनः कानों में पड़ी।"

"डोगरा गुजरात नहीं, कोल्हापुर और गोवा जा रहा है।" देवराज चौहान कह उठा—"सरबत सिंह से मेरी बात कराओ।"

अगले ही पल सरबत सिंह की आवाज सुनाई दी।

"हाँ।"

"तुम्हें डोगरा के गुजरात जाने की खबर किसने दी?" देवराज चौहान ने पूछा।

"एक आदमी है जो डोगरा के लिए काम करता है। उसने बताया कि डोगरा की वैन कल गुजरात जा रही है।"

"वैन जा रही है या डोगरा भी जा रहा है।"

"डोगरा वैन के बिना सफर नहीं करता। वो भी तो वैन में रहेगा।" उधर से सरबत सिंह ने कहा।

"ये बात डोगरा भी जानता है कि लोग ऐसा सोचते हैं, तभी तो उसने ये खबर बाहर निकाली।"

"क्या मतलब?"

"तुम्हें गलत खबर दी गई है।"

"वो आदमी मेरे से गलत नहीं कह... ।"

"मैंने ये नहीं कहा कि उस आदमी ने तुमसे गलत कहा। मेरा कहने का मतलब है कि उसने वो ही बताया, जो उसने सुना। इसका मतलब अपने सफर के लिए वो वैन का इस्तेमाल नहीं करेगा।"

"तुम्हारे पास पक्की खबर है कि वो कोल्हापुर जा रहा है।"

"हाँ।"

"कोल्हापुर कहाँ?"

"नगीना को फोन दो। उसे सब समझा देता हूँ। उससे और भी बातें करनी है।"

फिर देवराज चौहान दस मिनट तक नगीना से बात करता रहा और फोन बंद कर दिया।

"कहीं सच में डोगरा गुजरात ना जा रहा हो।" जगमोहन कह उठा।

"तुम्हें क्या लगता है कि प्रकाश दुलेरा ने हमसे गलत कहा था?" देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

चंद पल की खामोशी के बाद जगमोहन बोला।

"उस वक्त वो झूठ नहीं बोल रहा था।"

"तो विलास डोगरा कल कोल्हापुर और फिर गोवा जायेगा उसके बाद हवेरी, हवेरी के बाद चिकमंगलूर पहुंचेगा उसके प्रोग्राम की

पूरी लिस्ट दुलेरा से हमें मिल चुकी है।" देवराज चौहान ने दाँत भींचकर कहा—"एक बार वो नज़र आ जाये तो हम उसे बुरी मौत देंगे। कोल्हापुर में वो हमें जरूर मिल जायेगा।"

आधे घंटे बाद उन्हें हरीश खुदे का फोन आ गया था।

□□□

□□□

देवेन साठी अपने होटल के उसी हाल की खिड़की पर खड़ा था, जिस जगह वो अकसर पहले भी मौजूद रहा था। उस खुली खिड़की पर काला शीशा चढ़ा हुआ था और सामने, नीचे की सड़क पर दौड़ते वाहनों को देख रहा था। चेहरे पर सोच और गुस्से के भाव थे। सारा हाल ए०सी० की ठण्डक से भरा हुआ था। आरु के बंगले से कुछ देर पहले ही यहाँ पहुँचा था। उसने महसूस किया था कि बंगले पर रहकर वह सारे कामों को ठीक से नहीं देख पा रहा था।

जाफर इस वक्त फील्ड में था और आदमियों को निर्देश देने के साथ-साथ उसके परिवार को ढूंढने के लिए भागदौड़ कर रहा था। उसके आदमियों के बीच उसके परिवार को लेकर, शांत सा हंगामा मचा हुआ था।

साठी को अपने भाई पूरबनाथ साठी की कमी खल रही थी। भाई के होते उसे किसी बात की चिन्ता नहीं करनी पड़ती थी। चिन्ता वाले सारे कामों को वो ठीक से संभाल लेता था। वो सिर्फ धंधे के कामों की देखभाल करता था। देवराज चौहान पर उसे बहुत गुस्सा आ रहा था कि उसने उसके भाई को क्यों मार दिया। मन ही मन वो सोच रहा था कि एक बार उसका परिवार मिल जाये, उसके बाद देवराज चौहान को बहुत बुरी मौत देगा। जगमोहन और खुदे भी मरेंगे। इस वक्त जो भी देवराज चौहान का साथ दे रहे हैं, उनमें से कोई भी जिन्दा नहीं बचेगा। ऐसी ही बातों में उलझे देवेन साठी ने सिग्रेट सुलगा ली।

वो खिड़की से बाहर, सड़क पर आ-जा रहे ट्रैफिक पर नज़रें टिकाये सोचे जा रहा था।

तभी जेब में पड़ा मोबाइल बजा तो उसने फोन निकाल कर स्क्रीन पर आया नम्बर देखा। कुछ पलों तक वो स्क्रीन को देखता रहा फिर कालिंग स्विच दबाकर फोन कान से लगाया।

"बोल गोकुल।"

"साठी साहब मैं देवराज चौहान पर नज़र रख...।"

"मालूम है मुझे।" साठी सख्त स्वर में बोला—"अब क्या किया उसने?"

"वो, जगमोहन और हरीश खुदे के साथ मुम्बई के बाहर जा रहा है।" उधर से गोकुल की आवाज आई।

"किस तरफ?"

"अभी निकला ही है मुम्बई से। कमाला की तरफ जा रहा है।"

"तेरे साथ कौन है?"

"शेखर।"

"तुम दोनों उसके पीछे रहो। वो नज़रों से ओझल ना हो। उसकी हर हरकत की खबर चाहिये मुझे।"

"वो नज़रों से ओझल नहीं हो सकता। मैंनें शिंदे और घंटा को एक कार में उनके पीछे देखा है।"

"मुझे खबर देते रहो।" कहकर साठी ने फोन बंद किया और नम्बर मिलाकर फोन कान से लगाया।

दूस[illegible] कोशिश करने पर नम्बर लगा। बेल हुई फिर घंटा की आवाज सुनाई दी।

"हैलो।"

"घंटे।" साठी ने कहा—"शिंदे के साथ है तू?"

"हाँ साठी साहब। हम देवराज चौहान के पीछे हैं। वो मुम्बई से बाहर कमाला की तरफ बढ़ रहा है।"

"गोकुल और शेखर भी उनके पीछे है।"

"जानता हूँ। हम उन्हें देख चुके हैं।"

"उनके पीछे रहो। नज़र रखो और रिपोर्ट देते रहो।"

"जी। शिंदे का कहना है कि हो सकता वे आपके डर से मुम्बई छोड़कर भाग रहे हों।"

साठी होंठ भींचे दो पल चुप रहा फिर बोला।

"वो भागेंगे नहीं। वो जानते हैं कि मेरी नज़रों से बचकर नहीं भाग सकते। तुम लोगों की नज़र उन पर से हटनी नहीं चाहिये।" देवेन साठी ने कहा और फोन बंद करके खिड़की से हटा और हाल कमरे में टहलने लगा फिर जाफर को फोन किया।

"जी साठी साहब?"

"मेरे परिवार का कुछ पता चला?"

"अभी नहीं, हम...।"

"वक्त कम है जाफर। मैं ज्यादा देर इन्तजार नहीं कर सकता। उन्हें ढूंढो। सारे काम रुके पड़े हैं। जब तक मैं देवराज चौहान और उसके साथ के लोगों को बुरी मौत नहीं दे देता, तब तक अपने कामों की तरफ मैं ध्यान नहीं दे पाऊँगा। रोज का मोटा नुकसान हो रहा है। तुम...।"

"हम सब लोग जी-जान से पूरी मेहनत कर रहे हैं आपके परिवार को ढूंढने के लिए।"

"तेजी दिखा जाफ़र।" साठी के दाँत भिंच गये—"मेरे से सब्र नहीं हो रहा। कहकर साठी ने फोन बंद कर दिया। चेहरे पर गुस्सा नाच रहा था। अपने परिवार की वजह से वो खुद को बेबस महसूस कर रहा था।

साठी कुर्सी पर आ बैठा। आँखें बंद कर ली।

एकाएक हाथ में दबा मोबाइल बज उठा। उसने आँखें खोली बात की।

"हैलो।"

"साठी।" नगीना की आवाज कानों में पड़ी—"मैं तुम्हारे होटल में नीचे रिसैप्शन पर हूँ। क्या तुम होटल में नहीं हो?"

"हूँ।" साठी के होठों से निकला।

"रिसेप्शनिस्ट मुझसे कह रहा है कि तुम भीतर नहीं हो।"

"वो ऐसा ही कहेगा। तुम्हें आने से पंहले फोन कर देना चाहिये...।"

"अपनी पत्नी और बच्चों से बात नहीं करना चाहते?"

"रिसैप्शन पर फोन दो।"

अगले ही पल रिसैप्शिनिस्ट की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो।"

"इस मैडम को मुझ तक पहुँचा वो।" साठी ने कहा।

"यस सर।"

देवेन साठी ने नगीना को ऊपर से नीचे तक देखा।

नगीना के पाँवों में स्पोर्टस शू, जीन की पैंट और टॉप पहन रखा था। बाल पीछे को बंधे थे।

"मैं सोच भी नहीं सकता था कि देवराज चौहान की तुम जैसी कोई पत्नी हो सकती है।" साठी का स्वर शांत था।

"जब तुम्हारी पत्नी हो सकती है तो देवराज चौहान शादी क्यों नहीं कर सकता।"

"तुम खतरनाक हो।"

"इस बात को तुमने कैसे जाना?"

साठी कुछ पल उसे देखता रहा फिर बोला।

"उस दिन तुम जिस ढंग से मेरे सामने आई, जैसी बातें की, उससे मैंने ये बात महसूस कर ली थी। मेरे सामने किसी औरत का

खड़ा हो पाना भी आसान नहीं और तुमने बहुत आराम से मेरे से बात की।''

''अच्छी बात तो ये रही कि उस दिन सब ठीक रहा। बात बढ़ी नहीं।'' नगीना बोली।

''बात बढ़ती तो तुम लोग बचते नहीं। मेरे आदमी बहुत थे वहाँ। हर कोई हथियार बंद।''

''और तुम उनकी लाशें गिनने के लिए जिन्दा नहीं रहते।'' नगीना का स्वर ठंडा था।

देवेन साठी ने होंठ भींचकर नगीना की आँखों में झांका।

''तुमने अपने परिवार की खैरियत नहीं पूछी।'' नगीना आगे बढ़कर कुर्सी पर जा बैठी।

''मैं जानता हूँ तुमने उन्हें हिफाजत से रखा होगा और उन्हें कोई तकलीफ नहीं होने दी होगी।''

''सही कहा।''

''वो कहाँ है?''

''तुम वहाँ नहीं पहुंच सकते। तुम्हारे आदमी भटकते ही रह जायेंगे।'' नगीना ने शांत स्वर में कहा।

''मैं उन्हें ढूंढ निकालूंगा।'' साठी सख्त स्वर में बोला।

''ये तो अच्छी बात है।''

''देवराज चौहान विलास डोगरा के पीछे क्यों पड़ा है?''

''तुम्हें पता है सब कुछ।''

''कठपुतली वाली बात?''

''हाँ।''

''वो बकवास है। मैं नहीं मानता।'' साठी तीखे स्वर में कह उठा।

''जब विलास डोगरा खुद कहेगा तो मानोगे?'' नगीना ने साठी के चेहरे पर नज़रें टिका दी।

देवेन साठी, नगीना को देखता रहा।

''जवाब दो। तब मानोगे?''

''हाँ।'' देवेन साठी ने कठिनता से कहा।

नगीना ने हौले से सिर हिला कर कहा।

''इस बात की पूरी कोशिश की जा रही है कि विलास डोगरा से तुम्हारा सामना कराया जाये।''

''मैं डोगरा से मिलने की जरूरत नहीं समझता।''

''लेकिन मैं समझती हूँ। तुम्हें मेरी हर जायज बात माननी होगी, क्योंकि तुम्हारा परिवार मेरे कब्जे में है। मेरे लिए नहीं तो अपने परिवार की खातिर माननी होगी।'' नगीना ने कठोर स्वर में कहा।

"मैं सच में बेबस हूँ, वरना अभी तुम्हारे टुकड़े करवा देता।"

"जो काम नहीं कर सकते, उसे सोचो भी मत। मुझे कोई तकलीफ हुई तो तुम्हारा परिवार खत्म कर दिया जायेगा।"

देवेन साठी ने दाँत भींच कर मुँह घुमा लिया। फिर फौरन ही पलट कर बोला।

"विलास डोगरा मुम्बई में है। ऐसे में देवराज चौहान क्यों मुम्बई से बाहर जा रहा है?"

नगीना, देवेन साठी को देखने लगी फिर कह उठी।

"मैं जानती हूँ, देवराज चौहान भी जानता है कि तुम्हारी नज़र उस पर है। परन्तु इससे देवराज चौहान को कोई फर्क नहीं पड़ता। डोगरा मुम्बई में कहाँ है, ये पता नहीं चल रहा, परन्तु ये पता है कि कल वो कोल्हापुर जाने वाला है।"

"कल?" साठी के माथे पर बल पड़े।

"कोल्हापुर से गोवा जायेगा। गोवा में उसे कई जगहों पर जाना है।" नगीना शांत स्वर में कह रही थी—"परन्तु देवराज चौहान का इरादा उसे कोल्हापुर में ही घेरकर मार देने का है।"

"डोगरा के प्रोग्रान का पता कैसे चला?"

"चल गया। परन्तु हम चाहते हैं कि डोगरा मरने से पहले तुमसे मुलाकात कर ले।"

"मुझसे?"

"हाँ। ताकि तुम उसके मुँह से सुन सको कि तुम्हारे भाई का असली हत्यारा वो है।"

"बकवास।" साठी के दाँत भिंच गये—"देवराज चौहान ने मेरे भाई को गोली मारी तो डोगरा कैसे हत्यारा हो गया?"

"ये बात तुम्हें डोगरा बतायेगा।"

"वो गलत बतायेगा। उसके सिर पर रिवॉल्वर रखकर, उसके मुँह से कुछ भी निकलवाया जा सकता है।" साठी ने कहा।

"उस वक्त, अगर तुम्हें लगे कि उसकी बात पर यकीन करना ठीक नहीं तो मत यकीन करना। परन्तु हम जो कोशिश कर रहे हैं उसमें तुम्हें साथ देना होगा साठी। ये तो हमें भी नहीं पता कि तुम्हारी मुलाकात के वक्त डोगरा किन हालातों में होगा। हम एक कोशिश लेकर चल रहे हैं तुम्हारे सामने किसी तरह हकीकत लाई जा सके।"

"मैं तुम्हारी बातों से सहमत नहीं हूँ।"

"तुम्हें सहमत होना पड़ेगा।" नगीना सख्त स्वर में कह उठी—"लगता है तुम्हें अपने परिवार की चिन्ता नहीं है।"

साठी के दाँत भिंचे गये। वो गुर्रा उठा।

"मुझे धमकी मत दो।"

"मैं तुम्हें याद दिला रही हूँ कि तुम्हारा परिवार मेरे कब्जे में है। इसलिये मेरी जायज बात माननी होगी।" नगीना शब्दों को चबाती कह उठी—"तुम क्या समझते हो कि देवराज चौहान तुमसे डरता है या तुम ये समझते हो कि तुम आसानी से देवराज चौहान को मार दोगे। ऐसा कुछ भी नहीं होने वाला। तुम्हें हमारा कड़ा मुकाबला करना होगा, जिसमें तुम भी मर सकते हो और हमारी भी जाने जा सकती हैं। ऐसा कुछ ना हो, इसलिए तुम्हारे भाई की मौत की सच्चाई को तुम्हारे सामने लाना जरूरी है। ये मत सोचो कि तुम्हारे भाई को गोली किसने मारी। ये सोचो कि उस वक्त किसका दिमाग काम कर रहा था। कठपुतली के नशे में देवराज चौहान और जगमोहन के दिमाग खाली हो चुके थे। उन्हें कुछ भी होश नहीं था। उनके खाली दिमागों में विलास डोगरा का हुक्म चक्कर लगा रहा था कि मोना चौधरी को खत्म करना है, पूरबनाथ साठी को खत्म करना है। ये बात मोना चौधरी की समझ में आ गई कि देवराज चौहान तब अपने होश में नहीं था। वो पीछे हट गई। उसे ये बात इसलिये समझ में आई कि उसने समझने की कोशिश की। अबदुल्ला से पारसनाथ ने बात की, जिसने विलास डोगरा को कठपुतली बनाकर दी थी। तुम्हारी समझ में ये बात इसलिये नहीं आई तुमने समझने की कोशिश ही नहीं...।"

"मेरे भाई को देवराज चौहान ने गोली मारी। वो ही मेरे भाई का हत्यारा है।" साठी ने दाँत भींचकर कहा।

नगीना साठी को घूरने लगी।

"मेरी पूरी कोशिश होगी कि तुम्हें समझा सकूं। नहीं तो बाद में क्या होगा, वो मैंने तुम्हें बता दिया है साठी।" नगीना का स्वर सख्त था।

"तुम लोग मेरी ताकत का मुकाबला नहीं कर सकते।"

"विलास डोगरा भी ऐसा ही समझता है। आने वाले वक्त में उसका अंजाम देख लेना। वक्त आने पर हम चंद लोग किसी फौज से कम नहीं है। जो भी हो, नुकसान तो दोनों तरफ का होता है टकराव की स्थिति में।"

"मेरे परिवार को कब तक अपने पास रखने का इरादा है?" साठी ने तीखे स्वर में पूछा।

"विलास डोगरा की मौत के साथ ही तुम्हारा परिवार छोड़ दिया जायेगा। ये सब हमने तुम्हें पीछे रखने के लिए किया है पहले देवराज चौहान डोगरा से निपट लें। उसके बाद तुमसे बात की जायेगी। इस दौरान तुम्हें समझाने की कोशिश भी की जायेगी कि तुम्हारे भाई का असली हत्यारा देवराज चौहान नहीं विलास डोगरा है। तुमने कल सुबह

मेरे साथ कोल्हापुर चलना है साठी। मेरे साथ दो लोग होंगे। तुम अपने साथ किसी को रखना चाहो तो बेशक रख लेना। वहाँ डोगरा से तुम्हारी बात कराने की पूरी कोशिश कराई जायेगी।"

देवेन साठी के चेहरे पर सख्ती ठहर चुकी थी।

"मेरे परिवार से, आरु और बच्चों से मेरी बात कराओ।" साठी उखड़े स्वर में बोला।

नगीना ने फोन निकाला और सोहन लाल के नम्बर मिलाने लगी।

❑❑❑

❑❑❑

जंवाई, हंसा और प्रेमी ने खूब पी।

पहली बोतल तो एक घंटे में ही खत्म हो गई। नशा चढ़ने लगा तो दूसरी बोतल प्रेमी ले आया, जंवाई की मोटरसाइकिल लेकर और आते वक्त दो मुर्गे भी पैक करा लाया था। जब दूसरी बोतल खुल गई तो नशे की तरंग में उन्हें सरबत सिंह याद आया कि वो भी हमेशा की तरह साथ होता तो और भी मजा आता।

दूसरी बोतल भी खत्म कर डाली। मुर्गे खत्म हो गये। रात के एक बजे वो तीनों नशे में ही इधर-उधर लुढक गये। हंसा के घर का दरवाजा भी रात भर खुला रहा। बंद करने की होश ही कहाँ थी।

अगले दिन दस बजे के बाद उन्हें होश आना शुरू हुआ।

नशा उड़ चुका था और चेहरे रात की कहानी कह रहे थे। तीनों के सिर फटे जा रहे थे।

हंसा ने चाय बनाई।

बारह वजे तक वो कुछ ठीक से होश में आ सके।

"लगता है रात को ज्यादा हो गई थी।" जंवाई अपनी नाक रगड़ता कह उठा।

"सिर्फ दो वोतलें ही तो खाली की थी।" हंसा ने व्यंग से कहा।

"सत्यानाश। इतनी ज्यादा पिएंगे तो ये ही हाल होगा। घर का दरवाजा भी खुला रहा।"

"घर में है ही क्या जो चोर ले जायेगा।" जंवाई हंसा।

"तेरे को किया पता घर में कुछ है कि नहीं?" हंसा ने तीखे स्वर में कहा।

"तू अपने दाने मेरे से क्यों छिपाता है। सब दाने गिन रखे हैं।" जंवाई ने कहा।

"अपने दानों की तरफ ध्यान दे। कहीं उन्हें तोता ना उड़ा ले जाये।" हंसा कह उठा—"भूल गये कि आज सरबत सिंह से मिलना है। दिन के वारह बज चुके हैं। मैं सरबत सिंह को बुलाकर लाता... ।"

"ओह, मैं तो भूल ही गया था। जरा फोन लगा उसे। शायद अब फोन लग जाये।"

हंसा ने सरबत सिंह का नम्बर मिलाया।

परन्तु कॉल नहीं लगी।

"फोन बंद करके, मजे से खा पी रहा होगा हरामी।" जंवाई बोला—"पाँच करोड़ की बात सुनकर तो उछल पड़ेगा।"

"जल्दी से तैयार हो।" हंसा उठता हुआ बोला—"मैं तेरे साथ चलूंगा।"

"तो मैं क्या करूँगा?" प्रेमी बोला।

"तू यहीं रह। हम...।" हंसा ने कहना चाहा।

"कोई नहीं जायेगा। मैं अकेला ही जाऊँगा और सरवत सिंह को मोटरसाइकिल के पीछे बिठा लाऊँगा। कोई मेरे साथ गया तो फिर उसे लाने में परेशानी होगी। तीन कैसे बैठेंगे मोटरसाइकिल पर।" जंवाई कह उठा।

"तो जा जल्दी से सरबत सिंह को ले आ। पाँच करोड़ वाला चक्कर चलाते हैं उससे।"

"ऐसे कैसे जाऊँ।" जंवाई ने दाँत दिखाये "नाश्ता-वाश्ता तो करा दो। रात से भूखा हूँ।"

"भूखा? मैं दो मुर्गे लाया था रात को।" प्रेमी कह उठा।

"लाया होगा। मुझे तो याद नहीं।" जंवाई बेशर्मी से हंसा।

"नहीं याद?"

"नहीं।"

"पैसे मत दे। कम से कम इतना तो कह दे कि रात को मुर्गे खाये थे। सबसे ज्यादा तूने ही खाये थे।"

"तेरे को कैसे पता?"

"मैं तुझे देख रहा था।"

"तुझे होश थी देखने की?"

"मुर्गे के लिए तो पूरी होश थी। दो बार तो तूने मेरे हाथ से मुर्गे की टांग खींच कर खाई थी।"

"अच्छा, मुझे तो नहीं याद।"

"खा-पीकर कहता है याद नहीं।" प्रेमी ने हाथ नचाया—"दूसरी बोतल आई थी, वो याद है?"

"हाँ-हाँ, वो कैसे भूल सकता हूँ।" जंवाई ने शराफत से माना।

"उसी बोतल के साथ दो मुर्गे लाया था।"

"वो दो थे। मुझे तो एक ही लगा था।" जंवाई ने गम्भीरता से कहा।

हंसा ने मुस्कराकर मुँह फेर लिया।

"बेटे तू पक्का जंवाई है।" प्रेमी कलप कर बोला—"खा-पीकर सुबह भूल गया। साले सुसराल में ऐसी जूतियां पड़ेंगी कि....।"

"मैंने शादी करने का प्रोग्राम बदल दिया है।"

"क्यों?" हंसा खुलकर मुस्कराया।

"शादी के बाद ये मजा जाता रहेगा। बीवी ही हर समय गले में....।"

"वक्त बरबाद मत कर। जल्दी से सरवत सिंह के घर जा और उसे लेकर आ। पाँच करोड़ वाले मामले की उससे बात करते हैं। वो देवराज चौहान से ये पता लगा लेगा कि साठी की पत्नी और बच्चों को, कहाँ छिपाया हुआ है। साठी को ये बात बताकर उससे पाँच करोड़ ले लेंगे। बाई गॉड कितनी बड़ी रकम है पाँच करोड़।" हाथों को मलता प्रेमी बेचैनी से कह उठा।

❑❑❑

❑❑❑

सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट सुलगाई और कश लिया। वो कुर्सी पर बैठा था। चेहरे पर सोचो के भाव नाच रहे थे। कल के गये सरवत सिंह और नगीना वापस नहीं लौटे थे। नगीना का फोन आया था और उसने बता दिया था कि बाहर के क्या हालात है और वे वापस इस जगह पर आना ठीक नहीं समझते। साथ में ये भी बता दिया था कि रुस्तम राव आज वहाँ पहुँचेगा।

अकेला होने की वजह से सोहन लाल को परेशानी आ रही थी।

पहली परेशानी उसे आरु और बच्चों की तरफ से थी। उन्हें खाने-पीने की परेशानी थी। घर पर खास कुछ नहीं बना सकता था। और घर में खास सामान रखा भी नहीं था बनाने का। बच्चे बाहर का सामान खाने को कह रहे थे और वो इन्हें यहाँ छोड़कर बाहर जाने की नहीं सोच सकता था। पीछे कुछ भी गड़बड़ हो सकती थी।

पाटिल की अलग ही समस्या थी। उसे बाथरूम जाना होता तो उसके बंधन खोलने पड़ते। सोहनलाल ये रिस्क नहीं ले सकता था। वो अकेला था। पाटिल ताकतवर था। खतरनाक था। उसके बंधन खोलने की देर थी कि पाटिल ने उसे छोड़ना नहीं था। ऐसे में पाटिल तब से बंधा पड़ा था। सोहनलाल उसे ना तो खाने को दे रहा था ना उसे बाथरूम जाने के लिए बंधन खोल रहा था। बंधा पड़ा पाटिल रह-रह कर उसे गालियाँ देने लगता था।

सोहनलाल को रुस्तमराव के आने का इन्तजार था। उसके आ

जाने से हालात ठीक हो जाने थे। दोनों ने मिलकर सब कुछ संभाल लेना था। उसी पल दूसरे कमरे से पुनः पाटिल के गालियाँ देने की आवाजें आने लगी। सोहनलाल गहरी सांस लेकर रह गया। तभी आरु के कमरे के दरवाजे पर थपथपाहट उभरी।

सोहनलाल उठा और सावधानी से बाहर से दरवाजा खोला।

सामने परेशान सी आरु खड़ी थी।

"क्या है?" सोहनलाल ने पूछा।

"बच्चों को भूख लगी है।" आरु बोली—"इन्हें कुछ खाने को ला दो।"

"मैं यहाँ अकेला हूँ।" सोहनलाल बोला—"अभी बाजार नहीं जा सकता। मेरा साथी आने वाला है, उसके आने पर बाजार जाऊँगा।"

"बच्चे जिद्द कर रहे हैं।" आरु के चेहरे पर परेशानी नज़र आ रही थी।

"तुम तो बच्ची नहीं हो।" सोहनलाल का स्वर कठोर हो गया—"बार-बार मुझे कहने से बेहतर है बच्चों को समझा के रखो।"

आरु का चेहरा लटक गया।

सोहनलाल को लगा वो खामखाह उस पर गुस्सा हो रहा है। कल से इन्हें खाने को ठीक से नहीं मिला है तो ये परेशान होंगे ही। फिर बच्चे तो बच्चे ही हैं। सोहनलाल ने गहरी सांस ली और आराम से कह उठा।

"थोड़ी देर की बात है, फिर सब ठीक हो जायेगा। अकेला होने की वजह से मैं भी परेशान हूँ।"

"हमें कब छोड़ोगे?" आरु ने पूछा।

"जल्दी ही।" कहकर सोहनलाल ने पुनः दरवाजा बंद कर लिया बाहर से।

दूसरे कमरे से पाटिल उसे आवाजें लगा रहा था।

सोहनलाल वहाँ पहुँचा।

पाटिल की हालत बेहतर नहीं थी। कल से उसके हाथ-पाँव नहीं खोले गये थे। इस वक्त उसकी पैंट गीली थी और फर्श भी गीला था। पाटिल ने सोहनलाल को मौत की सी नज़रों से देखा।

सोहनलाल खामोश रहा।

"इस तरह किसी को कैद करते हैं।" पाटिल ने सुलगते स्वर में कहा—"ऐसी हालत मेरी कभी नहीं हुई। कम से कम बाथरूम जाने के लिए तो हाथ-पाँव खोल दे, जैसे कि पहले खोले जा रहे थे। कल से खाने को भी कुछ नहीं दिया।"

"कितनी बार तेरे को बताया है कि मैं अकेला हूँ। सोहनलाल ने शांत स्वर में कहा।

"मैंने तेरे को कसम खाकर कहा है कि मैंने सिर्फ बाथरूम जाना है। कोई हरकत नहीं करूँगा।"

"तू अच्छी तरह जानता है कि मैं ज़रा भी तेरा भरोसा नहीं कर सकता।"

"तू रिवॉल्वर हाथ में रख ले। मैं कुछ करने लगूं तो गोलियाँ मार देना मुझे।"

"मेरा साथी यहाँ पहुँचता ही होगा। फिर सब ठीक हो जायेगा।" सोहनलाल ने कहा।

पाटिल ने उसे घूरा।

"कसम से, अगर मेरा वक्त आ गया तो तुझे बहुत बुरी मौत मारूँगा।" पाटिल गुर्रा उठा।

जवाब में सोहनलाल मुस्करा कर रह गया।

"साठी अपने परिवार को और मुझे ढूंढ रहा होगा। उसके आदमी यहाँ कभी भी पहुँच सकते हैं।" पाटिल ने तड़प कर कहा।

"जो कहना है कहता जा। मैं सुन रहा हूँ।"

"तू बचेगा नहीं।" पाटिल बोला—"साठी का परिवार कैसा है?"

"ठीक है।"

"उनके साथ तुम लोगों ने कोई बदतमीजी तो नहीं की?"

"हम बहुत शरीफ लोग हैं।"

"वो तो मुझे नज़र आ ही रहा है।" पाटिल कड़वे स्वर में बोला—"उन्हें भी मेरी तरह बांध रखा है?"

"नहीं। वो आराम से एक कमरे में बंद हैं।" सोहनलाल ने शांत स्वर में कहा।

"देख।" पाटिल एकाएक नम्र स्वर में बोला—"तू मेरे साथ क्यों नहीं मिल जाता?"

सोहनलाल चुप रहा।

"साठी तेरे को मोटा नावां देगा। करोड़ों रुपया और—।"

"साठी ने पाँच करोड़ का इनाम रखा है, जो उसके परिवार की खबर देगा।" सोहनलाल मुस्कराया।

"पाँच, बस! मैं तेरे को पच्चीस करोड़ दिलवाऊँगा और लाख रुपया महीना, जब तक तू जिन्दा रहेगा। मेरी जुबान है। पाटिल का वादा है और इसके बदले साठी हमेशा तुम्हारा एहसान मंद रहेगा। मेरी बात मान ले मजे ही मजे हैं। मेरे को आजाद कर दे। साठी के परिवार को भी साथ ले चलते हैं। सीधे साठी के पास पहुंचेंगे और तू मालामाल हो जायेगा।"

सोहनलाल शांत-सा उसे देखता रहा।

"तेरे को मेरी बात समझ नहीं आई?" पाटिल पुनः कह उठा।

"आई।" सोहनलाल मुस्करा पड़ा—"पच्चीस करोड़ एक साथ और लाख रुपया महीना।"

"तो देर क्यों करता है। जल्दी से मुझे खोल और साठी के परिवार को लेकर सीधा साठी के पास... ।"

"तू उसके परिवार की चिन्ता छोड़, अपनी चिन्ता कर। दो दिन और इसी तरह पड़ा रहा तो पागल हो जायेगा। अभी तो सिर्फ फर्श ही गीला किया है। और भी बहुत कुछ हो सकता... ।"

"तेरी तो... ।" पाटिल ने गाली निकाली।

सोहनलाल मुस्कराता हुआ उसे देखता रहा।

"मेरी बात तुझे जंची नहीं?" पाटिल ने कुछ देर बाद गहरी सांस ली।

"नहीं।"

"देवराज चौहान तेरे को क्या देता है।?"

"कुछ भी नहीं।"

"क्या मतलब?"

"वो मेरा यार है। मैं मुफ्त में काम कर रहा हूँ— ।"

"पागल है तू। यार-वार कुछ नहीं होते। मुसीबत के वक्त सब भाग जाते हैं। साठी का कहर जब टूटेगा तो देवराज चौहान तुझे बचाने नहीं आयेगा। वो तो तब अपनी जान बचाने के लिए कहीं जा छिपेगा। यारी की बातें भूल जा।"

तभी कॉलबेल बजी।

सोहनलाल बाहर निकल गया।

□□□

□□□

जंवाई ने मोटरसाइकिल, सरबत सिंह के घर के बाहर रोकी और उसे स्टैण्ड पर खड़ा किया। वो नहाया-धोया लग रहा था। पैंट तो कल वाली ही पहने था, कमीज हंसा की पहन आया था। रात ज्यादा पीने के कारण आँखें अभी भी सूजी हुई थीं। आने से पहले हंसा ने उसे दो नमक के परांठे चाय के साथ खिलाये थे, उसके बाद ही वहाँ से निकला था।

जंवाई आगे बढ़ा, घर का गेट खोला और मुख्य दरवाजे पर पहुँचकर कॉल बेल दबा दी। भीतर घंटी बजी। वो खुश नज़र आ रहा था कि पाँच करोड़ हाथ लग जायेगा। एक बार तो सरबत सिंह भी उसकी बात सुनकर उछल पड़ेगा।

तभी दरवाजा खुला और उसे सोहनलाल दिखा। जंवाई के होंठ सिकुड़े।

सोहनलाल ने उसे शांत निगाहों से देखा।

"ओए, तू कौन?" जंवाई कह उठा—"मेरा यार कहाँ है?"

"कौन यार?"

"कमाल है, मेरे यार के घर में खड़ा है। दरवाजा खोलता है और पूछता है कौन यार? तू है कौन। तेरे को पहले नहीं देखा कभी।"

सोहनलाल समझ गया कि ये सरबत सिंह का दोस्त है।

"तो सरबत सिंह तुम्हारा यार है।" सोहनलाल का दिमाग तेजी से दौड़ा।

"बहुत हो गया। हट पीछे...।" जंवाई ने आगे बढ़ना चाहा।

"सरबत सिंह घर पर नहीं है।" सोहनलाल बोला।

"कहाँ है?" जंवाई ने गर्दन हिलाई।

"वो बाजार गया है।"

"कोई बात नहीं। आ जायेगा। तू हट पीछे। मुझे अन्दर आने दे।"

"वो देर से वापस लौटेगा।"

"कोई बात नहीं। मैं उसके आने का इन्तजार करूंगा। बोत जरूरी बात करनी है।" जंवाई ने सोहनलाल को हटाकर भीतर जाना चाहा।

"मैं तेरे को जानता नहीं। तो भीतर कैसे आने दूं?" सोहनलाल ने कहा।

"लो, कर लो बात। अरे भई मेरे को नहीं जानता तो अभी सरबत सिंह हमारा परिचय करा देगा। इसमें कौन-सी बड़ी बात है।"

"नाम क्या है तेरा?"

"यार-दोस्त प्यार से जंवाई कहते हैं।" जंवाई ने दाँत दिखाये।

"जंवाई?"

"आराम परस्ती की आदत है। तो यारों ने जंवाई कहकर बुलाना शुरू कर दिया। बढ़िया है, किसी का जंवाई बनूं या ना बनूं पर जंवाई तो बन गया। वो दूसरी बात है कि मैंने अपनी लापता बीवी की शक्ल नहीं देखी।" जंवाई हंसा—"तू कौन है?"

"सोहनलाल—।"

"सरबत सिंह से तेरा क्या वास्ता?"

"पुरानी पहचान है।"

"वो तो मैं समझ गया तू उसके घर में घुसा हुआ है तो पुरानी पहचान ही होगी।" जंवाई बोला—"भीतर आने देगा कि बाहर ही बैठूं।"

"सरबत सिंह से फोन पर बात कर ले।"

"कल से फोन ट्राई कर रहा हूँ। लग जाता तो बात ही क्या थी। आना ही नहीं पड़ता।" जंवाई ने मुँह बनाया।

सोहनलाल सोचभरी निगाहों से जंवाई को देखता रहा।

"देख। तू मेरी बेइज्जती कर रहा है जो मुझे भीतर नहीं आने दे रहा। सरबत सिंह आकर तेरे को ठोकेगा कि तूने जंवाई को बाहर खड़ा रखा है। बहुत खास यारी है मेरी सरबत के साथ, तू पता नहीं उसका किस तरह का यार है।"

"तो भीतर आना चाहता है?"

"नहीं आने देगा तो बाहर बैठ जाऊँगा। बोत जरूरी है उससे मिलना।"

"आ—।" सोहनलाल दरवाजे से हट गया।

जंवाई फौरन भीतर आ गया।

सोहनलाल दरवाजा बंद करने लगा कि उसकी निगाह मोटरसाइकिल पर पड़ी।

"मोटरसाइकिल तेरी है?" सोहनलाल ने दरवाजा बंद करते हुए कहा।

"हाँ।" जंवाई आगे बढ़कर सोफे पर बैठता कह उठा—"चाय पिला तेज पत्ती डालकर। ऐसी कि मजा आ जाये।"

सोहनलाल उसके सामने जा बैठा।

"चाय नहीं पिलायेगा यार के यार को—।" जंवाई ने उसे देखा।

तभी दूसरे कमरे से पाटिल की आवाज आई वो कह रहा था।

"अब तो तेरा साथी आ गया। खोल दे मुझे। बाथरूम तक ले चल।"

जंवाई चौंककर खड़ा हो गया।

"सरबत सिंह तो भीतर है।" उसके होंठों से निकला।

"ये सरबत सिंह नहीं है।" सोहनलाल भी उठा। वो सतर्क दिखने लगा था।

"कमाल है।" जंवाई उस कमरे में जाने की कोशिश में पलटा—"उधर भी कोई यार है सरबत सिंह का?"

"रुक।" सोहनलाल ने कहते हुए फौरन रिवॉल्वर निकाल ली।

जंवाई वापस घूमा और उसके हाथ में रिवॉल्वर देखकर ठगा सा रह गया।

"ये क्या?" जंवाई के होंठों से अजीब-सा स्वर निकला।

"यहीं खड़ा रह।" सोहनलाल कठोर स्वर में बोला।

"लेकिन ये सब...।"

"चुप–।" सोहनलाल गुर्राया।

जंवाई मूर्खों की भांति उसे देखता रहा। कुछ समझ ना पाया।

सोहनलाल वहाँ से पीछे हटा और कमरे में एक तरफ रखी डोरी उठा ली। जंवाई टुकर-टुकर उसकी हरकतें देख रहा था तो कभी उसके हाथ में दबी रिवॉल्वर को देखने लगता।

"अब चल।" सोहनलाल बोला।

"कहाँ?"

"उसी कमरे में, जहाँ तू जा रहा था।" सोहनलाल उसके प्रति पूरी तरह सतर्क था।

"तू क्या कर रहा है? मैं सरबत सिंह का यार–।"

"उस कमरे में चल। तू बोत गलत वक्त पर आया। तेरे को इधर आना ही नहीं चाहिये था।"

सोहनलाल, जंवाई को लेकर, पाटिल वाले कमरे में पहुँचा।

पाटिल को वहाँ बंधा पाकर जंवाई हैरान हो उठा।

"ये कौन है?" जंवाई के होठों से निकला। उसने सोहनलाल को देखा।

पाटिल की निगाह जंवाई के चेहरे पर जा टिकी।

"तुम लोग मेरे यार के घर पे क्या कर रहे हो?" जंवाई परेशान सा बोला–"सरबत सिंह कहाँ है?"

"बाहर गया है।" सोहनलाल ने शांत स्वर में कहा।

"तो ये सब क्या हो रहा...।"

तभी पाटिल कह उठा।

"मेरी बात सुन।" पाटिल के दाँत भिंचे हुये थे–"सोचता क्या है, झपट ले इसके ऊपर। रिवॉल्वर से मत घबरा, ये खाली है, गोलियाँ नहीं हैं। जल्दी से पकड़ ले इसे। पतला सा है, दम-खम नहीं है इसमें।"

जंवाई ने वारी-बारी उलझन भरी निगाहों से दोनों को देखा।

"ये तेरे को भी मेरी तरह बांध देगा। इसने हाथ में डोरी पकड़ रखी है।" पाटिल ने पुनः तीखे स्वर में कहा–"सोच क्या रहा है झपट ले और साले की गर्दन तोड़ दे। रिवॉल्वर खाली है।"

"ये भूल मत करना।" सोहनलाल खतरनाक स्वर में रिवॉल्वर हिलाता जंवाई से कह उठा–"रिवॉल्वर पूरी भरी पड़ी है और अभी तक एक गोली भी कम नहीं हुई।"

"बकवास करता है ये–।" पाटिल तुरन्त बोला–"झपट ले इस पर। मौका है अभी–।"

जंवाई ने सोहनलाल को देखा।

सोहनलाल, जंवाई पर रिवॉल्वर ताने खड़ा था।

"ये सब हो क्या रहा है?" जंवाई परेशान सा कह उठा—"कुछ पता तो चले मुझे— ।"

"बातें बाद में।" सोहनलाल रिवॉल्वर वाला हाथ हिलाकर बोला—"तुम पेट के बल नीचे लेट जाओ।"

"लेकिन क्यों?"

"मैंने तो पहले ही कहा था कि तुझे भी बांध देगा।" पाटिल बोला—"मौका है झपट ले इस पर। रिवॉल्वर की परवाह मत कर। वो खाली है। मुझे सब पता है। तोड़ दे साले की गर्दन।"

"नीचे लेट— ।" सोहनलाल जंवाई पर गुर्राया।

"मत लेटना।" पाटिल जल्दी से बोला—"ये गोली नहीं चला सकता। आस-पास के घरों में और लोग भी रहते हैं। धमाके की आवाज सुनकर पुलिस को फोन कर देंगे। ये फंसा पड़ा है। कुछ नहीं कर सकता।"

सोहनलाल की कठोर निगाह जंवाई पर थी।

जंवाई परेशान दिखा और सामने की कुर्सी पर बैठता कह उठा।

"मेरे यार के घर को तुम लोगों ने अखाड़ा बना रखा है। सरवत को पता है कि यहाँ क्या हो रहा है।"

"सब पता है।" सोहनलाल ने कहा—"कुर्सी से उठ और फर्श पर लेट जा।"

"क्यों?"

"तेरे हाथ-पांव बांधने हैं।" सोहनलाल ने कठोर स्वर में कहा।

"मैं सरबत का दोस्त हूँ। मुझे क्यों बांध रहे हो।" जंवाई उखड़े स्वर में बोला—"सरबत यहाँ होता तो कभी ऐसा ना करता।"

"वो जब आयेगा तो उसकी मर्जी, तेरे साथ जो भी करे। अभी मेरी मर्जी चलेगी।"

"ये कैसे हो सकता है। मैं अपने हाथ पांव नहीं बंधवाऊंगा।" जंवाई बोला—"पहले मुझे बताओ मामला क्या है?"

"शाबास।" पाटिल बोला—"थोड़ी और हिम्मत दिखा और तोड़ दे इसकी गर्दन।"

जंवाई और सोहनलाल एक-दूसरे को देख रहे थे।

"कुर्सी से उठ और चुपचाप नीचे लेट जा।" सोहनलाल गुर्रा उठा।

"पहले मुझे बता मामला क्या है?"

"मैं गोली चलाने जा रहा हूँ।" सोहनलाल ने दाँत भींचकर कहा।

"रिवॉल्वर खाली है।" पाटिल हंसकर बोला—"तू डरना मत।"

जंवाई ने बेचैनी से पहलू बदला। सोहनलाल को देखता रहा।

सोहनलाल के चेहरे पर गुस्सा दिखाई दे रहा था।

"रिवॉल्वर में गोली होती ये अब तक तुझ पर चला चुका होता।" पाटिल ने फौरन कहा—"तेरी जगह मैं होता तो अब तक इसकी गर्दन तोड़ चुका होता। ये कागजी पहलवान है, इसे एक हाथ मार के तो देख—।"

"तो तूने क्यों नहीं एक हाथ इसे मार दिया?" जंवाई ने पाटिल से कहा।

"तब ये अकेला नहीं था। ज्यादा लोग थे।"

"तू कौन है?" जंवाई ने पूछा।

"मैं पाटिल हूं। देवेन साठी का नाम सुना है।"

जंवाई बुरी तरह चौंका।

"देवेन साठी?" उसके होठों से निकला।

"नहीं सुना?"

"सुना है, अच्छी तरह सुना...।"

"मैं उसका दायाँ हाथ पाटिल हूँ।"

"उसका दायां हाथ पाटिल?" जंवाई का दिमाग तेजी से दौड़ा—"पर तू यहाँ क्या कर रहा है। इन लोगों ने क्यों...?"

"पकड़ के बांध रखा है।" पाटिल गुस्से से तिलमिलाया—"बुरी हालत कर रखी है। खोल भी नहीं रहे। पैंट गीली हो रखी है।"

"क्यों पकड़ा इन्होंने। ये कौन है?" जंवाई ने सोहनलाल पर निगाह मारी।

सोहनलाल रिवॉल्वर थामें कड़वी निगाहों से उसे देख रहा था।

"अब तुझे क्या बताऊँ?"

"बता-बता...?"

"देवराज चौहान से पंगा हो गया है साठी साहब का—।"

"तो इसमें इन लोगों का क्या?"

"ये देवराज चौहान के ही तो साथी हैं।"

"क्या?" जंवाई फिर चौंका—"ये देवराज चौहान के साथी हैं? म-मैंने तो सुना है देवराज चौहान ने साठी की पत्नी और बच्चों को—।"

"वो यहीं हैं।" पाटिल कसमसाकर बोला—"साथ वाले कमरे में।"

"साठी की पत्नी और बच्चे यहीं हैं?" जंवाई इस खबर से हिल गया था।

"एक बार में सुन लिया कर।"

"स-साठी ने पाँच करोड़ का इनाम रखा है जो उसकी पत्नी और बच्चों की खबर देगा।" जंवाई जैसे अपने से कह उठा।

"इस हरामी ने बताया था।" पाटिल ने सोहनलाल को देखा।
"मैं इसीलिये तो यहाँ आया था।"
"किसलिए?"
"साठी की पत्नी और बच्चों के लिए। सरबत सिंह देवराज चौहान को जानता है मैंने सोचा कि सरबत सिंह से कहकर, साठी की पत्नी और बच्चों का पता लगाकर साठी को बता दूंगा और पांच करोड़ ले लूंगा।" जंवाई को लगा जैसे कोई अपना मिल गया हो।
"तो फिर सोचता क्या है?" पाटिल उकसाने वाले स्वर में बोला—"पकड़ ले इसकी गर्दन। रिवॉल्वर खाली है ये तो तेरे को बता ही चुका हूँ। एक ही हाथ में रगड़ दे साले को या मेरे हाथ-पांव खोल—मैं—।"
जंवाई सोहनलाल को देखता खड़ा हो गया।
सोहनलाल सतर्क हो गया।
"और तेरा सरबत सिंह तो पूरी तरह देवराज चौहान का साथ दे रहा है। सब कुछ तेरे सामने ही है कि साठी के परिवार को तेरे यार के ही घर में रखा हुआ है। पाँच करोड़ पाने का तेरे पास बढ़िया मौका है। गर्दन तोड़ दे इसकी—।"
"मेरी रिवॉल्वर खाली नहीं है।" सोहनलाल गुर्राया—"ये झूठ बोलता है।"
"इसकी बातों की परवाह मत कर।" पाटिल तेज स्वर में बोला—"अगर इसके रिवॉल्वर में गोली होती तो ये गोली चलाकर दिखाता। मुँह से ना कहता। खाली-खाली ढोल पीट रहा है ये—।"
"क्यों सूखे पहलवान।" जंवाई दाँत भींचकर कह उठा—"खाली रिवॉल्वर दिखाकर, मेरे को धमकाता—।"
"बेवकूफ ये भरी हुई है।" सोहनलाल ने कठोर स्वर में कहा।
"तो गोली चला के दिखा। छत पर गोली चला-चल—।"
सोहनलाल दाँत भींचे जंवाई को देखता रहा।
"चला के दिखा, नहीं तो मैं तेरी गर्दन तोड़ने आ रहा हूँ।"
"नहीं चला सकता।" सोहनलाल का स्वर खतरनाक था।
"क्योंकि रिवॉल्वर खाली—।"
"छत पर गोली नहीं चला सकता। खामखाह का शोर होगा।" सोहनलाल ने रिवॉल्वर सीधी करते हुए कहा—"परन्तु जरूरत पड़ने पर तेरे पर गोली जरूर चला दूंगा...।"
"मेरी बात मान।" पाटिल हंस पड़ा—"रिवॉल्वर खाली है। आगे बढ़, कुछ नहीं होगा।"
तभी सोहनलाल झपटा और पास पहुँचकर जंवाई को धक्का

दिया। जंवाई पीछे कुर्सी पर जा लुढ़का। सोहनलाल ने रिवॉल्वर की नाल फुर्ती से उसकी कनपटी पर मारी। जंवाई कराह उठा। सोहनलाल ने पुनः एक के बाद एक दो चोटें उसकी कनपटी पर टिका दी तो जंवाई बेसुध सा होकर कुर्सी के नीचे उसकी टांगों के पास आ गिरा। वो बेहोश हो गया था।

पाटिल कठोर निगाहों से सोहनलाल को घूर रहा था।

सोहनलाल ने रिवॉल्वर जेब में रखी और कहरभरे स्वर में पाटिल से बोला।

"तूने कोशिश तो बहुत की, पर तेरी चल नहीं सकी।"

"ये बेवकूफ अगर तेरे पर झपट पड़ता तो तब देखता तू क्या करता। गोली चलाता। आवाज गूंजती। गली-मोहल्ले में कोई तो पुलिस को फोन करता ही कि यहां गोली चली है। तब पुलिस आती और तेरा खेल खत्म हो जाता—।" पाटिल गुर्राया।

"अफसोस तो इस बात का है कि ऐसा कुछ भी नहीं हो सका—।" सोहनलाल ने डोरी को संभाला और जंवाई को पेट के बल लिटाकर उसके हाथ-पांव बांधने में व्यस्त हो गया।

इस काम से फारिग हुआ ही था कि कॉलबेल बजी।

सोहनलाल ने दरवाजा खोला तो रुस्तम राव को सामने खड़ा पाया।

"किया हाल है बाप—।" रुस्तम राव भीतर आता कह उठा—"सब ठीक होईला इधर?"

"हाँ।" सोहनलाल मुस्कराया—"मैं तेरे आने का ही इन्तजार कर रहा था। अकेले में यहाँ के हालात संभालने में मुझे समस्या आ रही है। बाजार से भी सामान लाना होता है ऐसे में निगरानी के लिए—।"

सोहनलाल का फोन बज उठा।

दूसरी तरफ नगीना थी। वो साठी की पत्नी बच्चों की बात साठी से कराना चाहती थी।

सोहनलाल उस कमरे की तरफ बढ़ गया, जहाँ आरु और बच्चे मौजूद थे।

आरु ने बात की।

"आखिर मुझे कब तक यहाँ रहना पड़ेगा।" आरु के स्वर में शिकायत के भाव थे।

"मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ तुम्हें और बच्चों को आजाद कराने की।" उधर से साठी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मामला क्या है। मुझे भी तो कुछ पता चले।"

"देवराज चौहान ने भाई को मारा था। अब मैं देवराज चौहान को कुछ ना कहूँ, इस वजह से तुम्हारा और बच्चों का अपहरण किया गया है। मेरे आदमी कभी भी तुम लोगों को ढूंढकर, वहाँ पहुँच सकते हैं, जहाँ तुम लोग हो।"

"तो क्या ये हमें आसानी से आपके आदमियों के हवाले कर देंगे।" आरु परेशान स्वर में बोली—"तब तो ये हमें मार देंगे।"

"इस बारे में तुम फिक्र मत करो। मैं सब ठीक कर लूंगा। अभी थोड़ा-सा इन्तजार करो। शायद दो-तीन दिन। देवराज चौहान, विलास डोगरा को खत्म करके तुम लोगों को छोड़ देगा। ऐसा देवराज चौहान की पत्नी ने वादा किया है। वो इस वक्त मेरे पास मौजूद है।"

आरु कुछ नहीं बोली।

"तुम्हें कोई तकलीफ तो नहीं वहाँ?"

"ये ही तकलीफ है कि मैं और बच्चे कैद में हैं। हम इस तरह नहीं रह सकते। बच्चों से बात कराऊँ?"

"रहने दो। अभी मन ठीक नहीं है कि बच्चों से बात कर सकूं।"

"हमें जल्दी से यहाँ से निकालिये—।"

"मुझे तुमसे ज्यादा जल्दी है आरु—।"

बातचीत खत्म हो गई।

सोहनलाल, आरु से फोन लेते बोला।

"मेरा साथी आ गया है। अब आधे घंटे में तुम लोगों को खाने को मिल जायेगा।" कहते हुए उसने बच्चों पर निगाह मारी। अर्जुन सो रहा था। गुंजन खामोश बैठा उसे देख रहा था।

बाहर निकलकर सोहनलाल ने दरवाजा बंद किया तो रुस्तम राव को दूसरे कमरे से बाहर आते देखा।

"अपुन को तो बतायेला कि इधर पाटिल कैद में होईला। ये दूसरा कौन होईला बाप?"

सोहनलाल, रुस्तम को, जंवाई के बारे में बताने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

हंसा और प्रेमी बस से उतरे और पैदल ही आगे बढ़ गये। शाम के सात बज रहे थे। शाम धीरे-धीरे अंधेरे में बदलने वाली थी। दोनों के चेहरों पर उलझन नाच रही थी।

"मुझे तो लगता है सरबत और जंवाई ने आपस में सांठ-गांठ कर ली है कि पाँच करोड़ को वो दोनों ढाई-ढाई करोड़ में बांट लेंगे और हम दोनों को इस मामले से दूर रखेंगे। तभी तो जंवाई, सरबत सिंह को लेकर आया नहीं। अब जंवाई का फोन भी बंद है। पहले तो दो बार बेल गई फिर सरबत की तरह उसका फोन भी बंद हो गया।"

"वो हमसे चालाकी करके ठीक नहीं कर रहे।" हंसा नाराजगी भरे स्वर में बोला—"मुझे आशा नहीं थी कि वो हमसे धोखेबाजी करेंगे। हम उनके पुराने दोस्त हैं। कितनी बार एक साथ काम किए हैं।"

"क्या पता सरवत सिंह ने साठी के परिवार का पता लगाकर, साठी को बता भी दिया हो और पाँच करोड़ ले लिया हो।" प्रेमी बोला।

"इतनी जल्दी?" हंसा ने प्रेमी को देखा।

"काम का क्या पता चलता है कि कब निपट जाये।"

दोनो पैदल ही आगे बढ़े जा रहे थे।

"मुझे नहीं लगता कि वो दोनों घर पर मिलेंगे। घर पर तो ताला लगा होगा।"

"अभी पता चल जायेगा। वो रही सामने सरबत सिंह की गली—।" प्रेमा ने सामने देखा—"अगर उन्होंने धोखेबाजी की होगी तो मैं उन्हें छोड़ने वाला नहीं। सालों का गला काट दूंगा।"

"तैश में मत आ हंसा। ऐसा-वैसा काम करने से पहले उनसे ये जान लेना जरूरी है कि उन्होंने पाँच करोड़ कहाँ रखा है। मेरे ख्याल में तो अब तक उन्होंने नोट कहीं छिपा दिए होंगे। तेरा क्या ख्याल है।"

"तू ठीक कहता है, पहले नोटों का पता करेंगे कि पाँच करोड़ कहाँ रखा है।" हंसा सिर हिलाकर बोला।

दोनो गली में प्रवेश कर गये।

गली में छोटे बच्चे खेल रहे थे। शोर हो रहा था।

परन्तु सरबत सिंह के मकान के बाहर नज़र पड़ते ही-दोनों ठिठके। एक-दूसरे को देखा। वहाँ जंवाई की मोटरसाइकिल खड़ी थी। प्रेमा, हंसा की बाँह पकड़कर एक तरफ हो गया और कहा।

"जंवाई की मोटरसाइकिल खड़ी है। वो भीतर ही है।"

"नोटों की गिनती में तो नहीं लगे?" हंसा की आँखें सिकुड़ गई।

"ये ही कर रहे होंगे वो।" प्रेमी कह उठा—"हम वक्त पर पहुँच गये, नहीं तो दोनों ने नोट लेकर फुर्र हो जाना था।"

"अब क्या करें?"

दोनों के चेहरों पर सोच के भाव थे।

"तू साथ में कुछ लाया है। औजार वगैहरा—?" प्रेमी धीमे से बोला।

"रामपुरिया चाकू है।"

"और वो जो देसी पिस्तौल महीना भर पहले हजार रुपये में खरीदा था?"

"वो घर पर ही है। उसकी गोलियाँ खत्म हो गई—।"

"तूने बीस गोलियाँ खरीदी थी। खत्म कैसे हो गई?"

"जंगल में जाकर निशाने की प्रेक्टिस की थी। वो कट्टा बेकार जैसा है। एक बार में उसमें एक गोली ही पड़ती है।"

"छोड़ जाने दे। इस वार चार लाख की अमरीकन पिस्तौल खरीदेंगे—।"

"चार लाख कहाँ से आयेगा?"

"नोटों की परवाह मत कर। हम पाँच करोड़ के मालिक बनने वाले हैं। रामपुरिया है ना?"

"वो तो है।"

"जाते ही सालों की गर्दन पर रख देना है पाँच करोड़ के नोट किसी बैग में भर लेंगे। जंवाई की मोटरसाइकिल तो खड़ी ही है। वो ले चलेंगे। सीधा मुम्बई के बाहर। खंडाला पहुँचकर ही रुकेंगे। तू क्या कहता है।"

"मेरे घर का बिजली का बिल आने वाला है। वो ना दिया तो बिजली कट जायेगी।"

"उसकी तू फिक्र मत कर। हमारे पास इतना पैसा होगा कि बिजली घर खरीद लेंगे।" प्रेमा पूरी तरह उत्साह में डूब चुका था—"मेरी बात सुन ले। वो तरह-तरह के बहाने लगायेंगे कि हम तो वस तुम दोनों के पास आ ही रहे थे। या कहेंगे कि अभी तो हमने नोट खोल के भी नहीं देखे, नहीं तो कह देंगे अभी नोट लेकर पहुँचे हैं और फोन करने ही वाले थे। ऐसी ही कोई बात कहकर हमें शांत रखने की कोशिश करेंगे। लेकिन हमें शांत नहीं होना है। बेईमान यारों का क्या भरोसा कि पैसे के लालच में हमारी पीठ पर गोली मार दें। हंसा सुन, उनके पास रिवॉल्वर भी हो सकती है। क्या पता देवेन साठी ने खुश होकर इन्हें रिवॉल्वर भी दे दी हो या कमीनों ने ही मांग ली हो कि हमें गोली मार सकें।"

"ये तो मैंने सोचा ही नहीं था।" हंसा बोला।

"तू रामपुरिया तैयार रखना।"

'वो तैयार है।"

"जिसके हिस्से जो आयेगा, उसे पकड़कर गर्दन मरोड़ देनी है। लेकिन पहले ये पता लगा लेना है कि नोट कहाँ हैं।" प्रेमी ने हंसा का कंधा थपथपाया—"चल, मन को मजबूत कर ले। गद्दार यारों का गला काटने में हिचक नहीं होनी चाहिये।"

"तेरे पास तो हथियार नहीं है?" हंसा बोला।

"मैं एक को पकड़े रहूँगा। तू पहले वाले का काम तमाम करके

दूसरे का कर देना। साले हमें धोखा देते हैं। अपने यारों को तो हम भी कम नहीं। सरबत और जंवाई दोनों को सीधा ऊपर पहुँचा देंगे। आ— ।"

दोनों आगे बढ़ गये।

सरबत सिंह के मकान के गेट पर पहुँचे। खुन्दक भरी निगाहों से जंवाई की मोटरसाइकिल को घूरा और गेट खोलकर भीतर प्रवेश करने के बाद दरवाजे पर पहुँचे और बेल बजा दी।

"तू घबरा तो नहीं रहा?" प्रेमी आहिस्ता से बोला।

"मैं तैयार हूं।" हंसा ने दृढ़ स्वर में कहा।

भीतर से कदमों की आवाज आई फिर दरवाजा खुला।

सामने सोहनलाल खड़ा था। उसने शांत भाव से दोनों को देखा।

हंसा और प्रेमी तो सरबत सिंह या जंवाई को दरवाजे पर देखने की अपेक्षा कर रहे थे। अन्जान आदमी को सामने देखकर दोनों की आँखें सिंकुड़ी, प्रेमी ने हंसा से कहा।

"हिस्सेदार और भी हैं।"

"ये साठी का आदमी हो सकता है जो पाँच करोड़ लेकर आया हो और अब नोट गिनवाकर जाने वाला हो।" हंसा ने कहा।

सोहनलाल होंठ सिकोड़े उन्हें देखता, बात को समझने की चेष्टा कर रहा था।

"तुम कौन हो?" प्रेमा ने सोहनलाल से पूछा।

"बेल तुमने बजाई है, मैंने नहीं।" सोहनलाल बोला—"किससे मिलना है?"

"हम सरबत सिंह के दोस्त हैं।"

"अच्छा— ।"

"मैं प्रेमा हूँ ये हंसा। तू देवेन साठी का आदमी है?"

"नहीं।" सोहनलाल सतर्क दिखा।

"सरबत सिंह को बुला।"

"वो घर पर नहीं है।" सोहनलाल ने गहरी निगाहों से दोनों को देखा—"तुम लोग कौन हो?"

"हम सरबत सिंह के दोस्त हैं। जाकर उसे हमारे नाम बता।"

"वो घर पर नहीं है।" सोहनलाल ने फिर कहा।

"झूठ मत बोल। वो भीतर ही है।" हंसा ने तीखे स्वर में कहा—"हम सब जानते हैं।"

"क्या जानते हो?"

"जंवाई भी भीतर है।"

जंवाई का नाम सुनकर सोहनलाल मन ही मन चौंका।

"जंवाई—?"

"उसकी मोटरसाइकिल बाहर खड़ी है।" हंसा ने पलटकर कहा—"वो देखो—।"

सोहनलाल समझ गया कि उससे गलती हो चुकी है। मोटरसाइकिल हटवा देनी चाहिये थी।

"तुम लोग जंवाई को कैसे जानते हो?"

"हम सब आपस में दोस्त हैं।" हंसा ने मुँह बनाकर कहा—"तू इतने सवाल क्यों पूछ रहा है। सरबत सिंह को बुला। मुझे मालूम है वे दोनों भीतर क्या कर रहे हैं। तुम भी तो इस मामले में उनके साथ हो।"

"किस मामले में?"

"सब पता है तुझे, उल्लू मत बना हमें।" प्रेमा ने तीखे स्वर में कहा।

सोहनलाल की सोच भरी निगाह दोनों के चेहरों पर थी। वो मामले को समझ गया था कि जंवाई, सरबत सिंह और ये दोनों दोस्त हैं। इन्हें पता है कि जंवाई यहाँ क्या करने आया था।

"वो दोनों भीतर नोट गिन रहे हैं ना?" हंसा तड़प भरे स्वर में कह उठा—"पूरे पाँच करोड़ लिए बैठे हैं।"

"तो तुम दोनों सब जानते हो?" सोहनलाल ने शांत स्वर में कहा।

"सब पता है हमें। क्यों प्रेमी?" हंसा ने उखड़े स्वर में कहा।

"हमारा ही तो आइडिया था, हमें नहीं पता होगा तो किसको पता होगा।"

सोहनलाल दरवाजे से पीछे हटता हुआ बोला।

"भीतर आ जाओ।"

हंसा और प्रेमी की नज़रें मिली। आँखों-आँखों में इशारे हुए।

"समझ गया।" प्रेमी ने कहा।

"मैं सब ठीक कर दूंगा।" हंसा सिर हिलाकर दृढ़ स्वर में कह उठा।

दोनो आगे बढ़े और खुले दरवाजे से भीतर प्रवेश कर गये।

सोहनलाल ने तुरन्त दरवाजा बंद कर दिया।

दरवाज़े के पास रुस्तम राव खड़ा था जो उनकी बातें पहले से ही सुन रहा था।

दोनों की निगाह रुस्तम राव पर पड़ी तो वो रुके और प्रेमा कह उठा।

"हंसा। हिस्सेदार और भी हैं।"

"क्या पता ये साठी का भेजा आदमी हो जो नोट लेकर आया हो।" हंसा ने रुतम राव को देखते हुए कहा।

"ये दोनों जंवाई के दोस्त हैं।" सोहनलाल ने रुस्तम राव से कहा।

"अपुन इन्हें समझेला बाप।" रुस्तम राव मुस्कराकर कह उठा।

तभी दूसरे कमरे से जंवाई की आवाज आई।

"कुछ खाने-पीने को तो दे दो। चाय ही पिला दो।"

प्रेमी और हंसा चौंके। आपस में नज़रें मिलीं।

"तो हमारा ख्याल ठीक है कि जंवाई और सरबत पाँच करोड़ के नोट गिनने में लगे हैं।" हंसा बोला।

"ऐसा लगे है कि कुछ खाया-पीया भी नहीं।" प्रेमी ने सिर हिलाया।

"चल ज़रा उनकी गर्दन पकड़ें—।"

"तुम दोनों कौन हो?" प्रेमी एकटक सोहनलाल और रुस्तम राव को देखकर कह उठा।

सोहनलाल उसकी भोर पलटा और कमरे के कोने में जाकर वहाँ रखी डोरी उठा ली। फिर वापस आया।

"ये तुम्हारे हाथ में क्या है?" प्रेमी ने आंखें सिकोड़कर पूछा।

"डोरी।" सोहनलाल मुस्कराया—"नोटों को बांधने के लिए।"

"अब नोटों को बांधने की जरूरत नहीं। हम आ गये हैं। क्यों प्रेमी, सब नोट संभाल लेंगे।"

"तुम किन नोटों को बांधने की बात कह रहे हो?" प्रेमी ने पूछा।

"वो ही पाँच करोड़। साठी को उसके परिवार के बारे में बताकर पाँच करोड़ ही तो मिलना था। सरबत सिंह देवराज चौहान को जानता है और तुम लोग ये सोचकर चल रहे थे कि सरबत सिंह देवराज चौहान से पता कर लेगा कि साठी का परिवार कहाँ पर रख गया है और ये खबर साठी को बताकर, उससे पाँच करोड़ ले लोगे।" सोहनलाल मुस्कराकर बोला।

"ये तो सब जानता है हंसा।"

"ये जरूर हिस्सेदार होगा उस पाँच करोड़ में। सरबत सिंह ने नये यार बना लिए...।"

उसी पल जंवाई की आवाज आई।

"ये तो हंसा की आवाज है। तू है हंसा—।"

"हाँ—।" हंसा ने होंठ भीचकर ऊँचे स्वर में कहा—"मेरे साथ प्रेमी भी है और तू—।"

"भाग जा साले। जल्दी से भाग जा। वरना मुसीबत में फंस जायेगा।" जंवाई ने भीतर के कमरे से ऊँचे स्वर में कहा।

"सुना।" हंसा कड़वे स्वर में बोला—"हमें भागने के लिए कह रहा है। धमकी दे रहा है कि हम मुसीबत में पड़ जायेंगे। हमें पाँच करोड़ के मामले से बाहर कर दिया है। इसकी तो मैं अभी गर्दन काट देता हूँ।" कहते हुए हंसा तेजी से कमरे की तरफ बढ़ा।

"सरबत सिंह की भी गर्दन काटनी है।" उसके पीछे चलते प्रेमी ने जैसे याद दिलाया।

पहले हंसा फिर प्रेमी, दोनों कमरे में जा पहुँचे।

कमरे में पहुँचते ही ठिठके। जो नजारा उन्हें देखने को मिला, उसकी तो उन्होंने कल्पना नहीं की थी।

जंवाई के हाथ-पांव बंधे थे। वो कमरे के फर्श पर पड़ा था। उससे चार कदम दूर पाटिल बंधा हुआ था।

उन्हें कमरे में आया पाकर जंवाई का मन माथा पीटने को हुआ।

"ये क्या?" प्रेमी के होठों से निकला।

सिर घूम गया था उन दोनों का। कुछ समझ में नहीं आया। वो तो कमरे में पाँच करोड़ के नोटों के ढेर को देखने की आशा कर रहे थे। जबकि यहाँ तो सब कुछ उल्टा था।

हंसा हक्का-बक्का सा पीछे पलटा।

दरवाजे पर सोहनलाल को रिवॉल्वर लिए खड़ा पाया। डोरी अब रुस्तम राव के हाथ में थी।

"प्रेमी...।" हंसा के चेहरे का रंग फक्क पड़ गया।

प्रेमी ने पलटकर देखा तो वो भी ठगा सा रह गया।

"डरो मत।" पाटिल तुरन्त कह उठा—"इसके हाथ में पकड़ी रिवॉल्वर खाली है। टूट पड़ो इन दोनों पर। सालों की गर्दन तोड़ दो। कोई दम खम नहीं है इनमें। एक ही हाथ में नीचे पड़े होंगे।"

"रिवॉल्वर खाली है?" हंसा गुर्रा उठा।

"सच में।" पाटिल तेज स्वर में कह उठा—"जंवाई से पूछ लो।"

"मुझे नहीं पता।" जंवाई कह उठा—"मेरे ख्याल में तो रिवॉल्वर भरी होगी—।"

"तेरे को तो पता ही है कि रिवॉल्वर खाली है।" पाटिल ने गुस्से से, जंवाई से कहा।

"मुझे नहीं पता।" जंवाई ने बुरा मुँह बनाकर कहा—"तू मेरे यारां को मरवाना चाहता है कि वो उन पर झपटे और ये कमीना इन पर गोली चला दे। मुझे अपने यार बहुत प्यारे हैं।"

"पाँच करोड़—।" पाटिल ने जैसे जंवाई को भूली बात याद कराई।

जंवाई पाँच करोड़ का नाम सुनते ही बेचैन हो उठा।

"कह उन्हें झपट पड़ें उन पर।" पाटिल फुसफुसाया।

"नहीं– ।" जंवाई परेशान हुआ।

"कह दे। दो घंटों में पाँच करोड़ तेरे पास होंगे।"

"ये मर गये तो?"

"तो हिस्सा डबल हो जायेगा।"

"ये मेरे यार हैं।"

"नोटों से बड़ा कोई यार नहीं होता।"

"नहीं-नहीं मैं ऐसा नहीं कर सकता।" जंवाई होंठ भींचकर कह उठा।

"तू कुत्ता है।" पाटिल गुर्राया–"कुत्ता ही रहेगा तू– ।"

जंवाई ने गर्दन घुमाकर प्रेमी और हंसा को देखा।

सोहनलाल रिवॉल्वर हिलाकर कठोर स्वर में बोला।

"फर्श पर लेट जाओ। तुम दोनों के हाथ-पांव बांधने हैं इस डोर से।"

हंसा-प्रेमा ने एक दूसरे को देखा।

"ये क्या हो रहा है हंसा?"

"मेरी तो समझ में कुछ नहीं आ रहा। सरबत सिंह के घर का क्या हाल हुआ पड़ा है। वो खुद कहाँ है?"

"मुझे क्या पता।" प्रेमी ने जंवाई से कहा–"रिवॉल्वर खाली है इनकी?"

"हाँ– ।" पाटिल जल्दी से बोला।

"मुझे नहीं पता।" जंवाई ने पाटिल को देखकर कहा–"पाटिल चाहता है कि यहाँ गोलियाँ चलें, शोर हो और पुलिस आ जाये। मेरे ख्याल में रिवॉल्वर में गोलियाँ हैं। मेरी मानो तो चुपचाप हाथ-पांव बंधवा लो।"

"उल्लू का पट्ठा– ।" पाटिल जंवाई पर गुर्राया।

"ये कौन है?"

"ये पाटिल है। देवेन साठी का राइट हैंड– ।" जंवाई ने बताया।

"देवेन साठी का राइट हैंड?" प्रेमी चौंका–"ये सब क्या हो रहा है। मामला क्या है, पता तो चले। ये लोग कौन हैं और तुम लोगों को क्यों बांध रखा है। सरवत सिंह कहाँ है और– ।"

तभी रुस्तम राव का घूंसा प्रेमी की कनपटी पर जा पड़ा।

प्रेमी के होठों से कराह निकली। उसके घुटने मुड़े और बेहोश होकर नीचे जा लुढ़का।

सोहनलाल ने आगे बढ़कर हंसा के सीने पर रिवॉल्वर की नाल रखी और गुर्राया।

"गोली चला के दिखाऊँ कि इसमें गोलियाँ हैं।"

"न-नहीं— ।"

"तो नीचे लेट जा। देर मत कर। तेरे हाथ-पांव बांधने हैं, मारने का प्रोग्राम नहीं है तेरे को। उसके बाद पूछते रहना कि मामला क्या और यहाँ क्या हो रहा है। लेट नीचे।"

"लेट जा हंसा लेट जा। बंधवा ले हाथ-पांव।" जंवाई ने गहरी सांस ली—"मैंने तो पहले ही कहा था कि यहाँ मत आना, मुसीबत में पड़ जायेगा, पर तूने मेरी एक ना सुनी।"

हंसा शराफत से पेट के बल लेट गया। रुस्तम राव ने डोरी से उनकी बांहें पीठ पर करके बांध दी। फिर बेहोश पड़े प्रेमी के हाथ-पांव बांध दिए। सोहनलाल ने रिवॉल्वर जेब में रख ली।

"अब मामला फिट होईला बाप— ।" रुस्तम राव ने सोहनलाल को देखा।

तभी जंवाई गुस्से से कह उठा।

"तुम सरबत से मेरी बात कराओ। उसका फोन मिलाओ।"

सोहनलाल, रुस्तम राव दरवाजे की तरफ बढ़ गये।

"कम से कम चाय तो पिला दो।" जंवाई ने जल्दी से कहा।

वो दोनों बाहर निकल गये।

"जंवाई।" हंसा ने कहा—"यहाँ तेरी सेवा नहीं होने वाली।"

"मैंने तो यहाँ आकर मुसीबत मोल ले ली।" जंवाई ने थके स्वर में कहा।

"तुम लोग ना आते तो मेरा दिल कैसे लगता।" पाटिल मुस्कराया—"अकेले मेरा मन नहीं लग रहा था।"

"आखिर मामला क्या है जंवाई?" हंसा ने जंवाई से पूछा—"बता तो, ये सब क्या हो रहा है।"

❑❑❑

❑❑❑

मोना चौधरी, महाजन और पारसनाथ, देवराज चौहान के पीछे कोल्हापुर जा पहुँचे थे। नौ घंटों के सफर में उन्होंने ये जान लिया था कि दो और कारें देवराज चौहान के पीछे लगी है। उन्हें इस बात का शक था कि वो दोनों कारों वालों को भी उनके बारे में पता चल गया है। उनका अनुमान था कि वो देवेन साठी के आदमी हो सकते हैं।

शाम सात बजे जब वे कोल्हापुर पहुँचे तो अंधेरा होने वाला था।

इस वक्त देवराज चौहान कार चला रहा था। वे अम्बेडकर नगर जैसे पाश इलाके पहुँचे और तलाश करते वो स्टार क्लब की इमारत

के बाहर जा पहुँचे जो कि बाहर से बहुत शानदार लग रही थी। इमारत के माथे पर नियोन साईन बोर्ड लगा हुआ था और इस वक्त नीली और लाल रोशनी में जलना आरम्भ हो चुका था। इसके अलावा इमारत पर और भी लाइटें जल रही थी। बड़े से विशाल गेट पर वर्दीधारी दो दरबान खड़े थे। ये कोल्हापुर का शानदार स्टार नाइट क्लब था। यहाँ डी-जे था। बॉर था, डासिंग फ्लोर था। रेस्टोरेंट था। दवी आवाज में सुना जाता था कि यहाँ जुआ भी खेला जाता है।

"ये है वो जगह, जहाँ कल शाम आठ बजे विलास डोगरा ने आना है।" देवराज चौहान बोला।

"ये स्टार नाइट क्लब डोगरा का है?" जगमोहन के होंठ भिंच गये।

"हाँ। तुम्हारे सामने ही तो प्रकाश दुलेरा ने बताया था।"

"वो पक्का आयेगा क्या?" हरीश खुदे कह उठा।

"पक्का आयेगा।"

"तुम समझे नहीं।" खुदे ने कहा—"प्रकाश दुलेरा की मौत के बाद वो सतर्क भी हो सकता है कि कहीं उसने हमें उसके प्रोग्राम के बारे में बता दिया हो। ऐसे में वो अपना प्रोग्राम बदल दे तो बड़ी बात नहीं होगी।"

"खुदे की बात में दम है।" जगमोहन गुर्रा उठा।

"वो आएगा।" देवराज चौहान सख्त स्वर में बोला—"डोगरा ऐसी बातों की परवाह करने वाला इंसान नहीं है। अगर उसे इस बात का शक भी हो तो वो ये दिखाने के लिए अपना प्रोग्राम नहीं बदलेगा कि वो हमारी परवाह नहीं करता।"

"परवाह तो उसे करा देंगे। जगमोहन ने खतरनाक स्वर में कहा- "एक बार वो यहां पहुंचे तो सही।"

"हमें अपने टिकने की जगह तलाश करनी चाहिए।" देवराज चौहान ने कहा और धीमी गति से कार आगे बढ़ा दी।

"पीछे की क्या पोज़िशन है?" खुदे ने पूछा।

"तीनों कारें पीछे हैं।" देवराज चौहान शीशे में देखता कह उठा—"एक कार में तो मोना चौधरी, महाजन और पारसनाथ, बाकी की दो कारों में दो-दो आदमी हैं। उनके बारे में नहीं पता कि वो कौन हैं।"

"वो हमारे पीछे लगे देवेन साठी के आदमी हो सकते हैं।" जगमोहन बोला।

"दो कारों में?" देवराज चौहान ने कहा।

"कहीं एक कार में विलास डोगरा के आदमी न हों।" खुदे ने आशंका व्यक्त की।

"ये संभव नहीं।" देवराज चौहान बोला—"डोगरा के आदमी हमारा पीछा नहीं करेंगे। हम पर हमला करेंगे।"

"वो रहा होटल।" तभी देवराज चौहान कह उठा—"सफेद बिल्डिंग माथे पर होटल का नियोन साइन बोर्ड चमक रहा है।"

देवराज चौहान ने उसी होटल में कार ले जा रोकी। वो बड़ा और खुला होटल था। तीनों बाहर निकले तभी पीछे-पीछे तीन और कारें वहां आ पहुंचीं। ये वो ही कारें थीं, जो मुम्बई से उनका पीछा करती आई थीं। उन्होंने खुद को छिपाए रखने की ज़रा भी चेष्टा नहीं की थी। एक कार मोना चौधरी वाली थी।

दूसरी में गोकुल और शेखर थे।

तीसरे में शिंदे और घंटा थे।

देवराज चौहान, जगमोहन और खुदे ने उन कारों की तरफ देखा।

फिर देवराज चौहान उन कारों की तरफ बढ़ गया।

जगमोहन और खुदे सतर्क मुद्रा में वहीं खड़े रहे। ये जगह होटल के नीचे बनी, होटल की पार्किंग थी और वहां लाइटों से पर्याप्त रोशनी हो रही थी। इस वक्त वहां तीस के करीब कारें खड़ी थीं। तीन अटैण्डैंट दिखाई दे रहे थे।

देवराज चौहान, शिंदे और घंटा वाली कार के पास पहुंचा।

वो दोनों भीतर थे और उसे आता देख रहे थे।

पास पहुंचकर देवराज चौहान झुका और भीतर झांका। उनसे नज़रें मिलीं।

"तुम लोग मुम्बई से मेरे पीछे हो?"

"हां।" शिंदे ने देवराज चौहान को घूरा।

"क्यों?"

"साठी साहब का ऑर्डर है कि तुम लोगों पर नज़र रखी जाए।" शिंदे ने कहा।

"तो देवेन साठी के आदमी हो?"

दो पल चुप्पी रही।

"वो दूसरी कार में दो आदमी कौन हैं?"

"हमारे ही आदमी हैं।"

"इस तरह अलग़-अलग पीछा करने का क्या मतलब है?"

"एक की नज़रों से तुम दूर हो जाओ तो दूसरे की निगाहें तुम पर रहे।" शिंदे ने शांत स्वर में कहा।

"तुम लोगों का इरादा क्या है?" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में पूछा।

"तुम तीनों पर नज़र रखना और साठी साहब को खबर [illegible]ना हमारा काम है देवराज चौहान।"

"बस ?"

"बस।"

"यहां मैं जो भी करता हूं, मेरे किसी काम में, किसी भी हालत में दखल मत देना।"

"यहां क्या करने आए हो तुम ? तुम तो विलास डोगरा के पीछे पड़े हो ? वो तो मुम्बई में है।" घंटा कह उठा।

"मैंने कहा है, मेरे किसी काम में दखल मत देना। इन दोनों, दूसरी कार वालों को भी समझा देना। इस पर मुझे एतराज नहीं कि तुम लोग मुझ पर नज़र रखो।" देवराज चौहान ने बारी-बारी दोनों को देखते हुए कहा।

"तुम जो भी करो, हम दखल नहीं देंगे।"

देवराज चौहान जाने लगा तो घंटा बोला।

"उस कार में कौन है?" दो आदमी और एक लड़की... ?"

"वो मोना चौधरी, पारसनाथ और महाजन है, नाम सुना है उनका?" देवराज चौहान बोला।

"उनके बारे में सब पता है।"

"तुम्हारी तरह वो भी देख रहे हैं कि मैं क्या-क्या कर रहा हूं।" देवराज चौहान ने होंठ भींचकर कहा।

"साठी साहब के परिवार को कहां रखा है तुमने?" शिंदे ने एकाएक तीखे स्वर में पूछा।

"अब तुम अपने काम से आगे की बात कर रहे हो।"

"तुम तब तक ही मजे में हो, जब तक साठी साहब का परिवार नहीं मिल जाता। उसके बाद तो तुम्हारी खैर नहीं।" वो कड़वे स्वर में बोला।

"इन विचारों को दिल में रखकर मुझ पर नज़र रखोगे तो मामला बिगड़ सकता है। मुझसे दूर रहना।" कहने के साथ ही देवराज चौहान पलटा और वापस जगमोहन और खुदे के पास जाकर बोला—"वो दोनों कारें साठी के आदमियों की हैं। वो हम पर नज़र रख रहे हैं और साठी को खबर दे रहे हैं। उन्हें अपना काम करने दो। हमें सिर्फ अपने काम पर ध्यान देना है।"

❑❑❑

❑❑❑

उसी होटल में उन्होंने ऐसा कमरा लिया, जो कि काफी बड़ा था और दो डबल बैड उसमें लगे हुए थे। एक तरफ सोफा-सैट था। अटैच बाथरूम था। देवराज चौहान, जगमोहन और खुदे बारी-बारी नहाए और कॉफी मंगवाकर पी। लंबे सफर के बाद भी वे थकान में नहीं थे। देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई और कश लगाते हुए बोला।

"यहां बैठने का कोई मतलब नहीं है। हमें स्टार नाइट क्लब जाकर, वहां के रास्तों से वाकिफ हो जाना चाहिए। कल हमें वहां पर काम करना है। हमारी कोशिश होगी कि हम स्टार नाइट क्लब को अच्छी तरह देख लें। देशमुख वागले उस क्लब का मैनेजर है। वो कहां बैठता है और हमने यह भी सोचना है कि डोगरा से वो क्लब में कहां मिलेगा, कहां बैठेगा?"

"ऐसी बात की पूछताछ से हमारा भेद खुल सकता है। वो हम पर शक कर सकते हैं।" खुदे बोला।

"ये बात हमने किसी से पूछनी नहीं है। हर जगह देखकर, दो-तीन जगहें ऐसी दिमाग में रख लेनी है, कि जहां डोगरा के और देशमुख वागले के बैठे जाने की संभावना हो।" देवराज चौहान ने कहा।

"क्या ये बेहतर न होगा कि विलास डोगरा को स्टार नाइट क्लब के गेट पर ही पकड़ लें?" जगमोहन ने कहा।

"उसमें हम चूक सकते हैं, क्योंकि कल आठ बजे डोगरा वहां पहुंचेगा तो अंधेरा हो चुका होगा। हम चूक भी सकते हैं उसे देख पाने में। इसलिए हमें क्लब के भीतर होना चाहिए। अपनी नज़रें हर तरफ रखनी होंगी। परंतु खुदे तब बाहर ही रहेगा। अगर खुदे को डोगरा नज़र आ जाता है तो वो उसी पल फोन पर हमें इत्तला कर देगा।"

खुदे ने सिर हिलाया।

"डोगरा जानता है कि हम उसके पीछे हैं। शायद वो कुछ सावधानी इस्तेमाल करे।" जगमोहन बोला।

"ऐसा हो सकता है, तब तो हमें भी ये देखना होगा कि क्लब में प्रवेश करने के कितने रास्ते हैं।" देवराज चौहान ने कहा—"यहां से चलते हैं। क्लब पास ही है। पैदल चलेंगे और दस मिनट में पहुंच जाएंगे।"

वे उठ खड़े हुए।

तभी दरवाजा थपथपाया गया।

तीनों ने एक-दूसरे को देखा।

जगमोहन ने जेब में पड़ी रिवॉल्वर पर हाथ रखा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया। चेहरे पर कठोरता आ ठहरी थी। यहां उनका मिलने वाला कोई नहीं था। आने वाला या तो वेटर होगा, या फिर कोई दुश्मन।

जगमोहन ने सावधानी से दरवाजा खोला, बाहर देखा।

सामने मोना चौधरी खड़ी थी।

दो पल जगमोहन उसे देखता रहा फिर दरवाजा खोल दिया। वो अकेली थी। मोना चौधरी आगे बढ़ी और कमरे में प्रवेश कर गई। जगमोहन ने दरवाजा बंद कर दिया।

मोना चौधरी को आया पाकर हरीश खुदे हड़बड़ाकर देवराज चौहान को देखने लगा।

देवराज चौहान की निगाहें मोना चौधरी पर टिक गई थीं।

देवराज चौहान की तरफ बढ़ती मोना चौधरी कह उठी।

"तुम लोग विलास डोगरा के पीछे हो जबकि इस वक्त वो मुम्बई में है और तुम लोग यहां आ गए हो। मैं जानने आई हूं कि कोल्हापुर में क्या करने आए हो? क्योंकि मैं अपनी पूरी छानबीन कर लेना चाहती हूं कि कठपुतली वाली बात सही है या नहीं। इसलिए मेरी नज़र तुम लोगों से हटी नहीं है अभी।"

"कल विलास डोगरा कोल्हापुर आ रहा है।" देवराज चौहान बोला।

"कहां?" मोना चौधरी रुक गई।

"स्टार नाइट क्लब उसका है।"

"पास ही में। जहां तुमने पहले ही कार रोकी थी।" मोना चौधरी बोली।

देवराज चौहान ने सहमति से सिर हिला दिया।

"तो कल तुम डोगरा का शिकार यहां करने वाले हो। ठीक है।" मोना चौधरी ने कहा और वह दरवाजे की तरफ पलट गई।

"मुझे इस बात की खुशी है कि तुम यह समझ चुकी हो कि मैं जब तुम्हारे पीछे पड़ा तो तब अपने होश में नहीं था।" देवराज चौहान ने कहा—"डोगरा ने तब मुझ पर कठपुतली आजमाई थी। मेरे रास्ते से हट जाने का शुक्रिया।"

दरवाजे के पास पहुंचकर मोना चौधरी ठिठकी और देवराज चौहान को देखा। चेहरे पर गंभीरता के भाव थे।

"मैं अभी तुम्हारे इस सच को समझने की चेष्टा कर रही हूं।" कहने के साथ ही दरवाजा खोलकर मोना चौधरी बाहर निकल गई।

पास खड़े जगमोहन ने दरवाजा बंद कर दिया।

"मोना चौधरी को कमरे में आया पाकर, मैं तो घबरा ही उठा था।" हरीश खुदे ने एक गहरी सांस लेकर कहा।

"ये हमारे लिए परेशानी खड़ी करेगी?" जगमोहन ने पूछा।

"नहीं।" देवराज ने इंकार में सिर हिला दिया—"ऐसा कुछ होता तो हमारे पास आकर सीधी बात न करती। इस बात को लेकर वो जरूर उलझन में थी कि हम कोल्हापुर क्यों आए हैं। अब उसे जवाब मिल गया।"

"मोना चौधरी हम पर नज़र रखेगी, क्या ऐसे में हम काम कर पाएंगे [illegible]"

"वो बच्ची नहीं है, वह हमारे रास्ते में परेशानी खड़ी नहीं करेगी।"

"उसे कठपुतली वाली बात पर यकीन है तो वो हमारे साथ डोगरा को खत्म करे। डोगरा ने हमें कठपुतली देकर उससे भी तो दुश्मनी ली है।"

"प्रत्यक्ष रूप में डोगरा ने हमसे पंगा लिया है और ना कि मोना चौधरी या फिर देवेन साठी से।" देवराज चौहान ने गंभीर स्वर में कहा—"इन दोनों के पास ऐसा कोई ठोस प्रमाण नहीं है कि हमारे द्वारा डोगरा ने इसकी जान लेनी चाही, या हमने डोगरा के इशारे पर पूरबनाथ साठी को मारा। कठपुतली को हम ही महसूस कर सकते हैं। फिर डोगरा ने फोन पर कठपुतली नाम के नशे के बारे में माना था कि उसने उसका इस्तेमाल मुझ पर किया और हमें गुलाम बनाकर पूरबनाथ साठी और मोना चौधरी के पीछे डाल दिया। मेरा मतलब है कि कठपुतली पर पूरी तरह यकीन करना आसान नहीं मोना चौधरी और देवेन साठी के लिए।" ये सब जानने के लिए पढ़े अनिल मोहन का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'सबसे बड़ा गुण्डा'**—"मोना चौधरी ने कठपुतली की वजह से ही अपने कदम पीछे खींच लिए। वरना वो हमें मारे बिना नहीं मानती, या झगड़े में खुद मर जाती। परंतु अभी भी उसे हमारी बात पर शक है।"

"तभी तो वह हम पर नज़र रखे हुए है।" जगमोहन गंभीर था।

"हां, वो उलझन में है और वो हम पर नज़र रखे हुए है। नगीना ने मुझे बताया था कि किसने कठपुतली नाम की नशीली दवाई बनाई थी यानी कि अबदुल्ला। पारसनाथ अबदुल्ला के पास गया था। अपने तौर पर उसने अबदुल्ला से बात की। सच उसके मुंह से निकलवाया और फिर इस बारे में मोना चौधरी को बताया।"

"मतलब कि मोना चौधरी अभी भी विश्वास-अविश्वास के घेरे में है।" जगमोहन ने सिर हिलाया।

"हां, कठपुतली को लेकर वो उलझन में है।"

तभी हरीश खुदे कह उठा।

"मुझे बिल्ले की याद आ गई। उसने हमें कैसी मुसीबत में डाल दिया। साला नम्बरी हरामजादा था। अच्छा हुआ मर गया। तुम्हारी पत्नी ने वक्त पर पहुंचकर हमें बचा लिया, नहीं तो तब पता नहीं क्या हो जाता? कुत्ता-कमीना हर वक्त टुन्नी के बारे में ही सोचता रहता था। ज़रा भी शर्म नहीं थी उसे कि टुन्नी मेरी पत्नी है।"

"अब तो उससे छुटकारा मिल गया।" जगमोहन बोला—"उसे रुस्तम, बांके ने उसके किए की सजा दे दी।"

''अच्छा हुआ मर गया। कलंक था वो हरामी।''

''चलो अब।'' देवराज चौहान बोला—''स्टार नाइट क्लब हो आएं।''

तीनों बाहर निकले और लॉक लगाकर आगे बढ़ गए।

''साठी के आदमी जरूर हमारे पीछे आएंगे।'' जगमोहन चलते-चलते कह उठा।

''उसकी परवाह मत करो। उनके बारे में सोचो भी मत। अपने काम की तरफ ध्यान दो।'' देवराज चौहान बोला।

रिसैप्शन पर उन्होंने चाबी दी और होटल के बाहर निकल आए। कुछ दूर उन्हें स्टार नाइट क्लब की बिल्डिंग दिखाई दे रही थी। वो पैदल ही उस तरफ चल पड़े। तभी हरीश खुदे का मोबाइल बज उठा।

''हैलो!'' उसने बात की फोन पर।

''कैसे हो?'' टुन्नी की प्यारी सी आवाज कानों में पड़ी।

''तुम?'' खुदे ने गहरी सांस ली।

''क्या हुआ? गलत वक्त तो फोन नहीं कर दिया?''

''नहीं-नहीं, अभी मेरे पास दस मिनट हैं बात करने को।'' खुदे ने जल्दी से कहा।

''तो अब तुम्हारी ये हालत हो गई है कि मुझसे बात करने के लिए भी वक्त नहीं।'' टुन्नी के स्वर में शिकायत के भाव आ गए।

''बस थोड़े से वक्त की बात है। देवराज चौहान के साथ डकैती करने के बाद हमेशा तेरे पास ही रहूंगा। तब हमारे पास इतना पैसा होगा कि जिंदगी भर हम ऐश करेंगे।'' कहते हुए खुदे मुस्करा पड़ा था।

चलते-चलते जगमोहन ने उसे देखा, कहा कुछ नहीं।

''मुझे सपने दिखा रहे हो?''

''तेरी कसम टुन्नी।'' सच कह रहा हूं।''

''मेरे पास कब आओगे?''

''महीना भर लग ही जाएगा। नोट लेकर आऊंगा तेरे पास। करोड़ों रुपया, तू और मैं।''

''कभी-कभी तो मैं सोचती हूं कि तू तब ही ठीक था, तब साठी के लिए काम करता था। घर पर तो आ जाता था, एक-दो दिन बाद। अब तो जब से देवराज चौहान और जगमोहन तुझे उठाकर ले गए हैं, तब से तेरी सूरत देखनी नसीब नहीं हुई।''

''तू ही तो कहा करती थी कि मैं घर में क्यों बैठा रहता हूं?''

''पर मेरा ये मतलब तो नहीं था कि तू लंबे वक्त के लिए घर से ही गायब हो जाए।''

''तू सब जानती है कि मैं किन कामों में पड़ा हुआ हूं? मुझे

देवराज और जगमोहन की फिक्र नहीं है, उन्हें तो मैं अभी छोड़कर आ जाऊं, मुझे तो उस डकैती कि फिक्र है, जिसका वादा देवराज चौहान ने किया है कि ये काम निपटकार, वो डकैती में मुझे साथ लेगा और मुझे इतना पैसा दे देगा कि सारी जिंदगी मजे से खाता रहूं।" खुदे ने कहा।

"मैं क्या कहूं, मुझे तो तेरी जरूरत है।"

"और मुझे तेरी भी और पैसे की भी।" खुदे मुस्कराकर बोला—"मैं हमेशा सोचा करता था कि बड़ा हाथ मारूं। अब देवराज चौहान जैसे डकैती मास्टर के साथ काम करने का मौका मिल रहा है, तो इस मौके को नहीं छोडूंगा।"

"अगर अपना काम निकालकर देवराज चौहान ने डकैती के लिए मना कर दिया तो?"

"वो ऐसा नहीं करेगा, ऐसा नहीं करेगा वो।"

"भरोसा है उस पर?"

"बहुत। वो बढ़िया आदमी है, ऐसे लोग मैंने कम ही देखे हैं।" खुदे ने गहरी सांस ली।

"तेरी बातें तू ही जाने, अच्छा ये बता बिल्ला सच में ही मर गया है?"

"बिल्ले का नाम भी अपने होठों पर मत लाना।" खुदे ने तीखे स्वर में कहा—"कमीना तेरे पीछे हाथ धोकर पड़ा था। वो धोखेबाज था। कमीना था, नहीं मरता तो मैंने उस हरामी का गला काट देना था। उसने बहुत बड़ी मुसीबत में फंसा दिया था हम तीनों को। उस जैसा घटिया इंसान मैंने कभी नहीं देखा था। साठी और मोना चौधरी को हमारे ठिकाने की खबर एक-एक करोड़ में बेच दी और हम घिर गए। किस्मत अच्छी थी जो बच निकले, कुत्ता कहीं का। अब बंद करता हूं, फिर बात करेंगे टुन्नी।"

"तुम भी फोन कर लिया करो।"

"हां-हां, मैं कल फोन करूंगा। अपनी प्यारी टुन्नी को तो मैं हमेशा अपने दिल में रखता हूं।"

"सच।"

"तेरी कसम टुन्नी, तू कभी-भी मेरे दिल से दूर नहीं हुई है। कल फोन करूंगा। बाय टुन्नी।" कहकर खुदे ने फोन बंद कर दिया।

वे तीनों स्टार नाइट क्लब के मेन गेट तक आ पहुंचे थे।

□□□

□□□

स्टार नाइट क्लब एक शानदार जगह थी।

भीतर प्रवेश करने के बाद वो तीनों बिखर गए और अपने-अपने

तौर पर वहां की जानकारी इकट्ठी करने लगे। चूँकि अभी शाम के आठ बजने वाले थे। क्लब के हिसाब से वक्त ज्यादा ना हुआ था, ऐसे में अभी ज्यादा लोग नहीं थे वहां।

भीतर प्रवेश करने पर सामने लाऊंज था, जहां कीमती गद्देदार सोफे पड़े थे। वातावरण में ए.सी. की ठण्डक थी और तीव्र रोशनियों से वो जगह चमक रही थी। फर्श पर गद्देदार कालीन बिछा था। सोफों पर यहां-वहां लोग बैठे थे जो कि शायद अपने साथियों के इंतजार में थे। एक तरफ काफी लंबा रिसैप्शन डैस्क था, जिसके पीछे दो खूबसूरत युवतियां मौजूद थीं। वहां तीन लोग खड़े हुए थे। उनसे अपने काम की जानकारी ले रहे थे। लाऊंज से निकलते लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे। दिल लुभाने वाला नजारा था।

वहां से एक रास्ता सीधे आगे आठ फीट चौड़ी गैलरी आगे जाकर एक शानदार बाररूम में निकलती थी। बाररूम देखते ही बनता था। वहां की हर चीज को कलर फुल रखने की कोशिश की गई थी। विशाल, लंबा बार काउंटर कई रंगों में बना हुआ था। उसका डिज़ाइन तैयार करने में काफी मेहनत की गई लगती थी। काउंटर के पीछे खूबसूरत रैकों में बोतलों के लिए शानदार स्टैण्ड बने थे। काउंटर के पीछे चार बारमैन मौजूद थे। इसके अलावा क्लब की यूनिफार्म में वेटर इधर-उधर आते-जाते दिख रहे थे। वहां पर इस वक्त भी तीस से चालीस लोग मौजूद थे। जबकि चार सौ लोगों के बैठने का इंतजाम था। बाररूम की रोशनियां मध्यम थी। टेबल-कुर्सियां कई रंगों में मौजूद थीं। फर्श पर कालीन न होकर खास तरह की टाईलें थीं जो कि बहुत अच्छी लग रही थी। अभी क्लब की शाम जवान होने में वक्त बाकी था। महफिल धीरे-धीरे लगनी थी, जमनी थी। दो बॉर मैनेजर इधर उधर टहलते दिखाई दे रहे थे। जो कि हर तरफ नज़र रखे हुए थे और जहां वे जरूरत समझते उस तरफ फौरन वेटर को भेज देते।

हम वापस लाऊंज में पहुंचते हैं। जहां से एक रास्ता नाइट क्लब के कक्ष की तरफ जा रहा था। वो भी चमकती रोशनियों से भरी आठ फीट चौड़ी गैलरी थी। जिसकी छत पर रंग-बिरंगी रोशनियां नीचे चमक फैंक रही थी। फर्श पर मोटा कालीन था कि उस पर पांव रखते-रखते ही जैसे उनके नीचे धंस जाने का एहसास होता। पंद्रह फीट लंबी गैलरी के किनारे पर शीशे का डिज़ाइन वाला दरवाजा लगा था और होटल का एक कर्मचारी खड़ा आने वालों को स्वागत से भरी मुस्कान देता और दरवाजा खोल देता।

दरवाजे के पास एक लंबा और चौड़ा हॉल था। जहां पर मध्यम सी रोशनी फैली हुई थी। सिलसिलेवार गोल और चौड़ी टेबलें लगी

हुई थीं। बहुत ही अच्छे ढंग से टेबलों को सजाया गया था। और वहां करीब तीन सौ लोगों के बैठने का इंतजाम था।

लाऊंज से ही एक रास्ता अन्य हाल में जा खुलता था। यहां डी-जे था। डांस करने के लिए फ्लोर था। बैठने के लिए कुर्सियां और टेबलें लगी हुई थीं। माईक भी मौजूद था अगर कोई गाना गाना चाहे। एक तरफ वीडियो गेम्स की मशीनें लगी थीं। जिनकी आवाजें रह-रहकर वातावरण में गूंज रही थी। यहां पर आने वाले को पारिवारिक माहौल मिलता। बच्चे वीडियो गेम्स खेलते। फलोर पर डांस करते। गाना गाते। इस हाल में अक्सर महिलाओं और बच्चों का मेला ज्यादा लगा रहता था। अगर कोई इस हाल में खाना खाना चाहे तो या पीना चाहे तो उन्हें सामान यहां पर भी सर्व कर दिया जाता था।

लाऊंज से ही चौथा और अंतिम रास्ता इसी तरह एक गैलरी में ही जाता था, जिसके बाहर मोटे-मोटे शब्दों में प्राइवेट लिखा था। यहां पर नाइट में क्लब की देखभाल करने वाले कर्मचारियों के ऑफिस थे जैसे कि नाइट क्लब का मैनेजर देशमुख वागले। क्लब के छः असिस्टेंट मैनेजर। एकाउंट डिपार्टमेंट के लोग। तब अन्य काम करने वाले कर्मचारी, गैलरी पार करते ही सब से पहले मैनेजर देशमुख वागरे का आफिस था, जो कि पचास बरस का एक सेहतमंद व्यक्ति था। उसे क्लब में टहलते कम ही देखा जाता था। अधिकतर तो वो अपने ऑफिस में ही मौजूद रहता था। और सी.सी. टी.वी. कैमरे द्वारा स्क्रीन पर क्लब का हाल-चाल देखता रहता।

देशमुख वागरे इस वक्त भी अपने ऑफिस में मौजूद था। और टेबल पर रखी दो फाइलों को देखने में व्यस्त था। फिर एकाएक फाइलें वहीं छोड़कर उठा और आफिस का दरवाजा बंद करने के पश्चात् दीवार में लगी लकड़ी की अलमारी की तरफ बढ़ गया। अलमारी को खोला तो सागने शैल्फों में फाइलों को लगे पाया। उसने हाथ बढ़ाकर फाइलों की शैल्फों को दाईं तरफ धकेला तो वो एक तरफ सरक गईं और सामने नीचे जाने की सीढ़ियां नज़र आईं। वहां मध्यम सी पर्याप्त रोशनी थी।

देशमुख वागरे आगे बढ़ा और सीढ़ियां उतरकर एक छांटे से हाल में जा पहुंचा। वहां का नजारा देखते ही बनता था। उस जगह पर करीब बीस टेबलें मौजूद थीं। हर टेबल के पीछे छः कुर्सियां मौजूद थीं। होटल की यूनिफार्म में करीब दस आदमी वहां मौजूद थे। एक कोने में छोटा-सा बार बना हुआ था। इस वक्त चार टेबलों पर बैठे लोग ताश खेलने में व्यस्त थे। उनकी टेबलों पर रंग-बिरंगे टोकनों का ढेर लगा हुआ था। वहां व्हिस्की के गिलास भी मौजूद थे। यहां शौकिनों को जुआ खिलाया जाता था। परंतु ये बात हर किसी को

मालूम नहीं थी। क्लब के खास मैम्बरों को ही पता थी। या पुलिस को पता थी जिसके पास देशमुख वागरे ठीक वक्त पर हफ्ता पहुंचा देता था। देशमुख ने सब काम ठीक से संभाल रखे थे। विलास डोगरा को उससे कोई शिकायत नहीं थी।

देवराज चौहान, जगमोहन और हरीश खुदे क्लब में रात साढ़े ग्यारह बजे तक रहे। पूरा क्लब उन्होंने देख लिया कि कौन-सा रास्ता किधर को जाता है। अपने काम की हर जानकारी हासिल की। ग्यारह बजे वे क्लब के रेस्टोरेंट में मिले। और एक साथ उन्होंने वहां खाना खाया। खाना बढ़िया था। उसके बाद वे बाहर निकले और होटल की तरफ पैदल ही चल पड़े।

"मेरे ख्याल में देशमुख वागरे डोगरा से अपने ऑफिस में मिलेगा।" जगमोहन बोला—"वो आसानी से हमारे हाथ लग जाएगा।"

"वो डोगरा से पहले मंजिल पर भी मिल सकता है।" देवराज चौहान ने कहा—"पहली मंजिल पर बारह कमरे बने हुए हैं। हो सकता है कि डोगरा ने रात वहीं पर ही बिताने की सोच रखी हो।"

"पहली मंजिल पर क्या होता है?"

"कुछ नहीं, वहां सजे-सजाए कमरे हैं। कहीं बैड है तो कहीं कुर्सियां, टेबल। वहां के एक हिस्से में एकाउंट्स डिपार्टमेंट काम करता है और एक कमरा ऐसा है जहां क्लब का कैश रखा जाता है। वो स्ट्रांग रूम जैसा कमरा है।"

"फिर तो देशमुख डोगरा के साथ वहीं मिलेगा? शायद डोगरा रात को भी वहीं रहे।" जगमोहन बोला।

"क्लब इतना बड़ा नहीं है कि डोगरा के आने पर हम उस तक ना पहुंच सकें।" देवराज चौहान का स्वर कठोर हो गया।

"हम उसे पकड़ लेंगे।" जगमोहन गुर्रा उठा—बचेगा नहीं वो।"

"कल हम क्लब में हर तरफ नज़र रखेंगे।"

"ये संभव नहीं।" हरीश खुदे कह उठा।

"क्यों?" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"क्लब में प्रवेश करने के तीन रास्ते हैं। मुख्य दरवाजा तो वही है, जहां से हम निकले हैं। और जहां से हमने प्रवेश किया था। परंतु क्लब के पीछे की ओर दाएं और बाएं कोने में भी प्रवेश का एक-एक रास्ता है। उन दोनों रास्तों में करीब डेढ़ सौ फीट का फर्क है। मतलब कि एक आदमी उन दोनों रास्तों पर नज़र नहीं रख सकता। मान लो कि सामने के दरवाजे पर मैं मौजूद रहता हूं तो पीछे के दरवाजे पर भी दो लोग हमें चाहिएं। जो नज़र रख सकें। क्या पता डोगरा किस

दरवाजे से भीतर प्रवेश करता है। ऐसे में सोचना ये है कि कल शाम को कैसे काम होगा। तुम दोनों क्लब के भीतर रहोगे या बाहरी दरवाजों पर नज़र रखोगे?'' हरीश खुदे ने सोचभरे स्वर में कहा।

''हम दोनों तो भीतर होंगे।'' जगमोहन बोला।

''फिर बाहर के बाकी दो रास्तों पर कौन होगा, क्या पता डोगरा कौन-से रास्ते से भीतर प्रवेश करता है। जब तक हमारे पास डोगरा के आने की खबर नहीं होगी, तब तक हम क्या कर सकते हैं? ये काम ऐसा भी नहीं कि हम किसी को भी पकड़ कर वहां की निगरानी पर लगा दें। हमें ऐसे लोग चाहिएं जो डोगरा को पहचानते हों और सारा काम खामोशी से कर सकें।''

''तुम तो बहुत समझदार हो खुदे।'' जगमोहन कह उठा।

''मुझे समझदारी दिखाने का तुम लोगों ने मौका ही कहां दिया है।'' खुदे ने गहरी सांस ली।

''ये बात सोचने लायक है कि क्लब में प्रवेश करने वाले रास्तों पर नज़र कौन रखेगा?'' देवराज चौहान बोला।

''वैसे पीछे के दरवाजे लोगों के लिए नहीं हैं, होटल के कर्मचारियों के लिए है।'' खुदे बोला—''लेकिन वहां से कोई भी क्लब में आ जा सकता है।''

''इसके लिए कुछ तो रास्ता निकालना होगा।'' जगमोहन ने कहा।

तभी खुदे ने पलटकर पीछे देखा। चलता रहा।

पीछे कुछ लोग थे जो फांसला रखकर चले आ रहे थे। खुदे ने उन्हें पहचाना कि आगे मोना चौधरी, पारसनाथ और महाजन थे। उनसे कुछ पीछे चार लोग थे, परंतु अंधेरे में वो पहचान में नहीं आए। खुदे ने मुंह घुमा लिया।

''पीछे मोना चौधरी आ रही है।''

''मोना चौधरी?'' जगमोहन ने पलभर के लिए पीछे देखा—''हम मोना चौधरी से बात कर सकते हैं कि वो कल...।''

''वो हमारा साथ नहीं देगी।'' देवराज चौहान कह उठा।

''क्लब में प्रवेश करने वाले रास्तों पर नज़र ही तो रखनी है।'' जगमोहन बोला।

''वो हमारा साथ नहीं देगी। हमने उसकी जान लेने की कोशिश की थी।''

''अब वो जान चुकी है उसमें हमारी कोई गलती नहीं थी। मैं उससे बात करता हूं।''

''कोई फायदा नहीं होगा।''

जगमोहन ठिठक गया।

देवराज चौहान और खुदे आगे बढ़ते गए।

मोना चौधरी, महाजन और पारसनाथ उसके पास पहुंचे। वे उसे देखकर रुकने लगे तो जगमोहन बोला।

"चलते-चलते बात करते हैं।" कहने के साथ ही जगमोहन उनके साथ चल पड़ा।

"क्या बात है?" महाजन बोला।

"डोगरा कल अपने स्टार नाइट क्लब में पहुंचेगा। हमने उस पर हाथ डालना है।" जगमोहन ने कहा।

"डालो, हमें क्या?" महाजन का स्वर शांत था।

"क्लब में प्रवेश करने के तीन रास्ते हैं। हमने क्लब के भीतर भी नज़र रखनी है। ऐसे में हमें उन रास्तों पर नज़र रखने के लिए ऐसे लोगों की जरूरत है जो डोगरा को पहचानते हों और उसके आते ही हमें खबर कर दें।"

"तुम्हारा मतलब है कि ये काम हम करें।" महाजन कह उठा।

"मामूली काम है। थोड़ी देर की बात है।"

"बेबी की हां के बिना मैं तुम्हारा काम नहीं कर सकता।" महाजन ने स्पष्ट कहा।

जगमोहन ने चलते-चलते अंधेरे में मोना चौधरी को देखा।

"हमें तुम्हारे से थोड़ी-सी सहायता की जरूरत है मोना चौधरी।" जगमोहन बोला।

"मुझसे कोई आशा मत रखो।"

"ऐसी क्या नाराजगी कि...?"

"तुमने और देवराज चौहान ने मेरी जान लेने की कोशिश की थी।" मोना चौधरी का स्वर सख्त हो गया।

"की होगी। परंतु हमें तो वो वक्त भी याद नहीं। हम अपने होश में कहां थे। कठपुतली नाम के नशे ने हमारे होश छीन रखे थे। मुझे तो वो वक्त भी याद नहीं कि तुम कब की बात कर रही हो। हमारे लिए तो सब सुनी-सुनाई बातें हैं।"

"पर मैंने उस वक्त तो भुगता है।"

"तुम्हें अपने मन से मैल निकाल देनी...।"

"तुम्हारे और देवराज चौहान के लिए अभी इतना ही काफी है कि मैं तुम लोगों के पीछे से हट गई हूं।" मोना चौधरी ने सख्त स्वर में कहा—"अगर मैं पीछे ना हटती तो तुम लोग इस वक्त भी भागे फिर रहे होते और जो कर रहे हो, वो कभी ना कर पाते। ऐसे में तुमने कैसे सोच लिया कि मैं तुम्हारी सहायता करूंगी?"

"मैंने तो सोचा था कि मामूली सा काम है। तुम्हें एतराज नहीं।"

"काम बेशक बड़ा भी होता, मुझे कोई एतराज नहीं था, परंतु अभी भी मुझे पूरी तरह भरोसा नहीं है कि तुम लोगों ने सच में कठपुतली के असर में मेरी जान लेनी चाही। मैं अभी उलझन में ही हूं तभी तो तुम लोगों पर नज़र रख रही हूं।"

"ये तो तुम हमसे ज्यादती वाली बात कर रही हो।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"लेकिन मुझे इन पर पूरा भरोसा है मोना चौधरी कि तब ये अपने होश में नहीं थे। कठपुतली नाम का नशा ही इन्हें नचा रहा था।" पारसनाथ गंभीर स्वर में कह उठा—"मैंने अबदुल्ला से पूछताछ की थी और सारी बातें सामने आईं। विलास डोगरा के पीछे पड़कर ये ठीक रास्ता अपना रहे हैं। डोगरा इनका ही नहीं, तुम्हारा भी दुश्मन है। डोगरा ने इनके हाथों तुम्हें खत्म करवाने की चेष्टा की थी, अबदुल्ला से तुमने बात की होती तो ये बातें तुम्हें ज्यादा बेहतर ढंग से पता होती।"

"डोगरा ने सीधे-सीधे मुझे कुछ नहीं कहा।" मोना चौधरी बोली।

"सीधे ना सही, देवराज चौहान और जगमोहन को कठपुतली नाम के नशे का सेवन करा कर, तुम्हारी हत्या के लिए भेज दिया। ये भी तो एक तरह से डोगरा का तुम पर हमला हुआ।" पारसनाथ बोला।

"अभी मैं इस बात पर पूरी तरह विश्वास नहीं कर पाई।" मोना चौधरी ने कहा।

"लेकिन मुझे भरोसा है। मैं इस काम में इनका साथ देना चाहता हूं।" पारसनाथ गम्भीर था।

"मुझे एतराज नहीं, अगर तुम ऐसा करना चाहो।" मोना चौधरी कह उठी।

"जगमोहन।" पारसनाथ ने कहा—"मैं तुम लोगों का साथ दूंगा।"

"शुक्रिया!" जगमोहन के होठों से निकला।

"हम तुम्हारे ही होटल में सोलह नम्बर कमरे में हैं, जब भी मेरी जरूरत हो बुला लेना।"

"कल बैठकर प्रोग्राम बनाएंगे।" जगमोहन बोला फिर महाजन से कहा—"तुम भी मेरा साथ दे रहे... ।"

"जब तक बेबी नहीं कहती, तब तक मैं तुम्हारा कोई काम नहीं करूंगा।" महाजन बोला।

जगमोहन ने मोना चौधरी को देखा।

खामोशी सी आगे बढ़ती मोना चौधरी ने उसकी तरफ नहीं देखा।

"ठीक है पारसनाथ। कल मिलते हैं।" कहने के साथ जगमोहन तेज-तेज कदमों से देवराज चौहान की तरफ बढ़ गया।

जगमोहन देवराज चौहान के पास पहुंचा कि देवराज चौहान का फोन बजा।

देवराज चौहान ने बात की। दूसरी तरफ नगीना थी।

"आप कोल्हापुर पहुंच गए?" नगीना ने उधर से पूछा।

"हां। हमने स्टारनाइट क्लब का मुआयना किया है। अब वापस लौट रहे हैं। वहां की क्या खबर है?"

"डोगरा के बारे में कोई हवा नहीं है।"

"साठी का परिवार?"

"वो वैसे ही है। सोहनलाल और रुस्तम राव वहां हैं।" उधर से नगीना कह रही थी—"साठी से दोपहर में ही बात हो गई थी वो मेरे साथ चलने को मान गया है। मेरे साथ बांके और सरवत सिंह हैं। अगले दो घंटे तक हम, देवेन साठी के साथ उसकी ही गाड़ी में कोल्हापुर के लिए रवाना होंगे। सुबह नौ-दस बजे वहां पहुंचेंगे।"

देवराज चौहान ने अपने होटल के बारे में बताकर कहा।

"सीधे यहीं आना।"

"हम पहुंच जाएंगे। कल अगर डोगरा वहां ना पहुंचा तो?"

"मेरे पास पक्की खबर है। फिर भी ना पहुंचा तो कोई दूसरा रास्ता देखेंगे।" देवराज चौहान बोला।

"साठी पूरी कोशिश कर रहा है कि अपने परिवार को ढूंढ ले।"

"उसे कोशिश करने दो। तुम लोग कोल्हापुर पहुंचो। मोना चौधरी भी मेरे होटल में मौजूद है। वो मुझ पर नज़र रख रही है। उसे अभी तक पूरा भरोसा नहीं कि मैंने सच में कठपुतली के नशे में उसे मारना चाहा था और ये सब डोगरा का खेल था।"

"वो आपके रास्ते की रुकावट तो नहीं बन रही है?"

"नहीं। वो चुप है और देख रही है।"

बातचीत खत्म हो गई। देवराज चौहान ने फोन बंद करके जेब में रखा।

"मोना चौधरी हमारा साथ देने को तैयार नहीं, पर पारसनाथ हमारा साथ देने को तैयार है।" जगमोहन बोला।

"मोना चौधरी ने पारसनाथ को रोका नहीं?" खुदे बोला।

"नहीं। वो बोली पारसनाथ अगर सहायता करता है तो उसे एतराज नहीं।"

"हम साठी के उन आदमियों की सहायता नहीं कर सकते, जो हमारे पीछे... ।" खुदे ने कहना चाहा।

"नहीं खुदे।" देवराज चौहान बोला—"वो नासमझ लोग हमारा खेल विगाड़ सकते हैं।"

खुदे सिर हिलाकर रह गया।

"क्लब में हमें ऐसे कई लोग नहीं दिखे जो वहां नज़र रखने को तैनात हों।" जगमोहन ने कहा—"ऐसे में हमें वहां पर काम करने में परेशानी नहीं आएगी। डोगरा दिख गया तो हम आसानी से उसे संभाल लेंगे।"

"कल कुछ इंतजाम हो सकता है वहां। विलास डोगरा ने कल आना है।" देवराज चौहान बोला।

□□□

□□□

अगले दिन।

शाम पांच बजे।

पुरानी सी क्वालिस गाड़ी कोल्हापुर के एक होटल के बाहर रुकी। क्वालिस की हालत बाहर से बेहतर नहीं लग रही थी। जगह-जगह डैंट ठीक होने के निशान पड़े थे। उसे दया चला रहा था। विलास डोगरा और रीटा पीछे बैठे थे।

विलास डोगरा ने नम्बर मिलाया और फोन कान से लगा लिया। बेल गई फिर बेहद शांत एक मर्दाना आवाज कानों में पड़ी।

"हुक्म डोगरा साहब।"

"कहां हो टूडे?" विलास डोगरा की नज़रें क्वालिस के बाहर फिर रही थीं।

"आपकी गाड़ी से सौ गज पीछे, रुका हूं, आप क्यों रुक गए?" रमेश टूडे की आवाज कानों में पड़ी।

"अभी वक्त है मेरे पास। मैं होटल जाकर कुछ आराम करूंगा। फिर नहा-धोकर आठ बजे क्लब पहुंचूंगा। शायद होटल में मुझे कोई ना पहचाने। पहचान भी ले तो कोई फर्क नहीं पड़ता।" विलास डोगरा ने कहा—"तू क्लब जा और हर तरफ देख, रास्ता ठीक है। देवराज चौहान का कोई निशान तो नहीं वहां?"

"समझ गया। तो आपको अकेला छोड़ दूं?" रमेश टूडे ने उधर से कहा।

"मेरे ख्याल में यहां सब ठीक है।"

"ठीक है। मैं क्लब जाता हूं।"

"जा। मैं आठ बजे आ जाऊंगा।" कहकर डोगरा ने फोन बंद किया।

दया स्टेयरिंग सीट पर बैठा था।

"तेरे को लगता है दया कि कोई हमारे पीछे है?" डोगरा ने पूछा।

"कोई भी पीछे नहीं है।" दया ने बिना पीछे देखे कहा।

"तो होटल में ले चल गाड़ी को।"

दया ने क्वालिस को आगे बढ़ा दिया।

"हमें कोई नहीं पहचान सकता रीटा डार्लिंग। क्योंकि हम ऐसी गाड़ी में हैं, कि कोई सोच भी नहीं सकता।"

"वो तो ठीक है डोगरा साहब। पर इस होटल में रहने की क्या जरूरत है? क्लब के ऊपर रहने को बढ़िया जगह... ।"

"अभी हम वहां नहीं जा सकते। टूडे लाइन क्लीयर बोलेगा तो उधर जाएंगे। टूडे उधर सारे इंतजाम कर देगा।"

"इस बार तो आप बहुत सावधानी इस्तेमाल कर रहे हैं।"

"देवराज चौहान के कारण।"

"उसे क्या पता होगा कि हम कोल्हापुर आ पहुंचे हैं।"

"प्रकाश दुलेरा को मत भूलो, जो देवराज चौहान के हाथों मारा गया। क्या पता उसने दुलेरा का मुंह खुलवा लिया हो। वैसे दुलेरा मुंह खोलने वाला नहीं, पर क्या भरोसा। सतर्कता बरतनी जरूरी है।" डोगरा ने कहा।

"आप तो देवराज चौहान से ज्यादा डर रहे हैं।"

"इसे डरना नहीं कहते रीटा डार्लिंग ये तो खेल होता है।" विलास डोगरा ने मुस्कराकर कहा—"मौत का खेल। और इस खेल में जो जरा भी लापरवाह हुआ, समझो वह मर गया। वैसे देवराज चौहान की मुझे जरा भी परवाह नहीं है। बहुत जल्द साठी अपना धैर्य खो देगा और वह अपने परिवार की परवाह न करते हुए उसे और जगमोहन को मार देगा।"

क्वालिस होटल के प्रवेश द्वार के सामने पहुंचकर रुक गई।

विलास डोगरा और रीटा बाहर निकले तो क्वालिस पार्किंग की तरफ बढ़ गई।

रीटा डोगरा की बांह में बांहें डालते हुए कह उठी।

"अच्छा होता अगर आप ही देवराज चौहान को निपट लेते।"

"हम जब वापस मुम्बई पहुंचेंगे तो देवराज चौहान का नाम खत्म हो चुका होगा।"

"वो बेचारा तो साठी को यह समझाने की कोशिश कर रहा होगा कि इस मामले के पीछे आप हैं।"

दोनों होटल के भीतर की तरफ को बढ़ गए।

"इस बात को कोई नहीं मानेगा। पूरबनाथ साठी को देवराज चौहान ने गोली मारी थी। गवाह है इस बात का। साठी मेरे बारे में कभी भी नहीं सोचेगा कि मैं इस मामले में हो सकता हूं।" विलास डोगरा मुस्कराया।

"आप भी तो कमाल की चाल सोचते हैं डोगरा साहब।" रीटा मुस्करा पड़ी।

"तू मेरे साथ रहती है रीटा डार्लिंग। मुझे एनर्जी मिलती है! मैं एकदम बढ़िया बातें सोच लेता हूं। रीटा डार्लिंग, अगर तुम ना होती तो मेरा जाने क्या होता? तुमने ही तो मुझे संभाल रखा है।"

"आपका भी जवाब नहीं।" रीटा हंसी—"मैं तो खुद आपके भरोसे हूं।"

"ये तो मेरा दिल ही जानता है कि तुम मेरे लिए क्या हो?" कहते हुए डोगरा रिसैप्शन की तरफ बढ़ते हुए रुका और जेब से मोबाइल निकालकर नम्बर मिलाया और फोन कान से लगा लिया।

दूसरी तरफ बेल बजते ही देशमुख वागरे की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो।"

"देशमुख।" डोगरा शांत स्वर में बोला।

"ओह डोगरा साहब, कोल्हापुर आ गए आप?"

"वाघमरे को बोल देना कि मैं आ गया हूं। और उसी प्रोग्राम के अनुसार शाम को तुम्हारे पास होऊंगा।" कहने के साथ ही विलास डोगरा ने फोन बंद कर दिया और वह रीटा के साथ रिसैप्शन जा पहुंचा।

❑❑❑

❑❑❑

देवेन साठी की आंख खुली तो शाम के पांच बज रहे थे। सामने बांकेलाल राठौर को बैठे देखा। वो सुबह ग्यारह बजे कोल्हापुर आ पहुंचे थे। रात जागते बीती थी। इसलिए आते ही साठी सो गया था। उसके साथ तीन आदमी अपने थे। जो कि दूसरे कमरे में ठहरे थे। नगीना और सरबत सिंह अन्य कमरे में थे। ये होटल देवराज चौहान वाला ही था।

"तुम मेरी निगरानी कर रहे हो?" देवेन साठी ने शांत स्वर में कहा।

"म्हारे को जगहों न मिललो हो तो मनने सोचा थारे कमरे में ही टिका जावे।" बांकेलाल राठौर मुस्कराया।

साठी उठा और बाथरूम में चला गया।

हाथ-मुंह धोकर वापस आया तो नगीना को वहां पाया।

"मैं तुम्हें नींद से जगाने ही आई थी साठी।" नगीना कह उठी।
"चलना कब है?" साठी ने पूछा।
"हम साढ़े सात बजे गाड़ी में यहां से चलेंगे। डोगरा का क्लब पास में ही है, जहां वो आएगा।"
"उसके वहां पहुंचने की खबर पक्की है?"
"खबर है, पक्की है कि नहीं, ये वहां चलकर ही पता लगेगा।" नगीना बोली।
"मैं तुम्हारे साथ इस तरह यहां-वहां नहीं भटक सकता।" साठी का स्वर सख्त हो गया था।
"अपने परिवार को सलामत रखने के लिए तुम्हें ऐसा करना ही होगा।"
देवेन साठी के होंठ भिंच गए।
नगीना गंभीर दिखी।
"तुम देवराज चौहान, जगमोहन और खुदे की जान के पीछे हो और हमने ये सच्चाई तुम्हारे सामने लानी है कि ये सब डोगरा ने धोखे से करवाया था। तुम इस बात पर तब ही यकीन करोगे जब डोगरा तुम्हारे सामने ही ये बात कबूल करेगा। इसी बात की कोशिश में हैं हम परंतु अभी पता नहीं आगे क्या होता है। ये भी तो हो सकता है कि विलास डोगरा की और तुम्हारी मुलाकात का इंतजाम न हो सके और डोगरा पहले ही मारा जाए।"
साठी कुछ नहीं बोला।
"तुम्हें हमारे साथ सहयोग करना चाहिए। तुम्हारे भाई का असल हत्यारा डोगरा ही है।"
"तुम्हारी इस बकवास पर मैं भरोसा नहीं करने...।"
"जब डोगरा तुम्हारे सामने कहेगा तो तुम भरोसा करोगे।"
"देवराज चौहान ने मेरे भाई को गोली मारी थी तो डोगरा कैसे...?"
"ये ही तो तुम्हें समझाना...।"
साठी का फोन बजने लगा।
"हैलो...।" देवेन साठी ने बात की।
"साठी साहब।" दूसरी तरफ देवेन साठी का आदमी गोकुल था—"मैंने अभी डोगरा को देखा है।"
"कोल्हापुर में?" साठी की आंखें सिकुड़ीं।
"जी हां...। देवराज चौहान तो अभी होटल में है। शेखर, शिंदे और घंटा उस पर नज़र रखे होटल में फैले हैं। मुझे कुछ काम था तो लेकर निकल गया। एक होटल के सामने मैंने पहले दया को देखा,

वो पुरानी क्वालिस की ड्राइविंग सीट पर बैठा था। उसी की वजह से मैंने क्वालिस के भीतर झांका तो डोगरा को अपनी माशूका के साथ भीतर बैठे देखा। मैं रुका नहीं आगे बढ़ गया।

"कब की बात है ये?"

"दस मिनट पहले की अब मैं वापस होटल पहुंचने वाला हूं।" गोकुल की आवाज आई।

"ठीक है, तुम्हारे हवाले जो काम है, वो करो।" कहकर साठी ने फोन बंद कर दिया और नगीना से बोला—"डोगरा कोल्हापुर में है।"

नगीना के होंठ भिंच गए।

"ईब तो छुरियां चलल्लो ही चलल्लो साठे।" बांकेलाल राठौर का हाथ मूंछ पर पहुंच गया—"सबो को वड दवांगे।"

"अच्छी खबर दी तुमने।" नगीना पलटती हुई बोली—"मुझे ये खबर देवराज चौहान को देनी चाहिए।"

❑❑❑

❑❑❑

"हम नगीना, सरबत सिंह और बांके को भूल गए थे।" देवराज चौहान ने कहा—"क्लब के पीछे वाले रास्तों पर वो नज़र रख सकते हैं। शायद हमें पारसनाथ की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

"वो डोगरा को पहचानते हैं?" खुदे ने पूछा।

"नगीना तो नहीं पहचानती, परंतु बांके और सरबत सिंह जरूर पहचानते होंगे। उनसे ये बात अभी पूछ लेते हैं।"

तभी नगीना दरवाजा खोलकर भीतर आ गई।

तीनों की निगाहें उस पर गईं।

"विलास डोगरा कोल्हापुर पहुंच चुका है। ये बात अभी साठी ने किसी का फोन आने पर मुझे बताई थी।"

देवराज चौहान और जगमोहन के चेहरे खतरनाक भावों से भर उठे।

हरीश खुदे गंभीर दिखने लगा।

"मन में यह शंका भी थी कि कहीं उसने प्रोग्राम बदल न दिया हो। वो यहां न पहुंचा तो हमारी सारी मेहनत खराब हो जाएगी।" देवराज चौहान ने शब्दों को चबाकर कहा—"पर अब ठीक है। अब हम और भी बढ़िया ढंग से काम कर सकते हैं। उसका आठ बजे ही नाइट क्लब पहुंचने का प्रोग्राम तय है। वो उसी हिसाब से चलेगा। प्रकाश दुलेरा ने भी बताया था कि डोगरा एक-डेढ़ घंटे से ज्यादा वहां नहीं रुकेगा और गोवा के लिए हाथों-हाथ चल देगा। यहां से गोवा

का रास्ता ढाई घंटे का है। उस क्लब में हमारे पास एक घंटा होगा कि हम विलास डोगरा को खत्म कर सकें और... ।"

"विलास डोगरा को मारने से पहले, साठी के सामने, उसके मुंह से सच निकलवाना है।" नगीना बोली।

"कोशिश तो ये ही होगी परंतु ये सब उन हालातों पर निर्भर है कि वहां पर तब क्या हालात होंगे?"

"साठी की निगाहों में आपको, अपने को निर्दोष सावित करना है।" नगीना ने गंभीर स्वर में कहा—"ऐसा ना किया गया तो फिर साठी के साथ झगड़ा खड़ा हो जाएगा। तब वो मामला खतरनाक मोड़ ले सकता है।"

"मैं पूरी कोशिश करूंगा कि डोगरा की मुलाकात, साठी से करा सकूं।" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में कहा—"परंतु मैं खुद नहीं जानता कि क्लब में डोगरा हमें दिखेगा या नहीं, हम उसे पकड़ पाएंगे या नहीं।"

"हम उसे पकड़ लेंगे।" जगमोहन के होठों से गुर्राहट निकली।

"ये आसान नहीं होगा जगमोहन।" खुदे ने सिर हिलाकर कहा—"तुम विलास डोगरा को कम क्यों समझ रहे हो? कई मामलों में वो साठी से भी ज्यादा खतरनाक है। उसकी ताकत कम नहीं है। फिर ये क्यों भूलते हो कि वो क्लब उसकी जगह है। और उसे पता है कि तुम उसके पीछे हो। वो सतर्क होगा। उस पर हाथ डालना बेहद तकलीफ का सौदा भी हो सकता है।"

"हम उस पर हाथ डाल लेंगे।"

"ये तो अच्छा होगा अगर ऐसा हो गया तो।" खुदे बोला।

देवराज चौहान ने जगमोहन से कहा।

"पारसनाथ से कह दो कि हमारे साथी आ गए हैं। अगर जरूरत पड़ी तो उसे कहा जाएगा।"

जगमोहन ने सिर निकालते हुए मोबाइल निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

"तुम सरबत सिंह और बांके को मेरे पास भेजो। उनसे शाम को काम लेना है। बात करनी है।" देवराज चौहान ने नगीना से कहा।

नगीना फौरन कमरे से बाहर निकल गई।

देवेन साठी के कमरे में पहुंची।

साठी काफी पी रहा था और बांके डबल बैड पर लेटा था।

"बांके भैया, देवराज चौहान ने तुम्हें और सरबत सिंह को बुलाया है।" नगीना ने कहा।

बांके फौरन उठ खड़ा हुआ।

"अंम अभ्भी उसो के पासो पौंचो हो।"

"सरवत सिंह को भी साथ ले जाना।"

बांकेलाल राठौर बाहर निकल गया। देवेन साठी, नगीना से बोला।

"तुम लोगों का वादा है कि विलास डोगरा की मौत के बाद मेरे परिवार को आजाद कर दोगे।"

"हम अपना वादा पूरा भी करेंगे।" नगीना ने गंभीर स्वर में कहा—"डोगरा के मरते ही उसे छोड़ देंगे।"

"डोगरा अगर रात को क्लब में मारा गया तो?"

"तो एक घंटे में मुम्बई में तुम्हारा परिवार आजाद हो जाएगा।" नगीना सख्त स्वर में कह उठी—"देवराज चौहान को थोड़ी फुरसत मिल सके इसी कारण तुम्हारे परिवार को बंधक बनाया है। डोगरा के मरते ही देवराज चौहान की फुरसत खत्म हो जाएगी।"

"मान लो।" साठी बोला—"डोगरा पहले मारा जाता है। मेरे से उसकी बात नहीं हो पाती तो?"

"इसमें तुम्हारे परिवार की आजादी पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा।" साठी को देखते ही नगीना ने कहा—"बस यही फर्क पड़ेगा कि हम जो बात तुम्हें समझाना चाहते थे, वो नहीं समझा सके। उसके बाद तुम देवराज चौहान से अपने भाई की मौत का बदला लेना चाहोगे और बचाव में देवराज चौहान तुम्हें खत्म कर देना चाहेगा कि ये मामला खत्म हो जाए। कठपुतली वाले नक्शे की बात तुम्हारी समझ में नहीं आ रही है, या तुम समझना नहीं चाहते। अगर तुम समझना चाहते हो तो मोना चौधरी की तरह काफी कुछ समझ चुके होते।"

साठी नगीना को देखता रहा फिर बोला।

"अब मोना चौधरी पीछे ना हटती तो तुम लोग क्या करते?"

"उसे भी पीछे हटना पड़ता।" नगीना ने सख्त स्वर में कहा—"हम पारसनाथ और महाजन को बंधक बनाने जा रहे थे, कि मोना चौधरी के कदमों को रोक सकें। परंतु उससे पहले ही वो पीछे हट गई।"

"मैंने पहले भी कहा है कि अगर डोगरा को खत्म करना है तो अपने परिवार की खातिर मैं उसे खत्म कर... ।"

"हमें अपने काम करने आते हैं साठी। तुम्हें तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं है।" नगीना ने कहा—"हम तुम्हें दो दिनों से ये समझाने की चेष्टा कर रहे हैं कि तुम्हारे भाई की मौत का खेल डोगरा ने खेला था, तुम क्या समझते हो कि हम तुम्हें यह बात इसलिए समझा रहे हैं कि हमें तुम्हारा डर है? ऐसा तुम सोचते हो तो ये भूल

को संभालने की चेष्टा कर रहे हैं... ।"

"मेरे भाई को देवराज चौहान ने गोली मारी थी।" देवेन साठी गुर्रा उठा।

"इसी लकीर को पीटते रहोगे तो बात तुम्हारी समझ में नहीं आएगी।" नगीना शांत स्वर में कह उठी—"अगर मामला इसी तरह बिगड़ा रहा तो वक्त आने पर तुम पछताओगे कि हमारे लाख कहने पर भी तुमने सच को नहीं समझा।"

"मेरे भाई का हत्यारा देवराज चौहान है।" साठी सख्त स्वर में कह उठा।

"ऐसा ही सही। बाकी आने वाला वक्त बताएगा कि क्या होता है।" नगीना ने कहा और कमरे से बाहर निकल गई।

❑❑❑

❑❑❑

शाम के साढ़े आठ बज रहे थे। अंधेरा घिर चुका था। परंतु वातावरण में अभी भी गर्मी मौजूद थी। पसीना रह-रहकर बह रहा था। हवा ना के बराबर चल रही थी। परंतु स्टार नाइट क्लब के भीतर ए. सी. की ऐसी ठंडक मौजूद थी कि वहां आ जाने के बाद महसूस ही नहीं होता था कि बाहर गर्मी हो सकती है। क्लब की रौनक रोज की तरह उफान पर थी, कोई नहीं जानता था कि शायद आज क्लब में रंग में भंग पड़ जाए। बांकेलाल राठौर और सरवत सिंह क्लब के पीछे के उन रास्तों पर नज़र रख रहे थे जो कि वर्करों के काम में आते थे। एक तरफ के दरवाजे पर बांके लाल राठौर जमा हुआ था तो दूसरे पर सरबत सिंह निगाह रख रहा था। क्लब के सामने के दरवाजे पर हरीश खुदे नज़र रखे था। नीचे पार्किंग में खड़ी एक कार में देवेन साठी बैठा था और नगीना कार से टेक लगाये बाहर खड़ी थी। विलास डोगरा से मुलाकात कराने का मौका अगर मिलता तो उन्हें देवराज चौहान का फोन आ जाना था कि आ जाओ। वो उस फोन के इंतजार में थे।

देवराज चौहान और जगमोहन क्लब के भीतर थे।

देवराज चौहान लाऊंज में मौजूद था और क्लब में आने वाले लोगों पर नज़र टिकाए बैठा था। जबकि जगमोहन क्लब के भीतर इधर-उधर घूमता हर तरफ नज़र रखे हुए था। सारा काम गुपचुप ढंग से चल रहा था परंतु देवराज चौहान और जगमोहन की निगाहें भांप चुकी थीं कि आज क्लब में कल जैसा माहौल नहीं है। क्लब में यहां-वहां काले सूट वाले आदमी बिखरे खड़े हैं। उनमें से कुछ तो चेहरे से

खतरनाक लग रहे हैं। क्लब की तरफ से त [illegible]
कि डोगरा के आने पर अगर किसी भी तरह की गड़बड़ होती है तो फिर उसे संभाला जा सके। देवराज चौहान सोच रहा था कि ऐसे हालातों में काम करने के लिए सतर्कता बरतनी होगी। डोगरा पर हाथ डालते वक्त काले सूट वाले लोग रास्ते में आ सकते थे। तभी उसे जगमोहन अपनी तरफ आता दिखाई दिया और वो पास आकर बैठ गया।

"पूरे क्लब में करीब बीस आदमी यहां-वहां काले सूटों में खड़े हैं।" जगमोहन बोला—"वो हथियारबंद हैं। उन्हें खासतौर से आज के लिए पहरे पर खड़ा किया गया है। वो हमारे लिए अड़चनें पैदा कर सकते हैं।"

"डोगरा दिख गया तो हमें हर हाल में काम निपटाना है।" देवराज चौहान प्रवेश द्वार पर नज़र रखे हुए बोला।

"उसकी साटी के साथ हम मुलाकात करा पाएंगे या नहीं?"

"पता नहीं, ये तो आने वाले वक्त पर निर्भर है।"

"आठ बजे का वक्त था, साढ़े आठ हो चुके हैं।" जगमोहन ने नज़रें दौड़ाते हुए कहा।

"वो आने ही वाला होगा।" तुम सतर्क रहो।"

जगमोहन वहां से उठकर क्लब के भीतर की तरफ बढ़ गया।

देवराज चौहान की निगाहें प्रवेश द्वार पर थीं।

दस मिनट और बीत गए थे।

तभी कोई देवराज चौहान के करीब सोफे पर आ बैठा। देवराज चौहान ने पल भर के लिए सिर घुमाकर उसे देखा। वो उसके लिए अजनबी था। परंतु वो रमेश टूडे था। देवराज चौहान ने वापस सिर घुमा लिया। पास बैठा व्यक्ति उसके दिमाग से निकल चुका था कि मिनट भर भी नहीं बीता था कि और कमर में रिवॉल्वर की नाल लगी पाकर वह चौंक उठा।

देवराज चौहान ने फौरन सिर घुमाकर रमेश टुडे को देखा।

"कौन हो तुम?" रमेश टूडे का स्वर बेहद धीमा था।

देवराज चौहान ने उसकी आंखों में छाए खतरनाक भाव को पहचाना। होंठ भिंच गए उसके।

"कौन हो तुम?" रमेश टूडे ने पुनः अपना सवाल दोहराया।

"मैं हूं देवराज चौहान।" देवराज चौहान के होठों से मध्यम सी गुर्राहट निकली।

"मेरा भी यही ख्याल था कि तू देवराज चौहान ही है। पता नहीं, कब, कहां, कैसे देखा होगा तुझे, या तेरी तस्वीर कभी देखी होगी। मेरा काम ही ऐसा है कि मुझे जानी-मानी हस्तियों के चेहरे याद रखने

पड़ते हैं, कि पता नहीं कब किसकी जरूरत पड़ जाए। जैसे कि अब तेरी पड़ गई। मुझे तो नहीं जानता होगा तू?"

देवराज चौहान होंठ भींचे बैठा रहा।

कमर में रिवॉल्वर की नाल चुभ रही थी।

"रमेश टूडे हूं मैं। विलास डोगरा मुझे तब अपने पास रखता है, जब वो खुद को मुसीबत में महसूस करता है। तूने तो डोगरा की नींद हराम कर दी। उसके काफी आदमियों को मारा। बहुत नुकसान पहुंचाया है उसे।"

"उस हरामजादे ने मेरी मौत का सामान इकट्ठा कर...।"

"उसकी मुझे परवाह नहीं कि डोगरा ने क्या किया? वो तो ऐसे काम करता ही रहता है। और जब कि काम बिगड़ जाए तो उसे मैं ही संभालता हूं। हैरानी है कि तू मेरे बारे में कुछ नहीं जानता।"

"चाहता क्या है तू?" देवराज चौहान गुर्राया।

"तू डोगरा के इंतजार में है न?"

"तो?"

"यहां कुछ घुटन सी महसूस हो रही है। डकैती मास्टर देवराज चौहान जी।" रमेश टूडे सर्द स्वर में बोला—"ए.सी. की ठंडक मुझे रास नहीं आ रही है। ज़रा बाहर की हवा खाकर मजा ले लें। उठ।"

देवराज चौहान के होठों से गुर्राहट निकली।

"वैसे मुझे यहां भी गोली मारने में एतराज नहीं, आगे तेरी मर्जी।" टूडे की आवाज में दरिंदगी भरी पड़ी थी।

देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ। उसने जगमोहन की तलाश में नज़रें घुमाईं। परंतु वो कहीं नहीं दिखा। ये नाजुक वक्त था। इस वक्त को वो बरबाद नहीं होने देना चाहता था। परंतु अब किया भी क्या जा सकता था। रिवॉल्वर उससे सटी थी और इस खतरनाक आदमी के इरादों को वो भांप चुका था।

"मेरी रिवॉल्वर तेरे से लगी रहेगी।" टूडे मौत भरे स्वर में कह उठा—"परंतु ये बात किसी को पता नहीं चलेगी कि मैंने तेरे से रिवॉल्वर लगा रखी है। हम दोस्तों की तरह बाहर की तरफ चलेंगे, ज़रा भी गड़बड़ी की तो शूट कर दूंगा।"

देवराज चौहान का चेहरा सपाट और आंखों में वहशी भाव नाच रहे थे।

"चलो।" टूडे ने भिंचे स्वर में कहा।

दोनों एक दूसरे से सटे दरवाजे की तरफ बढ़ गए। आस-पास से लोग आ जा रहे थे परंतु किसी को हवा भी नहीं लगी कि इन दोनों के बीच क्या हो रहा है। दोनों दोस्तों की तरह चल रहे थे। रिवॉल्वर

के नाल की चुंभन बराबर देवराज चौहान को अपनी कमर में महसूस हो रही थी।

"तेरे पास रिवॉल्वर तो होगी ही। आखिर तू डोगरा का शिकार करने आया है।" टूडे बोला।

देवराज चौहान खमोशी से चलता रहा।

"उसे बाहर निकालने की गलती मत करना।" टूडे पुन बोला।

वे दोनों क्लब के दरवाजे से बाहर निकलकर ठिठक गए।

सामने से विलास डोगरा कार से उतर रहा था। फिर रीटा उतरी और रीटा ने डोगरा की बांह थाम ली तब तक वो भी उन दोनों को देख चुके थे। दया क्वालिस को आगे बढ़ा ले गया।

"देख ले डोगरा को।" टूडे सर्द स्वर में बोला—"दर्शन कर ले डोगरा के आखिरी।"

देवराज चौहान का शरीर सुलग उठा विलास डोगरा को देखते ही।

विलास डोगरा उन्हें देखकर मुस्कराया और रीटा के साथ आ पहुँचा।

"रीटा डार्लिंग।" विलास डोगरा ने प्यार के साथ कहा।

"ओह डोगरा साहब।" रीटा देवराज चौहान और टूडे को देखती मुस्कराई।

"दोनों की जोड़ी कितनी अच्छी लग रही है। इतनी अच्छी तो हमारी जोड़ी भी नहीं है।" डोगरा कहर से मुस्करा रहा था।

"बात तो आपकी सही है पर मुझे नहीं लगता कि जोड़ी ज्यादा देर सलामत रह पायेगी।" रीटा ने गहरी सांस ली—"देवराज चौहान का तो काम होने वाला लगता है। ये तो दुनिया से गया अब।"

"भीतर चलें रीटा डार्लिंग।" डोगरा उसी भाव में कह उठा—"हमें बहुत काम करने हैं।"

विलास डोगरा और रीटा क्लब में प्रवेश करते चले गये।

रमेश टूडे, देवराज चौहान को लिए दाईं तरफ बढ़ गया, जहाँ आगे अंधेरी गली थी।

"कैसा लग रहा है देवराज चौहान।" टूडे बेहद सतर्क था।

देवराज चौहान के होंठ भिंचे रहे। वो मात्र दो पल के लिए मौका चाहता था कि टूडे की रिवॉल्वर कमर से हटा सके। परन्तु रमेश टूडे पुराना खिलाड़ी था। वो कोई मौका नहीं दे रहा था उसे। चलते-चलते रमेश टूडे ने उसकी जेबें टटोली और रिवॉल्वर निकाल कर एक तरफ अंधेरे में फैंकते बोला।

"वो सामने गली है। वहाँ चलेंगे देवराज चौहान और अपनी दोस्ती को हमेशा के लिए मजबूत कर लेंगे।"

पहले उसने रमेश टूडे को देवराज चौहान के साथ देखा और समझते देर ना लगी कि टूडे ने देवराज चौहान की कमर से रिवॉल्वर लगा रखी है। अभी वो इस झटके से बाहर नहीं निकला था कि उसने डोगरा को एक कार से उतरते देख लिया था।

खुदे का दिल जैसे धड़कना भूल गया।

वो समझ नहीं पाया कि क्या करे?

डोगरा आया परन्तु देवराज चौहान पर रमेश टूडे जैसे खतरनाक हत्यारे ने कब्जा जमा लिया। खुदे को रमेश टूडे का खौफ था। उसके देखते ही देखते विलास डोगरा, रीटा के साथ क्लब में प्रवेश कर गया और रमेश टूडे देवराज चौहान को लिए क्लब की साइड की तरफ बढने लगा था। खुदे को अपनी टांगें कांपती सी महसूस हुई। उसने जल्दी से मोवाइल निकाला और जगमोहन का नम्बर मिलाने लगा। परन्तु नम्बर नहीं लगा।

दो-तीन बार कोशिश की, लेकिन जगमोहन को फोन नहीं लग पाया और उसके पास बांके लाल राठौर या सरबत सिंह का नम्बर नहीं था कि उन्हें फोन कर पाता। अब ज्यादा सोचने का वक्त नहीं था। देवराज चौहान और टूडे कॉफी आगे चले गये थे। हरीश खुदे सावधानी से उस तरफ बढ़ गया, जिधर वो दोनों गये थे। वो जानता था कि टूडे, देवराज चौहान को खत्म करने वाला है। उससे ये ही आशा की जा सकती थी।

❑❑❑

❑❑❑

रीटा ने विलास डोगरा की बाँह पकड़ी हुई थी। क्लब के भीतर पहुँच कर वो उस तरफ के रास्ते पर बढ़ रहे थे जहाँ देशमुख वागरे का ऑफिस था। परन्तु वागरे तक उनके आने की खबर पहुँच गई थी। जब वो उनके स्वागत के लिए बाहर निकला तो वे उसके ऑफिस वाली गैलरी में आ चुके थे।

"ओह, आप आ गये डोगरा साहब।" देशमुख वागरे फौरन आगे बढ़कर प्रसन्नता भरे स्वर में कह उठा।

"कैसे हो देशमुख?" डोगरा रुका नहीं आगे बढ़ता रहा।

"आपकी छत्रछाया में ठीक हूँ।" साथ चलता देशमुख कह उठा—

"सब कुछ एकदम फिट है।" आगे बढ़कर देशमुख ने आफिस का दरवाजा खोल दिया।

विलास डोगरा और रीटा ने भीतर प्रवेश किया।

देशमुख ने दरवाजा बंद कर दिया।

"कमिश्नर तुम्हें पूरा सहयोग दे रहा है ना?" डोगरा बोला।

"आपका हुक्म होगा तो वो सहयोग क्यों नहीं देगा। परन्तु वो हफ्ता बढ़ाने को कह रहा था।"

"कितना?"

"दस परसैंट।"

"बढ़ा दो। ऐसी मामूली बातों की परवाह मत करो। काम ठीक से चलना चाहिये। पुलिस की सहायता के बिना हमारे काम नहीं चल सकते। जहाँ तक सम्भव हो, पुलिस वालों से दोस्ती बनाए रखो।" डोगरा बोला।

"मैं ऐसा ही करता हूँ। बैठिये आप और बताइये क्या लेंगे? रात तो यहीं रुकेंगे ना?"

"मैं आधे घंटे से ज्यादा नहीं रुकूंगा।"

"ओह।"

"घोरपड़े की वजह से मुझे आना पड़ा। वो कहाँ है?"

"जुआघर वाले ऑफिस में बैठा आपका इन्तजार कर रहा है।"

"उसने आने में कोई परेशानी खड़ी तो नहीं की?"

"नहीं डोगरा साहब। एक बार फोन किया तो वो वक्त पर आ गया।"

"चाहता क्या है?"

"आपसे मिलने की जिद्द कर रहा है। सत्तर करोड़ ले लिया, परन्तु माल नहीं दिया। पन्द्रह दिन से ऊपर हो गये, पैसा दबाये बैठा है और कहता है पहले आपसे मिलेगा फिर माल देने की सोचेगा।" देशमुख ने कहा।

"घोरपड़े के पास चलो।"

वे उसी अलमारी के रास्ते नीचे जुआघर में पहुँचे। वहाँ टेबलों पर भीड़ थी। वेटर ड्रिंक्स सर्व करने के लिए भागे फिर रहे थे। सिग्रेट का धुआँ वहाँ फैला था। उनकी तरफ किसी ने खास ध्यान नहीं दिया। वे तीनों वहाँ से दाईं तरफ गये और एक बंद दरवाजे को धकेल कर भीतर प्रवेश कर गये।

ये शानदार ऑफिस था। टेबल कुर्सी के अलावा वहाँ सोफे भी बिछे थे।

चालीस बरस का घोरपड़े वहाँ मौजूद था। वो फौरन मुस्करा कर उठा और आगे बढ़कर डोगरा से हाथ मिलाया। रीटा को हैलो की। डोगरा सिर हिलाकर बोला।

"कैसे हो घोरपड़े?"

"बढ़िया।" घोरपड़े ने सिर हिलाया।
"धंधा कैसा चल रहा है?"
"वो भी बढ़िया।" घोरपड़े ने पुनः सिर हिलाया।
"बैठ।" कहने के साथ डोगरा बैठा। रीटा डोगरा के पीछे खड़ी हो गई।
देशमुख और घोरपड़े भी बैठे।
"मुझे तेरी वजह से आना पड़ा घोरपड़े। तूने सत्तर करोड़ क्यों दबा रखा है।"
"मेरा बस चलता तो मैं देशमुख को भी दबाकर बैठ जाता!" घोरपड़े ने देशमुख को घूरा।
देशमुख के चेहरे पर उखड़े भाव उभरे। जबकि डोगरा मुस्करा पड़ा।
"ऐसा क्या हो गया?" डोगरा बोला।
"मैं देशमुख को क्लब के लिये प्योर माल देता हूँ। एक दम बढ़िया स्मैक। कोकीन ऐसी कि कहीं ना मिले। तभी तो सालों से मैं ही माल सप्लाई कर रहा हूँ इधर। कभी.कोई शिकायत मिली?" देशमुख सिर हिलाकर बोला।
डोगरा ने देशमुख से कहा।
"इसकी बात का जवाब दे।"
"कोई शिकायत नहीं थी।"
"तो अब साल भर से क्या हो गया जो देशमुख मुझे शिकायत करने लगा कि कस्टमर को माल में मजा नहीं आ रहा। मैं ठीक माल नहीं दे रहा। महीने में दो बार इसी बारे में फोन खटखटा देता है।" घोरपड़े ने सिर हिलाया।
"साल भर से इसका माल ठीक नहीं आ रहा। कस्टमर शिकायत करते हैं।"
"ये गलत है। मेरा माल ठीक है। वो कभी खराब नहीं हो सकता।" घोरपड़े ने दृढ़ स्वर में कहा—"देशमुख को मैंने हमेशा ही बढ़िया माल दिया है। मैं इस बारे में बड़ी से बड़ी शर्त लगा सकता हूँ।
देशमुख ने कुर्सी पर पहलू बदला।
"माल ठीक नहीं होता इसका।" देशमुख बोला।
परन्तु डोगरा, देशमुख को शांत निगाहों से देखता रहा।
"मैं बताता हूँ।" कहने के साथ ही घोरपड़े ने जेब से दो पुड़िया निकाली और एक पुड़िया खोलता हुआ बोला—"इसमें वो माल है जो देशमुख अपने कस्टमर को देता है और इस पुड़िया में वो माल है जो

मैं देशमुख को देता हूँ। मैंने एक कस्टमर द्वारा ये पुड़िया देशमुख से हासिल की है। मेरे से लेकर जो माल ये कस्टमर को देता है उसमें फिफ्टी परसैंट की मिलावट कर देता है तो कस्टमर की शिकायत आयेगी ही और सारा दोष ये मेरे सिर पर लगा देता है कि मैं माल ठीक नहीं दे रहा। वेईमान है ये और उंगली मेरी तरफ उठाता है। यही कारण था कि जब इसने मुझे सत्तर करोड़ दिया तो वो पैसा मैंने दबा लिया और आपसे मिलने को कहा। मैं ये बात आपकी जानकारी में लाना चाहता था कि देशमुख क्या गुल खिला रहा है। अगर मेरी बात का भरोसा नहीं तो अब भी इसके पास कस्टमर को देने वाला माल पड़ा होगा और मेरा दिया माल भी रखा होगा। इससे पूछिये कि ये कहाँ पर मिलावट का काम करता है। दोनों माल को मिलाकर देख लीजिये।" घोरपड़े ने सिर हिलाया।

विलास डोगरा ने देशमुख को देखा।

देशमुख का चेहरा फीका पड़ चुका था।

"डोगरा साहब।" रीटा, डोगरा के कंधों को दबाती कह उठी—"आपके भी गुरु भरे पड़े हैं धंधे में।"

"तेरा क्या कहना है देशमुख?" डोगरा ने शांत स्वर में पूछा।

"म-मैं माफी चाहता हूँ। देशमुख धीमें स्वर में कह उठा।

"दिल से माफी मांगता है।" डोगरा बोला।

"जा-जी।"

"ड्रग्स में कब से मिलावट कर रहा है?" विलास डोगरा का स्वर शांत था।

"च-चार साल से।" देशमुख का सिर झुका हुआ था। वो व्याकुल दिख रहा था।

"कितना कमाया?"

"तीन-चार करोड़।"

"वो सब तेरे को मेरे हवाले करना होगा।"

"कर दूंगा। मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। पता नहीं कैसे हो गया।" देशमुख कह उठा।

"कोई बात नहीं। गलती हम इन्सानों से ही होती है।" डोगरा मुस्कराया—"चार करोड़ कब देगा?"

"चौबिस घंटे दे दीजिये मुझे।"

"परसों बारह बजे का वक्त ठीक रहेगा?" डोगरा ने पूछा।

"जी। परसों बारह बजे मैं चार करोड़ तैयार रखूंगा डोगरा साहब।" देशमुख कह उठा।

"विनय खरड़ तेरे पास पैसा लेने आयेगा। उसे दे देना।"

"जी। आपने मुझे माफ कर दिया डोगरा साहब?" देशमुख हाथ जोड़कर कह उठा।

डोगरा मुस्कराया और कंधे पर पड़े रीटा के हाथ पर हाथ रखकर कहा।

"रीटा डार्लिंग।"

"जी डोगरा साहब।" रीटा प्यार से कह उठी।

"मैं नाराज हुआ देशमुख पर?"

"नहीं तो।"

"फिर माफ करने की बात कहाँ से आ गई।"

"देशमुख भरोसे का आदमी है। पुराना आदमी है आपका। आप क्यों नाराज होंगे?" रीटा कह उठी।

"सुना देशमुख।"

"आपका दिल कितना बड़ा है डोगरा साहब।" देशमुख सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कह उठा—"मैं कभी भी आपको शिकायत का मौका नहीं दूंगा। ये भूल जाने कैसे मुझसे हो गई। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

"तुम चार सालों से ड्रग्स में मिलावट करके बेच रहे हो।" रीटा कह उठी—"इतने लम्बे वक्त तक की गई बात को भूल तो नहीं कहा जा सकता। तुम कहते हो कि चार सालों में चार करोड़ कमाया, जबकि ये आंकड़ा तीस के पार होना चाहिये।"

देशमुख के चेहरे का रंग पीला पड़ गया।

डोगरा की निगाह देशमुख पर थी।

घोरपड़े शांत बैठा था।

"वक्त है अभी तेरे पास देशमुख।" डोगरा बोला—"तेरे को सच बात कह देनी चाहिये। कितना कमाया?"

"य-याद नहीं। शायद-शायद पच्चीस करोड़।" देशमुख का चेहरा निचुड़ गया था।

"रीटा डार्लिंग तीस कहती है।"

"शायद तीस ही हो। म-मेरे पास जितना है, मैं सब ला दूंगा। मुझे माफ कर दीजिये। मेरे से बहुत बड़ी भूल हो गई। मेरा दिमाग खराब हो गया था। मैं पागल हो गया था।" देशमुख की आँखें भर आई डर से।

"ये तो भावुक हो गया डोगरा साहब।"

"डर रहा है।" डोगरा मुस्कराया।

"इसमें डरने की क्या बात है। ड्रग्स में मिलावट करके आपको तीस करोड़ कमाकर ही तो दे रहा है।" रीटा ने कहा।

विलास डोगरा ने घोरपड़े को देखा।
घोरपड़े संभला।
"हुक्म डोगरा साहब।" घोरपड़े बोला।
"अब तू क्या करेगा?"
"सत्तर करोड़ आपका मेरे पास है। उसका माल सप्लाई करूँगा।" घोरपड़े ने कहा।
"अगले सप्ताह सप्लाई करना। जैसा बढ़िया माल देता रहा है आगे भी वैसा करना। हम कस्टमर से ऊँची कीमत वसूल करते हैं ड्रग्स की इसलिये नहीं कि उन्हें गलत माल दें। वो हम पर इस बात का भरोसा करते हैं कि माल तो ठीक होगा।"
"मैं हमेशा बढ़िया माल देता रहूँगा डोगरा साहब।"
"निकल ले अब तू।"
घोरपड़े उठा और बाहर निकल गया।
"विनय खरड़ परसों बारह बजे आयेगा, हेरा फेरी से कमाया माल उसके हवाले कर देना।"
"जी-जी।"
डोगरा उठा तो देशमुख भी फौरन खड़ा हो गया।
"दोबारा कभी गड़बड़ करने की सोचना भी मत। मौके बार-बार नहीं मिलते।" विलास डोगरा कह उठा।
"फिर कभी ऐसी भूल नहीं होगी।" देशमुख की टांगें काँप सी रही थी।
"मैं जा रहा हूँ। मुझे अभी आगे जाना है।" डोगरा ने कहा—"फिर मिलेंगे देशमुख।"
देशमुख, डोगरा को बाहर तक छोड़ने आया।
रीटा, दया को फोन कर चुकी थी। दया क्वालिस लेकर बाहर मौजूद था। वो दोनों भीतर बैठे तो क्वलिस चल पड़ी। डोगरा ने सिग्रेट सुलगाई और कहा।
"रीटा डार्लिंग। खरड़ को फोन लगा।"
रीटा ने फोन लगाया और विलास डोगरा को दे दिया।
"हैलो।" डोगरा के कानों में मर्द की भारी आवाज पड़ी।
"खरड़।"
"हुक्म डोगरा साहब।"
"तेरे को परसों बारह बजे कोल्हापुर के नाइट क्लब में पहुँचना है। वहाँ देशमुख तेरे को पच्चीस तीस करोड़ की रकम देगा। वो रकम लेने के बाद तूने देशमुख को क्लब से दूर ले जाना है और उसे मार देना है। देखने पर उसकी लाश ऐसी लगे कि वो एकसीडेंट में मारा गया है। हत्या नहीं लगनी चाहिये?"

"समझा।" खरड़ की आवाज आई—"परसों दिन के बारह या रात के बारह पहुंचना है।"

"दिन के बारह। ये काम निपटा कर तू क्लब का मैनेजर बन जाना। बाकी सब मैं ठीक कर दूंगा।"

"समझ गया।"

"परसों शाम मैं तुझे फोन करूँगा तेरा हाल पूछने के लिए।" कहकर डोगरा ने फोन बंद किया और कश लिया।

"डोगरा साहब, लोग बेईमान क्यों हो जाते हैं। बरसों की वफादारी क्यों एक तरफ रख देते हैं।" रीटा कह उठी।

"लोग बेईमान नहीं होते रीटा डार्लिंग। परन्तु नोटों का रंग उन्हें मजबूर कर देता है कि वो बेईमान हो जाये।"

"लोग ही बेईमान होते हैं डोगरा साहब। नोटों का रंग मुझे बे-ईमान नहीं बना सकता।"

"तूने तो अपने रंग से मुझे बेईमान बना रखा है रीटा डार्लिंग।" डोगरा हंस पड़ा।

"छोड़िये भी। मौका मिला नहीं कि लगे मुझ तंग करने।" रीटा ने नखरे से भरे स्वर में कहा।

"तू है ही ऐसी। हर पल मेरे दिमाग में घुसी, मुझे बेईमान करती रहती है।" डोगरा ने हाथ बढ़ाकर रीटा की कमर पर हाथ डाला और उसके होठों को चूमा—"हर समय आग भरी रहती है तुझमें।"

"आपकी ही आग है, आपका ही पानी। जब चाहें बुझा लीजिये डोगरा साहब।"

डोगरा हंसा।

"तेरी जैसी दूसरी नहीं रीटा डार्लिंग। तू एक ही है जो ऊपर वाले ने मेरे लिए बनाई है। हमारा साथ तो जन्मो-जन्मो का है। हम कभी भी जुदा नहीं होंगे। अब अपने हाथों से बढ़िया सा पैग बना कर दे।"

रीटा ने पीछे हाथ डालकर बोतल, गिलास, सोडा उठाया और गिलास तैयार करती बोली।

"डोगरा साहब। मेरा ख्याल है कि देशमुख ने तीस से ज्यादा माल कमाया है ड्रग्स में मिलावट करके।"

"जानता हूँ।" डोगरा ने शांत स्वर में कहा।

"तो फिर आपने उससे बात क्यों नहीं की?"

"क्योंकि देशमुख का अनजाम मौत ही है। ऐसे में वो जो भी दे रहा है ले लो। मैं उसे ये सोचने का मौका नहीं देना चाहता कि वो मरने वाला है। पैसा तो आता जाता रहता है लेकिन बंदा जब जाता

है तो दोबारा नहीं आता। अब देशमुख के ऊपर चले जाने में ही भलाई है। उसका नीचे का काम तब ही खत्म हो गया था जब घोरपड़े ने उसके बारे में मुँह खोला।"

"लीजिये आपका गिलास।" रीटा ने उसे गिलास थमाया।

क्वालिस सामान्य गति से सड़कों पर दौड़े जा रही थी।

विलास डोगरा ने घूंट भरा और रीटा के कंधे पर हाथ रखता कह उठा।

"अगर तू ना होती रीटा डार्लिंग तो मैं बे-मौत ही मर गया होता। तू मेरा कितना ध्यान रखती है।"

"आपकी सेवा के लिए तो मैं इस दुनिया में आई हूँ और अपना धर्म निभा रही हूँ।" रीटा ने उसके गाल पर उंगली लगाई।

"तेरी ये ही अदा तो मेरी जान निकाले रहती है।"

"रमेश टूडे को भूल गये क्या?" रीटा ने जैसे याद दिलाया।

"वो भूलने वाली चीज नहीं है।" डोगरा घूंट भरता कह उठा—"देवराज चौहान को तो उसने कब का खत्म कर दिया होगा और अब हमारे पीछे गोवा पहुँचने की तैयारी में चलने वाला होगा।"

"एक फोन तो कर लीजिये टूडे को।"

"आ जायेगा उसका फोन। तुम मेरे से सटकर बैठो रीटा डार्लिंग। मैं दुनिया भूल जाना चाहता हूँ।"

❑❑❑

❑❑❑

देवराज चौहान कुछ कर जाने का मौका ढूंढ रहा था। परन्तु रमेश टूडे उसे किसी भी तरह का मौका देने को तैयार नहीं था। रिवॉल्वर उसने देवराज चौहान की कमर से लगा रखी थी और उंगली ट्रेगर पर थी। वो देवराज चौहान के साथ सटा चल रहा था कि देवराज चौहान कुछ करना चाहे तो उसे फौरन पता चल जाये। उधर देवराज चौहान सोच रहा था कि अगर उन दोनों में कुछ फांसला होता तो वो अब तक कोशिश कर चुका होता। टूडे ने जिस तरह उसे कवर कर रखा था, उससे देवराज चौहान समझ गया था कि उसका वास्ता किसी खिलाड़ी से पड़ा है। दोनों मध्यम गति से आगे बढ़े जा रहे थे।

"तो तुम डोगरा को मारने आये थे यहाँ।" टूडे शांत स्वर में बोला।

"हाँ।"

"तुम्हें कैसे पता कि डोगरा आज शाम यहाँ आने वाला है। किसने बताया कि वो कोल्हापुर आयेगा।"

"पता चल गया।"

"दुलेरा से जाना होगा?"

"नहीं। देवराज चौहान का स्वर शांत था—"किसी और से पता लगा।" जानबूझ कर देवराज चौहान ने गलत कहा।

"किससे?"

देवराज चौहान चुप रहा। एक ही बात उसके दिमाग में दौड़ रही थी कि ये उसे जिन्दा छोड़ने वाला नहीं। उसकी रिवॉल्वर पहले ही निकालकर फैंक चुका था। उसे कुछ करना होगा, वरना मारा जायेगा। मन में हल्की सी आशा खुदे की तरफ से भी थी जो क्लब के प्रवेश गेट के आस-पास कहीं था। अगर उसने उन्हें देख लिया है तो वो जरूर कुछ करेगा। वो इस आशा से उसके साथ लगा हुआ था कि कल को वो डकैती करेगा और उसे मोटी रकम देगा। ऐसे में वो उसे कुछ नहीं होने देगा, बशर्ते कि उसने, उन्हें देखा हो। ये मात्र सोच थी देवराज चौहान की, जबकि वो जानता था कि कुछ कर जाने का वक्त करीब आ गया है। समय कम था।

"मैं जानता हूँ तुम क्या सोच रहे हो?" रमेश टूडे ने ठंडे स्वर में कहा।

"मैं तुमसे बचने का रास्ता तलाश कर रहा हूँ।" देवराज चौहान बोला।

"ये मौका तुम्हें नहीं दूंगा।" टूडे की आवाज में खतरनाक भाव थे।

दोनों गली के किनारे पर जा ठिठके।

गली का हाल देखते ही देवराज चौहान के होंठ भिंच गये जबकि रमेश टूडे सर्द स्वर में बोला।

"गली कितनी अच्छी लग रही है। जरा भी रोशनी नहीं। पूरी तरह अंधेरे में डूबी है। तुम्हारी मौत के लिए ये बढ़िया जगह है। सुबह से पहले तुम्हारी लाश भी कोई नहीं देख पायेगा। गली में कभी लाइट तो जरूर रही होगी, परन्तु किन्हीं शरारती बच्चों ने तोड़ दी होगी। चलो, अब गली में चलो। तुम्हारा काम निपटा कर मुझे और भी काम करने हैं। तुम्हारी वजह से ही मुझे डोगरा के साथ आना पड़ा। अब मैं यहाँ से वापस मुम्बई जाऊँगा। चलो भी।"

दोनों गली में प्रवेश कर गये।

गली में इस कदर घुप्प अंधेरा था कि पता ही नहीं लग रहा था कि पाँव कहाँ पड़ रहा है। उन्हें आँखें फाड़कर देखते हुए चलना पड़ रहा था। रमेश टूडे ठण्डे स्वर में कह रहा था।

"अगर मैं तुम्हें गली के किनारे पर ही गोली मारता तो आवाज क्लब तक पहुँच जाती। परन्तु गली के भीतर चली गोली की आवाज

कोई ठीक से सुन नहीं पायेगा। ये साथ में तेल की मिल है। आठ बजे बंद हो जाती है। ऐसे अंधेरे में मुझे कत्ल करने का बहुत मजा आता है। कुछ भी नज़र नहीं आता। गोली चलाओ और...।"

कहते-कहते रमेश टूडे ठिठका। देवराज चौहान की बाँह उसने पकड़ रखी थी। वो भी रुका।

पीछे हल्का-सा खटका हुआ था। उसकी गर्दन फौरन घूम गई थी।

गहरा सन्नाटा छाया हुआ था गली में।

अंधेरे में चंद पल टूडे घूरता रहा परन्तु कोई भी नहीं दिखा।

"यहाँ कोई है।" टूडे ने अपने आपसे कहा—"कोई हमें देख रहा है। मेरे कान आवाज सुनने में धोखा नहीं खा...।"

इसी पल देवराज चौहान ने तेजी से घूमते हुए उसे धक्का दिया और भाग कर गली के अंधेरे में कूदता चला गया और उसी जगह पर एकाएक थम गया जैसे हिलने का इरादा ना हो। देवराज चौहान जानता था कि ऐसे अंधेरे में आँखें नहीं आहट काम करती है। अगर उसकी तरफ से आवाज उभरी तो डोगरा का हत्यारा उसे गोली से उड़ा देगा। वो चालाक शिकारी था।

उधर देवराज चौहान के धक्का देते ही टूडे पीछे को गिरने को हुआ। उसने खुद को बहुत संभाला परन्तु पीछे को जा ही गिरा लेकिन अगले ही पल उछल कर खड़ा हो गया।

परन्तु तब तक अंधेरे में देवराज चौहान का शरीर थम चुका था।

टूडे रिवॉल्वर थामें खतरनाक निगाहों से गली में देखने की चेष्टा करने लगा। परन्तु अंधेरा आड़े आ रहा था। वो जानता था कि देवराज चौहान कहीं दूर नहीं है। पास ही अंधेरे में दुबका हुआ है। वो ये भी जानता था कि चिन्ता की कोई बात नहीं है। वो उसे आसानी से ढूंढ कर, उसका शिकार कर लेगा। टूडे निश्चिंत इसलिये था कि उसे मालूम था कि देवराज चौहान के पास रिवॉल्वर नहीं है। वो खाली हाथ है। वो उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

टूडे की आँखें अंधेरे में देखने की अभ्यस्त हो चुकी थीं, परन्तु गली में अंधेरा ऐसा स्याह था कि हर चीज अंधेरे का हिस्सा बनी हुई थी। गली के दोनों तरफ ऊँची-ऊँची दीवारें उठी हुई थी। टूडे ज़रा-ज़रा करके आगे बढ़ने लगा। उस की नज़र हर तरफ जा रही थी रिवॉल्वर ज़रा से अंदेशे पर चलने को तैयार थी।

लेकिन हर तरफ की चीज स्थिर थी।

तभी उसके कानों में मध्यम सी आहट पड़ी।

टूडे ठिठक कर गर्दन घुमाकर पीछे देखने लगा। अंधेरे से गहरी गली में कुछ ना दिखा।

"पीछे कोई है।" टूडे ने मन में कहा—"इसी का ही कोई साथी होगा। उसके पास हथियार हो सकता है। ये तो मेरे लिए फंसने वाली बात हो गई। दोनों मुझ पर झपट पड़े तो मैं कुछ नहीं कर सकूंगा।"

टूडे पुनः धीमे-धीमे, ज़रा-ज़रा आगे बढ़ने लगा।

उसे आशा थी कि देवराज चौहान ज़रा सा हिलेगा। कहीं से आहट उभरेगी। परन्तु कुछ नहीं हुआ ऐसा।

दो पल ही बीते होंगे कि पीछे से बेहद स्पष्ट आहट उसके कानों में पड़ी। उसने घूमना चाहा।

तभी उसकी पीठ पर पूरे साईज की ईंट आकर लगी।

वो ईंट खुदे ने फेंकी थी। गली के फर्श के किनारे लेटे खुदे के हाथ ईंट लग गई थी। वो तो गोली चलाना चाहता था परन्तु उसे स्पष्ट रूप से कुछ नहीं पता था कि देवराज चौहान कहाँ है, कहीं उसे गोली ना लग जाये। परन्तु ये बात तो वो पक्की तरह जानता था कि वो अंधेरे में खड़ा था, ज़रा-ज़रा उसे दिख रहा था, वो रमेश टूडे ही है।

वो भारी ईंट काफी तेजी से टूडे की पीठ से टकराई थी।

रमेश टूडे के होंठों से कराह निकली और भयंकर पीड़ा की वजह से रिवॉल्वर उसके हाथ की उंगलियों से निकल कर छिटकी और अंधेरे में कहीं गुम हो गई। वो पीड़ा फौरन ही काबू में आती चली गई। लेकिन रिवॉल्वर हाथ से जा चुकी थी। ऐसा होते ही उसे लगा वो घिर गया है। आगे कहीं देवराज चौहान था और पीछे उसका कोई साथी।

उसी पल अंधेरे में नीचे पड़ा देवराज चौहान का शरीर हिला और चीते की तरह टूडे पर छलांग लगा दी। देवराज चौहान उसे साथ लेता नीचे गली में जा गिरा। टूडे के होंठों से चीख निकली। दोनों अंधेरे में गुत्थम-गुत्था हो गये। ये महसूस करके हरीश खुदे अपनी जगह से उठा और दो कदम आगे बढ़ आया। अभी उनके और खुदे के बीच छः कदमों का फांसला था। अंधेरे में खुदे को समझ नहीं आ रहा था कि कौन भारी पड़ रहा है, कौन हल्का है। वो मात्र एक छोटे से ढेर को हिलते देख रहा था और उनकी हाथा पाई की मध्यम सी आवाजें उभर रही थी। उसी पल वो कह उठा।

"देवराज चौहान, मैं हूँ। तुम घबराना मत। इस हरामजादे को मार दो। ये खतरनाक है। मैं इसे जानता हूँ।"

खुदे रिवॉल्वर थामें अंधे दर्शक की भांति सतर्क सा खड़ा रहा।

तभी खुदे ने एक के शरीर को दो कदम दूर गिरते देखा। अब वो दोनों अलग-अलग थे। परन्तु खुदे नहीं जानता था कि कौन देवराज

चौहान है और कौन रमेश टूडे। ये पता करने का उसे वक्त भी नहीं मिला और दोनों के पुनः खतरनाक अंदाज में टकरा जाने का एहसास हुआ और उनकी गुर्राहटें वहाँ गूंजने लगी। तभी देवराज चौहान की कराह खुदे के कानों में पड़ी। अगले ही पल रमेश टूडे चीखा। परन्तु वे दोनों जैसे एक-दूसरे को मार देना चाहते हो। इस तरह वे गुत्थम-गुत्था हुए पड़े थे।

अंधेरा हरीश खुदे के लिये, गोली चलाने के लिए दीवार बन कर खड़ा था। वो ऐसा कुछ नहीं करना चाहता था कि देवराज चौहान की जान को खतरा हो। उसकी चलाई गोली कहीं देवराज चौहान को लग जाये।

उसी समय किसी की तीव्र कराह गूंजी। खुदे को लगा वो देवराज चौहान की चीख थी। परन्तु उसे पक्का यकीन नहीं था। रिवॉल्वर थामें वो अंधेरे में यूँ ही खड़ा था कि उसके कानों में ऐसी आवाजें पड़ीं जैसे दो सांड आपस में टकरा गये हों। उठने वाली आवाजों में डरावना तूफान था जैसे। खुदे का मन चाहा कि आगे बढ़कर बीच में दखल दे दे, परन्तु इस गहन अंधेरे में वो कोई ख़तरा मोल नहीं लेना चाहता था। वो नहीं चाहता था कि रमेश टूडे अंधेरे का फायदा उठाकर उसकी रिवॉल्वर झपट ले और उन दोनों को शूट कर दे।

तभी खुदे ने किसी एक को देखा जो तेजी से गली में लुढ़कता चला गया था।

दूसरा एकाएक गली के दूसरी तरफ भागने लगा था।

खुदे दो पलों के लिए हक्का-बक्का रह गया।

उसी वक्त नीचे गिरने वाला जल्दी से उठा और बोला।

"उसे गोली मार।" ये आवाज देवराज चौहान की थी—"वो भाग रहा है।"

ये पता चलते ही कि भागने वाला रमेश टूडे है खुदे ने उस पर फायर किया।

परन्तु वो काफी दूर पहुंच चुका था और अंधेरे में ठीक से नज़र भी नहीं आ रहा था।

खुदे ने दूसरा फायर किया।

परन्तु तब तक वो गली के दूसरी तरफ निकल कर गुम हो गया था। उसके दौड़ते कदमों की आवाज आनी बंद हो गई। सन्नाटा सा छा गया गली में। खुदे उसके पास पहुँचता हुआ बोला।

"तुम ठीक हो देवराज चौहान?"

"हाँ।" देवराज चौहान गहरी-गहरी सांसें ले रहा था।

"वो भाग क्यों गया?"

"तुम्हारी वजह से। शायद उसे पता होगा कि तुम्हारे पास रिवॉल्वर हो सकती है। मुझे पार कर भी लिया तो तुम शूट कर दोगे।"

"वो खतरनाक था—है ना?"

"हाँ।" देवराज चौहान अभी भी सांसों को काबू पाने की चेष्टा में था—"वो जो भी है, हिम्मत वाला है।"

"वो रमेश टूडे था। मैंने उसे देखा हुआ है। वो डोगरा के खास खतरनाक लोगों में से एक है और बहुत खतरनाक है। हत्याएं करना उसका पेशा है। मैं तो उसे देखकर ही काँप गया था कि वो कहाँ से आ गया।"

"वो लड़ने में भी माहिर था।"

"उसके पास रिवॉल्वर हो तो फिर वो किसी के काबू में नहीं आता। परन्तु मेरे ईंट मारने से, उसके हाथ से रिवॉल्वर गिर गई।"

"अपनी रिवॉल्वर मुझे दो और तुम क्लब में जाओ। डोगरा क्लब में ही होगा। जगमोहन को साथ लो और डोगरा को खत्म करो। बांके और सरबत को भी बेशक साथ में ले लेना।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम नहीं चलोगे?"

"मेरी हालत क्लब में प्रवेश करने वाली नहीं रही।"

"जख्मी हो क्या?"

"तुम जाओ। रिवॉल्वर मुझे।"

"रिवॉल्वर मेरे ही पास रहने दो। क्लब में जरूरत पड़ सकती है। तुम्हारी रिवॉल्वर कहाँ है।"

"मेरी रिवॉल्वर? ठीक है। मैं उसे तलाश करने की कोशिश करता हूँ।" देवराज चौहान ने कहा—"तुम फौरन जाओ।"

हरीश खुदे पलट कर तेजी-से गली के बाहर की तरफ बढ़ गया। उसके कदमों की आवाजें देवराज चौहान के कान में पड़ती रही फिर सुनाई देनी बंद हो गई। देवराज चौहान ने गली के दोनों तरफ देखा। अंधेरे के सिवाय कुछ नहीं दिखा तो वो उस तरफ बढ़ गया जिधर खुदे गया था। गली के बाहर पहुँचा तो इधर-उधर की रोशनियाँ दिखाई देने लगी।

देवराज चौहान उस तरफ बढ़ा जिधर टूडे ने उसकी रिवॉल्वर फेंकी थी। उसके चेहरे पर कई जगह जलन का एहसास हो रहा था। छाती और पीठ पर से भी दर्द की लहरें रह-रह कर उठ रही थी। बड़े मजबूत दुश्मन से उसका वास्ता पड़ा था। अगर उसे सही मौका मिलता तो उसने, उसे हाथों के वार से ही मार देना था। वो हार मानने वाले लोगों में से नहीं दिखा। वो पक्के इरादे वाला ऐसा इन्सान था जो अपना काम पूरा करना जानता था। चेहरा, पीठ और छाती कई जगह से जख्मी

महसूस हो रही थी। उस पर टूडे ने कई खतरनाक दाँव खेलने की कोशिश की थी, परन्तु उसने उसका दाँव चलने नहीं दिया था।

देवराज चौहान उस जगह पर आकर अपनी रिवॉल्वर ढूंढने लगा।

पाँच मिनट की कोशिश के बाद उसे रिवॉल्वर मिली तो उसे जेब में डाल लिया। फिर क्लब की तरफ देखा जो कि डेढ सौ कदम दूर था और रोशनियों में चमक रहा था। देवराज चौहान ने अपनी कमीज पर नज़र मारी जो जगह-जगह से फट चुकी थी। उसके चेहरे पर कठोरता ठहरी हुई थी। परन्तु वो ये भी जानता था कि बुरा बचा है। खुदे की फैंकी ईंट की वजह से टूडे के हाथों से रिवॉल्वर ना गिरी होती तो खेल कब का खत्म हो चुका होता। खुदे हर कदम पर ईमानदारी से उसका साथ दे रहा था।

तभी देवराज चौहान का फोन बजने लगा।

"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की।

"डोगरा क्लब से दस मिनट पहले ही गया है। अब वो वापस नहीं लौटेगा।" खुदे की आवाज कानों में पड़ी।

देवराज चौहान के दाँत भिंच गये।

"वो गोवा गया है।" देवराज चौहान ने शब्दों को चबाकर कहा—"अब हमें गोवा जाना होगा। जगमोहन कहाँ है?"

"मेरे पास।"

"उसे फोन दो।"

दो पलों के बाद ही जगमोहन की सख्त आवाज कानों में पड़ी।

"विलास डोगरा यहाँ से निकल कर गोवा गया है। बांके और सरबत सिंह को नगीना के पास भेज दो। उन्हें भी गोवा पहुँचने को कह दो। वो लोग साठी के साथ गोवा पहुँचें। उसके बाद मेरे पास आ जाना। खुदे जानता है कि मैं किस तरफ मिलूंगा।"

❑❑❑

❑❑❑

रात बारह बजे विलास डोगरा गोवा के 'डी-गामा' होटल पहुँचा। जो कि थ्री स्टार होटल था और उसका आधा मालिक था वो। गोवा के एक व्यवसायी के साथ मिल कर आधे-आधे की हिस्सेदारी में ये होटल बनाया था, परन्तु ये बात जगजाहिर नहीं थी। दिखावे के तौर पर डोगरा की जगह, एक अन्य कम्पनी आधे हिस्से की मालिक थी।

गोवा पहुँचने तक डोगरा तगड़े नशे में आ चुका था परन्तु वो पूरे होश में था। रीटा ने आदत के अनुसार उसकी बाँह थाम रखी थी। होटल के स्टॉफ ने उन्हें शानदार सुईट में पहुँचा दिया था। रीटा ने फौरन खाने का ऑर्डर दे दिया।

"रीटा डार्लिंग।" डोगरा नशे से भरे स्वर में बोला—"गोवा पहुँच कर तो मजा आ गया।"

"आपने ज्यादा पी ली। मैंने कितना रोका था आपको।" रीटा उससे सटकर बैठती कह उठी।

"गोवा आऊँ और पेट भर का ना पिऊँ। ये कैसे हो सकता है। तेरे को तो सब पता है। गोवा में पीने का मजा ही कुछ और है।"

"पर गोवा तो अब पहुँचे हैं आप...।"

"तभी तो नशा चढ़ा हुआ है।" डोगरा हंसा।

"रमेश टूडे को फोन नहीं किया आपने।"

"मैं जानता हूँ उसे। देवराज चौहान का काम निपटा दिया होगा उसने। बुरी मौत मारा होगा उसे।"

"टूडे का भी फोन नहीं आया।"

"सुबह आयेगा।" डोगरा ने लापरवाही से कहा—"इस वक्त तो वो गोवा पहुँचने के रास्ते में होगा देवराज चौहान मर गया। अब मजे में हैं हम। वैसे मैं चाहता था कि वो साठी के हाथों मरे। कमीना क्लब में मेरा इन्तजार कर रहा था।"

"प्रकाश दुलेरा ने मरने से पहले आपके प्रोग्राम के बारे में मुँह-खोल दिया होगा।" रीटा बोली।

"ये ही हुआ होगा। तभी तो देवराज चौहान कोल्हापुर के क्लब में पहुँचकर मेरे आने का इन्तजार कर रहा था।"

"कल का प्रोग्राम क्या है डोगरा साहब।"

"दोपहर एक बजे विपुल कैस्टो से बीच रैस्टोरेंट में मिलना है। उसके साथ लंच करना है और बातचीत करनी है।" डोगरा बोला।

"वो मानेगा आपकी बात?"

डोगरा ने नशे भरी आँखों से रीटा को देखकर कहा।

"क्यों नहीं मानेगा?"

"आपकी बात मानने में उसे नुकसान है।"

"नहीं मानेगा तो उसे नुकसान है। मैंने अपना सोचना है रीटा डार्लिंग।" डोगरा ने सिर हिलाया।

रीटा के चेहरे पर गम्भीरता दिखने लगी।

"कैस्टो ताकत भी रखता है।"

"मुझसे ज्यादा?"

"ये गोवा का मामला है। गोवा में उसके पास ताकत है। आपके पास मुम्बई में ताकत है।"

"रीटा डार्लिंग।" विलास डोगरा कहर भरे अन्दाज में मुस्करा पड़ा—"मुम्बई और गोवा में ज्यादा फर्क नहीं है। चौबिस घंटों में मेरी

सारी ताकत गोवा पहुँच जायेगी। कैस्टो मेरा मुकाबला नहीं कर सकता।"

"फिर भी कैस्टो कम नहीं है।" रीटा ने जैसे डोगरा को समझाने की चेष्टा की।

तभी दो वेटर ट्राली धकेलते डिनर ले आये और टेबल पर लगाने लगे।

"कैस्टो को मेरी बात माननी ही पड़ेगी।"

"अगर मैं कैस्टो की जगह होती तो आपकी बात कभी नहीं मानती।" रीटा कह उठी।

"क्यों?" डोगरा ने रीटा को देखा।

"कैस्टो सोच रहा होगा कि गोवा किसी के बाप का तो है नहीं।" रीटा बोली—"बाकी फैसला ताकत करेगी।"

"और ताकत में मैं भारी पड़ूंगा।" विलास डोगरा सख्त स्वर में कह उठा।

"ये तो झगड़े वाली बात हो गई। क्या झगड़ा होना ठीक रहेगा। इस तरह तो गोवा का बिज़नेस हाथ से निकल सकता है।"

"रीटा डार्लिंग।" डोगरा बड़े प्यार से बोला—"गोवा में उसी का काम चलेगा, जिसका कि पुलिस चाहेगी। मैं कितना भी जोर लगा लूं। कैस्टो कितने भी घोड़े खोल ले। काम उसी का चलेगा, जिस पर गोवा पुलिस का हाथ होगा। समझी कि नहीं।"

"गोवा पुलिस को कैस्टो भी अपनी तरफ कर सकता है। वो गोवा का ही है।"

"पुलिस को इस बात से कोई मतलब नहीं कि कौन गोवा का है और कौन बाहर का। उसे सिर्फ ज्यादा नोटों और शान्ति से मतलब है। ये दोनों बातें डोगरा उन्हें दे सकता है। कैस्टो भी दे सकता है। परन्तु पुलिस मेरा साथ देना पसन्द करेगी।"

"मेरा तो कहने का मतलब है कल विपुल कैस्टो से सोच समझ कर बात कीजियेगा। वो कम नहीं है।"

तभी होटल के कर्मचारी ने पास आकर कहा कि डिनर लग गया है।

अगले दिन सुबह नौ बजे डोगरा उठा। धूप निकली हुई थी और खिड़की से धूप कमरे तक पहुँच रही थी। रीटा खुली खिड़की से बाहर देख रही थी। उसने पायजामा-कमीज़ पहन रखी थी। बाल कंधों पर बिखर रहे थे।

"ओह माई रीटा डार्लिंग।" डोगरा अध खुली आँखों से कह उठा।

"उठ गये डोगरा साहब।" रीटा फौरन पल्टी और पास जा पहुँची।

डोगरा ने उसका हाथ पकड़ कर चूमा और मीठे स्वर में बोला।

"सुबह कितनी हसीन है।"

रीटा भी मुस्कराई और कह उठी।

"आज विपुल कैस्टो से मिलना हैं आपने।"

"तुम उसकी ज्यादा चिन्ता कर रही हो।" डोगरा उठ बैठा।

"मैंने तो आपको याद दिलाया है।" रीटा ने कहा—"टूडे पन्द्रह मिनट से आपके इन्तजार में बैठा है।"

"रमेश टूडे-यहाँ?" डोगरा की आँखें सिकुड़ी।

"उधर ड्राइंगरूम में।"

"क्या बात है?" डोगरा बैड से उतरता कह उठा।

"मुझे नहीं पता।"

डोगरा ने स्लीपर पहने और सुईट के ड्राइंग रूम की तरफ बढ़ गया। रीटा उसके पीछे थी।

ड्राइगरूम में पहुँचते ही विलास डोगरा ठिठका। उसके होंठ सिकुड़ गये। नज़रें टूडे पर टिक गईं।

रमेश टूडे की हालत ज्यादा बेहतर नहीं दिखी। उसके चेहरे पर मारपीट के निशान नज़र आ रहे थे। कमीज़ के भीतर छाती पर भी जख्म का निशान दिखा। होंठ एक तरफ से कटा सा लग रहा था।

टूडे बैठा डोगरा को देखता रहा।

"देवराज चौहान को मार दिया?" विलास डोगरा सिर हिलाता कह उठा।

"वो बच गया।" टूडे शांत स्वर में बोला।

"हैरानी है कि वो बच गया।" डोगरा गम्भीर स्वर में उसे देखता बोला।

"वो बहुत हिम्मती है।" टूडे ने टांगें फैलाते कहा—"हारने वालों में से नहीं है।"

"तुम उसकी तारीफ कर रहे हो।"

"कल हालात ऐसे बन गये कि मुझे भागना पड़ा। अगर मैं उसे मार भी देता तो भी मैं नहीं बचता। पास ही में उसका कोई साथी था उसके पास रिवॉल्वर जरूर थी। वो मुझे गोली मार देता। वहाँ बहुत अंधेरा था। अंधेरे ने नुकसान दिया तो भागने में फायदा भी दिया।"

"मैं तो सोच रहा था कि देवराज चौहान कोल्हापुर में ही खत्म हो गया।" डोगरा ने गहरी सांस ली।

"ऐसा पहली बार हुआ है कि शिकार मेरे हाथ से बचा हो।"
"पर उसका बचना मुझे पसन्द नहीं आया।"
"मुझे भी नहीं आया।" टूडे के चेहरे पर सख्ती उभरी—"लेकिन अब वो गोवा में है।"
"कैसे पता?"
"कोल्हापुर के क्लब में वो ठीक वक्त पर इसलिये पहुँच गया कि उसने दुलेरा का मुँह खुलवाकर उससे आपके प्रोग्राम के बारे में जान लिया था। ऐसे में देवराज चौहान को ये भी जरूर पता होगा कि कोल्हापुर से आपने गोवा जाना है।"
"ये मैंने रात ही सोच लिया था।"
"मेरे पास अभी भी पूरा मौका है देवराज चौहान को खत्म करने का। आपका प्रोग्राम क्या है?" टूडे ने पूछा।
डोगरा ने रीटा को देखा तो रीटा कह उठी।
"बारह चालीस पर हम होटल से निकलेंगे और एक बजे बीच रैस्टोरेंट में मौजूद होंगे।"
"ये खतरनाक होगा। देवराज चौहान उसके साथी आपका कहीं भी निशाना ले सकते हैं।" रमेश टूडे बोला—"उनके पास आपका प्रोग्राम है। वो सब जानते हैं। विपुल कैस्टो से मुलाकात के लिए, कोई और जगह रखी जा सकती है?"
"क्यों नहीं रखी जा सकती।" रीटा बोली।
"तो कोई और जगह रखो। मुझे बताओ। डोगरा साहब का प्रोग्राम मैं बनाऊँगा।" टूडे बोला।
डोगरा के चेहरे पर सोच भरी गम्भीरता नाच रही थी।
"मेरा फोन।" डोगरा बोला।
रीटा ने तुरन्त फोन लाकर दे दिया।
डोगरा नम्बर मिलाने लगा। रीटा कह उठी।
"सम्भव है देवराज चौहान या उसके साथी, इस होटल के बाहर हों और हम पर नज़र रख रहे हों।"
"ऐसा जरूर हो रहा होगा।" टूडे ने कहा।
डोगरा ने फोन कान से लगा लिया।
"हैलो।" उधर से भारी सी आवाज डोगरा के कानों में पड़ी।
"ओह कैस्टो, कैसे हो।" डोगरा एकाएक मुस्कराया—"मैं तुम्हारी आवाज सुनना चाहता था।"
"आज हम मिलने वाले हैं ना?"
"जरूर। पर मैं चाहता हूं हम जगह बदल लें।"
"वो जगह ठीक है। मेरे आदमी वहाँ मौजूद रहेंगे।"

"फिर भी मैं जगह बदलना चाहता हूँ। जो भी जगह तुम्हें पसन्द हो।" डोगरा बोला।

"मेरे किसी ठिकाने पर आने में कोई एतराज तो नहीं?"

"कोई ऐसी जगह जो ना तुम्हारी हो ना मेरी।"

"ठीक है।" विपुल कैस्टो का सोच भरा स्वर कानों में पड़ा—"करवार में बीच पर मिलते हैं। वहाँ ग्लोब रैस्टोरेंट है बीच पर ही बना हुआ। वक्त वो ही रहेगा। मुझे आशा है कि हममें आज अच्छी बातचीत होगी।"

"क्यों नहीं। एक बजे करवार के ग्लोब रैस्टोरेंट में।" कहकर डोगरा ने फोन बंद कर दिया और टूडे से बोला—"करवार में, बीच पर ग्लोब रैस्टोरेंट की जगह तय हुई है। वो मेरी देखी जगह है। एक घंटा लगेगा वहाँ पहुँचने में।"

"ये ठीक है।" रमेश टूडे उठता हुआ बोला—"आप वहाँ होटल की किसी गाड़ी में पहुँचेंगे, जिसके शीशे काले होंगे। गाड़ी जब होटल से बाहर निकले तो काले शीशों के होने के बावजूद भी नीचे झुके रहिये। निकलने से पहले मुझे फोन कर देना। मैं होटल से कुछ दूरी पर मौजूद रहूँगा आपके पीछे आऊँगा। दया क्वालिस के साथ होटल में ही रहेगा, जबकि वो लोग क्वालिस के बाहर निकलने के इन्तजार में रहेंगे। मैं उन्हें आपके पीछे नहीं आने देना चाहता।"

"इस तरह तुम देवराज चौहान को कैसे पकड़ पाओगे?" डोगरा बोला।

"वो लोग किसी होटल में ही रुके होंगे। गोवा स्थित हमारे पन्द्रह आदमी सुबह से ही उनके रहने का ठिकाना मालूम कर रहे हैं। दिनभर में कोई नतीजा सामने आ जायेगा। देवराज चौहान मेरा शिकार है। उसे मैं देख लूंगा।" टूडे शांत स्वर में बोला।

विलास डोगरा ने सिर हिलाया।

"कब तक आप यहाँ से करवार के लिए निकलेंगे?"

"करीब ग्यारह पचास पर।" डोगरा ने कहा।

"आप विपुल कैस्टो से मुलाकात कर लें। उसके बाद मेरा पूरा ध्यान देवराज चौहान पर होगा।" कहने के साथ ही रमेश टूडे दरवाजे की तरफ बढ़ा—"देवराज चौहान खतरनाक है। कोई लापरवाही मत कर बैठियेगा।" वो बाहर निकल गया।

"मैं जानता हूँ देवराज चौहान खतरनाक है।" डोगरा गम्भीर स्वर में बोला।

"देवराज चौहान से टूडे काफी ठुकाई करा बैठा है डोगरा साहब।" रीटा कह उठी।

"देवराज चौहान गम्भीर मामला है। टूडे की ऐसी हालत पहली वार हुई है।" डोगरा ने रीटा को देखा।

"कहीं देवराज चौहान कोई मुसीबत खड़ी ना कर दे।"

"टूडे निपट लेगा उससे। मुझे टूडे पर भरोसा है।" डोगरा मुस्करा पड़ा।

"मुझे हेरानी है कि टूडे के हाथ लगकर भी देवराज चौहान वच निकलने में कामयाव रहा।"

"जरूर कोई खास गड़बड़ हो गई हो होगी। वरना टूडे को ये काम दोबारा ना करना पड़ता।" डोगरा कह उठा—"रूम सर्विस को कॉफी के लिए कहो। मैं तो निश्चिंत था कि देवराज चौहान मर गया होगा।"

इन्टरकॉम की तरफ बढ़ती रीटा कह उठी।

"देवराज चौहान को कुछ देर के लिए छोड़िये और विपुल कैस्टो की तरफ ध्यान लगायें। अगर उससे बात ना बनी तो—।"

"ओह रीटा डार्लिंग। तुम कैस्टो की फिक्र करना छोड़ दो। सब ठीक रहेगा।"

□□□
□□□

जगमोहन सुबह सात बजे से उस होटल के बाहर था, जिसमें डोगरा ठहरा हुआ था। यूं तो उसे पता था कि डोगरा बारह बजे से पहले निकलने वाला नहीं। एक बजे उसने बीच रैस्टोरेंट पर किसी कैस्टो नाम के आदमी से मिलना था। परन्तु सावधानी के नाते डोगरा की निगरानी करने का प्रोग्राम बना था। रात एक बजे वो गोवा पहुँचे थे और मडगाँव नाम की जगह बीच के किनारे पर स्थित होटल नाइट शाईन में ठहरे थे। सुबह छः बजे तक जगमोहन सोया और सात बजे यहाँ निगरानी पर पहुँच गया। प्रोग्राम था कि साढ़े नौ बजे हरीश खुदे आकर उसकी जगह ले लेगा और वो देवराज चौहान के साथ बीच रैस्टोरेंट पर जायेंगे और वहाँ की निगरानी शुरू कर देंगे।

खुदे ने जगमोहन को रमेश टूडे का हुलिया बारीकी से समझा दिया था। टूडे को लेकर जगमोहन गुस्से में था। क्योंकि रात कोल्हापुर में हुए झगड़े में देवराज चौहान को काफी चोटें लगी थी। जगमोहन के मन में था कि वो रमेश टूडे को अच्छी तरह ठोक-पीट दे, अगर वो उससे टकरा जाये। उधर देवराज चौहान का कहना था कि रमेश टुडे को भी काफी चोटें लगी होंगी। मन में अफसोस था जगमोहन को कि रात के झगड़े में वो तब वहाँ क्यों नहीं था।

इस समय जगमोहन सतर्क सा होटल के गेट पर नज़रें टिकाये

हुए था। आधा-पौना घंटा पहले उसने एक कार को भीतर जाते देखा था और कार चलाने वाले का चेहरा घायल था तो उसके मन में आ गया कि कहीं ये टूडे नाम का वो ही व्यक्ति तो नहीं, जो रात कोल्हापुर में देवराज चौहान से टकराया था।

जगमोहन अब उसके बाहर आने के इन्तजार में था।

साढ़े नौ से ऊपर का वक्त हो गया था। हरीश खुदे भी पहुँचने वाला होगा।

और जब हरीश खुदे उसके पास पहुँचा तभी जगमोहन को होटल के भीतर से वो वाली ही कार निकलती दिखाई दी। "वो देख— । उस कार वाले को।" जगमोहन खुदे से कह उठा।

खुदे ने कार वाले को देखा तो चौंक पड़ा।

"ये तो रमेश टूडे है।" खुदे के होठों से निकला।

ये सुनने की देर थी कि जगमोहम फौरन कुछ दूर खड़ी अपनी कार की तरफ भागा।

खुदे हक्का-बक्का सा जगमोहन को भागते देखने लगा। फिर उसके देखते ही देखते जगमोहन कार में बैठा और कार को उस तरफ दौड़ा दिया जिधर रमेश टूडे की कार गई थी।

खुदे ने उसी पल मोबाइल निकाला और जल्दी-जल्दी देवराज चौहान को नम्बर मिलाने लगा।

बात होते ही खुदे तेज स्वर में कह उठा।

"देवराज चौहान। जगमोहन, टूडे के पीछे गया है।"

"रमेश टूडे के?" उधर से देवराज चौहान बोला।

"वो ही। वो कार पर होटल से निकला। मैंने जगमोहन को बताया कि वो टुडे है तो वो उसके पीछे चला गया।" खुदे ने बेचैनी से कहा—"टूडे बहुत खतरनाक है। जगमोहन उसके सामने पड़ा तो कुछ भी हो सकता है।"

"तुम होटल पर नज़र रखो। मैं जगमोहन से बात करता हूँ।" उधर से देवराज चौहान ने कहा।

अगले दो मिनट में ही जगमोहन ने आगे जाती टूडे की कार देख ली। वो फासला रखकर टूडे की कार के पीछे लग गया। खून उबल रहा था कि रात को उसने देवराज चौहान को मारने की कोशिश की। उसके चेहरे पर मारपीट के निशान थे इसी तरह देवराज चौहान के चेहरे पर भी मारपीट के निशान थे। इसी से स्पष्ट था कि दोनों में झगड़ा किस बुरी तरह से हुआ था।

जगमोहन ने मन में ठान ली थी कि मौका मिलते ही टूडे को शूट कर देगा। उसका फोन बज उठा। बात की तो दूसरी तरफ देवराज चौहान को पाया। वो कह रहा था।

"खुदे ने मुझे बताया कि तुम टूडे के पीछे हो।"

"हाँ। कमीना अचानक ही मुझे दिख गया। मैं मौका देखते ही उसे खत्म करने वाला हूँ।"

"ऐसा मत करना।"

"क्यों?"

"जब तक वो सलामत है, तब तक डोगरा इस भ्रम में रहेगा कि उसे बचाने वाला उसके आस-पास ही है। वो इसी धोखे में रहेगा और हम डोगरा पर हाथ डाल देंगे। अभी इस हत्यारे को जिन्दा रखो... ।"

"लेकिन— ।" जगमोहन के चेहरे पर असहमति के भाव उभरे।

"जो मैंने कहा है वो ही करो। टूडे को कुछ मत कहो। उस पर सिर्फ नज़र रखो। वो डोगरा के आस-पास ही रहेगा। परन्तु वो हमारी नज़रों में रहे तो अच्छा है। कल भी उसने हमारा काम खराब किया है। आज भी कुछ ऐसा ना कर दे।"

"मैं उसे खत्म कर देना चाहता— ।"

"जो मैंने कहा है, वो ही करो। टूडे पर नज़र रखे रहो।" कहकर उधर से देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया था।

❑❑❑
❑❑❑

बारह बजकर दस मिनट पर जगमोहन का फोन आया। तब देवराज चौहान बीच रैस्टोरेंट में बैठा कॉफी पी रहा था और वो पता कर चुका था कि रैस्टोरेंट में दो मीटिंग हाल हैं और एक हाल आज बुक है। दोपहर वहाँ किसी की मीटिंग होने वाली है। कुछ ही देर में वहाँ नगीना, देवेन साठी को लेकर पहुँचने वाली थी और साथ में बांके, सरबत सिंह ने होना था। जगमोहन फोन पर कह रहा था।

"मैं टूडे के पीछे लगा रहा। ग्यारह, पैंतालिस तक उसने खास कुछ नहीं किया। एक रैस्टोरेंट में नाश्ता किया। फिर आधा घंटा बीच पर टहलने चला गया। उसके बाद पास के बाजार में घूमने लगा और साढ़े ग्यारह बजे कार में चल पड़ा। उसे ना तो किसी का फोन आया ना ही उसने किसी को फोन किया। 11.45 बजे उसने सड़क के किनारे एक जगह पर कार पार्क कर दी और उसी में बैठा रहा। 11.55 पर उसने एक कॉल रिसीव की और पाँच मिनट बाद ही वो वहाँ से चल पड़ा। कुछ देर बाद मुझे महसूस हुआ कि वो आगे जा रही एक काली

गाड़ी के पीछे जा रहा है जो कि होटल डी-गामा की गाड़ी है, उसके शीशे काले हैं। उसके भीतर कौन बैठा है, देखा नहीं जा सकता, परन्तु मेरा ख्याल है कि डी-गामा होटल की गाड़ी में विलास डोगरा हो सकता है।"

"विलास डोगरा हो सकता है?" उधर से देवराज चौहान ने कहा।

"हाँ–।"

"परन्तु खुदे ने तो विलास डोगरा के बाहर निकलने की खबर नहीं दी।" देवराज चौहान की आवाज आई।

"उस काले शीशे वाली गाड़ी में खुदे नहीं झांक पाया होगा।"

"तुम किस दम पर कहते हो उसमें डोगरा हो सकता है।"

"ये रास्ता चौरी नाम की जगह की तरफ जाता है, जो कि बीच रैस्टोरेंट से उल्टी तरफ है। रमेश टूडे, ऐसे समय में जबकि डोगरा को बीच रैस्टोरेंट पर जाना है, उल्टी तरफ क्यों जायेगा। वो तो डोगरा के आसपास ही रहेगा।" जगमोहन बोला।

"अभी 12.10 हुए हैं। क्या पता वो अभी वापस लौट आये। एक बजने में काफी वक्त है। मीटिंग डेढ़ बजे भी हो सकती है।" उधर से देवराज चौहान ने कहा—"मेरे ख्याल में वो वापस लौटेगा।"

"कह नहीं सकता।" जगमोहन सावधानी से दूर रखे कार को, पीछा करता कह उठा। सड़क पर और ट्रेफिक भी था। इतना पर्याप्त ट्रेफिक था कि पीछा किए जाने का शक नहीं हो सकता। जगमोहन निश्चिंत था।

"तुम पन्द्रह मिनट बाद मुझे फोन पर एक बार फिर बताना कि क्या हो रहा है।"

"ठीक है।"

पन्द्रह मिनट बाद जगमोहन ने फोन पर फिर देवराज चौहान से बात की। 12.30 बजे थे।

"मैं टूडे के पीछे काफी आगे तक आ चुका हूँ। चौरी आने वाला है। पोजीशन वही है। आगे होटल डी-गामा की वैन है। उसके पीछे टूडे की कार है। मुझे पूरा विश्वास है कि होटल की उस काली गाड़ी में डोगरा मौजूद है तभी तो टूडे उसके पीछे है। मुझे उनका रुकने का इरादा नहीं लग रहा अभी। तुमने खुदे से पूछा?"

"खुदे अभी भी उसी होटल के बाहर है और पक्के तौर पर कहता

है कि डोगरा बाहर नहीं निकला।" देवराज चौहान की आवाज आई।
"खुदे को होटल की गाड़ी वाली बात बताई?"
"बताई। सुनकर वो चिन्तित हुआ कि इस तरह काले शीशों वाली गाड़ी में डोगरा निकले तो पता नहीं चलेगा।"
"अब क्या कहते हो?"
"मैं सोच रहा हूँ कि हो सकता है टूडे किसी काम पर जा रहा हो। डोगरा वक्त पर बीच रैस्टोरेंट पहुँच जाये।"
"तो फिर होटल डी-गामा की काली गाड़ी के बारे में क्या कहते हो। जबकि डोगरा भी उसी होटल में है।"
"हमारे सामने कुछ भी ठीक से स्पष्ट नहीं है। मैंने अभी रैस्टोरेंट में फिर से मालूम किया है। उनका कहना है कि रैस्टोरेंट के हाल में एक बजे की बुकिंग है। इस बात को नज़र अंदाज भी नहीं किया जा सकता।"
"तो मैं अब क्या करूं?"
"तुम टूडे के पीछे रहो। इधर हम संभालेंगे। हम फोन पर सम्पर्क बनाये रहेंगे।" उधर से देवराज चौहान ने कहा।
जगमोहन आस-पास देखता कह उठा।
"इस समय चौरी नाम का इलाका पार कर रहा हूँ और उनका यहाँ रुकने का इरादा नहीं लगता।"
"तुम सावधान रहना। रमेश टूडे के सामने पड़ने की कोशिश मत करना। वो ऐसा इन्सान नहीं कि उससे भले की उम्मीद की जा सके। वो सख्त जान है। रात उसने मुझे कड़ी टक्कर दी थी।"
"मैं उससे दूर रहूँगा।" जगमोहन ने कहा और फोन बंद कर दिया।

जगमोहन, देवराज चौहान से कह रहा था। तब 12.55 बजे थे।
"होटल डी-गामा की गाड़ी में विलास डोगरा ही है। मैंने उसे देखा। साथ में रीटा है।" जगमोहन की आवाज में गुर्राहट के भाव झलक रहे थे—"डोगरा, करमार नाम की जगह पर, बीच किनारे स्थित ग्लोब रैस्टोरेंट में पहुँचा है। डोगरा और रीटा भीतर चले गये हैं। रमेश टूडे रैस्टोरेंट के बाहर ही मंडरा रहा है। ये काफी बड़ी जगह है। शांत इलाका है। ज्यादा लोग नहीं है यहाँ। सैलानी बहुत कम है। कालेज के लड़के-लड़कियां समन्दर किनारे दिखाई दे रहे हैं। ग्लोब रैस्टोरेंट

सड़क पर ही है। परन्तु पिछली तरफ जहाँ समन्दर पड़ता है, वहाँ रैस्टोरेंट का मुँह पड़ता है। मैं इस समय रैस्टोरेंट के बाहर टहलते टूडें को देख रहा हूँ और कार में बैठा हूँ।"

"इसका मतलब, कोल्हापुर वाली घटना से उन्होंने संबक लिया कि प्रकाश दुलेरा ने हमें उसके प्रोग्राम के बारे में बता दिया है। यही वजह है कि डोगरा ने मीटिंग की जगह बदल ली।" देवराज चौहान की आवाज जगमोहन के कानों में पड़ी।

"तुम आ रहे हो?"

'हम नहीं आ सकते। डेढ़ घंटे का सफर है करमार का। डोगरा इतनी देर वहाँ नहीं रुकने वाला। मेरे ख्याल में हमें डोगरा को निश्चित कर देना चाहिये कि हम उसके टूर प्रोग्राम के बारे में नहीं जानते।"

"ये कैसे होगा?"

"गोवा में डोगरा ने चार दिन और रहना है और छः जगह अलग-अलग लोगों से मिलना है। अगर उसे हमारे पीछे लगे होने का एहसास होता रहा तो वो हर बार जगह बदलता रहेगा और हमारे हाथ नहीं लगेगा। ऐसे में अब गोवा में उसके या रमेश टूडे के आसपास भी नहीं फटकना है। चुपचाप बहुत दूर रहकर उस पर नज़र रखनी है। जब वो या टूडे हमें आसपास नहीं पायेंगे तो कुछ हद तक निश्चित हो जायेंगे। गोवा से निकलकर डोगरा कर्नाटक के हुवेरी नाम की जगह पर जायेगा। उनके बाद चिकमंगलूर पहुँचना है। हम इनमें से किसी जगह पर डोगरा का शिकार करेंगे।"

"तो अब इन्हें कुछ नहीं कहना है?"

"नहीं–।"

कार में बैठे जगमोहन ने सौ कदम दूर टहलते रमेश टूडे को देखकर कहा।

"टूडे मेरे निशाने पर है। मैं आसानी से उसे खत्म–।"

"नहीं। हमारा शिकार डोगरा है। टूडे को शूट किया तो डोगरा सतर्क होकर खिसक जायेगा। पहले डोगरा फिर टूडे–।"

जगमोहन के होंठ भिंच गये।

"सुना तुमने?" उधर से देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"सुन लिया।" जगमोहन ने अपने पर काबू पाया—"तो अब मैं क्या करूं?"

"ये तुम पर है कि उन पर नज़र रखते हो या वापस आते हो। उन्हें खुला छोड़ दो। हमें हवेरी या चिकमंगलूर के लिए कुछ प्लॉन करना होगा कि वहाँ पर कैसे हम डोगरा को पकड़ सकते हैं। बात उसे शूट

करने की होती तो ज्यादा समस्या नहीं थी। परन्तु बेहतर होगा कि उसे मारने से पहले एक बार देवेन साठी से उसकी बात करा दें।"

बातचीत खत्म हो गई। जगमोहन ने फोन जेब में रखा और दूर टहलते टूडे पर निगाह मारते उसने फैसला किया कि वो यहीं रहेगा और इनके पीछे-पीछे ही वापस जायेगा।

❑❑❑

❑❑❑

रैस्टोरेंट में कोने की टेबल पर वे सब बैठे थे। रीटा अपनी आदत के अनुसार ऐसे मौके पर, कुर्सी पर बैठे विलास डोगरा के पीछे खड़ी थी। सामने पैंतीस बरस का विपुल कैस्टो बैठा था। उसके बाल गर्दन तक लम्बे थे और नीचे को झूलती मूंछें थी। रंग सांवला था। कद छः फीट को छूता और भरा-भरा शरीर था। पास ही में शीशे की दीवार थी, जिसके पार समन्दर का दृश्य दिखाई दे रहा था। वहाँ तीन-चार परिवार समन्दर के मजे ले रहे थे। छुट्टी मना रहे थे। कालेज के लड़के-लडकियां भी बीच पर जोड़ों में मौजूद थे। वहाँ से कुछ आगे आठ-दस छोटी-छोटी बोट्स खड़ी थी कि जो समन्दर में सैर करना चाहे, पैसे खर्च करके मजे ले सकता है सैर के।

रैस्टोरेंट में इस वक्त एक आदमी, औरत और उनके तीन बच्चे मौजूद लंच लेने की तैयारी में थे। वहाँ पर विपुल कैस्टो के तीन आदमी मौजूद थे और आठ अन्य आदमी रैस्टोरेंट के बाहर के रास्तों पर थे।

"मैं इस रैस्टोरेंट में एक बार पहले भी आया था।" डोगरा मुस्कराकर बोला—"इसी टेबल पर बैठा घंटों समन्दर को देखता रहा था। बहुत अच्छा लगा था मुझे यहाँ से समन्दर को देखते रहना। क्यों रीटा डार्लिंग।"

"यहां से समन्दर मुझे भी अच्छा लगता है डोगरा साहब।" रीटा कह उठी।

"समन्दर को देखते रहने से मन को शान्ति मिलती है।" विपुल कैस्टो ने मुस्कराकर कहा—"मैं भी यहाँ कई बार आया हूँ परन्तु काम की व्यस्तता की वजह से कभी समन्दर को देखने का मजा नहीं ले पाया। आप खुश किस्मत हैं जो वक्त निकाल लेते हैं।"

डोगरा ने सिर हिलाया और कंधे पर रखे रीटा के हाथ को थपथपाकर कहा।

"कैस्टो साहब। आप तो मेरे साथ ज्यादती कर रहे हो।"

विपुल कैस्टो की निगाह विलास डोगरा पर जा टिकी।

"आठ सालों से मैंने पूरे गोवा को संभाल रखा है। हर जगह मेरी भेजी ड्रग्स ही सप्लाई होती है। लेकिन आपके आदमी मेरे आदमियों

को खदेड़ने पर लगे हैं गोवा से। आपके आदमी, मेरे आदमियों से रोज मारपीट करते हैं। मेरे चार लोगों को मार दिया गया। इस तरह तो धंधा नहीं होता। ये काम तो मैं भी कर सकता हूं। पर क्या हमें शोभा देगा कि हम झगड़ा करें।" डोगरा ने शांत स्वर में कहा।

"मरने वाले अपनी गलती से मरे।" कैस्टो मुस्कराया।

"मैं यहाँ पर गलती देखने नहीं आया। जो भी हो रहा है, वो अब रुक जाना चाहिये।"

"मैं भी ऐसा ही सोचता हूं।" विपुल कैस्टो शांत स्वर में बोला।

"आपके आदमी, मेरी पुरानी पार्टियों को माल देने की कोशिश में लगे हैं। वो आपसे माल नहीं ले रहे तो उन्हें धमकाया जा रहा है। ये तो धन्धा करने का ढंग नहीं। इस तरह काम कैसे चलेगा।" डोगरा का स्वर हर भाव से परे था।

"आपने आठ साल गोवा पर कंट्रोल रखा, अब दूसरों को भी मौका मिलना चाहिये।" कैस्टो बोला।

"तो क्या तुम मेरा धंधा उखाड़ फैंकना चाहते हो?"

"ये तो मैंने सोचा नहीं।"

"अगर मैं भी तुम्हारा धंधा उखाड़ने पर लग जाऊँ तो क्या होगा कैस्टो?"

"हमें मामला सुलझा लेना चाहिये।"

"मामला तुमने ही खड़ा किया है।"

"मेरे को अपना धंधा जमाना है। गोवा पर पहले मेरा हक है। मैं यहीं पैदा हुआ था।"

"तो क्या मुसीबत आने पर गोवा वाले तुम्हें बचा लेंगे।"

कैस्टो ने विलास डोगरा को देखा।

डोगरा मुस्कराया।

स्पष्ट धमकी थी ये डोगरा की। परन्तु दोनों के चेहरे शांत थे।

"तुम जो भी करो, मेरे धंधे को खराब मत करो गोवा में।"

"गोवा मेरा है।" विपुल कैस्टो विश्वास भरे स्वर में कह उठा।

"तुम गाजी खान से ड्रग्स लेते हो। वो तुम्हें ड्रग्स भेजता है। गाजी खान से मेरे अच्छे सम्बंध हैं।" डोगरा ने कहा।

"और भी बहुत हैं जिनसे ड्रग्स ली जा सकती है। गाजी खान को रोक देने से मेरे को कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

"तुम्हें मेरी बात मान लेनी चाहिये। मेरे धंधे को छेड़े बिना, तुम बेशक जो भी करो गोवा में।"

"बेहतर होगा कि तुम पीछे हट जाओ।" विपुल कैस्टो शांत स्वर में बोला—"मैं इस बारे में गम्भीर हूं।"

"झगड़ा करोगे तो दोनों का धंधा जायेगा। पुलिस को शोर अच्छा नहीं लगेगा।"

"पुलिस से मेरी बात हो चुकी है।" कैस्टो ने डोगरा को देखा।

"बहुत तेजी से आगे बढ़ रहे हो।" डोगरा मुस्कराया—"परन्तु पुलिस मेरी है। तुम मेरा मुकाबला नहीं कर सकते।"

"तो तुम पीछे हटने वाले नहीं।" कैस्टो बोला।

"मैं पहले से जमा बैठा हूँ। पीछे कैसे हटूंगा। मैं तुम्हें टिकने नहीं दूंगा।" डोगरा बोला।

"अगर तुम्हारा ये विचार है तो अगले चौबिस घंटों में तुम्हारे गोवा में मौजूद आदमी मारे जायेंगे।"

"उससे पहले तुम ही नहीं रहोगे।" डोगरा सर्द स्वर में कह उठा।

विपुल कैस्टो के चेहरे पर कठोरता उभरी।

"यहां मेरे आदमी मौजूद हैं और तुम अकेले हो।" कैस्टो ने स्पष्ट धमकी दी—"मैं तुम्हें अभी खत्म कर—।"

"भूल में मत रहना।" डोगरा कहर से मुस्कराया—"तुमसे दुगने यहाँ मेरे आदमी मौजूद हैं। तुमने कैसे सोच लिया मैं अकेला हूँ। रीटा डार्लिंग।"

"जी डोगरा साहब।"

"यहाँ हमारे कितने आदमी मौजूद हैं?"

"गिना तो नहीं। पन्द्रह-सत्रह तो होंगे ही। चार तो इस रेस्टोरेंट के बाहर खड़े हैं। कैस्टो साहब के हर आदमी पर हमारा एक आदमी नज़र रखे हुए है कि फौरन उसे संभाला जा सके। हमारा पासा भारी है।" रीटा ने सामान्य स्वर में कहा।

कैस्टो ने कुर्सी पर पहलू बदला।

"कहे तो मैं कैस्टो साहब के सामने अपने आदमियों की परेड करा दूं।" रीटा पुनः बोली।

"जरूरत नहीं। कैस्टो को यकीन है कि हम वल्फ नहीं मार रहे। क्यों कैस्टो साहब—।" डोगरा व्यंग से कह उठा।

"हम यहाँ दोस्ती बनाने के लिए मिले हैं। झगड़े के लिए नहीं।" कैस्टो कह उठा।

"धमकी तो पहले तुमने ही दी।" डोगरा ने कहा।

"गोवा ना आपका है ना मेरा। यहां कोई भी स्थाई कभी नहीं रहता। आज कोई है तो कल कोई।" कैस्टो ने कहा—"पुलिस को शान्ति की गारंटी चाहिये तभी वो धंधा चलने देगी। हमें आपस में खुलकर बात करनी चाहिये। बीच का रास्ता इस्तेमाल करना चाहिये।"

"वो बीच का रास्ता तुम बता दो।"

"गोवा को आधा-आधा बांट लेना चाहिये। कोई दूसरे के इलाके में दखल नहीं देमा।"

"तुम आधे के हकदार नहीं हो सकते। मेरा धंधा यहां आठ सालों से जमा हुआ है। तीस परसैंट गोवा तुम्हारा।"

"ये कम है।"

"मैंने ज्यादा कह दिया है।"

"चालीस मेरा, साठ आपका।"

"बात नहीं बन सकती। मैं तुम्हें पैंतीस परसैंट गोवा दे सकता हूं जहां तुम अपना माल सप्लाई करो। मेरे इलाके की तरफ तुम्हारे आदमी नहीं आयेंगे। परन्तु पैंतीस परसैंट गोवा तुम्हें देने की मेरी शर्त भी है।" डोगरा ने शांत स्वर में कहा।

"कैसी शर्त?"

"माईकल के आदमी मेरे आदमियों से पंगा लेते रहते हैं। उनसे हफ्ता मांगते हैं। ये ध्यान तुम्हें रखना होगा कि माईकल मेरे आदमियों को तंग ना करे। तुम जो चाहो माईकल के साथ करो। मुझे कोई एतराज नहीं।"

"माईकल का फोन मेरे को भी आया था कि धंधा करना है तो उसे हफ्ता देना होगा। मैं संभाल लूंगा उसे।" कैस्टो ने कहा—"अब ये तय करना बाकी रह गया है कि गोवा को पैंतीस प्रतिशत कौन-सा हिस्सा मेरा होगा।"

"ये हम ईमानदारी से बांटेंगे। तुम्हें इसमें नाराजगी नहीं होगी।"

"मैं चाहता हूं अभी ये फैंसला हो जाये।" कैस्टो जेब से गोवा का नक्शा निकालकर टेबल पर बिछाता कह उठा—"ऐसा ना हो कि मलाईदार जगह तुम लो और मुझे बेकार की जगह।"

"डोगरा हमेशा ईमानदारी से काम करता है। पैंतीस परसैंट में से तुम्हें पन्द्रह परसैंट मलाईदार जगह मिलेगी। उससे तुम्हारा धंधा वढ़िया जमा रहेगा। मैं अभी इस नक्शे में से तुम्हारा पैंतीस परसैंट का हिस्सा निकाल देता हूं।"

"डोगरा साहब। जरा समन्दर का नजारा तो देखिये।" रीटा, डोगरा के कंधों पर हाथ रखे कह उठी।

विलास डोगरा की निगाह फौरन शीशे की दीवार के पार समन्दर की तरफ उठी। सब कुछ वैसा ही था जैसा कि पहले था फिर जब कुछ दूर किनारे पर खड़ी बोटस की तरफ नज़रें गई तो आंखें सिकुड़ गई। एक बोटस पर उसने रमेश टूडे और जगमोहन को देखा फिर उसने बोट को समन्दर की तरफ जाते देखा। टूडे ने जगमोहन को बोट

के फर्श पर लिटा दिया था और खुद तेजी से वोट को समन्दर की तरफ दौड़ा दिया था।

"रीटा डार्लिंग। समन्दर तो अब मुझे और भी अच्छा लगने लगा है।" डोगरा प्यार से बोला।

"मैंने सुना है जो समन्दर के बीचो-बीच मरते हैं, वो सीधा स्वर्ग जा पहुंचते हैं।" रीटा मुस्करा कर कह उठी।

बोट समन्दर के किनारे में दूर होती, छोटी-सी दिखने लगी थी।

❑❑❑
❑❑❑

पन्द्रह-बीस मिनट हो गये थे जगमोहन को कार में बैठे। नज़रें रमेश टूडे पर थी, जो कि एक जगह पर टहले जा रहा था। दस कदम आगे जाता तो, दस कदम पीछे आ जाता। इस दौरान वो एक बार भी नहीं रुका था। जगमोहन मन-ही-मन सोच रहा था कि उसे खत्म करने का कितना अच्छा मौका है, परन्तु देवराज चौहान ने ऐसा करने को मना कर रखा था।

तभी जगमोहन एकाएक सतर्क हो गया।

टूडे अचानक ही उसकी कार की तरफ बढ़ने लगा था।

जगमोहन ने फौरन रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली। मन में सोच रहा था कि क्या वो उसके पास आ रहा है या उसके पीछे कहीं जा रहा है। उसे अपना पीछा किए जाने का पता तो नहीं चल गया। अगले ही पल जगमोहन की आंखें सिकुड़ी ये सोचकर कि वो वहां देर तक टहलता रहा, जबकि उसे डोगरा के पास जाना चाहिये था। कहीं वो उसके कारण ही तो बाहर नहीं था। तरह-तरह के अंदेशे जगमोहन के मस्तिष्क में थे।

टूडे उसकी कार के पास पहुंच चुका था।

कार में बैठे जगमोहन के हाथ में रिवॉल्वर थी और नज़रें करीब आ चुके टूडे पर थी।

रमेश टूडे सीधे उसके पास आ पहुंचा खुली खिड़की के पास खड़ा हो गया।

जगमोहन समझ गया कि कुछ होने वाला है।

"एक घंटा तुम पीछा करते रहे। थके नहीं?" टूडे शांत स्वर में बोला।

"मैं इतनी जल्दी नहीं थकता।" जगमोहन ने उसी प्रकार उसे देखते हुए कहा।

टूडे का हाथ अपने घायल चेहरे पर पहुंचा। उसने जगमोहन के हाथ में दबी रिवॉल्वर देखी।

"मेरे लिए रिवॉल्वर निकाल रखी है। जब तुझे आते देखा, तभी रिवॉल्वर निकाली होगी।" टूडे ने शांत स्वर में कहा।

जगमोहन खामोशी से उसे देखता रहा।

"कौन हो तुम?"

"जगमोहन।" जगमोहन का स्वर शांत था।

"देवराज चौहान का साथी जगमोहन-हूं—उसकी तवीयत कैसी है अब?" टूडे की आवाज सामान्य थी।

"तुम्हारी तरह ही है।"

"रात को बच गया।"

"ऐसा ही देवराज चौहान कहता है कि तुम बच गये।" जगमोहन का स्वर कठोर हो गया।

"फैसला तो हो जाना था। परन्तु वहां देवराज चौहान का कोई साथी भी था। उसके पास रिवॉल्वर होने का शक था मुझे। वो तुम नहीं थे। उसकी और तुम्हारी आवाज में फर्क है। अंधेरा इतना था कि मुझे अपने हाथ भी दिखाई नहीं दे रहे थे। मैंने गलत जगह का चुनाव किया। फिर भी अगर वात मेरे और देवराज चौहान के बीच की होती तो फैसला हो जाता। परन्तु वहां जो तीसरा था, उसकी वजह से मुझे वहां से निकल जाना पड़ा। अगर मैं देवराज चौहान से निपट भी लेता तो वो मुझे आसानी से गोली मार देता। अगर तीसरा वहां ना होता तो शायद पहले ही देवराज चौहान मारा जाता। उसने मुझे ईंट मारकर मेरे हाथ में पकड़ी रिवॉल्वर गिरा दी और...।"

"क्या तुम कोल्हापुर हादसे की रिपोर्ट लिखाने आये हो मेरे पास? जगमोहन सतर्क था।

"मैं तुम्हें खुलासा वता रहा हूं। कि रात क्या हुआ।" टूडे ने कहा।

"मत वताओ। मुझे सब पता है।"

"कोई बात छूट ना गई हो, इसलिये बता रहा हूं।"

"तुम्हारा चेहरा इस वक्त बहुत सूज रहा है।"

"हां।" टूडे ने पुनः अपने चेहरे को छुआ—"पहली बार मुझे ऐसा कोई मिला जिससे भिड़ने में रात मजा आया। वरना कोई मेरे सामने ज्यादा देर टिकता ही नहीं। वहुत हिम्मत वाला है देवराज चौहान एकदम मजबूत।" टूडे ने कहा।

"मेरा दिल तो करता है कि तुम्हें शूट कर दूं।" जगमोहन ने सख्त स्वर में कहा।

"तो फिर करते क्यों नहीं?"

जगमोहन रमेश टूडे को घूरने लगा।

कुछ पल उनके बीच खामोशी रही।

"कर भी सकता हूं।" जगमोहन गुर्रा उठा।

"करो।" टूडे ने कार की खिड़की पर झुके जगमोहन की आंखों में झांका।

"परन्तु तुम देवराज चौहान के शिकार हो। बेहतर होगा कि देवराज चौहान ही तुम्हें मारे।"

"या मेरे हाथों मरं।" टूडे कह उठा।

"चले जाओ। वरना अभी मारे जाओगे।" जगमोहन ने दांत भींचकर कहा।

"तुम मुझ पर नज़र रख रहे हो। इस वक्त तुम भी अकेले हो मैं भी अकेला हूं। बातें करते हैं। तुमने मुझे कहां पकड़ा? कहां से तुम मेरे पीछे लगे। मुझे थोड़ा अजीब भी लगा कि तुम करवार तक चले आये।"

जगमोहन रिवॉल्वर थामे, टूडे को घूरता रहा।

"दुलेरा ने तुम लोगों को डोगरा के टूर का सारा प्रोग्राम बता दिया।"

"वो ज्यादा नहीं बता पाया। पहले ही मारा गया।" जगमोहन ने कठोर स्वर में कहा—"उसने कोल्हापुर और गोवा के बीच रैस्टोरेंट पर विपुल कैस्टो से मुलाकात की बात बताई और उसके बाद उसकी जुबान बंद हो गई थी।" जगमोहन ने झूठ बोला।

"लगता नहीं, ऐसा हुआ हो।" रमेश टूडे आसपास नज़रें घुमाता कह उठा—"देवराज चौहान नहीं है यहां?"

जगमोहन के होंठ भिंच गये।

"तुम अकेले तो नहीं हो सकते। पर देवराज चौहान मुझे कहीं नज़र नहीं आ रहा।" टूडे पुनः बोला।

"अगर तुम इसी तरह खड़े रहे तो मैं तुम्हें शूट कर दूंगा।"

"मुझे समझ नहीं आता कि तुम किस बात का इन्तजार कर रहे हो। तुम्हें तो चाहिये था कि मुझे पहले ही शूट कर देते। ये अलग बात है कि देवराज चौहान ने तुमसे कह दिया हो कि वो अपना हिसाब खुद चुकायेगा। वो डकैती मास्टर है। उसे डकैती की तरफ ही ध्यान देना चाहिये। अण्डरवर्ल्ड डॉनों से पंगा लेकर भला कोई जिन्दा रह पाया है। उसने तो अपना खाना खराब कर लिया।" कहने के साथ ही टूडे ने फुर्ती से हरकत की और अपनी रिवॉल्वर निकालकर नाल जगमोहन की गर्दन पर रख दी।

जगमोहन दो पल के लिए ठगा-सा रह गया।

"हिलना मत।" रमेश टूडे ने सर्द स्वर में कहा।

जगमोहन का खून सुलग उठा। परन्तु उसका रिवॉल्वर वाला हाथ नीचे था।

"इतनी देर से मैं देख रहा था कि आसपास तुम्हारा कौन-सा साथी है। परन्तु मुझे कोई भी नज़र नहीं आ रहा। विश्वास नहीं होता कि तुम इतनी हिम्मत वाले हो कि मेरे पीछे अकेले आ गये। कहीं ऐसा तो नहीं देवराज चौहान बीच रैस्टोरेंट पर खड़ा हमारा इन्तजार कर रहा है और तुम बस इत्तेफाक से मेरे पीछे आ गये।" कहने के साथ ही टूडे ने झुककर उसकी रिवॉल्वर की तरफ हाथ बढ़ाया।

जगमोहन ने दांत भींचे रिवॉल्वर नहीं छोड़ी।

टूडे ने उनकी गर्दन पर रखी नाल का दबाव बढ़ा दिया।

जगमोहन ने रिवॉल्वर छोड़ दी।

टूडे ने उससे रिवॉल्वर लेकर, कार के पीछे वाली सीट पर फैंक दी और बोला।

"रिवॉल्वर हाथ में पकड़े रहना, ज्यादा अच्छी बात नहीं है। इससे तनाव बढ़ता है और ब्लड प्रेशर ज्यादा हो जाता है। मैं अभी भी यही सोच रहा हूं कि मौका होते हुए भी तुमने मुझ पर गोली क्यों नहीं चलाई, जबकि कल मैंने देवराज चौहान को मारने की कोशिश की। कहीं तुम लोग सुधर तो नहीं गये। बुरे कामों से मन बदल गया और तपस्या करने का प्लॉन बना रहे हो। वैसे अच्छा ही हुआ जो तुम मिल गये। मैं बोर हो रहा था। अब मेरा मन लगा रहेगा। चलो, समन्दर की सैर करके आते हैं।"

जगमोहन ने मौत भरी निगाहों से उसे देखा।

तभी टूडे ने उसकी गर्दन से रिवॉल्वर हटाई और जोरदार घूंसा दूसरे हाथ से उसके चेहरे पर मारा।

जगमोहन का मुंह कराह के साथ घूम गया।

रिवॉल्वर पुनः उसकी गर्दन से आ लगी।

जगमोहन का होंठ फट गया था और कोने से खून बह निकला था। चेहरे पर दरिन्दगी सिमट आई थी। उसने सिर उठाकर टूडे को देखा और खून भरा थूक बाहर थूक दिया। उसने खूंखारता भरी निगाहों से टूडे को देखा।

"चलो। समन्दर में घूमने चलते हैं।" कहते हुए टूडे ने दरवाजा खोला—"समन्दर का नमकीन पानी तुम्हारे जख्मों को ठीक कर देगा।" उसके साथ ही रिवॉल्वर वाला हाथ हिलाकर उसे बाहर आने का इशारा किया।

जगमोहन मौत की सी निगाहों से उसे देखता रहा।

"वैसे ये जगह भी बुरी नहीं। मैं तुम्हें यहां भी शूट कर सकता हूं।" टूडे ने दरिन्दगी भरे स्वर में कहा।

जगमोहन कार से बाहर निकला और टूडे रिवॉल्वर जेब में डालता कह उठा।

"तुम्हें पता भी नहीं चलेगा कि मैंने कब रिवॉल्वर निकाल ली। इसलिये तुम ये ही सोचो कि मैंने रिवॉल्वर पकड़ रखी है।" टूडे, जगमोहन की बांह पकड़कर उसे एक तरफ खींचता, चलने लगा—"मैं जानता हूं कि तुम इस वक्त ये ही सोच रहे हो कि तुमने पहले ही मुझ पर गोली चला ही दी होती तो बढ़िया रहता। लेकिन जो वक्त एक बार हाथ से निकल जाये, वो वापस नहीं आता।"

दोनों आगे बढ़े जा रहे थे।

"रात भी मैंने इसी तरह देवराज चौहान की बांह पकड़ रखी थी। फर्क सिर्फ इतना है कि उसकी कमरे से रिवॉल्वर लगी थी, परन्तु अब वो मेरी जेब में है। रात उसने ज़रा भी गड़बड़ की होती तो मैं तभी...।"

तभी जगमोहन का बायां हाथ घूंसे के रूप में घूमा और टूडे के पेट में जा लगा।

टूडे के हाथों उसकी बांह छूट गई। वो कराह कर थोड़ा-सा बेहतर हुआ कि तभी जगमोहन का घूंसा उसके चेहरे पर पड़ा। टूडे बुरी तरह लड़खड़ाया, परन्तु इस दौरान पलक झपकते ही उसने रिवॉल्वर निकाल ली और अपने ऊपर झपटते जगमोहन के पेट से लगा दी। जगमोहन जहां का तहां रुक गया। चेहरे पर खतरनाक भाव थे।

"तुम भी कम नहीं हो। वैसे भी जब मौत करीबं आती है तो इन्सान बहुत फड़फड़ाता है।" टूडे ने सर्द स्वर में कहा—"बहुत हो गया। अगर गोली नहीं खाना चाहते तो मेरे साथ चलते रखे। अब तुम्हें समझाऊंगा नहीं।"

इस तरफ कोई भी आ-जा नहीं रहा था। उनकी हरकतों पर किसी की नज़र नहीं पड़ी थी।

टूडे ने जगमोहन की कमर से रिवॉल्वर लगा रखी थी और उसकी बांह पकड़कर उसे अपने से सटा रखा था। दोनों मध्यम गति से आगे बढ़ रहे थे। सूर्य सिर पर था परन्तु पास में समन्दर होने की वजह से धूप चुभ नहीं रही थी।

"तुम बहुत बुरी मौत मरोगे।" जगमोहन गुर्रा उठा

"जानता हूं।" टूडे ने सर्द स्वर में कहा—"मौत को बुरी ही माना जाता है।"

"समन्दर का खारा पानी, तुम्हारे चेहरे के जख्मों का इलाज जरूर करेगा।" जगमोहन गुर्राया।

रैस्टोरेंट के सामने से होकर वो पास की गली में प्रवेश कर गये।

गली में छोटे-छोटे रैस्टोरेन्ट बने हुए थे और गली के पार सामने समन्दर नज़र आ रहा था। गली में कॉलेज के पांच-सात लड़के लड़कियां थे। उन्होंने गली पार की ओर दांई तरफ बीच के किनारे पर काफी लोग दिखे, जबकि बांई तरफ कुछ दूरी पर बोटें खड़ी थी। दो आदमी वहां मौजूद थे।

"बोट पर समन्दर घूमने का मजा कुछ और ही होता है।" टूडे उसे बोट की तरफ ले जाता बोला—"तुमने बोट पर समन्दर की सैर की?"

"तुम मरने वाले हो।"

"जानता हूं कि जब बोट वापस आयेगी तो हममें से एक ही वापस आयेगा। परन्तु मेरे पास रिवॉल्वर है ऐसे में मेरी वापसी के चांस ज्यादा हैं। तुमने इस तरह मरने की तो कभी नहीं सोची होगी, तुम अब अचानक ही लापता हो जाओगे और तुम्हारी लाश भी किसी को नहीं मिलेगी। तुम्हारे जानने वाले आपस में बातें किया करेंगे कि जगमोहन अचानक कहां चला गया। तुम्हारी वापसी का इन्तजार होगा। फिर इन्तजार करने वाले तुम्हें भूलने लगेंगे। इस तरह तुम्हारी याद भी दुनिया से मिट जायेगी। समन्दर में मरने का मजा ही कुछ और है।"

जगमोहन के दांत भिंचे पड़े थे। रह-रहकर गुर्राहट निकल आती थी।

"बोट खोलो।" टूडे ने वहां मौजूद बोट वाले दोनों आदमियों से कहा।

"पर्ची कहां है?" एक ने कहा।

"पर्ची?"

"रैस्टोरेंट के रिसैप्शन से बोट पर घूमने की पर्ची कटती है। वहां पैसे देने होते हैं। हम वो पर्ची लेकर...।"

टूडे ने पल भर के लिए जगमोहन की कमर से रिवॉल्वर हटाकर उन्हें दिखाई।

"पर्ची देखी?" टूडे गुर्रा उठा।

दोनों के चेहरे एकाएक घबराहट से भर गये रिवॉल्वर देखकर।

"साब...जी।" वो घबराकर रह गया।

"बोट खोलो। जल्दी।"

उसने आगे बढ़कर किनारे पर बंधी एक बोट खोली

"वापस आ जाओ। तुम्हें साथ जाने की कोई जरूरत नहीं।" टूडे बोला।

वो तुरन्त उस बोट से हट गया।

"चलो।" टूडे जगमोहन को धकेलता कह उठा—"कोई शरारत मत करना वरना अभी मरोगे।" उसने जगमोहन को आगे कर दिया।

जगमोहन अन्य बोटों पर पांव रखता, होंठ भींचे सावधानी से आगे बढ़ने लगा।

"और तुम दोनों शान्ति से यहीं रहो।" जगमोहन पर नज़रें टिकायें टूडे ने कहा—"मैं बोट लेकर आधे घंटे में वापस आता हूं। तब तुम दोनों को नोट दूंगा और पर्ची भी कटवा लूंगा। मेरे आने तक चुपचाप यहीं रहना।"

दोनों हड़बड़ाये से खड़े रहे।

टूडे और जगमोहन बोट पर पहुंचे और टूडे ने उनकी टांगों में टांग फांसकर नीचे गिरा दिया उसे।

"हिलना मत।" टूडे गुर्राकर और बोट के स्टेयरिंग पर बैठ गया। उसे स्टार्ट किया।

जगमोहन ने सिर उठाकर टूडे की तरफ देखा।

टूडे ने उसे रिवॉल्वर दिखाई और चेहरे पर खतरनाक मुस्कान आ गई। बोट आगे दौड़ा दी उसने। आठ फीट लम्बी और छः फीट चौड़ी छोटी-सी बोट थी जो कि समन्दर की सतह पर तेजी से भाग रही थी।

जगमोहन शान्ति से लेटा रहा। वो जानता था कि रमेश टूडे अब उसकी हत्या करने वाला है। समन्दर के भीतर गोली की आवाज कोई नहीं सुनेगा। वो समझ चुका था कि ये उसकी जिन्दगी का आखिरी संघर्ष है। जान बचानी है तो उसे पूरी ताकत लगाकर टूडे से मुकाबला करना होगा। बीतता वक्त उसे पहाड़ की तरह लग रहा था। वो बोट के स्टेयरिंग के पास सिर किए लेटा था और टूडे हर दूसरे पल उस पर नज़र मार रहा था। वो सतर्क था। चेहरा खतरनाक भावों से भरा था।

"तो तुम मुझे मारने वाले हो।" जगमोहन बोला

"तुम्हें शानदार मौत नसीब होने वाली है। समन्दर में इस तरह मरना सौभाग्य की बात है। बहुत कम ऐसे नसीब वाले होते हैं। जो समन्दर में मरते हैं।" टूडे का चेहरा वहशी-सा होकर चमक रहा था—"तुम बहुत किस्मत वाले थे।"

"मैं तुम्हें दस लाख रुपया दूंगा।" जगमोहन ने कहा।

"अच्छा।" टूडे मुस्करा कर गुर्राया।

"मुझे छोड़ दो। क्यों मेरी जान लेते हो।"

"तुम इतनी बढ़िया मौत लेने से इनकार कर रहे हो। ऐसा कैसे कर सकते हो तुम। तुम्हें मेरा शुक्रगुजार होना...।"

"पन्द्रह लाख ले लेना।" जगमोहन ने फैसला कर लिया था कि उसे क्या करना है।

"सिर्फ पन्द्रह लाख? क्या यही कीमत है तुम्हारी जान की?"

"मेरे पास इतने ही हैं।"

"जीवन भर डकैतियां करते रहे और कहते हो पन्द्रह लाख ही हैं। ये तो मजाक कर रहे हो तुम।"

"बाकी सारा पैसा देवराज चौहान ले गया।"

"बुरा किया देवराज चौहान ने।" टूडे ने दांत कसे हुए और चेहरा भयंकर हो रहा था।

बोट समन्दर में तेज आवाज करती दौड़े जा रही थी। वो किनारे से काफी दूर आ गये थे।

"अभी और कितनी आगे जाना है?" जगमोहन कह उठा।

"समन्दर जितना गहरा हो मरने का उतना ही मजा आता है। मैं तुम्हारी मजा कम नहीं करना चाहता। तुम...।"

परन्तु तब तक जगमोहन अपनी तैयारी पूरी कर चुका था। बोट के फर्श पर हथेलियां और पांवों को टिकाये वो उछला और तीन फीट तक ऊपर होते, दाईं तरफ चालक की सीट पर मौजूद रमेश टूडे से जा टकराया।

रमेश टूडे को जबरदस्त झटका लगा। रिवॉल्वर उसके हाथ से छूटकर समन्दर में जा गिरी। वो खुद भी समन्दर में गिरने लगा कि बायां हाथ स्टेयरिंग व्हील पर जम गया।

बोट जोरों से लहराई।

जगमोहन खुद को संभाल न सका और लड़खड़ा कर बोट में जा गिरा।

बोट अभी भी समन्दर में लहराकर आगे बढ़ रही थी। क्योंकि व्हील पर टूडे का हाथ टिका था और वो गलत ढंग से मुड़ा हुआ था। टूडे खुद को संभाल चुका था। बोट की रफ्तार धीमी पड़ गई थी। उसने नीचे पड़े जगमोहन को उठते देखा तो उसके होठों से गुर्राहट निकली और सीट छोड़कर जगमोहन पर छलांग लगा दी।

दोनों बोट के फर्श पर जा गिरे।

दोनों के होठों से गुर्राहटें निकल रही थी। टूडे जगमोहन के गले पर अपना पंजा टिका देना चाहता था। तभी जगमोहन ने उसके चेहरे पर जोरदार घूंसा मारा। टूडे का सिर झनझना उठा। उसने एक के बाद एक दो घूंसे जगमोहन के चेहरे पर लगाये तो जगमोहन ने तड़प कर अपने ऊपर पड़े टूडे को, घुटना फंसाकर ऊपर उठाया और बगल

में गिराकर, जल्दी से खड़े होने की चेष्टा की परन्तु टूडे ने उसकी टांग पकड़कर तेजी से झटका दिया।

जगमोहन बोट के फर्श पर जा गिरा।

दोनों पुनः गुत्थम गुत्था हो गये।

एकाएक टूडे अपने कोशिश में कामयाब रहा और उसका पंजा जगमोहन की गर्दन पर जा पड़ा। उसी पल दांत भींचे वो पंजे का दबाव बढ़ाने लगा। जगमोहन छटपटा उठा। उसने गले से टूडे का हाथ हटाने की चेष्टा की परन्तु सफल नहीं हो सका। चेहरा, सांस रुकने की वजह से लाल पड़ने लगा।

टूडे पंजे का दबाव बढ़ाता जा रहा था। उसके चेहरे पर वहशी भाव सिमटे थे।

तभी जगमोहन ने एक घूंसा, अपने ऊपर झुके टूडे की नाक पर लगा दिया।

टूडे छटपटा उठा गर्दन से पकड़ कुछ ढीली हुई। जगमोहन ने दूसरा घूंसा लगा दिया। उसके होठों से चीख निकली। नाक से खून वह निकला। दो पलों के लिये उसका ध्यान अपने पर चला गया। इतना वक्त जगमोहन के लिए काफी था। टांग मोड़कर जूता टूडे के पेट पर रखा और उसे पीछे उछाल दिया।

टूडे उछलकर पीछे स्टेयरिंग सीट से जा टकराया।

अगले ही पल दोनों बोट पर खड़े खूंखार निगाहों से एक-दूसरे को देख रहे थे। बोट की रफ्तार कम हो चुकी थी। वो मध्यम गति से समंदर की सतह पर डोल रही थी। यहां किनारे पर बना रैस्टोरेंट नज़र नहीं आ रहा था। वे काफी भीतर समन्दर में पहुंच चुके थे। टूडे की नाक से बहता खून, उसे खौफनाक बना रहा था।

"हम हममें से एक ही वापस जायेगा।" जगमोहन दरिन्दगी भरे स्वर में कह उठा।

उसी पल टूडे ने उस पर छलांग लगा दी।

जगमोहन ने भी इसी पल उस पर छलांग लगाई थी। जबरदस्त ढंग से दोनों टकराये। टूडे ने दो-तीन घूंसे जगमोहन के चेहरे पर लगा दिए, जबकि जगमोहन ने उसके पेट में घूंसे मारे। टूडे उससे लिपट गया। जगमोहन ने उसी पल जोरों का हाथ उसकी टांगों के बीच मारा तो टूडे गला फाड़कर चीखा और उससे अलग हो गया चेहरे पर पीड़ा से उसके दोनों हाथ अपनी टांगों के बीच रखे थे। जगमोहन ने फौरन जूते की ठोकर पुनः उसकी टांगों के बीच मारी।

टूडे खुद को बचाने के चक्कर में पीछे हुआ और उसकी टांग पकड़ ली।

जगमोहन बुरी तरह लड़खड़ाकर बोट के फर्श पर गिरा। टूडे ने उसकी टांग नहीं छोड़ी थी। टांग को वह दायें-बायें घुमाता रहा। खून से सने पड़े थे टूडे के दांत। वो दरिन्दा लग रहा था। छोटी-सी बोट भी दायें बायें डोल रही थी। तभी जगमोहन ने अपनी टांग थोड़ी-सी खींची और फिर जोर से धक्का दिया।

बोट पर खड़ा टूडे लड़खड़ाया। उसका बैलेंस बिगड़ा। जगमोहन की टांग हाथ से छूट गई। उसने खुद को संभालने की बहुत कोशिश की परन्तु आखिरकार वो समन्दर में जा गिरा। गिरते ही वो पानी से बाहर निकला और एक हाथ से बोट का किनारा थाम लिया। जगमोहन तेजी से खड़ा हुआ, परन्तु बोट के एक तरफ झुक जाने से, खड़े होने में उसे सावधानी का इस्तेमाल करना पड़ रहा था और वो बोट के ऊपर आने की कोशिश में लगे टूडे के हाथों पर जूते की ठोकरे मारने लगा कि वो बोट छोड़ दे। परन्तु टूडे जानता था कि इस गहरे समन्दर में बोट से अलग हो जाना खतरनाक था। उसने बोट नहीं छोड़ी और जगमोहन की ठोकरों से हाथ को बचाता रहा। तभी जगमोहन स्टेयरिंग सीट पर बैठा और एकाएक पूरी रफ्तार से बोट को दौड़ा दिया। टूडे बोट का किनारा मजबूती से थामें रहा। बोट एक तरफ को झुकी रही और समन्दर में दौड़ती रही इसके साथ ही वो बोट पर चढ़ आने का भरपूर प्रयत्न कर रहा था।

अपनी इस कोशिश में टूडे सफल भी रहा। उसकी एक टांग बोट पर आ चुकी थी। अब उसने चंद पलों में ही बोट पर होना था। ये देखकर जगमोहन जल्दी से सीट से उठा और खतरनाक इरादे के साथ टूडे की तरफ लपका। परन्तु उसके पास पहुंचने पर टूडे ने जो खेल खेला उसमें सार नजारा ही पलट गया।

जगमोहन के पास पहुंचते ही टूडे समझ गया कि जगमोहन इस वक्त उस पर भारी पड़ेगा। क्योंकि वो बोट पर है। ऐसे में टूडे ने एक हाथ से बोट का किनारा थामा और दूसरे हाथ से जगमोहन की पिंडली पकड़कर जोरों का झटका दिया। बोट जोरों से हिली। जगमोहन खुद को संभाल ना सका। और सीधा समन्दर में जा गिरा।

टूडे पानी में आगे खिसकती बोट के साथ आगे बढ़ आया था और लगातार बोट पर चढ़ने की चेष्टा कर रहा था। जल्दी ही वो बोट पर था। फौरन खड़ा हुआ और पीछे समन्दर की सतह पर नज़र मारी।

परन्तु जगमोहन कहीं भी नहीं दिखा।

होंठ भींचे रमेश टूडे समन्दर में नज़रें दौड़ाता रहा कि अभी जगमोहन दिखेगा, लेकिन देर तक इन्तजार करने के पश्चात् भी जगमोहन उसे कहीं नहीं दिखा। करीब आधा घंटा टूडे ने इन्तजार किया फिर बोट को वापस किनारे की तरफ दौड़ा दिया।

□□□
□□□

"कैस्टो साहब।" विलास डोगरा मुस्करा कर बोला—"ड्रग्स के धंधे के लिहाज से हमने गोवा को बांट लिया है। पैंतिस प्रतिशत गोवा के जिस हिस्से में तुम ड्रग्स सप्लाई करोगे, उस हिस्से पर मैंने निशान लगा दिए हैं। नक्शा भी तुम्हारे पास ही छोड़े जा रहा हूं। गोवा के बंटवारे को लेकर, कहीं कोई शिकायत हो तो कह सकते हो।"

"मुझे तसल्ली है।" विपुल कैस्टो मुस्कराया।

"तो आज से हम दोस्त हुए। माईकल को संभालना तुम्हारा काम है। अब ना तो तुम हमारे रास्ते में आओगे, ना हम तुम्हारे रास्ते में आयेंगे। मेरे पास खबर है कि माईकल तुम्हारी जान लेने की सोच रहा है।" डोगरा बोला

"किसने कहा?" कैस्टो चौंका। उसके माथे पर बल पड़ते चले गये।

"मेरे आदमियों ने मुझे खबर दी है और वो कभी भी गलत खबर मुझे नहीं देते। खबर के मुताबिक चौबीस घंटों के भीतर वो तुम्हारी हत्या करने वाला है। क्या उससे तुम्हारा कोई झगड़ा हुआ था?"

"खास नहीं, कल छोटे भाई से तू तड़ाग हो गई थी।"

"खैर ये तुम जानो।" कहने के साथ ही डोगरा ने अपनी कमीज़ की जेब में लगा पैन निकालकर कैस्टो की तरफ बढ़ाया—"ये गोल्ड का बना पैन है। खास मैंने अपने लिए सिंगापुर से बनवाया था। इस पैन से मुझे बहुत प्यार है। हमारी दोस्ती की शुरुआत की खुशी में ये पैन तुम्हें देता हूं। ये हमेशा तुम्हें हमारी दोस्ती की याद दिलाता रहेगा।"

"ओह डोगरा साहब।" रीटा इठला कर बोली—"ये पैन तो आप मुझे देने वाले थे।"

"तुम्हें मैं बढ़िया-सा हार ले दूंगा रीटा डार्लिंग।" डोगरा प्यार से बोला।

"थैंक्यू डोगरा साहब।" कैस्टो मुस्करा कर पैन लेता कह उठा—"मैं जल्दी ही आपको बेहतरीन तोहफा भेजूंगा।"

"मैं इन्तजार करूंगा।"

"अब हमें चलना चाहिये।" विपुल कैस्टो उठता हुआ कह उठा—"चार बजे किसी के साथ मेरी मीटिंग है।"

"लेकिन मैं दस-बीस मिनट अभी रुकूंगा।" डोगरा सिर घुमाकर समन्दर की तरफ देखता कह उठा—"मेरा एक खास आदमी समन्दर में घूमने गया है। उसका इन्तजार करूंगा। वो आने ही वाला होगा।"

"मुझे इजाजत दीजिये।"

"जरूर। माईकल को मत भूलना। वो... ।" डोगरा ने कहना चाहा।

"शाम तक माईकल का काम खत्म हो जायेगा। उसमें बहुत हिम्मत आ गई वो मेरे को खत्म करने की सोचने लगा।"

विपुल कैस्टो चला गया।

उसके आदमी भी चले गये।

डोगरा और रीटा की निगाह समन्दर की तरफ उठी। रीटा कह उठी।

"डोगरा साहब! आप भी क्या-क्या चालें चलते हैं। मेरी तो समझ में ही नहीं आता।"

"क्या हुआ रीटा डार्लिंग?"

"माईकल का क्या चक्कर है?" रीटा, डोगरा के बगल वाली कुर्सी पर जा बैठा।

"कैस्टो अब अपने आदमियों से कहेगा कि माईकल उसकी जान के पीछे है उसे खत्म कर दो। माईकल शाम तक खत्म हो या ना हो, परन्तु कैस्टो नहीं रहेगा। ऐसे में हर कोई यही सोचेगा कि माईकल ने कैस्टो को मारा होगा। मेरे बारे में तो हर कोई ये ही सोचेगा कि कैस्टो से मेरी बात तसल्ली बख्श हो गई। मुझसे मिलने के बाद कैस्टो खुश था।" डोगरा मुस्करा पड़ा।

रीटा ने फौरन विलास डोगरा को देखकर कहा।

"आपने क्या चाल चली है?"

"वो गोल्ड का पैन बहुत शानदार है। उसमें एक छोटा-सा, प्यारा सा बम है। मैंने पैन में लगा बटन दबाकर उसे ऑन कर दिया है। और ठीक साढ़े चार घंटों के बाद ब्लास्ट होगा और कैस्टो की कहानी खत्म।" विलास डोगरा समंदर में नज़रें दौड़ाता कह रहा था—"वो पैंतीस परसैंट गोवा मेरे से लेने के सपने देख रहा है। वो सोचता है कि मेरे आदमियों पर हमला करेगा तो मैं डर जाऊंगा। गलत सोचा कैस्टो ने। अभी वो बच्चा है। मैंने उसे नर्क का रास्ता दिखा दिया।"

"ओह डोगरा साहब, आप ग्रेट हैं।" रीटा खुशी से कह उठी—"क्या खूबसूरत चाल चली है आपने।"

डोगरा की निगाह समंदर पर थी।

"मैं चाल नहीं चलूंगा तो सामने वाला चाल चल देगा। बचना है तो पहले चाल चल दो।"

पंद्रह मिनट बाद समंदर से किनारे की तरफ बोट आती दिखाई दी।

"वो टूडे है या जगमोहन?" रीटा कह उठी।
दोनों की निगाहें बोट पर टिकी रही।
जब बोट जरा करीब आई तो टूडे को उन्होंने साफ पहचाना।
"कम ऑन रीटा डार्लिंग।" डोगरा उठता हुआ बोला—"हमें बाहर चलना चाहिए।"
तब तक टूडे की बोट किनारे पर खड़ी अन्य बोटों के पास पहुंच चुकी थी।
विलास डोगरा और रीटा बाहर की तरफ चल पड़े। रीटा ने हमेशा की तरह डोगरा की बांह थामी हुई थी।
रेस्टोरेंट के बाहर डी-गामा होटल की वैन खड़ी थी। पास में ड्राइवर तैयार खड़ा था।
डोगरा और रीटा कुछ पहले ही रुक गए। रमेश टूडे का इंतजार करने लगे। दस मिनट में वो आता दिखा। जब वो पास आया तो उन्होंने देख टूडे का नाक सूजा हुआ है।
"क्या रहा?" डोगरा बोला—"जगमोहन गया ना?"
"शायद। पक्का नहीं कह सकता।" टूडे नेअपनी नाक को छूते हुए कहा—"समंदर में काफी आगे डूबा है वो। बचना आसान नहीं, अगर वो तैरना नहीं जानता तो पक्का मर चुका है। तैरना जानता है तो कुछ कह नहीं सकता।"
"गोली नहीं मारी?"
"रिवॉल्वर समंदर में गिर गई थी।"
"हमने तो जगह बदल ली थी। फिर वो यहां तक कैसे पहुंच गया?" डोगरा ने पूछा।
"वो अकेला ही पीछे आ सका। इत्तेफाक था पीछे आ जाना उसका।" टूडे बोला—"वैसे उसने कहा कि प्रकाश दुलेरा ज्यादा कुछ बताने से पहले ही मर गया था। दुलेरा ने बीच रेस्टोरेंट तक का ही प्रोग्राम बताया था।"
"देखते हैं। पता चल जाएगा। अभी चार दिन तो हमने गोवा में ही बिताने हैं।" डोगरा ने कहा और रीटा के साथ होटल डी-गामा की गाड़ी में जा बैठा। अगले ही पल वो कार वापसी के सफर पर चल दी।
रमेश टूडे अपने कार की तरफ बढ़ गया।
□□□
□□□
विपुल कैस्टो बाहर खड़ी अपनी गाड़ी में जा बैठा। उसकी गाड़ी में एक ड्राइवर था और एक जार्ज नाम का उसका खास आदमी था

और सबसे पीछे वाली सीट पर दो गनमैन बैठे थे। उसकी गाड़ी के आगे-पीछे आदमियों से भरी चार कारें थी। करवार से वे वापस गोवा की तरफ चल पड़े। कैस्टो खुश था। चेहरे पर शांति के भाव थे।

"काम हो गया जार्ज।" कैस्टो मुस्कराकर बोला—"मैं तो सोच रहा था कि डोगरा पंगा खड़ा करेगा। पर वो आराम से मान गया।"

"क्या माना कैस्टो भाई?"

"पैंतीस परसैंट गोवा का हिस्सा मेरा। जहां हम ड्रग्स सप्लाई करेंगे। बाकी उसका। हम दोनों एक-दूसरे के कामों में दखल नहीं देंगे।" तसल्ली भरे अंदाज में कैस्टो ने सिर हिलाया—"ये तो अभी शुरुआत है जार्ज धीरे-धीरे हम डोगरा के धंधे को गोवा से खदेड़ देंगे। हमें टिकने की जगह चाहिए थी, वो मिल गई।"

"मुझे यकीन नहीं आता कि डोगरा ने पैंतीस परसैंट गोवा पर अपना हक छोड़ दिया है।"

"ये देख।" कैस्टो ने जेब से नक्शा निकालकर उसे दिया—"इस पर डोगरा ने अपने हाथों से गोवा के उस हिस्से पर निशान लगाए हैं, जो उसने मुझे दिया है। पंद्रह परसैंट तो वो हिस्सा है, जहां तगड़ी ड्रग्स खपती है।"

जार्ज ने नक्शा खोलकर देखा।

पांच मिनट तक जार्ज नक्शे में मगन रहा। उसके चेहरे पर गंभीरता आ गई।

"कैस्टो साहब मुझे डोगरा पर यकीन नहीं।"

"क्यों?"

"उसने गोवा के जो हिस्से आपको दिए हैं उसमें से कुछ तो इतने महत्वपूर्ण हैं कि उन्हें वो अपने हाथों से नहीं जाने देगा।"

"उसके अपने पास भी तो कई महत्वपूर्ण हिस्से हैं।"

"पर मुझे समझ नहीं आता कि डोगरा आपको पैंतीस परसैंट गोवा क्यों देगा? उसने पंगा खड़ा क्यों नहीं किया। वो आपसे डरता भी नहीं है तो फिर आसानी से आपके हवाले पैंतीस परसैंट गोवा कैसे कर दिया?" जार्ज नक्शे को फ़ोल्ड करता गंभीर स्वर में बोला—"डोगरा बेवकूफ नहीं है जो इतनी आसानी से ये मामला निपटने देगा।"

कैस्टो खामोश रहा। फिर उसने सिग्रेट सुलगाकर कहा।

"मतलब कि ये बात तुम्हारे गले से नीचे नहीं उतर रही?"

"जरा भी नहीं।"

"तुम क्या कहते हो कि डोगरा मेरे साथ कोई चाल चल रहा है?"

"... गेम नहीं खेल रहा। सबसे बड़ा सवाल है कि वो

इतनी आसानी से क्यों मान गया। आठ सालों से गोवा में ही वो ड्रग्स सप्लाई करता है तो वो आपके बीच में आ जाने से परेशान नहीं होगा? क्या वो परेशान हुआ था?''

''जरा भी नहीं।'' कैस्टो बोला।

''तो जरूर कोई गड़बड़ है कैस्टो साहब।''

''मै तो बहुत खुश हो रहा था कि मामला बढ़िया निपट गया। तुम्हारी बात ने तो मुझे परेशान कर दिया।''

जार्ज खामोश रहा।

कैस्टो ने कश लेकर वैन की खिड़की से बाहर देखा और बोला।

''तुम्हारा क्या ख्याल है कि डोगरा अगर हमसे चाल चल रहा है तो वो क्या चाल होगी?''

तभी जार्ज ने वैन चलाते आदमी से कहा।

''पीटर, तुम क्या हर वक्त गाड़ी के पास रहे?''

''जी जनाब।''

''कोई गाड़ी के पास तो नहीं आया?''

''नहीं। मैं वैन में ही बैठा रहा। वो दोनों इस सारे वक्त में गाड़ी से टेक लगाए खड़े रहे।'' पीटर ने कहा।

''ये तुमने क्यों पूछा?'' कैस्टो बोला।

''हमारी गाडी में डोगरा बम भी लगवा सकता है।''

''क्या बकवास है?'' कैस्टो के होठों से निकला—''डोमरा ऐसा नहीं करेगा।''

जार्ज ने कैस्टो को देखा फिर तीखे स्वर में बोला।

''वो कुछ भी कर सकता है।''

कैस्टो ने जार्ज को देखा और गंभीर सा कह उठा।

''तुम कुछ ज्यादा ही शक कर रहे हो।''

''क्योंकि उसने आसानी से आपको धंधे के लिए पैंतीस परसैंट गोवा दे दिया है। मैं तो सोच रहा था वो झगड़ा करेगा।''

''डोगरा बोलता है माईकल मेरी जान लेना चाहता है। चौबीस घंटों में वो मुझे मारेगा।''

''डोगरा ने कहा?'' जार्ज के माथे पर बल पड़े।

''हां। बोलता है उसके आदमियों ने खबर दी है।''

''माईकल का क्या दिमाग खराब है जो वो आपकी जान लेने की सोचेगा।'' जार्ज ने कहा।

''डोगरा चाहता है कि हम माईकल को खत्म कर दें।''

''माईकल परेशानी तो खड़ी कर रहा है लेकिन उसे खत्म कर देने से पहले एक बार उससे बात करनी चाहिए।''

"दो दिन पहले ही माईकल का मामूली-सा झगड़ा जोएल से हो गया था।" कैस्टो बोला—"शायद इस वजह से।"

"ऐसा होता तो माईकल जोएल पर हाथ साफ करता। आप पर तो नहीं। झगड़ा छोटे भाई से हो और बड़े को मारने की सोचना बेवकूफी होगी। कहीं ऐसा तो नहीं कि डोगरा आपको माईकल के खिलाफ भड़का रहा हो।"

"तुम्हारी बातें शक से भरी हुई हैं और मैं....।"

तभी जार्ज का फोन बजा।

जार्ज ने फोन पर बात की।

"हैलो।"

"जार्ज।" दूसरी तरफ से शांत स्वर कानों में पड़ा—"मैं माईकल—पहचाना?"

जार्ज चौंका। उसने एक निगाह कैस्टो पर मारी फिर कह उठा।

"कहो माईकल?"

कैस्टो की निगाह जार्ज पर जा टिकी।

"कैस्टो भाई किधर है?" उधर से माईकल ने कहा।

"बात बोलो।"

"कैस्टो भाई से बात करा सौदे की बात है।"

"कैसा सौदा?"

"बाद में कैस्टो भाई से पूछ लेना। अभी तो मेरी बात करा।" माईकल ने उधर से शांत स्वर में कहा।

"कैस्टो भाई सलामत हैं ना अभी?"

"क्या मतलब?"

"तू वक्त बरबाद कर रहा है उधर कहीं कैस्टो भाई का काम ना हो गया हो।"

जार्ज एकाएक सतर्क हो गया।

"क्या बोला तू?"

"तूने बताया नहीं कि कैस्टो भाई सलामत है?"

"हां।"

"तेरे पास हैं?"

"हां।"

"बात करा, तू टेम बोत खराब कर रहा है जार्ज। टेम ज़रा भी नहीं है।"

जार्ज कान से फोन हटाकर कैस्टो से बोला।

"माईकल आपसे कुछ खास बात करना चाहता है मुझे नहीं बता रहा।"

कैस्टो ने हाथ आगे बढ़ाया तो जार्ज ने उसे फोन थमा दिया। कैस्टो फोन पर बोला।

"तू जोएल से झगड़ा करता है माईकल, मेरे भाई से तू झगड़ा करेगा।"

"वो परसों की बात आप अब भी दिल में रखे हुए हैं उस बात को भूल जाइए। जोएल आपका भाई है, मैं भूलता नहीं। फिर वो झगड़ा तो नहीं था। जरा सी तू-तू-मैं-मैं ही तो थी।" उधर से माईकल की शांत आवाज कानों में पड़ी—"जहां मेरा धंधा होता है वहां मैं कभी भी झगड़ा नेई करता। आप लोगों के साथ मेरा धंधा चलता है कैस्टो भाई।"

"जोएल तेरी शिकायत कर रहा था।"

"ऐसा कुछ नहीं है जोएल साहब से मैं बात कर लूंगा।"

"काम की बात बोल।"

"पचास लाख की बात है। पर मै पांच लाख लूंगा। मंजूर है कैस्टो साहब?"

"बात बोल।"

"पांच लाख।"

"मुझे कैसे पता चलेगा कि पांच लाख की बात है भी या नहीं?"

"पहले बात बताऊंगा, फिर पांच लाख लूंगा।"

"पणजी वाले ठिकाने पर पहुंच।"

"कितनी देर में?"

"एक घंटा।"

"पहुंचा। विलास डोगरा से मिले क्या?" उधर से माईकल ने पूछा।

"तेरे को क्या पता?" कैस्टो की आंखें सिकुड़ीं।

"सब पता रखना पड़ता है मिले क्या डोगरा से?"

"हां।"

"ठीक है कैस्टो साहब। पणजी वाले ठिकाने पर मैं एक घंटे में पहुंच जाऊंगा।" कहकर उधर से माईकल ने फोन बंद कर दिया।

कैस्टो के माथे पर बल थे। उसने फोन जार्ज को दिया।

"क्या बोला?"

"पांच लाख में वो कोई खबर बेचना चाहता है। मेरे ख्याल में माईकल बम फोड़ने जैसी कोई बात कहेगा।"

"मेरे से पूछ रहा था कि कैस्टो भाई सलामत हैं।"

"और मेरे से पूछा कि विलास डोगरा से मिल लिया।" कैस्टो

ने कश लिया और सिग्रेट शीशा नीचे करके बाहर फेंक दी।

"माईकल खामख्वाह फोन करने वाला नहीं।"

"डोगरा की बात सही हो सकती है कि माईकल मुझे मारने के चक्कर में ना हो।"

"क्या बात करते हैं कैस्टो साहब। पणजी वाले ठिकाने पर हमारे आदमी होंगे। वो क्या वहां आकर आप पर हाथ डालेगा। उसका दिमाग खराब नहीं है जो वो ऐसा करेगा। फिर वो आप की जान लेगा ही क्यों?" जार्ज बोला।

"डोगरा ने ऐसा कहा था।"

"आपको डोगरा पर भरोसा है?"

"ज़रा भी नहीं।" कैस्टो का सोच भरा स्वर इंकार में मिला—"पणजी वाले ठिकाने पर जाते ही जबरदस्त इंतजाम कर देना। माईकल अगर कोई चाल चलना चाहे तो वो कामयाब ना हो सके।"

"मैं बढ़िया इंतजाम कर दूंगा, पर माईकल कुछ करने वाला नहीं। आपके साथ उसका कोई भी झगड़ा नहीं।"

"जोएल कहां है?"

"अपने अपार्टमेंट में हो सकता है। वो आजकल अपना ज्यादा समय जूली के साथ बिता रहा है।"

"अगर मुझे कुछ हो जाए तो सब कुछ जोएल संभालेगा।" कैस्टो बोला—"ये बात भूलना मत जार्ज।"

"इस बात को मैं हमेशा याद रखता हूं पर आपको कुछ नहीं होगा।" जार्ज ने मुस्कराकर कहा—"मैं आपके साथ रहता हूं।"

कैस्टो ने मोबाइल निकाला और जोएल को फोन किया।

"हां भाई।" उधर से जोएल की आवाज सुनाई दी—"डोगरा से मुलाकात हो गई?"

"हां। सब ठीक रहा। तू पणजी वाले ठिकाने पर पहुंच—।"

"मैं जूली के साथ लंच करने वाला हूं।"

"माईकल पांच लाख में मुझे कोई खबर बेचने पणजी वाले ठिकाने पर आ रहा है। उधर डोगरा कहता है कि माईकल मेरी जान लेने की बात कर रहा है।" कैस्टो ने शांत स्वर में कहा—"जार्ज कहता है कि माईकल ऐसा कुछ नहीं करने वाला।"

"मैं पणजी पहुंच रहा हूं भाई। तुम इस वक्त कहां हो?" दूसरी तरफ से जोएल ने कहा।

"करवार से वापस आ रहे हैं। पैंतालीस मिनट में पणजी के ठिकाने पर पहुंच जाएंगे।" कैस्टो ने कहा और फोन बंद कर दिया।

❑❑❑
❑❑❑

पणजी वाले ठिकाने पर पहुंचते ही जार्ज ने वहां पंद्रह मिनटों में पक्के इंतजाम कर दिए कि वहां पर माईकल के द्वारा कोई गड़वड़ हो तो उसे संभाला जा सके। तीस बरस का जोएल भी वहां पहुंच गया था। वो गोरे रंग का स्मार्ट युवक था। उसे देखकर यही लगता था कि वो किसी कंपनी में काम करता है। इन दिनों वो गोवा के एक मंत्री की बेटी के साथ इश्क कर रहा था और बाकी बचे वक्त में अपने भाई कैस्टो के साथ धंधे को संभालता था। कैस्टो की वजह से उसे धंधे की कोई चिंता नहीं थी। क्योंकि कैस्टो सब कुछ संभाल लेता था। सारी टैंशन वो ही लेता था।

ये ठिकाना, तीन सौ गज में बनी तीन मंजिला इमारत में था। यहां पर कैस्टो के आदमी सिर्फ डैस्क वर्क ही करते थे। किसी भी तरह का माल यहां मौजूद नहीं होता था। पेपर व्रर्क ही किया जाता था। हिसाब क़िताब देखा जाता था। इमारत की पहली मंजिल पर फुर्सत के समय कैस्टो बैठता था और अपनी योजनाओं के बारे में विचार करता था। अपने काम की सारी मीटिंग वो यहीं पर करता था। ऐसे में इस इमारत के अंदर-बाहर तगड़ा पहरा रहता था।

इस वक्त भी कैस्टो पहली मंजिल पर अपने ऑफिस पहुंचा। जोएल वहां पहले से ही मौजूद था। उसने नीला सूट पहन रखा था। लाल टाई लगा रखी थी। वो जंच रहा था। ये मीडियम साईज़ का हाल था।

एक तरफ बड़ा सा टेबल और उसके आस-पास छः कुर्सियां रखी थी। पीछे वड़ी सी रिवाल्विंग चेयर थी, जिस पर कैस्टो बैठता था।

"माईकल नहीं आया?" जोएल ने पूछा।

"आ रहा है।" कैस्टो अपनी कुर्सी पर बैठता कह उठा।

तभी चार आदमी भीतर आए और बिना कुछ बोले उस जगह पर फैल गए, उनकी जेबों के उभारों से पता चल रहा था कि वहां पर रिवॉल्वर रखे थे। देखने में वो मजबूत इरादों वाले लग रहे थे।

"क्या कहा माईकल ने?"

"वो पांच लाख में मेरे से वास्ता रखती कोई खबर मुझे वेचना चाहता है।" कैस्टो बोला।

"और डोगरा कहता है कि माईकल आपको मारने की फिराक़ में है।" जोएल ने कहा।

"हां।"

"मेरे ख्याल में माईकल ऐसा सोच भी नहीं सकता।"

"जार्ज भी ये ही कहता है।" कैस्टो ने जोएल को देखा—"माईकल ने मुझसे पूछा कि क्या मैं डोगरा से मिल चुका हूं और जार्ज से पूछा कि क्या मैं जिंदा हूं। वो खतरनाक बातें कर रहा है।"

"इसका मतलब उसके पास कोई खबर जरूर है।"

कैस्टो गंभीरता से सिर हिलाकर रह गया।

तभी एक आदमी भीतर आते हुए बोला।

"माईकल आया है साथ में दो लोग हैं। टोनी और डेविड। उन्हें बाहर ही रोका जाए क्या?"

"टोनी और डेविड को भी आने दो, जैसा माईकल चाहे, माहौल को सामान्य रखो।" कैस्टो ने कहा।

वो आदमी बाहर निकल गया।

कैस्टो ने वहां फैलकर खड़े चारों आदमियों को देखा और टेबल की ड्राज खोल लिया। ड्राज में सामने ही रिवॉल्वर पड़ी थी। जोएल ने कोट की जेब में हाथ डाल लिया और उंगलियां रिवॉल्वर से लिपट गईं।

"माईकल से हमें वैसे भी बात करनी है।" जोएल बोला—"वो हमारे लोगों से हफ्ता वसूल करने के चक्कर में है।"

"इस बारे में अभी कोई बात नहीं होगी।" कैस्टो बोला—"वो जो बात करने आया है, वो ही करने दो।"

तभी जार्ज ने भीतर प्रवेश किया। उसके पीछे माईकल, टोनी और डेविड थे। सबसे पीछे कैस्टो के ही दो आदमी थे। माईकल पैंतालिस बरस का खुरदरे चेहरे वाला व्यक्ति था। उसकी शेव कुछ बढ़ी हुई थी। जीन की पैंट के ऊपर गोल गले की सफेद स्कीवी पहनी थी जो कि कुछ मैली हो रही थी। सिर के बाल बिखरकर माथे पर आ रहे थे।

"इसके पास रिवॉल्वर है।" जार्ज बोला—"जिसे ये मेरे हवाले नहीं कर रहा।"

"कोई बात नहीं।" कैस्टो मुस्कराकर कह उठा—"आओ माईकल तुम्हारा ही इंतजार हो रहा था।" फिर उसने जार्ज से कहा—"टेबल पर पांच लाख रख दो, सुनो तो सही कि ये क्या कहना चाहता है।"

"खबर तो बहुत बढ़िया है।" माईकल मुस्कराया फिर जोएल को देखता कह उठा—"परसों हमारी कुछ बात हो गई थी। सुना है तुम अभी तक उस बात को लेकर नाराज हो। ऐसी बातें दिल में नहीं

रखते। छोटी-छोटी बातें चलती ही रहती हैं।"

जोएल के होंठ बंद रहे। वो माईकल को देखता रहा।

"लगता है तुम्हारी नाराजगी दूर करने के लिए मुझे पार्टी देनी पड़ेगी।" माईकल हौले से हंसा।

"पार्टी की कोई जरूरत नहीं माईकल।" जोएल बोला—"खुद को थोड़ा समेटकर रखो।"

"खुद को समेट लूंगा तो काम कैसे चलेगा। पूरे गोवा में डेढ़ सौ से ऊपर छोकरा लोग हैं, जो मेरे वास्ते काम करता है, उनका घर भी तो मैंने चलाना है। नोट तो चाहिए ही होते हैं। अब मैं तुम्हारे भाई के बारे में खास खबर बताने आया हूं। पूरे पचास लाख की खबर है लेकिन सिर्फ पांच लाख ले रहा हूं।"

जार्ज ने टेबल के नीचे की ड्राज से नोटों की गड्डियां निकाल कर टेबल पर रख दीं।

"तुम्हारा पैसा तैयार है माईकल।" जार्ज बोला।

माईकल ने टेबल पर पड़ी नोटों की गड्डियों को देखा फिर करीब आकर कुर्सी पर बैठा। टोनी और डेविड खामोशी से अपनी जगह पर खड़े थे। कैस्टो की निगाह माईकल पर थी।

"खबर जरा देर से मिली। माईकल बोला—"वरना मैंने तो सलाह देनी थी कि डोगरा से भी मत मिलो।"

"अच्छा।" कैस्टो ने शांत स्वर में कहा।

जार्ज सतर्क अंदाज में कैस्टो के पास खड़ा था।

"गोरे को जानते हो कैस्टो साहब?"

"स्काई होटल का मैनेजर और विलास डोगरा का आदमी—वो ही गोरा?" कैस्टो बोला।

"वो ही। एक तरह से गोरा, गोवा में डोगरा के कामों का मैनेजर है। पर अपनी इज्जत करता है। एक बार मैंने उसे पुलिस के झंझट से बचाया था, वरना जेल चला जाता। तब से मेरे को मानता है। आज बारह बजे के बाद की बात है कि वो एक जगह पर सामने पड़ गया। थोड़ी बहुत बात हुई तो उसने बताया कि डोगरा गोवा में है और आज आपसे मिलने वाला है। अंदर की खबर उसने मुझ पर भरोसा करके बताई कि कैस्टो कल का सूरज नहीं देख सकेगा। वो बोला, ये डोगरा के मुंह से निकले शब्द हैं। ग्यारह बजे उसे किसी काम के लिए डोगरा का फोन आया था और तब बात होने पर डोगरा ने ये शब्द उसे कहे थे।"

कैस्टो की एकटक निगाहें माईकल पर थीं।

माईकल गंभीर निगाहों से कैस्टो को देख रहा था।

"तुम्हारा मतलब कि डोगरा बोला मैं कल का सूरज नहीं देखूंगा।" कैस्टो बोला।

"ये ही मतलब है मेरा।"

"लेकिन मैं तो डोगरा से मिलकर आ गया। हमारी मुलाकात अच्छी रही। कुछ भी नहीं हुआ।" कैस्टो बोला।

"कल का सूरज निकलने में अभी बहुत वक्त बाकी है कैस्टो साहब। गोरा मेरे से गलत बात तो कहेगा नहीं। डोगरा के पास बहुत वक्त है कुछ भी करने के लिए। ये सोचना तो आपका काम है।" माईकल बोला।

"तुम्हारा मतलब कि डोगरा कुछ करेगा?"

"ये बात उसने गोरा को कही है तो जाहिर है कि वो चुप नहीं बैठेगा। जरूर कुछ सोच रखा होगा।"

एकाएक कैस्टो की आंखें सिकुड़ीं। उसका हाथ कमीज की जेब में लगे गोल्ड के पैन पर चला गया जो कि विलास डोगरा ने भेंट स्वरूप दिया था। पैन हाथ में आ गया नज़रें पैन पर ही रही।

"क्या मेरी दी खबर की कीमत पांच लाख है?" माईकल बोला।

"पांच लाख से भी ज्यादा है।" कैस्टो फौरन ही अजीब से अंदाज में मुस्करा पड़ा।

"तो ये नोटों की गड्डियां किसी लिफाफे में डलवा दीजिए।" माईकल बोला—"अगर डोगरा के पास करने के लिए बहुत वक्त बाकी है तो आपके पास भी खुद को बचाने के लिए बहुत वक्त है, मैं ना बताता तो आप अनजाने में मारे जा सकते थे।"

"शुक्रिया माईकल।" कैस्टो ने हाथ में पकड़ा गोल्ड का पैन टेबल पर माईकल की तरफ सरकाते हुए कहा—"तुमने ये खबर मुझे दी। मैं तुम्हारा एहसानमंद हूं। ये गोल्ड का पैन है। मैंने खास सिंगापुर से बनवाया था। मेरी तरफ से तुम रखो। इस पैन से मुझे बहुत प्यार है, लेकिन ये मैं तुम्हें दे रहा हूं क्योंकि तुमने मुझे काम की खबर दी। आगे भी तुम इसी तरह से मेरा ध्यान रखोगे।"

"मैं इस पैन को संभालकर रखूंगा।" माईकल ने मुस्कराकर कहा और पैन उठाकर जेब में रख लिया।

"जार्ज। पांच लाख पैक करके माईकल को दे दो।"

जार्ज ने एक आदमी को इशारा किया। वो आदमी तुरंत बाहर निकल गया।

"गोरे ने ऐसा कुछ इशारा नहीं दिया कि डोगरा मेरे पर कैसी कोशिश करने वाला है?" कैस्टो ने पूछा।

"इससे ज्यादा गोरे को नहीं पता। मैं उसे टटोल चुका हूं।" माईकल बोला।

"उसे फिर फोन पर पूछना शायद कोई उसे नई बात पता लग गई हो।"

माईकल ने सिर हिला दिया।

तभी वो ही आदमी पुनः कमरे में आया। हाथ में काला लिफाफा था। उसमें पांच लाख डालर माईकल को दिया गया। टोनी ने वो लिफाफा थाम लिया फिर माईकल उन दोनों के साथ वहां से चला गया।

वहां खड़े बाकी के आदमी भी बाहर निकल गए।

इधर कैस्टो, जार्ज और जोऐल ही रह गए।

कैस्टो ने सिगरेट सुलगाई और कश लिया। चेहरे पर गंभीरता थी।

"उस पैन का क्या चक्कर है भाई?" जोएल ने पूछा।

"डोगरा ने जो कहकर पैन मुझे दिया था, वो ही कहकर मैंने वो पैन माईकल को दे दिया। इन हालातों में डोगरा की कोई भी चीज पास में रखना मैं ठीक नहीं समझता।" जोएल को देखने के बाद कैस्टो ने जार्ज को देखा—"माईकल की बताई बात को हम हल्के में नहीं ले सकते।"

"क्या पता माईकल की बात, में दम ही ना हो।" जोएल बोला।

"दम है।" जार्ज कह उठा—"माईकल की खबर को मैं सही मानता हूं।"

"वजह?" जोएल ने जार्ज को देखा।

"उसने ये भी बताया कि खबर उसे, गोरे से मिली है। ऐसे में माईकल गलत नहीं है। वो जानता है कि वक्त आने पर हम गोरे का मुंह खुलवा सकते हैं कि उसने ये बात माईकल को कही थी या नहीं।"

"मैं माईकल की बात से इत्तफाक रखता हूं।" कैस्टो गंभीर स्वर में बोला।

"और डोगरा ने जो कहा कि माईकल तुम्हें मारना चाहता है।" जोएल कह उठा।

"वो मामला अब मैं समझा।" कैस्टो बोला—"डोगरा मुझ पर कोई हमला करवा सकता है। ऐसे में वो नहीं चाहता कि मैं सोचूं कि हमला डोगरा ने करवाया है। इसलिए उसने माईकल का नाम लिया कि ऐसे मौके पर मैं माईकल को शक की निगाह से देखूं।"

"तुमने वो पैन माईकल को दे दिया। बेहतर होता कि उसे चैक करवाते कि उसमें कोई गड़बड़ तो नहीं?"

"वो माइकल के पास है और खुद-ब-खुद ही चैक हो जाएगा।" कैस्टो बोला।

"हमें इस तरह बातें में वक्त नहीं गंवाना चाहिए।" जार्ज ने व्याकुलता से कहा।

"तुम ठीक कहते हो।" कैस्टो कुर्सी से उठता बोला—"मैं कल तक के लिए अंडरग्राउण्ड होने जा रहा हूं कि डोगरा अगर कोई कोशिश करे तो सफल न हो सके। जोएल तुम मेरे साथ रहोगे।"

"मेरे पास जगह है। खास जगह। मैं वहीं रहूंगा।" जोएल बोला।

"जूली भी तो वह जगह जानती होगी।" कैस्टो मुस्कराया।

"हां।" जोएल मुस्करा पड़ा।

"जूली के बारे में गंभीर हो या वक्त बिता रहे हो?"

"वो मुझसे शादी करना चाहती है।"

"तो कर लो।" कैस्टो कह उठा—"मंत्री की बेटी है। हमारे धंधे में मंत्री हमें फायदा पहुंचा सकते हैं।"

"सोचूंगा।"

"जाओ तुम और जहां भी रहो किसी को पता ना चले। बाहर भी मत निकलना। बाकी बात हम फोन पर करेंगे।"

जोएल चला गया तो कैस्टो ने जार्ज से कहा।

"बेहतर होगा, तुम भी कल सुबह तक किसी सुरक्षित जगह पर रहो और फोन पर सबसे सम्पर्क में रहो। माईकल का कहना है कि मैं कल सुबह तक का सूरज नहीं देख पाऊंगा। ऐसा डोगरा ने गोरे से कहा। तो देखते हैं डोगरा क्या करता है।"

"आप कहां पर रहेंगे कैस्टो साहब?" जार्ज ने पूछा।

"अभी मैंने सोचा नहीं पर मैं यहां से जा रहा हूं।"

"मेरा मतलब था कि अगर मैं भी आपके साथ रहता तो क्या बेहतर नहीं होता?" जार्ज ने कहा।

"मेरी फिक्र मत करो, मैं ठीक रहूंगा।" कहने के साथ ही कैस्टो ने वक्त देखा, शाम के पांच बज रहे थे—"मैं पीछे के रास्ते से बाहर निकलूंगा, वहां कोई कार खड़ी है हमारी?"

"नहीं।" मैं अभी कार पीछे की तरफ भेज... ।"

"रहने दो, उस तरफ से मैं बाजार में निकल जाऊंगा और फिर टैक्सी ले लूंगा ये ठीक रहेगा।"

"क्या पता डोगरा की निगाह पीछे की तरफ भी हो।" जार्ज ने कहा।

"फिक्र मत करो।" कैस्टो के चेहरे पर खतरनाक मुस्कान उभरी—"मैं तुम्हें जिंदा मिलूंगा जार्ज।"

□□□
□□□

विपुल कैस्टो ज्यादा दूर नहीं गया था। वो टैक्सी में छः किलोमीटर दूर बीच पर स्थित अपने दोस्त के होटल 'माऊंटव्यू' जा पहुंचा था और एक कमरे में जा बैठा। वो जानता था कि उसका पीछा नहीं किया गया। सब ठीक था, परंतु माईकल की कही बात के प्रति गंभीर था। डोगरा ऐसा कुछ कर सकता था। उसका पैंतीस परसैण्ट गोवा का हिस्सा देना जार्ज को खटका था, कैस्टो ने सोचा, सही तो लगा था जार्ज को कि वो अपने चलते धंधे में से पैंतीस परसैंट हिस्सा क्यों देगा? कम से कम इतनी आसानी से क्यों देगा? उसे ये बात पहले ही सोच लेनी चाहिए थी। डोगरा ने ये ही चाल खेली कि बैठकर प्यार-मोहब्बत से बात करें और चंद घंटों बाद उसे मार दे। ऐसे में कोई उस पर शक भी नहीं करेगा कि ये काम उसने किया है।

तभी वेटर आया। वेटर पुराना और उसे अच्छी तरह जानता था।

"कुछ लाऊं सर?" वेटर ने मुस्कराकर पूछा।

"अभी नहीं, जब अंधेरा होने लगे, तो बियर ले आना। बस एक कॉफी ला दो।"

"रात रुकेंगे?" वेटर ने पूछा।

"हां। सैमुअल कहां है?" सैमुअल उसका दोस्त और होटल का मालिक था।

"वो आज किसी की मैरिज में गए हैं परिवार के साथ।"

कैस्टो ने सिर हिलाया।

"रात के लिए लड़की का इंतजाम कर दूं? दो नई छोकरी हैं, एकदम नई हैं।"

कैस्टो ने सोचा फिर सिर हिलाया।

"रात मैं अकेले ही बिताना चाहता हूं।"

"ठीक है सर, मैं काफी लेकर आता हूं।" वेटर ने कहा और चला गया। दरवाजा खुला ही रहा।

कैस्टो ने जोएल को फोन किया।

"ठीक है तू?" कैस्टो ने पूछा।

"हां।" उधर से जोएल ने कहा—"ये जगह सुरक्षित है। जूली आने वाली है।"

"जब तक मैं ना कहूं, तब तक बाहर मत निकलना।"

"ओके...तुम कहां से?"

"सैमुअल के...।"

"समझ गया।"

कैस्टो ने फोन बंद करके रखा और सिग्रेट सुलगा ली।

वेटर कॉफी दे गया तो उठकर दरवाजा बंद कर लिया। कॉफी समाप्त की।

साढ़े छः बजे फोन बज उठा।

"हैलो।" कैस्टो ने बात की।

"कैस्टो साहब।" जार्ज की घबराई आवाज कानों में पड़ी—"गजब हो गया, माईकल, टोनी और डेविड विस्फोट में मारे गए।"

"विस्फोट?" कैस्टो की आंखें सिकुड़ीं।

"वो तीनों एक बार में बैठे बियर ले रहे थे, एक ही टेबल पर थे, देखने वालों ने बताया कि पहले विस्फोट से माईकल उड़ा फिर उसके करीब बैठे टोनी और डेविड भी विस्फोट की चपेट में आ गए।" उधर से जार्ज ने कहा।

"वो पैन।" कैस्टो के होठों से निकला—"उस पैन में बम था जार्ज, डोगरा मुझे मारना चाहता था। माईकल की खबर सही थी, परंतु माईकल की खबर सुनकर मैंने सावधानी वश वो पैन माईकल को दे दिया। ओफ—हरामजादा डोगरा।" कैस्टो का चेहरा दरिंदगी से भरने लगा—'कुत्ते के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। अब वो गोवा से बाहर जिंदा नहीं जा सकेगा। मैं उसे... ।"

"कैस्टो साहब... ।"

"गोवा की जमीन पर खड़ा होकर मेरी जान लेने की कोशिश करता है। हरामजादे को मैं कल का सूरज नहीं देखने दूंगा—मैं उसकी लाश को गोवा की सड़कों पर घंसीटूंगा। उसे तो मैं... ।"

"कैस्टो साहब।"

"जार्ज।" धधक रहा था, कैस्टो का चेहरा—"अभी तैयारी कर। उसे पिल्ले को 'डी-गामा' से ऐसे का ऐसे ही उठा लाने... ।"

"कैस्टो साहब मेरी भी तो सुनिए।"

क्रोध में कांप रहा था कैस्टो का चेहरा।

"मैं कुछ कहूं?" उधर से जार्ज ने कहा।

"कहो।" कैस्टो ने दांत पीसकर कहा।

"गुस्सा कम कीजिए। तभी तो मेरी बात समझ पाओगे।"

"बोलो जार्ज, जल्दी कहो।" कैस्टो गुस्से से कांप रहा था।

"विलास डोगरा को गोवा से जाने दीजिए।"

"जार्ज तुम बेवकूफी वाली बात— ।"

"आप गुस्से में हैं, मैं गुस्से में नहीं हूं। इसलिए ठीक से सोच

पा रहा हूं तभी तो कहा है गुस्सा कम कीजिए। डोगरा को आराम से गोवा से जाने दीजिए। उसके जाने के बाद हम गोवा में डोगरा की ड्रग्स नहीं आने देंगे। जो लोग ये काम करते हैं, उन्हें खत्म कर देंगे और जो डीलर उसकी ड्रग्स को आगे बेचते हैं उन डीलरों को साफ-साफ धमकी देंगे। दो-चार ऐसे भी होंगे, जो हमारी बात नहीं मानेंगे तो उन्हें हम शूट कर देंगे। ये देखकर सब हमारी बात मानेंगे। हम गोवा से डोगरा का नामोनिशान मिटा देंगे। उसका ये हाल कर देंगे कि वो गोवा में कभी पैर नहीं रख सकेगा। आया तो हम अपने सारे काम छोड़कर उसे खत्म करेंगे। गोवा में सिर्फ हमारी ही ड्रग्स चलेगी। पुलिस को पहले ही सैट करना पड़ेगा। सात दिन में फैसला हो जायेगा और आप गोवा के बेताज़ बादशाह बन जाएंगे। डोगरा को इसी तरह जवाब देना बेहतर है। इस बार उसे गोवा से जाने दीजिए। अगर हम डोगरा को मारने के चक्कर में पड़ जाएंगे तो धंधे से भटक जाएंगे। डोगरा तो फिर भी हाथ आ जाएगा, परंतु धंधा नहीं।"

कैस्टो ने आंखें बंद कर ली। वो अभी भी गुस्से में था। कांप रहा था। तेज सांसें ले रहा था। एक हाथ से फोन कान से लगा रखा था। होंठ भिंचे हुए थे। चेहरे पर खतरनाक भाव थे।

"कैस्टो साहब।"

"हां।" कैस्टो अपने पर काबू पाने की चेष्टा कर रहा था।

"मेरी बात मान लीजिए। हम इस वक्त गुस्से में हैं और ये सब करके दिखा भी देंगे। आप सब कुछ मुझ पर छोड़ दीजिए। मैं गुपचुप तैयारी शुरू कर देता हूं। डोगरा के कौन आदमी गोवा में माल लाते हैं। उनकी डिलीवरी कौन लेता है। सब पता है। इन सब लोगों की लिस्ट बना रखी है मैंने। इन पर आदमी लगा देता हूं। और डोगरा के गोवा से जाते ही एक ही दिन में इन सबको चुन-चुनकर मारेंगे। अपने आदमी आज से ही इन पर नज़र रखना शुरू कर...।"

"ठीक है जार्ज।" कैस्टो ने आंखें खोली—"मैं सब कुछ तुम पर छोड़ता हूं।"

"मैं सब संभाल लूंगा, लेकिन जब तक डोगरा गोवा में है आप खुले में नहीं आना, जहां है, वहीं रहें। झगड़े में पड़कर हमने वक्त नहीं गंवाना है। हमसे पंगा लेने का क्या मतलब है, डोगरा को समझा देंगे।"

"जार्ज।" कैस्टो अपने गुस्से को दबाता कह उठा—"उस पैन ने तो कमाल कर दिया।"

"सच में। उस पैन ने तो डोगरा के हाथों से गोवा निकाल दिया कैस्टो साहब।" अब जार्ज की आने वाली आवाज में भी सख्ती आ गई थी—"वो पैन डोगरा को कभी नहीं भूलेगा।"

"माईकल को ऊपर स्वर्ग मिलेगा ना?" कैस्टो ने गहरी सांस ली।

"पक्का कैस्टो साहब। माईकल तो स्वर्ग में पहुंचकर बहुत खुश होगा।" जार्ज का स्वर आया।

"तू जो करना चाहता है जार्ज शुरू कर दे। अब नींद मत लेना। मुझे खबर करते रहना।" कैस्टो ने बेहद शांत स्वर में कहा—"डोगरा को अब गोवा रास नहीं आना चाहिए।"

❑❑❑

❑❑❑

6.50 हो रहे थे।

देवराज चौहान चिंता भरे अंदाज में होटल नाइट शाईन के कमरे में टहल रहा था। उसके होंठ भिंचे हुए थे। हाव-भाव से व्याकुलता टपक रही थी। माथे पर रहकर बल नज़र आ रहे थे। हरीश खुदे कुर्सी पर बैठा रहकर देवराज चौहान को देखने लगता था। ऐसा लग रहा था जैसे देर से दोनों के बीच कोई बात ना हुई हो।

"लगा।" देवराज चौहान ने ठिठककर खुदे से कहा।

खुदे ने मोबाइल निकाला और नम्बर मिलाने लगा। एक बार, दो बार, तीन बार परंतु नंबर नहीं लगा।

"कोई फायदा नहीं।" खुदे फोन जेब में रखता कहा उठा—"स्विच ऑफ आ रहा है।"

"कुछ हो गया है खुदे?" देवराज चौहान के दांत भिंच गए—"जगमोहन, रमेश टूडे के पीछे था उससे जब आखिरी बार बात हुई तो वो करवार में डोगरा पर नज़र रख रहा था कि उसके बाद उसका कोई फोन नहीं आया।"

"वो उनकी नज़रों में आ गया होगा।" खुदे ने गंभीर स्वर में कहा।

देवराज चौहान की कठोर निगाहें खुदे पर जा टिकीं।

"वो उनकी नज़रों में आ गया होगा।" देवराज चौहान ने खुदे को घूरा—"ये बात तुमने कितनी आसानी से कह दी। जानते हो इसका मतलब क्या है। इसका मतलब है जगमोहन, रमेश टूडे जैसे हत्यारे से टकरा गया। टूडे ने ही हमें घेरा होगा।"

खुदे ने सहमति में सिर हिलाया।

"टूडे कितना खतरनाक है। कल रात मैंने देख लिया था। तुमने भी तब देखा था उसे। अगर जगमोहन उसका मुकाबला ना कर सका होगा तो इसका मतलब जानते हो?" देवराज चौहान गुर्रा उठा—"जगमोहन की जान जा सकती है इसमें।"

"शायद चली भी गई हो।" खुदे गंभीर सा कह उठा—"कई घंटों से जगमोहन से हमारा सम्पर्क नहीं हुआ। अब क्या पता इस वक्त के बीच उसके साथ क्या हुआ है? वो सही हालत में होता तो फोन जरूर करता।"

देवराज चौहान के होंठों से गुर्राहट निकली।

"अब हम उसे कहां ढूंढे। हमें तो पता भी नहीं है कि वो कहां होगा?" खुदे ने पुनः कहा—"अगर जगमोहन और टूडे आमने-सामने पड़ गए हैं और जगमोहन खुद को बचा नहीं सका तो इस वक्त उसकी लाश कहीं करवार में ही...।"

"खुदे...।" देवराज चौहान गुर्रा उठा। चेहरा धधक उठा उसका।

खुदे चुप कर गया।

"जगमोहन को कुछ नहीं होना चाहिए, वरना मैं...।"

तभी नगीना दरवाजा खोलते हुए भीतर आई और देवराज चौहान के चेहरे के भावों को देखकर ठिठक गई। उसने खुदे पर निगाह मारी। गंभीरता थी उसके चेहरे पर फिर कह उठी।

"जगमोहन की कोई खबर?"

खुदे ने इंकार में सिर हिला दिया।

नगीना ने दरवाजा बंद किया और व्याकुल स्वर में कह उठी।

"जगमोहन का फोन ना मिलना और उसका फोन ना आना जाहिर करता है कि उसके साथ बुरी घटना घट गई है।" नगीना के चेहरे पर कठोरता आ गई—"स्पष्ट है कि वो विलास डोगरा के हाथों में जा पड़ा है।"

"टूडे के।" खुदे बोला।

"एक ही बात है टूडे डोगरा का ही हिस्सा है...।"

"टूडे के हाथों फंसने का एक ही मतलब है कि उसने जगमोहन को जिंदा नहीं छोड़ा होगा।" खुदे ने कहा।

कोई कुछ ना बोला।

देवराज चौहान के चेहरे पर क्रोध और विवशता के भाव दिखे।

नगीना के चेहरे पर कठोरता थी।

"अब हमें क्या करना चाहिए?" खुदे बोला।

"हम डी-गामा होटल चलेंगे।" देवराज चौहान गुर्रा उठा—"डोगरा से जगमोहन के बारे में पूछेंगे और डोगरा को खत्म...।"

तभी दरवाजे पर थपथपाहट हुई। सबकी निगाह दरवाजे की तरफ उठी। खुदे जल्दी से कुर्सी से उठकर दरवाजे की तरफ बढ़ा कि बाहर जगमोहन ना हो, परंतु आने वाली मोना चौधरी थी।

मोना चौधरी ने देवराज चौहान के सुलगते चेहरे को देखा।

देवराज चौहान ने अपने चेहरे के भावों पर काबू पाने की असफल चेष्टा की।

"मेरे ख्याल में जगमोहन के बारे में बातें चल रही हैं?' मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा।

मोना चौधरी की बात पर वे तीनों चौंके।

"तुम्हें जगमोहन के बारे में क्या पता?" नगीना के होठों से निकला।

"उसकी चिंता करने की जरूरत नहीं।" मोना चौधरी ने तीनों को देखकर कहा—"वो महाजन के पास है, बिल्कुल ठीक है। परंतु अभी होश में नहीं है। खतरा नहीं है उसे किसी प्रकार का, निश्चिंत रहो।"

"कहां है वो?"

"करवार के एक होटल में।"

"क्या हुआ था?"

"मैं ज्यादा नहीं जानती।" मोना चौधरी बोली और टूडे का हुलिया बताकर बोली—"ये आदमी उसे रिवॉल्वर के दम पर समंदर में ले गया था। तब महाजन जगमोहन के पीछे, उस पर नज़र रख रहा था। मैं और पारसनाथ यहां बीच रैस्टोरेंट में थे, जहां तुम सब लोग डोगरा के आने का इंतजार कर रहे थे। परंतु महाजन सुबह से ही जगमोहन पर नज़र रख रहा था। इस प्रकार वो जगमोहन के पीछे करवार पहुंचा। वो आदमी जगमोहन को बोट पर समंदर में ले गया और पौन घंटे बाद अकेला ही वापस लौटा। महाजन समझ गया कि उसने जगमोहन की हत्या कर दी है। फिर भी महाजन बोट लेकर जगमोहन की तलाश में समंदर में चला गया। वहां उसे जगमोहन कैसे मिला। ये तो मुझे मालूम नहीं परंतु इस वक्त वो महाजन के पास बेहोशी की अवस्था में करवार के एक होटल में मौजूद है।"

'महाजन ने जगमोहन को बचाकर हम पर एहसान किया मिन्नो।" नगीना खुशी भरे स्वर में कह उठी।

"मैं तुम लोगों का ये एहसान याद रखूंगा मोना चौधरी।" देवराज चौहा[illegible]क तनाव मुक्त होने लगा था।

खुद के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ ठहरी।

देवराज चौहान चेहरे पर मौजूद कल के घावों के निशानों को टटोलने लगा। जगमोहन के ठीक होने की खबर पाकर वो बड़ी राहत महसूस कर रहा था। वरना जगमोहन के बारे में सोचकर तो उसकी जान ही निकली हुई थी।

मोना चौधरी बाहर निकल गई।

"तो हमारा ख्याल ठीक निकला कि जगमोहन की भिड़ंत टूडे के साथ हो गई थी।" खुदे बोला।

"जगमोहन ने कहा था कि टूडे निशाने पर है उसके। पर मैंने मना कर दिया था।" देवराज चौहान नें कहा। चेहरे पर कठोरता थी और सोचे नाच रही थीं—"अब डोगरा सतर्क हो चुका है। आज बीच रैस्टोरेंट पर उसने विपुल कैस्टो से मिलना था, परंतु एकाएक उसने जगह बदल ली। स्पष्ट है कि वो समझ गया है कि प्रकाश दुलेरा ने हमें उसके प्रोग्राम के बारे में बता दिया है। अब वो चार दिन और गोवा में है। इन चार दिनों में हम उसे आसानी से समझा सकते हैं कि हमें दुलेरा ने कुछ नहीं बताया।

'वो कैसे?" खुदे बोला।

"गोवा के बाद, डोगरा का अगला पड़ाव कर्नाटक का शहर हवेरी है। अब उसने कहां पर कितने बजे किससे मिलना है, हम जानते हैं। हम कल सुबह ही हवेरी के लिए रवाना होंगे और हवेरी में डोगरा को घेरने का पूरा जाल बिछाएंगे। वो यहां पर व्यस्त होगा और हम हवेरी में उसके लिए जाल तैयार कर रहे होंगे। गोवा में हमें आगे कुछ ना करता पाकर वो यही समझेगा कि हमें उसके प्रोग्राम का कुछ पता नहीं है और हम वापस चले गए हैं। उसकी वजह शायद वो ये समझेगा कि हम जगमोहन के लापता होने से परेशान हैं।"

"इन हालातों में हम और गोवा में रहे तो डोगरा से टकराव हो जाने की संभावना ज्यादा हो जाएगी।" नगीना ने कहा।

"ये भी संभव है।" देवराज चौहान ने सिर हिलाया।

'तो कल हम हवेरी के लिए निकल रहे हैं?" खुदे बोला।

"हां।" फिर देवराज चौहान ने नगीना से कहा—"तुम देवेन साठी, बांके और सरबत सिंह के साथ कल हवेरी के लिए चलोगी और उधर थामस पार्क के पास गोल्डन होटल में रुकोगी।"

नगीना ने सिर हिला दिया।

उसी वक्त दरवाजा खुला और पारसनाथ ने भीतर कदम रखा।

"मैं अभी बाहर से आया हूं।" पारसनाथ बोला—"बाहर कुछ लोग मंडरा रहे हैं, जैसे वे होटल् पर नज़र रख रहे हों, मैंने ये बात मोना चौधरी को बताई तो उसने कहा कि तुम लोगों को बता दूं। मोना चौधरी अब तुम लोगों के काम आ रही है।"

'कितने आदमी हैं बाहर?" देवराज चौहान ने पूछा।

"पांच-छः तो मैंने देखे हैं।"

"वो इस होटल पर नज़र रख रहे हैं।"

"पक्का। वो तुम लोगों के लिए ही मौजूद होंगे, हमारे लिए नहीं।" कहकर पारसनाथ चला गया।

"वो डोगरा के आदमी होंगे।" खुदे ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

चंद पल वहां चुप्पी रही फिर नगीना कह उठी।

"मैं साठी के पास जा रही हूं। सुबह हवेरी के लिए जाने का प्रोग्राम पक्का है ना?"

"रुको अभी।" देवराज चौहान सोच भरे स्वर में बोला—"डोगरा के आदमियों ने हमें ढूंढ निकाला है और बाहर वो हम पर नज़र रख रहे हैं। हो सकता है कि रात में वो हम पर हमलाकर दें या हम पर नज़र ही रखें। अगर सुबह तक सब कुछ ठीक रहता है तो जाना हमने हवेरी ही है, परंतु पहले एक घंटे तक हम मुम्बई के रास्ते पर जाएंगे। अगर डोगरा के आदमी हम पर नज़र रख रहे हों तो वो यही समझें कि हम मुम्बई वापस चले गए हैं फिर वहां से पलटकर कर्नाटक के हवेरी शहर की तरफ चल देंगे। जैसे हम अलग-अलग ग्रुप में गोवा तक आए हैं, सुबह इसी तरह ही हम सब यहां से चलेंगे। मैं डोगरा को विश्वास दिला देना चाहता हूं कि हम उसके पीछे से हट गए हैं।"

"समझ गई।" नगीना बोली।

"ये बात मोना चौधरी से भी कह देना कि हम किस प्रकार गोवा से निकलकर हवेरी जाएंगे। वो भी हमारे पीछे जरूर आना चाहेगी।"

"महाजन और जगमोहन?" नगीना ने पूछा।

"उनकी तुम फिक्र मत करो। महाजन का फोन नंबर मेरे पास है। मैं उसे बता दूंगा कि जगमोहन के साथ उसे हवेरी कहां पर आना है। वैसे जगमोहन हवेरी के प्रोग्राम के बारे में सब कुछ जानता है। वो समझ जाएगा।"

नगीना बाहर गई तो खुदे बोला।

"अगर बाहर मौजूद आदमियों ने रात में ही हम पर हमलाकर दिया तो?"

"मेरे ख्याल में वो ऐसी बेवकूफी नहीं करेंगे। ये गोवा का भीड़-भाड़ वाला इलाका है। यहां वो गोलियां नहीं चलाना चाहेंगे। फिर भी हम इस बात की तैयारी कर लेते हैं कि हमला होने पर उन्हें जवाब दे सकें।" देवराज चौहान गंभीर स्वर में बोला—"मैं जगमोहन के बारे में सोच रहा हूं कि पता नहीं उसके साथ क्या हुआ होगा। महाजन ने उसे किस हाल में समंदर से निकाला होगा?"

"वो ठीक है। हमारे लिए इतना ही बहुत है।" खुदे ने कहा।

□□□
□□□

देवेन साठी कठोर-सी निगाहों से नगीना को देखता कह उठा।

"ये तुमने क्या मजाक बना रखा है कभी कोल्हापुर, कभी गोवा तो कभी हवेरी। तुम मुझे... ।"

"साठी।" नगीना बोली—"मैं दिन में दो बार तुम्हारे परिवार से तुम्हारी बात कराती हूं।"

"तो?" साठी ने होंठ भींच लिए।

'तुम्हें इसी बात में तसल्ली होनी चाहिए कि तुम्हारा परिवार सुरक्षित है। तुम जो भी कर रहे हो अपने परिवार की खातिर कर रहे हो और हम तुम्हें साथ लेकर जो करना चाहते हैं, उसका मतलब है आने वाले वक्त में होने वाले झगड़े को रोकना। तुम देवराज चौहान को अपने भाई का हत्यारा समझते हो, जबकि तब देवराज चौहान की कमान पीछे से डोगरा संभाले हुए था।"

"तुम क्या समझती हो कि तुम्हारी बकवास पर मैं यकीन कर लूंगा।" साठी गुर्राया।

"यकीन दिलाने के लिए ही तो तुम्हें साथ-साथ लिए घूम रहे हैं...। तुम्हारी एक मुलाकात डोगरा से हो जाए तो... ।"

"ठीक है माना, एक मुलाकात डोगरा से हो गई। परंतु उसने वो बात ना कही, जो तुम उसके मुंह से निकलवाना चाहते... ।"

"वो कहेगा।" नगीना का चेहरा खतरनाक भावों से भर उठा।

साठी ने नगीना को घूरा।

"उसके सिर से रिवॉल्वर लगाकर तो तुम लोग उसे कुछ भी कहने को मजबूर कर सकते हो?"

"हमारी कोशिश होगी कि ऐसा ना हो। वो खुशी से इस बात को कबूलेगा।" नगीना ने सख्त स्वर में कहा।

"लेकिन मुझे ये पसंद नहीं कि तुम लोग कुत्ते की तरह मुझे अपने साथ घुमाते रहो। मत भूलो मैं देवेन साठी हूं, और तुम लोगों से ज्यादा ताकत रखता हूं। बेशक अपने परिवार की वजह से, परंतु एक हद से ज्यादा मैं नहीं दब सकता।"

"हमारा तुमसे वादा है कि डोगरा के मरते ही तुम्हारे परिवार को आजाद कर देंगे।"

"अभी क्यों नहीं उन्हें आजाद कर देते?"

"अभी तुम्हारे परिवार को आजाद किया तो तुम देवराज चौहान की जान लेना चाहोगे।"

"मैं जुबान देता हूं कि जब तक देवराज चौहान डोगरा को खत्म नहीं कर देता, मैं उसे कुछ नहीं कहूंगा।"

"तुम बाद में भी उसे कुछ मत कहो। हम इस कोशिश में हैं।"

"वो मेरे भाई का हत्यारा....।"

"साठी।" खामोश बैठे बांके लाल और राठौर का हाथ मूंछ पर जा पहुंचा—"थारी खोपड़ों में बातों ना आयो हो कि अम थारे को समझानो के वास्तो साथो में रखे हुए हो कि असल बातो कुछो ओरो हौवे।"

"तुम लोगों की बातों का मैं यकीन करने वाला नहीं।" साठी ने दांत पीसकर कहा।

"महारे को लागो थारे को अपणो परिवारो की फिक्रो ना हौवे हो।"

"धमकी दे रहे हो?" साठी का चेहरा गुस्से से सुलग उठा।

"आहो।" बांकेलाल राठौर खतरनाक स्वर में कह उठा—"थारे परिवार को 'वडो' हो का?"

साठी दांत भींचे कसमसा कर रह गया।

"थारे को वो ही करणों पड़ो जो अंम चाहो दो। तुम महारी मुट्ठी में हौवे। महारें को खुशी ना हौवे थारे को गोदों में ले-ले के घूमणों का। म्हारें सिरो पर भी बोझो पड़ो हो। महारे को ओरो गुस्सा मतो दिलायो।"

"मैं तुम लोगों को छोड़ूंगा नहीं।" देवने साठी बेबस सा कह उठा।

"अभी तो तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" सरबत सिंह बोला—"अच्छा ये ही है कि हमारी बात मानते रहो।"

साठी कसमसाया सा बैठा रहा। कुछ नहीं बोला।

कुछ मिनट की चुप्पी के वाद नगीना ने साठी से कहा।

"बाहर, होटल पर डोगरा के आदमी नज़र रखे हुए हैं। वे रात को हमला भी कर सकते हैं हम पर।"

"हम पर? मुझ पर नहीं। तुम लोगों पर।" साठी बोला।

"तब गोलियां तुम्हें भी लग सकती हैं। हम नहीं जानते कि उन लोगों का इरादा क्या है।"

"उन्होंने तुम लोगों को कैसे ढूंढा? साठी कुछ गंभीर हुआ।

'ढूंढ लिया होगा।"

"गोवा में मेरे काफी आदमी हैं। मैं अभी फोन करके उन्हें... ।"

"ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं।" नगीना बोली—"सब ठीक रहा तो सुबह हम निकल जाएंगे।"

"अगर रात में ही उन्होंने हमला कर दिया तो?"

"हम तैयार रहेंगे उनका मुकाबला आसानी से कर लेंगे।" नगीना विश्वास भरे स्वर में बोली—"उनके हमला करने की स्थिति में हमें रातो-रात ही गोवा से निकल जाना होगा। हमारा अगला ठिकाना हवेरी का गोल्डन होटल होगा।"

"मुझे ये पसंद नहीं आ रहा है कि मैं तुम लोगों के साथ इस तरह कैद में रहूं।" साठी तीखे स्वर में बोला।

"खुद को कैद में मत समझो। तुम दोस्तों की तरह हमारे साथ रह रहे हो।" नगीना ने शांत स्वर में कहा।

तभी नगीना का फोन बज उठा।

"हैलो।" नगीना ने बात की।

"तुम लोग गोवा में हो?" उधर से सोहनलाल ने पूछा।

"हां, क्यों?"

"यूं ही। यहां सब ठीक है। सरबत सिंह पास में हो तो बात करा दो।"

"वो पास में है।" कहते हुए नगीना सरबत सिंह की तरफ बढ़ी—"सोहनलाल तुमसे बात करना चाहता है।"

सरबत सिंह ने सोहनलाल से बात की।

"ये हंसा, जंवाई और प्रेमी कौन है?" उधर से सोहनलाल ने पूछा।

सरबत सिंह चौंका।

"क्या हुआ?" सरबत सिंह के होंठों से निकला।

"मेरी बात का जवाब दो।"

"मेरे दोस्त हैं, वो घर पर आए क्या?"

"वो तीनों कमीने ढाई दिन से यहां पर हैं। हमने उन्हें भी पाटिल के साथ बांध रखा...।"

"ऐसा क्यों किया?" सरबत सिंह बोला—"वो मेरे दोस्त हैं उन्हें...।"

"तुम्हारे दोस्तों की करतूतें बताने के लिए ही तुमसे बात कर रहा हूं। ढाई दिन से इसलिए बात नहीं की कि सोचा तुम काम पर लगे हुए हो। क्यों परेशान करूं तुम्हें। लेकिन ये हरामी अब सुबह से तंग कर रहे हैं कि तुमसे बात करना चाहते हैं। ये तीनों यहां पर ये सोचकर आए थे कि तुम देवराज चौहान को जानते हो और देवराज चौहान ने साठी के परिवार को बंधक बना रखा है। ऐसे में साठी ने पांच करोड़ का इनाम लगा रखा है जो उसके परिवार की खबर देगा। ये तुम्हारे द्वारा ये जानना चाहते थे कि देवराज चौहान ने साठी के

परिवार को कहां रखा है, ताकि साठी से पांच करोड़ कमा सकें।"

"ओह... !" सरबत सिंह ने गहरी सांस ली—"तीनों खुराफाती हैं।"

"अब वो यहां के हालातों से पूरी तरह वाकिफ हो चुके हैं। उन्हें छोड़ा नहीं जा सकता। लेकिन बंधे हुए वो बहुत तंग कर रहे हैं और सुबह से रट लगा रखी है कि तुमसे बात करना चाहते हैं।" सोहनलाल की आवाज कानों में पड़ी।

सरबत सिंह के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"तुम बात करना चाहते हो उनसे?"

"अब मैं क्या कहूं उनसे?" सरबत सिंह उलझन भरे स्वर में बोला।

"एक बार बात कर लो। उन्हें शांति मिल जाएगी। वो सोचते हैं कि तुम्हें उनके बंधे होने का पता होता तो उन्हें छुड़ा लेते।"

अगले ही पल फोन पर प्रेमी की आवाज सुनाई दी।

"सरबत, ये तू है बोल तो।"

"क्या हाल है प्रेमी?" सरबत सिंह ने गहरी सांस ली।

"हाल तो बहुत बुरा है।" प्रेमी की शिकायत भरी आवाज आई—"ये लोग तुम्हारे साथी हैं क्या?"

"हां।"

"सालों ने हमे बांध रखा है। हंसा और जंवाई भी मेरे साथ हैं। तू इन्हें कहता क्यों नहीं कि छोड़ दे हमें, यार हम तो तेरे पास पांच करोड़ कमाने का प्रोग्राम लेकर आए थे पर यहां तो तूने पहले ही साठी के परिवार को पकड़ रखा है। वो पांच करोड़ का माल है। तेरे को पता है क्या, साठी ने उनका पता बताने वालों को पांच करोड़ देने को कहा है।"

सरबत सिंह ने साठी पर नज़र मारी और बोला।

"तुम्हार दिमाग खराब हो गया है।"

"दिमाग खराब है मेरा, मैं तेरे को पांच करोड़ का प्रोग्राम बता रहा हूं और तू मुझे पागल कहता है, क्या हो गया है तेरी बुद्धि को। मेरी बात को शायद तू समझा नहीं... मैं... ।"

"मैं तेरी बात समझ गया कि साठी अपने परिवार की खबर देने वाले को पांच करोड़ दे रहा है। यही ना?"

"ये ही। ये ही, और उसका परिवार तेरे घर पर है तो सोचना कैसा, तेरे को पता है। जंवाई कहता है कि काम बन गया तो वो शादी कर लेगा। सवा-सवा करोड़ हर एक के हिस्से में आ रहा है ना तेरे को... ।"

साठी, सरबत सिंह को देखने लगा था अपना नाम सुनकर।
"जो तुम सोच रहे हो, ऐसा कुछ नहीं होगा। ये मामला देवराज चौहान का है समझे वो... ।"
"तू देवराज चौहान के साथ लगा रह। हम उसके परिवार को ले उड़ते हैं। तेरे को तेरा हिस्सा दे देंगे, कसम से।"
"ऐसा कुछ भी नहीं हो सकता।"
"पांच करोड़ का मामला है और तू कहता है कुछ भी नहीं हो सकता।"
साथ ही कानों में जंवाई की आवाज पड़ रही थी वो कह रहा था मेरी बात करा, मेरी बात करा।
"तुम लोगों को अभी कुछ पता नहीं ये मामला वैसा नहीं है, जैसा कि तुम सोच रहे हो।"
"वैसा ही है, पांच करोड़ का।"
सरबत सिंह के चेहरे पर उखड़े भाव आ गए।
"कम से कम हमारे हाथ-पांव तो खुलवा दे। हम तेरे दोस्त नहीं क्या, यहां हमारी बुरी गत बनी हुई है।"
"इस वक्त तुम लोगों के दिमाग खराब हैं और तुम्हारा बंधे रहना ही ठीक है।" सरबत सिंह ने कहा और फोन बंद करके उसे नगीना को थमा दिया। तभी देवेन साठी कह उठा।
"मेरा परिवार तो ठीक है?"
"सब ठीक है।" सरबत सिंह बोला।
"का बातो हौवे?" बांकेलाल राठौर ने पूछा।
"कुछ नहीं। सब ठीक है।" सरबत सिंह ने सिर हिलाकर कहा।

❑❑❑

❑❑❑

गोवा के मुख्य बीच के किनारे पर स्थित रैस्टोरेंट से रमेश टूडे ने हैवर्टस 5000 की ठण्डी बियर ली और घूंट भरते हुए समंदर के किनारे की तरफ बढ़ गया। अंधेरा घिर रहा था, परंतु बीच पर पूरी रौनक थी। इस बीच पर रात ग्यारह बजे तक लोग मस्ती से घूमते रहते थे। अधिकतर नए ब्याह किए जोड़े होते या फिर लड़के-लड़कियां की संख्या ज्यादा होती। परिवार वाले लोग तो शाम ढले कम ही दिखते थे। समंदर किनारे पेड़ों की तरफ या झाड़ियों की तरफ जोड़े को अकेले मस्ती मारते देखे जाना आम बात थी।
आधी बियर खत्म होते-होते रमेश टूडे समंदर किनारे पहुंच गया था। कुछ दूर मौजूद रैस्टोरेंट की रोशनियां इस अंधेरे में समंदर की लहरों को चमका रही थी। वो पास ही रेत पर बैठ गया और बोतल

को रेत में फंसाकर खड़ी की और सिग्रेट सुलगा ली। मध्यम सी ठंडी हवा चल रही थी।

"ऐ।" तभी उसके कानों में झाड़ियों की तरफ से आवाज आई—"ये क्या कर रहे हो, मत करो।"

"चुपकर, इसी का तो मैं मौका ढूंढ रहा था।"

"प्लीज, वो रहने दो। इतना ही बहुत है।"

"नहीं, वो भी मैं... ।"

"अगर तुम नहीं माने तो मैं तुम्हारी मम्मी से शिकायत करूंगी।"

"कह देना।"

रमेश टूडे ने सिग्रेट का कश लिया और कुछ ही दूरी पर टहलते जोड़ों को देखने लगा। दो युवक अभी भी समंदर में तैर रहे थे। उसने बोतल उठाकर घूंट भरा।

"कर लो अब।" तभी झाड़ियों की तरफ से युवती की आवाज आई—"आराम से करो। जल्दी-जल्दी क्यों भागे जा रहे हो?"

टूडे का फोन बज उठा।

"ये फोन किसका है?" युवती की आवाज फिर सुनाई दी।

"उधर एक आदमी बैठा है, उसका है, तुम उस तरफ ध्यान मत दो।"

"वो आ जाएगा।"

"नहीं आएगा। मैं साले को मार के भगा दूंगा। तुम मेरी तरफ ध्यान दो और कुछ मत सोचो।"

"तुमने ये सब पहले भी किया है ना?"

"नहीं, पहली बार है।" युवक की आवाज आई।

"मुझे बेवकूफ मत समझो। तुम तो किसी एक्सपर्ट की तरह सब कुछ संभाले हुए हो।"

"एक्सपर्ट की तरह? तुम्हें कैसे पता कि एक्सपर्ट ऐसे सब कुछ संभालते हैं।"

युवती की इस बार आवाज नहीं आई।

"मैं तो समझा था ये तुम्हारी पहली बार है।" युवक की आवाज आई।

"पहली बार ही तो है।"

"तुम पांच साल बाद भी पहली बार ही कहोगी। मुझे तो तुम भी एक्सपर्ट लग रही हो।"

टूडे ने फोन निकालकर बात की।

"हैलो।"

"मैं रहमान बोल रहा हूं, एक घंटा पहले हमने देवराज चौहान

और दूसरे लोगों को ढूंढ लिया है।''

''कहां हैं वो?''

''नाइट शाईन होटल में।''

''बाबा से मेरी बात करा।'' टूडे ने कहा।

''एक मिनट।'' उधर से कहा गया फिर चंद पलों के बाद दूसरी आवाज आई—''कहिए टूडे साहब।''

''तू जगमोहन को पहचानता है?''

''बराबर।''

''जगमोहन दिखा तेरे को?''

''नहीं।''

''पताकर, किसी को तेरे पर शक ना हो। दोपहर में मैंने जगमोहन को मारा था। वो मरा है या नहीं, पता नहीं।''

''समझ गया। पता करके फोन करता हूं।''

□□□
□□□

एक घंटे बाद बाबा का फोन टूडे को आया।

''मैंने वेटर को दो सौ रुपया देकर पटाया है। उसे जगमोहन का हुलिया बताया तो उसने कहा कि ये आदमी तो सुबह-सुबह ही होटल से चला गया था। उसके बाद वापस नहीं लौटा।'' बाबा ने उधर से कहा।

''हूं।'' टूडे के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

''वेटर ने बताया कि शाम को जब उस कमरे में कॉफी लेकर गया था, तो वो बात कर रहे थे कि जगमोहन का फोन क्यों नहीं लग रहा। वो सब कुछ परेशान लग रहे थे।'' बाबा की पुनः आवाज आई।

''ठीक है। तुम लोग होटल पर नज़र रखो, कोई खास बात हो तो मुझे फौरन फोन करना। नहीं तो नज़र रखते रहो।'' कहने के साथ ही टूडे ने फोन बंद करके जेब में रखा और बोतल उठाकर खाली की, फिर उसे एक तरफ लुढ़का दी। सामने समंदर को देखने लगा। पीछे से आती रैस्टोरेंट की रोशनी में, पानी की लहरें रह-रहकर चमक रही थीं।

□□□
□□□

करवार का एक साधारण सा होटल 'बैस्ट होटल' नाम था उसका। एक मकान को ही होटल का नाम दे दिया गया था। कुल आठ कमरे थे उसमें। चार नीचे, चार ऊपर। ऊपर की मंजिल के एक कमरे में जगमोहन बैड पर लेटा हुआ था। उसकी आंखें बंद थीं। वो

बेसुध हाल में था। उसकी बगल में महाजन नींद में था। कमरे में नाइट बल्ब का पर्याप्त प्रकाश फैला हुआ था। खुली खिड़की से हवा आ रही थी। कमरे में पंखा भी चल रहा था। बैड के अलावा कमरे में प्लास्टिक की दो कुर्सियां मौजूद थीं और पुराना-सा सैन्टर टेबल था। उस पर काफी के दो खाली प्याले रखे थे जो कि महाजन के ही थे। रात का डेढ़ बज रहा था और बाहर से किसी प्रकार की कोई आवाज नहीं आ रही थी। शांति थी।

तभी जगमोहन के होठों से मध्यम सी कराह निकली। वो थोड़ा-सा हिला।

महाजन की आंख फौरन खुल गई। उसने लाइट ऑन कर दी तो जगमोहन को होश आते देखा। उसके होठों से पुनः कराह निकली और उसने आंखें खोल दी। चंद पल तो वो छत को ही देखता रहा फिर उठ बैठा। महाजन पर निगाह पड़ी तो हैरानी से वो महाजन को देखता-सा रह गया। महाजन मुस्कराया और बैड के कोने पर बैठता बोला।

"कैसे हो?"

"मैं कहां हूं?" जगमोहन कह उठा।

"करवार के एक होटल में।"

"लेकिन मैं तो समंदर में जा गिरा था। उस बोट से और फिर, फिर मैं उस अंडरवाटर पर ही तैरता वहां से दूर होता चला गया। वो रमेश टूडे आसानी से तब मेरी जान ले सकता था, ये मेरी समझ में आ गया था। उसके पास बोट थी। अगर मैं पानी से बाहर निकलता तो वो बोट से ही मुझे टक्करें मारकर खत्म कर देता। मैं अण्डरवाटर तैरता रहा। जब तक मेरे में हिम्मत थी, वहां से मैं काफी दूर आ गया था। बहुत थक गया था। उसके बाद मैं समंदर की सतह पर आया तो मुझे हर तरफ समंदर ही समंदर दिखा। शायद मैं किनारे से और भी दूर आ गया था। रास्ता भटक गया था।" जगमोहन ने गहरी सांस ली—"मैं तैरता रहा। जब तक मेरी हिम्मत साथ देती रही फिर मेरी हिम्मत ने जवाब दे दिया। मुझे यही लगा कि मैं मर जाऊंगा। तो मैं तुम्हारे पास कैसे पहुंचा?"

"मैंने सुबह-सुबह तुम्हें नाइट शाईन होटल में जाते देखा तो देवी के कहने पर तुम्हारे पीछे लग गया और इस तरह करवार आ पहुंचा। हम उसी आदमी, जिसे कि रमेश टूडे कह रहे थे, का पीछा करते-करते करवार आए थे। मैंने तुम्हें और टूडे को बोट पर समंदर में जाते देखा, मैं जानता था कि तुम्हें रिवॉल्वर दिखाकर ले गया है, परंतु मैं इस मामले में नहीं पड़ता चाहता था। पैंतालिस मिनट बाद

उसे अकेले ही बोट में आते देखा तो समझ गया कि तुम्हारे साथ कुछ बुरा हो गया है। मौका पाते ही मैं बोट लेकर समंदर में तुम्हारी तलाश में निकल गया। समंदर में बहुत आगे, करीब आधा घंटा की दूरी पर तुम किस्मत से ही मुझे दिख गए। तुम बेहोश थे और लहरें तुम्हें कभी समंदर के भीतर ले जा रही थीं तो कभी तुम समंदर की सतह पर आ रहे थे। शायद ये वो ही वक्त था जब तुम बेहोश हुए थे। अगर मैं दस मिनट भी लेट हो जाता तो तुम समंदर में डूब चुके होते।"

"ओह।" जगमोहन ने अपना सिर पकड़ लिया।

"वापस आने पर ये ही होटल मुझे दिखा तो तुम्हें यहां ले आया। मुझे यहां कोई डाक्टर नहीं मिला, यहां के दो लोगों ने ही जैसे-तैसे करके तुम्हारा अंधा इलाज किया और कहा कि तुम्हें होश आ जाएगा।" महाजन ने कहा—"और तुम्हें होश आ गया।"

"तुमने बहुत बड़ी मेहरबानी की मुझ पर।" जगमोहन से कुछ कहते ना बना।

महाजन मुस्कराकर रह गया।

"मैं देवराज चौहान से बात करना चाहता हूं वो परेशान हो रहा...।"

"उसे पता है कि तुम मेरे पास हो। मैंने बेबी को बता दिया था। तीन घंटे पहले देवराज चौहान का फोन यहां पर आया था, वो कह रहा था जगमोहन के ठीक हाल में आने पर तुम्हारे साथ कर्नाटक के हवेरी शहर पहुंचूं। बेबी ने भी मुझे ऐसा कहा।

"हवेरी, हां। हमारा गोवा से निकल जाने का प्रोग्राम बन चुका था।" जगमोहन ने धीमें स्वर में कहा—"मुझे मालूम है कि हमने हवेरी में कहां जाना है। हम डोगरा को निश्चिंत कर देना चाहते हैं कि हम उसके पीछे से हट गए हैं।"

"ये तुम लोगों का मामला है। लेकिन मैं तुम्हारे साथ हवेरी जरूर जाऊंगा। बेबी भी वहीं जा रही है।" महाजन सिर हिलाकर बोला।

जगमोहन चुप रहा।

"बोट पर क्या हुआ था?" महाजन ने पूछा।

जगमोहन बताने लगा।

□□□□

□□□□

अगले दिन सुबह होटल-डी गामा।

"रीटा डार्लिंग।" विलास डोगरा बैड पर टेक लगाए बैठा, कॉफी के घूंट भरता मुस्कराकर कह उठा—"सुबह-सुबह तो तुम खास ही हसीन लगती हो। रात की मस्ती का नशा तुम्हारे चेहरे पर सवार रहता

है। मुझे देखने में मजा आता है।"

"सुबह-सुबह छेड़ने लगे डोगरा साहब।" रीटा ने मुस्कराकर कॉफी का घूंट भरा। वो पास ही कुर्सी पर बैठी थी।

"मैं तो अपने दिल के विचार बता रहा हूं।"

"रात तो आपने कमाल ही कर दिया था।" रीटा कह उठी।

"सच में?"

"और नहीं तो क्या, मैंने तो सोचा भी नहीं था कि आप ऐसा भी कर सकते हैं।" रीटा बराबर मुस्करा रही थी।

"तूने सोचा मैं बूढ़ा हो गया हूं।"

"क्या बात करते हैं डोगरा साहब, आप तो पूरे जवान हैं।" रीटा कह उठी—"जब तक मैं बूढ़ी नहीं होती आप बूढ़े नहीं होने वाले। रात की बात से तो ये बात स्पष्ट हो ही जाती है। मैं तो अभी तक रात की मस्ती में हूं।"

"तू मेरे जीवन की बहार है रीटा डार्लिंग।"

"मुझे तो लगता है आप ही मेरे जीवन को संवारे हुए हैं,नहीं तो मैं थी ही क्या?"

"तुम कितनी अच्छी बातें करती हो, हम दोनों ही एक-दूसरे की जरूरत हैं, कितना प्यार है हममें, है ना?"

"आप मुझे कितना प्यार करते हैं, मुझे हमेशा खुश रखते हैं, आपको पाकर मेरी जिंदगी सफल हो गई।"

"तेरे बिना तो मैं भी बेकार था, मैं... ।"

तभी फोन बजने लगा।

डोगरा ने पास रखा मोबाइल उठाया और बात की। दूसरे हाथ में काफी का प्याला था।

दूसरी तरफ गोरे था।

"डोगरा साहब।" गोरे की आवाज कानों में पड़ी—"कल शाम माईकल मारा गया।"

"ये तो बढ़िया बात है कि माईकल मारा गया।" डोगरा कह उठा—"वो त[illegible]हां परेशानियां खड़ी कर रहा था।"

"रेस्टो[illegible]में अपने दो साथियों के साथ बैठा बियर पी रहा था कि विस्फोट से उड़ गया।"

"विस्फोट से उड़ गया?" डोगरा के माथे पर बल दिखने लगे।

"हां डोगरा साहब। कई लोगों ने वो नजारा देखा। पहले माईकल के शरीर के टुकड़े बिखरते देखे गए फिर साथ ही साथ उसके दोनों साथी भी इस विस्फोट में उड़ गए। सब कुछ पांच सैकिण्ड में हो गया।" उधर से गोरे ने कहा।

रीटा की निगाह डोगरा पर थी।
दो पल चुप रहकर डोगरा बोला।
"वो विस्फोट किस चीज का था?"
"पुलिस का कहना है कि वो बम का विस्फोट था। उस वक्त माईकल के पास कोई बम था, जो कि अचानक फट गया।"
डोगरा के होंठ सिकुड़े।
"बम ऐसे तो नहीं फटते गोरे।"
"जो खबर पता है, वो ही बता रहा हूं।"
"हूं तो माईकल किसी गोली से या चाकू से नहीं मरा। बम के विस्फोट से मरा।"
"जी हां। पुलिस का कहना है कि वो छोटा बम था, परंतु पावर फुल था। धमाके की आवाज भी ज्यादा तेज नहीं थी।"
डोगरा ने काफी का प्याला बैड पर ही रख दिया।
रीटा फौरन उठी और प्याला वहां से उठाकर तिपाई पर रखा।
"क्या माईकल, दोपहर के बाद किस-किस से मिला था?" विलास डोगरा ने पूछा।
"ज्यादा तो खबर नहीं, परंतु वो विपुल कैस्टो से मिला था।" गोरे की आवाज आई।
डोगरा के होंठ कस गए।
"कैस्टो से मिला? कब?"
"सुना है कि शाम चार बजे के आस-पास मिला था।"
डोगरा ने गहरी सांस ली।
"कोई और नई खबर?"
"और तो कुछ नहीं डोगरा साहब।"
'कैस्टो की कोई खबर?"
"नहीं।"
"हो तो बताना।" कहने के साथ ही डोगरा ने फोन बंद कर दिया। चेहरे पर सोचें नाच रही थीं।
"क्या हुआ?' रीटा ने पूछा।
"थोड़ी गड़बड़ हो गई।" डोगरा ने सिर हिलाया।
"क्या?" रीटा उठी और तिपाई से कॉफी का प्याला उठाकर, डोगरा को थमा दिया।
"वो पैन मैंने कैस्टो को दिया था और कैस्टो ने मुझसे मिलने के बाद माईकल से मिला और पैन उसे दे दिया।"
"उसने ऐसा क्यों किया?"
"शायद उसे पैन पर कुछ शक हो गया हो कि उसमें बम है।" डोगरा ने रीटा को देखा।

"मुझे नहीं लगता कि ऐसा हुआ हो, कैस्टो को पता चला होता कि आपने उसे बम लगा पैन दिया है तो वो चुप ना बैठता।"

"तो उसने पैन माईकल को क्यों दिया?'

"कोई दूसरी वजह रही होगी। तो पैन में हुए विस्फोट से माईकल मारा गया।"

"बुरा हुआ। मैं तो कैस्टो को खत्म करना चाहता था। रीटा डार्लिंग, किस्मत कब, कहां घूम जाए, पता ही नहीं चलता। कैस्टो को खत्म करना बहुत जरूरी है वरना वो गोवा से मेरा ड्रग्स का धंधा उखाड़ देगा।" डोगरा ने गंभीर स्वर में कहा—"मैं उसे पैंतीस प्रतिशत गोवा नहीं दे सकता कि वो ड्रग्स का धंधा चालू कर दे। कैस्टो को मरना चाहिए था।"

"पहले तो हमें ये पता होना चाहिए कि कैस्टो को आप पर कोई शक तो नहीं हुआ कि आप उसकी जान लेना चाहते हैं।" रीटा बोली।

"क्या वो शक में होगा?"

"वो बेवकूफ तो नहीं है।"

"अगर उसे शक हो गया होगा तो वो जरूर मेरे खिलाफ कोई तैयारी कर रहा होगा।" डोगरा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"मेरे ख्याल में कैस्टो से फोन पर आपको बात करनी चाहिए। सब कुछ सामने आ जाएगा।"

"मैं तो कितना निश्चिंत था कि बीती शाम कैस्टो का काम हो गया होगा।" डोगरा फोन पर नम्बर मिलाता कह उठा—"परन्तु उसने पैन माईकल को क्यों दे दिया। ये बात समझ में नहीं आ रही।" फोन कान से लगा लिया।

दूसरी तरफ बेल जाने लगी। देर तक जाती रही फिर कैस्टो की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो—।"

"गुड मार्निंग कैस्टो।" डोगरा मुस्कराकर कह उठा।

चंद पलों की चुप्पी के बाद कैस्टो की शांत आवाज आई।

"डोगरा साहब—।"

"सही पहचाना। कल की हमारी मुलाकात बढ़िया रही। सब कुछ आसानी से निपट गया।" डोगरा बोला।

"मुझे आशा नहीं थी कि सब कुछ आराम से निपट जायेगा।" उधर से कैस्टो हंसकर बोला।

"मन साफ हो तो सब काम ठीक से पूरे हो जाते हैं। एक छोटी सी मुलाकात फिर हो जाये? अभी मैं तीन दिन गोवा में ही हूं।"

"किस सिलसिले में?"

"दोस्ताना मुलाकात। लंच या डिनर हम एक साथ लेंगे। सिर्फ तुम और मैं— ।"

"मुझे बहुत खुशी होती अगर मैं ऐसा कर पाता। परन्तु कल शाम की फ्लाईट से मैं सिंगापुर आ गया था। इस वक्त सिंगापुर में ही हूं। वापसी में मैंने अफगानिस्तान जाना है। लौटने में कुछ वक्त लगेगा।"

"ओह! मैं तो सोच रहा था कि हमारी एक मुलाकात और होगी।"

"अगर कोई खास बात हो तो जार्ज से बात हो सकती है। उसे भेज दूं क्या?" उधर से कैस्टो ने कहा।

"बात कुछ भी नहीं है। तुम्हारे साथ लंच-डिनर कुछ भी लेना चाहता था। खैर, फिर कभी सही।"

"मैं बहुत जल्दी मुम्बई आऊंगा। वहाँ मिलेंगे।" उधर से कैस्टो ने मुस्कराकर कहा।

"मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगा।" डोगरा ने कहा और फोन बंद करके गम्भीर स्वर में बोला—"उसे मुझ पर शक हो चुका है। कहता है शाम की फ्लाईट से सिंगापुर चला आया था। जबकि ऐसा नहीं है। उसे पैन में बम होने का पता चल गया था।"

"ऐसा है तो उसने आपके खिलाफ कुछ किया क्यों नहीं?"

डोगरा ने रीटा को देखकर कहा।

"वो जरूर कुछ सोच रहा होगा।"

"फिर तो आपको सावधानी से बाहर निकलना होगा।"

"डोगरा पर हाथ डालने से पहले उसे बीस बार सोचना पड़ेगा रीटा डार्लिंग। ये इतना आसान नहीं है।" डोगरा की आवाज में सख्ती आ गई।

"बेहतर होगा कि सुरक्षा के इन्तजाम के बिना आप बाहर ना निकले।"

"आज की सुबह बढ़िया नहीं रही।" डोगरा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"कैस्टो मारा जाता तो यकीनन सुबह बढ़िया रहती।" रीटा बोली।

"वो मारा जायेगा। सप्ताह, दस दिन और लग सकते हैं। बॉब को फोन करना पड़ेगा।" डोगरा ने फोन उठाया और नम्बर मिलाने लगा।

"बॉब तो मुम्बई में है।"

"दो घंटों में प्लेन से गोवा आ जायेगा।" तभी बॉब से फोन पर बात हो गई—"हैलो बॉब, क्या कर रहे हो?"

"आराम।" उधर से मर्दाना आवाज कानों में पड़ी।

"तुम्हारे गोवा का ही काम है। इस काम में तुम्हें मजा भी आयेगा। कैस्टो को जानते हो ना?" डोगरा ने पूछा।

"त्रिपुल कैस्टो?"

"वो ही।"

"मैं जानता हूं।"

"गोवा पहुंचो और उसे खत्म कर दो।"

"काम हो जायेगा।"

"कब आ रहे हो?"

"शाम तक गोवा पहुंच जाऊंगा। टूडे भी तो आपके पास है। वो ये काम कर देगा।"

"टूडे व्यस्त है मेरे साथ। मैं यहां कई जरूरी काम कर रहा हूं। कैस्टो को तुम साफ करो।"

"शाम तक गोवा पहुंच जाऊंगा।"

डोगरा ने फोन वंद कर दिया।

"बॉब आसानी से कैस्टो को खत्म कर देगा।" रीटा बोली—"वो काम करना जानता है।"

"तभी तो बॉब को ये काम सौंपा।"

"उससे पहले कैस्टो आप पर हमला ना कर दे। लंच के बाद दशील से मिलना है। रात को इब्राहिम के साथ अप्वाईंटमेंट फिक्स है। मेरी बात मानें तो टूडे से कहकर सुरक्षा का इन्तजाम करा लें। देवराज चौहान भी मौके की तलाश में है।" रीटा ने सोच भरे स्वर में कहा—"आपकी जान के दुश्मनों की गिनती एकाएक बढ़ गई है। सुरक्षा जरूरी है।"

"वो पेन कैस्टो के पास ही रहा होता तो कल शाम ही वो... ।"

विलास डोगरा का मोबाइल वजने लगा।

"हैलो।" डोगरा ने बात की।

"डोगरा साहब।" रमेश टूडे की आवाज कानों में पड़ी—"लगता है कल जगमोहन निपट गया।"

"ये तो बढ़िया खबर है।"

"जगमोहन रातभर होटल नहीं पहुंचा, जहाँ देवराज चौहान और हरीश खुदे मौजूद हैं।"

"फिर तो निपट गया होगा।" डोगरा कह उठा।

"देवराज चौहान, हरीश खुदे घंटाभर पहले मुम्बई चले गये हैं।"
टूडे की आवाज कानों में पड़ी।

"ये नहीं हो सकता।" डोगरा के होठों से निकला।

"हमारे लोग नाइट शाईन होटल की निगरानी कर रहे थे जहाँ देवराज चौहान ठहरा हुआ है। उन्होंने बताया कि घंटाभर पहले देवराज चौहान, खुदे के साथ होटल का बिल चुकता करके निकला और दोनों कार पर चल पड़े। मेरे आदमी उनके पीछे थे। वो गोवा से बाहर मुम्बई के रास्ते पर निकल गये। हमारे आदमी आधा घंटा उनके पीछे रहे और जब उनको यकीन हो गया कि वो गोवा से पक्के मुम्बई की तरफ जा रहे हैं तो वे वापस आ गये।"

"जगमोहन नहीं था उनके साथ?"

"नहीं।"

"ऐसे में देवराज चौहान गोवा से क्यों जायेगा। वो लापता जगमोहन को ढूंढेगा टूडे—।" डोगरा बोला।

"पर वो गोवा से चले गये हैं।"

"बात गले से नीचे नहीं उतरती।"

"वो होटल खाली करके गये हैं।"

"अकल से काम ले टूडे। देवराज चौहान मेरे पीछे कोल्हापुर पहुंचा फिर गोवा आया। वो मुझे खत्म करना चाहता है। साथ ही जगमोहन का उसे कुछ पता नहीं होगा कि वो कहां है, ऐसे में वो गोवा से क्यों जायेगा?"

"वो चला गया है।"

"उसका इस तरह जाना मेरी समझ में नहीं आ रहा।" डोगरा के चेहरे पर उलझन थी।

"देवराज चौहान और हरीश खुदे गोवा से चले गये हैं।"

"हूं। पता चल जायेगा कि देवराज चौहान किस चक्कर में—।"

"जगमोहन ने मुझे बताया था कि दुलेरा उन्हें आपके प्रोग्राम के बारे में ज्यादा नहीं बता पाया था। वो सिर्फ बीच रैस्टोरेंट पर विपुल कैस्टो की मुलाकात होने तक का ही प्रोग्राम उससे जान सके थे।"

विलास डोगरा के चेहरे पर सोच के भाव नाच रहे थे।

"देवराज चौहान गोवा से चला गया है तो अच्छी खबर है। पर मुझे यकीन नहीं होता।" डोगरा बोला—"जो भी होगा, पता चल जायेगा। इधर कैस्टो से अपनी कुछ गड़बड़ हो गई है। अब गोवा में मुझे सुरक्षा चाहिये। तू अपने लोगों का इन्तजाम कर ले। हो सकता है कैस्टो मेरी जान लेने की कोशिश करे। तेरे को हर वक्त मेरे आसपास ही रहना है।"

"समझ गया– ।"

"3:30 पर मैंने होटल से निकलना है।" डोगरा ने कहा और फोन बंद करके सिग्रेट सुलगा ली।

कुर्सी पर बैठी रीटा, डोगरा को देख रही थी।

"बहुत परेशानी पैदा हो गई रीटा डार्लिंग।"

"क्या बोला टूडे कि देवराज चौहान गोवा से चला गया है।" रीटा बोली।

"हां, वो– ।"

"मैं तो ये सुनने की अपेक्षा कर रही थी कि वो लापता जगमोहन को ढूंढता फिर रहा है।" रीटा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ये ही बात तो मेरी समझ में नहीं आ रही कि जगमोहन के लापता होने पर, देवराज चौहान गोवा से क्यों चला गया? टूडे कहता है कि वो मुम्बई की तरफ गया है। हमारे आदमी देर तक उनके पीछे रहे थे।" डोगरा भारी उलझन में था।

"देवराज चौहान कोई चाल खेल रहा है। वो इस तरह गोवा से जाने वाला नहीं। वो आपका पीछा नहीं छोड़ने वाला।"

"ये ही मेरा ख्याल है। पर ये भी सोचने वाली बात है कि जगमोहन के लापता होते ही उसने गोवा क्यों छोड़ दिया?"

"कम से कम वो आपसे डरने वाला नहीं।"

"नहीं डरेगा वो। साला खतरनाक है डकैती मास्टर।"

दोनों एक-दूसरे को देखते रहे।

"आपको बहुत सावधान रहना होगा।" रीटा बोली।

डोगरा ने विचारपूर्ण ढंग से सिर हिला दिया।

"मेरी तो राय है कि टूर कैंसिल करके दो-तीन हफ्ते की छुट्टी लेकर धंधे से गायब हो जायें।"

"ऐसा क्यों?" डोगरा ने रीटा को देखा।

"पता नहीं क्यों, पर मेरा मन कहता है कि आपको ऐसा ही करना चाहिये।"

"मैंने अपने कई लोगों से मिलना है। उनकी समस्याएं सुलझानी है। काम इस तरह अधूरा छोड़कर नहीं बैठ सकता।"

"जान, काम से ज्यादा कीमती है।" रीटा गम्भीर दिख रही थी।

"तुम ज्यादा चिन्ता में हो। इतनी भी फिक्र मत करो रीटा डार्लिंग। हमारे धंधे में ऐसे मौके तो आते ही रहते हैं। भागने से काम नहीं चलने वाला। मैं कभी भी नहीं भागा।" डोगरा ने शांत स्वर में कहा।

"मेरे ख्याल में आपको देवराज चौहान से झगड़ा मोल नहीं लेना

चाहिये था। कठपुतली किसी और पर भी इस्तेमाल की जा सकती थी, परन्तु आपने देवराज चौहान और जगमोहन को ही चुना। मैंने तब आपको इस बात से रोका भी था कि— !"

"रीटा डार्लिंग।" डोगरा मुस्करा पड़ा—"देवराज चौहान मेरे लिए मामूली चीज है। अभी तक वो ही मेरे पीछे है, मैंने उसे कुछ भी नहीं कहा है, क्योंकि मैं जानता हूं कि वो बहुत जल्द देवेन साठी के हाथों मरने वाला है। उसकी तुम परवाह मत करो। वैसे भी वो गोवा से वापस मुम्बई चला गया है। हो सकता है उसकी निगाहों में कोई और जरूरी काम आ गया हो। साठी के परिवार को उसने मुम्बई में कहीं बंधक बना रखा है, शायद वहां कोई समस्या आ गई हो। या साठी ने अपने परिवार को ढूंढ निकाला हो और देवराज चौहान के लिए मुसीबत खड़ी हो गई हो और उसे जाना पड़ा। यहां तक कि वो जगमोहन को भी ढूंढने नहीं निकला। हमें क्या, हम मजे में हैं। देवराज चौहान के, साठी के हाथों मरने की खबर कभी भी आ सकती है।"

❑❑❑
❑❑❑

त्रिपुल कैस्टो ने जब विलास डोगरा से फोन पर बात करके फोन बंद किया तो चेहरे पर कठोरता नाच उठी। वो नाइट सूट में था और चेहरा देखकर लग रहा था कि कुछ देर पहले ही सोकर उठा है। फोन हाथ में दबाये वो खिड़की के पास पहुंचा और उसे खोला। सूर्य की रोशनी उसके चेहरे पर आ पड़ी। बाहर लोगों पर नज़र पड़ी फिर दूर दिखाई दे रहे समन्दर को देखा। सुबह के इस वक्त समन्दर बिल्कुल शांत नज़र आ रहा था और सतह धूप में रह-रहकर चमक रही थी। कैस्टो कठोर नज़रों से समन्दर की तरफ देखता रहा। चेहरे पर सोचो के भाव थे। मस्तिष्क में डोगरा और माईकल नाच रहे थे। उसे माईकल की मौत का अफसोस था। वो पैन उसने ही माईकल को दिया था, जिसमें कि बम था। परन्तु बम के बारे में उसे पता नहीं था। उसने तो यूं ही सावधानी के नाते, पैन माईकल को दे दिया कि जो डोगरा ने खामख्वाह उसे दिया था। ऐसे में डोगरा का कुछ भी दिया, उसे अपने पास में नहीं रखना था।

पैन में बम फिट था। डोगरा उसकी जान लेना चाहता था।

परन्तु मारा गया माईकल।

ये खतरनाक बात थी कि डोगरा उसे खत्म कर देना चाहता है कि गोवा में उसी का ही ड्रग्स का धंधा चलता रहे। पैंतीस परसैंट उसे गोवा देना मात्र दिखावा था। वो मुलाकात तो महज इसलिये थी

कि बम युक्त पैन उसे दे सके और उसकी जान चली जाये। डोगरा ने उसके साथ जो खेल, खेला था उसका जवाब तो उसे वो रात को ही दे देता। उसके आदमी डी-गामा होटल में घुसकर उसकी जान ले लेते। बहुत बुरी भौत मारते डोगरा को परन्तु जार्ज ने रोक दिया था उसे।

इस मामले में जार्ज अपना दिमाग इस्तेमाल करना चाहता था। कैस्टो को जार्ज पर पूरा भरोसा था कि वो जो भी करेगा, उसकी बेहतरी के लिए ही करेगा। जार्ज का कहना था कि अभी डोगरा को छेड़ो मत। उसके धंधे पर कब्जा करो और दोबारा डोगरा को गोवा में घुसने भी मत दो। गोवा आये वो तो उसे खत्म कर देंगे।

कैस्टो ने सब कुछ जार्ज के ऊपर छोड़ दिया था।

कैस्टो खिड़की से हटा और कुर्सी पर आ बैठा। उसने जोएल का नम्बर मिलाया।

"कैसा है जोएल?" उसकी आवाज कानों में पड़ते ही, कैस्टो ने पूछा।

"बढ़िया भाई। सब कुछ शांत है?" जोएल का स्वर गम्भीर था।

"हां। जार्ज काम पर लगा होगा।"

"डोगरा गोवा से कब जायेगा?"

"पता नहीं।"

"क्या ये बढ़िया नहीं होता कि हम डोगरा को खत्म कर देते।" जोएल का आने वाला स्वर कठोर हो गया था।

"जार्ज जो कर रहा है, उसे करने दो। उसका सोचना भी गलत नहीं है। एक बार धंधा हमारे हाथ में आ गया तो गोवा में अपनी ही चलेगी। तब डोगरा अपने पांव यहां नहीं टिका पायेगा।"

"होटल डी-गामा में उसका हिस्सा है। ऐसा कई बार सुना है।"

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। पूरे धंधे पर हम कब्जा करके ही रहेंगे।" कैस्टो के दांत भिंच गये—"डोगरा ने मुझे बम वाला पैन देकर जो खेल खेला, वो अब उसे बहुत महंगा पड़ने वाला है।"

"मैं डोगरा को खत्म करना...।"

"अभी कुछ भी नहीं। जार्ज को अपना काम करने दो। जहां हो, वहीं पर रहना। वहां से बाहर मत निकलना। बेहतर होगा कि अभी किसी को फालतू में फोन मत करो और लोगों के फोन रिसीव भी मत करो। हमें बिल्कुल शांत हो जाना है। हो सके तो जूली को भी कम से कम वहां आने को कहो। जब तक डोगरा गोवा में है, हमारे लिए खतरा है। समझ गये जोएल।"

"ठीक है भाई—।"

कैस्टो ने फोन काटा और जार्ज के नम्बर मिलाने लगा। चेहरे पर कठोरता थी।

जार्ज से बात हो गई।

"कुछ देर पहले डोगरा का फोन आया था जार्ज।" कैस्टो एक-एक शब्द को चबाकर कह उठा—"वो मुझे टटोल रहा था कि मुझे पैन बम का पता लग पाया या नहीं। माईकल की मौत का भी उसने जिक्र किया। उसे आशा होगी कि मैं पैन बम के बारे में कुछ कहूंगा। जला-भुना बैठा होऊंगा। परन्तु मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। सामान्य ढंग से बात की।"

"ये अच्छा किया कैस्टो साहब।"

"वो मुझसे मीटिंग चाहता था।" कैस्टो उसी लहजे में बोला।

"क्यों?"

"वो लंच या डिनर का बुलावा दे रहा था। मेरे साथ दोस्ताना करने को कह रहा था। लेकिन मैं जानता हूं कि ऐसा कुछ नहीं होना था। एक बार तो मैं बच गया किस्मत से। अब की बार वो मेरा पक्का इन्तजाम करना चाहता होगा।" कैस्टो के स्वर में खतरनाक भाव आ गये—"मैंने बहुत प्यार से उसे बताया कि इस वक्त मैं सिंगापुर में हूं। वापसी में कुछ दिन लगेंगे।"

"पहले गोवा पर अपना अधिकार कर लें। उसके धंधे को उखाड़ दें।" जार्ज उधर से गुस्से से कह उठा—"फिर साले को तसल्ली से देखेंगे। बहुत बुरी मौत मारेंगे डोगरा को हम।"

"मैं तुम्हारी वजह से रुक गया, वरना अब तक तो डोगरा जिन्दा ही ना होता।" कैस्टो दांत भींचे कह उठा।

"रुकना ही बेहतर है। आनन-फानन डोगरा को मार देने में कोई फायदा नहीं था। हमें खामोशी के साथ उसका धंधा गोवा से उठा देना चाहिये। अपने पाँव मजबूती से टिका लेने हैं। जब एक बार उसका ड्रग्स का धंधा गोवा से उठ गया तो फिर वो कुछ नहीं कर सकेगा। वो हमेशा याद रखेगा कि उस पैन ने, गोवा से उसे भगा दिया। अगर वो कभी गोवा आता है तो हम उसे मार देंगे।"

"तुम क्या कर रहे हो?"

"तैयारी में लगा हूं। कल शाम से मैंने एक मिनट की भी फुर्सत नहीं ली और अपने लोगों को भी लेने नहीं दे रहा। मेरे कुछ लोग तो इस बात पर नज़र रखे हैं कि विलास डोगरा कब गोवा से कूच करता है। दूसरी तरफ मैं गोवा में, डोगरा के धंधे से ताल्लुक रखते हर एक आदमी के पीछे, एक आदमी खड़ा करता जा रहा हूं। जैसे कि गोवा में डोगरा का ड्रग्स का गोदाम कहाँ-कहाँ है, मेरे पास पूरी खबर है।

वहाँ अपने आदमी लगा दिए हैं, जो नज़र रख रहे हैं। वो तब तक खामोशी से नज़र रखेंगे, जब तक कि मेरा इशारा नहीं मिलता।" जार्ज की आवाज कैस्टो के कानों में पड़ रही थी—"जो लोग गोवा में आने वाली, डोगरा की ड्रग्स को रिसीव करके गोदामों तक पहुंचाते हैं, उन सब पर आदमी लग चुके हैं हमारे। अब जो लोग गोदामों से ड्रग्स उठाकर गोवा के डीलरों या दलालों को सप्लाई करते हैं, उन लोगों को अब एक-एक करके ढूंढा जा रहा है, वो नज़र आते हैं तो एक आदमी पक्के तौर पर उसके पीछे लग जाता है। फिर जो-जो डीलर है या उनके आदमी हैं उन्हें पक्के तौर पर कल तक अपनी नज़रों में ले लिया जायेगा। परन्तु डीलरों की हमने हत्या नहीं करनी है। डोगरा के गोवा से कूच करते ही, मेरे इशारे पर ड्रग्स के धंधे पर लगे, डोगरा के आदमियों पर एक ही वक्त पर हमला होगा और दो घंटों में वो खत्म हो जायेंगे। गोदामों से ड्रग्स उठाकर हम अपने कब्जे में ले लेंगे। डीलरों को धमकी दे दी जायेगी कि वो आज के बाद डोगरा का माल ना तो खरीदेंगे, ना बेचेंगे। दो-चार डीलर हमारे विरोध में आवाज उठायेंगे, परन्तु हम उन्हें खत्म कर देंगे। ये देखकर दूसरे डीलर भी संभल जायेंगे। उन्हें बता देंगे कि गोवा में ड्रग्स का धंधा करना है तो हमसे ड्रग्स लेनी होगी। हम उसी भाव में ड्रग्स देंगे, जिस भाव में, विलास डोगरा उन्हें देता था। हमारे पच्चीस आदमी गोवा में डोगरा के आदमियों को ढूंढकर खत्म करते रहेंगे, जो डोगरा के लिए काम करते थे। अगर उन्हें जान बचानी होगी तो वो गोवा छोड़कर भाग जायेंगे, नहीं तो मारे जायेंगे। जब तक डोगरा के कानों तक गोवा की खबर पहुंचेगी, तब तक सब जगह पर हमारा कब्ज़ा हो चुका होगा। डोगरा के पास करने को कुछ नहीं बचेगा।"

"इस योजना में बहुत मेहनत और बहुत आदमी लगेंगे।" कैस्टो ने गम्भीर स्वर में कहा।

"हमारे पास बहुत आदमी हैं। फिर भी हम किराये के लोगों को लेते जा रहे हैं। परन्तु अभी किसी को बताया नहीं है कि हमारा प्लॉन क्या है। काम शुरू करने से सिर्फ पन्द्रह मिनट पहले ही बताया जायेगा।"

"इसमें डोगरा के कितने आदमी मरेंगे?" कैस्टो ने पूछा।

"चालीस के करीब—।" जार्ज की आवाज कानों में पड़ी।

"चालीस लाशों को पुलिस कभी भी पसन्द नहीं करेगी जार्ज। वो हमारे लिए मुसीबत खड़ी कर...।"

"आपको पुलिस को पहले ही सैट करना होगा।" जार्ज की गम्भीर आवाज आई।

"तब भी चालीस लाशें... ।"

"पुलिस अगर चाहेगी तो उसे एक लाश भी नज़र नहीं आयेगी।" इधर से जार्ज ने ठण्डे स्वर में कहा।

कैस्टों के होंठ सिकुड़ गये।

"चालीस लाशों को हमेशा के लिए ठिकाने लगा देना मामूली बात है। खासतौर से जब वो डोगरा के आदमी हों तो... ।"

"ठीक है। मैं कमिश्नर से बात करूंगा। हमें उन खास पुलिसवालों को सब कुछ बता देना होगा कि हम क्या करने जा रहे हैं, जो कि हमारे काम आते रहे हैं। बात उनकी जानकारी में होगी तो तभी वे हमारे सहायता कर पायेंगे। कल तक मैं सबको सैट कर लूंगा। मैं उन्हें समझा दूंगा कि डोगरा के आदमियों की लाशें गिरेंगी, परन्तु हाथो हाथ उन्हें गायब भी कर दिया जायेगा।" कैस्टो ने कहा।

"पुलिस का खर्चा काफी बैठ जायेगा। परन्तु हमें नुकसान नहीं होगा।" जार्ज की आवाज कानों में पड़ी—"डोगरा की जो ड्रग्स हम अपने कब्जे में लेंगे, वो करोड़ों की होगी।"

"ये बात पुलिस को भी पता होगी और उसमें से भी पुलिस को हिस्सा देना होगा। हमने पुलिस को किसी भी तरफ से नाराज नहीं करना है। पुलिस खुश रहेगी तो तभी हम धंधा कर पायेंगे। पुलिस जानती है कि गोवा में ड्रग्स का धंधा कभी भी रुक नहीं सकता। क्योंकि ये बहुत बड़ा टूरिस्ट सपाट है। हर रोज हजारों सैलानी आते हैं। ऐसे में पुलिस की भी मजबूरी है कि हमारा साथ देना और गोवा में शान्ति बनाए रखना। पुलिस की तुम ज़रा भी फिक्र मत करो जार्ज। जिस ढंग से तुम काम को पूरा करने में लगे हो, तो लगे रहो। डोगरा जब गोवा से जाये तो फौरन मुझे बताना।"

"जी कैस्टो साहब— ।"

"मुझे खबर देते रहना कि तुमने क्या-क्या काम पूरा कर लिया है।" कैस्टो ने खतरनाक स्वर में कहा और फोन बंद करते ही दांत भींचे बड़बड़ा उठा—"तू तो गया डोगरा। मेरी जान लेने की कोशिश करना, तेरे को बहुत भारी पड़ने जा रहा है।"

❑❑❑

❑❑❑

मुम्बई! सरबत सिंह का घर।

सोहनलाल और रुस्तम राव हर समय बहुत व्यस्त रहते थे। क्योंकि आरु, गुंजन और अर्जुन के ध्यान रखने के अलावा पाटिल, हंसा, जंवाई और प्रेमी का भी ध्यान रखना पड़ता था। उनके खाने की जरूरतें पूरी करना। खाने का अधिकतर सामान वो बाजार से ही

ले आते थे। घर पर बहुत कम बनाते थे। इतने लोगों का खाना बनाना आसान काम नहीं था, परन्तु बाजार से खाना लाने में वो सतर्कता बरतते। हमेशा अलग-अलग जगहों से खाना लाते कि किसी को उन पर शक ना हो जाये। देवेन साठी के आदमी उन्हें तलाश जो कर रहे थे। फिर इन सबको बाथरूम तक ले जाने का काम करना। एक के बंधन खोलना और बाथरूम से आने के बाद पुनः उसे बांधना। उसके बाद ही दूसरे को खोला जाता था। बाथरूम का दरवाजा बंद नहीं किया जाता था। सोहनलाल बंधन खोलने-बंद करने का काम करता था और रुस्तम राव तब तक सावधानी से हाथों में रिवॉल्वर लिए खड़ा रहता था। वे किसी को कुछ करने का मौका नहीं देना चाहते थे। दो दिन पहले हंसा ने वहां से भागने की कोशिश की थी, प्ररन्तु रुस्तम राव ने उसके सिर पर रिवॉल्वर की चोटें मारकर बेहोश कर दिया था। सजा के तौर पर हंसा को चौबिस घंटे तक ना खोला गया और ना ही उसके घायल सिर की मरहम पट्टी की गई।

इस वक्त सुबह के बारह बज रहे थे।

सोहनलाल और रुस्तम राव एक-एक करके सबको खाना खिलाने और बांध देने के बाद फारिग होकर ड्राईंग रूम में आ बैठे थे। आरु, गुंजन, अर्जुन के चेहरे मुर्झाये हुये थे। इतने दिन बंद कमरे में रहने से उन्हें परेशानी हो रही थी। परन्तु उन्होंने उन्हें कोई तकलीफ नहीं दी थी। वे शराफत से कमरे में बंद रहते। उनकी सुबह-शाम देवेन साठी से बात करा दी जाती। नगीना का फोन सोहनलाल को आता और सोहनलाल फोन आरु को थमा देता और बात हो जाती।

इस वक्त कमरे में पाटिल, जंवाई, प्रेमी, हंसा बंधे हुए फर्श पर पड़े थे। चारों के चेहरे मुर्झा रहे थे। बांधे जाने की थकान थी चेहरों पर। वो उखड़े हुए और गुस्से में थे। परन्तु चाहकर भी उन्हें कैद से छुटकारा नहीं मिल रहा था। बंधे रहने से शरीर सुन्न से हो रहे थे।

"सरबत तो बड़ा मतलबी निकला।" जंवाई कलप कर बोला—"उसने हमें यहां से निकालने की ज़रा भी कोशिश नहीं की।"

"कोशिश? प्रेमी भड़क उठा—"साला कहता है तुम यहीं ठीक हो। पाँच करोड़ की बात सुनकर उसके कानों पर जूं नहीं रेंगी। क्या पता पाँच करोड़ खुद ही हजम करने की सोच रहा हो।"

"ये बात नहीं है।" पाटिल कह उठा—"अब तक तुम लोगों को बात समझ लेनी चाहिये थी।"

"हम सब समझ रहे हैं।"

"साठी साहब के खिलाफ वो देवराज चौहान के साथ मिलकर काम कर रहा है।"

''वो तो हमें पता है।'' हंसा कह उठा—''पर देवराज चौहान उसे क्या दे देगा।''

''क्या पता देवराज चौहान ने उसे दो-चार करोड़ देने का वादा कर रखा हो।'' जंवाई बोला—''तभी वो पांच करोड़ की परवाह नहीं कर रहा कि हाथ तो सवा करोड़ ही आयेगा। कमीना। यहां हमारा हाल बुरा हो रहा है और खुद जाने कहां मजे कर रहा है।''

''अपने को देवराज चौहान जैसे डकैती मास्टर का दोस्त कहता है। देखना वो उसे लाख रुपया भी नहीं देगा।'' हंसा बोला—''दोस्ती तो अपने बराबर वाले से होती है। जैसे कि हम। देवराज चौहान उसे क्या दे देगा।''

''अब सरवत हमारा दोस्त नहीं रहा।'' प्रेमी ने कहा—''हमें यहां से छुड़ाने में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं। उसने तो परवाह ही नहीं की कि हम यहां बंधे हैं। कहता है बंधे रहना ही ठीक है तुम लोगों का।''

''एक बात बार-बार क्यों कहता है?'' जंवाई भड़का।

''खून उबल रहा है मेरा।'' प्रेमी ने गुस्से से कहा।

''इन बातों को छोड़ो और किसी तरह यहां से निकलने की सोचो।'' हंसा कह उठा।

''हाथ-पांव खुले हो तो सोचे।'' प्रेमी ने तीखी निगाहों से हंसा को देखा—''मेरा तो शरीर सुन्न पड़ रहा है। ये कमीने लोग एक-दो पैग ही दे दें। अपने हाथों से पिला दें। बेशक हाथ ना खोलें। तीन दिन से मेरा गला सूख रहा है।''

''मेरा भी—।'' जंवाई बोला।

''देख तो क्या जल्दी से बोला है, मेरा भी—जैसे वो दूध की बोतल में व्हिस्की डालकर मेरे मुंह से लगाने जा रहे हो।'' प्रेमी व्यंग से कह उठा—''हाथ-पांव बंधे हुए हैं और चैन तब भी नहीं।''

''तूने ही तो पैग की बात शुरू की।''

''मैंने तो बात शुरू की और तूने फट से मुंह खोल... ।''

''पागलों की तरह भौंकते मत रहो।'' पाटिल उखड़कर बोला—''बंधनों से आजाद होने की सोचो।''

''कोई चीज भी नहीं, जिसे बंधनों को काट सकें।''

''चीज हो भी तो क्या होगा। हाथ-पांव तो बंधे पड़े हैं।''

''मेरे पास चाकू है।'' हंसा धीमें स्वर में कह उठा—''पर हाथ बंधे होने की वजह से उसका कोई फायदा नहीं।''

''चाकू? कहां है?'' पाटिल ने पूछा।

''मेरी जेब में। इन्होंने तलाशी नहीं ली थी इसलिए—।''

"उल्लू के पट्ठे जब तेरे हाथ-पांव खोलते हैं बाथरूम जाने के लिए, तब तू चाकू से उन्हें मारता क्यों नहीं?"

"उसने रिवॉल्वर पकड़ी होती है। वो गोली चला देगा।" प्रेमी बोला।

"उल्लू का पट्ठा।" पाटिल ने उसे खा जाने वाली निगाहों से देखा।

"ये तो मुझे गाली देता है।" हंसा ने जंवाई और प्रेमी को देखा।

"देख भाई—।" जंवाई कह उठा—"हमारे दोस्त को गाली मत दे। माना तू साठी साहब का राइट हैंड है, पर हम भी कम नहीं है। अब तू इसे गाली दे रहा है। बाद में हमें भी देगा। क्यों प्रेमी?"

"हाँ-हाँ।" प्रेमी कह उठा—"गाली मत देना हमें।"

"गधों की औलादों चुप रहो। तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि तुम्हारे पास चाकू है।" पाटिल बोला।

"ध्यान नहीं रहा। वैसे भी क्या जरूरत थी जो—।"

"जरूरत ये थी कि अगर तूने पहले मुझे बताया होता तो अब तक हम यहां से निकल भी गये होते।" पाटिल गुर्रा उठा।

"वो कैसे?" हंसा के माथे पर बल पड़े।

पाटिल ने कमरे के खुले दरबाजे की तरफ देखा। फिर बोला।

"धीरे बोलो। हमें कुछ करना होगा।"

"क्या?"

"चाकू कहां है?" पाटिल ने धीमें स्वर में कहा।

"मेरी पैंट की पीछे की जेब में।"

"छोटा है, बड़ा है। बटन वाला है, गरारी वाला है—चाकू का हुलिया बता।"

"मीडियम साईज़ है। बटन वाला है।"

"ठीक है। तू खिसक-खिसककर मेरे पास आ। अपनी पिछली जेब मेरे हाथों से सटा दे। मैं चाकू निकालूंगा। उसे खोलकर अपने हाथ में पकड़ लूंगा। तू अपनी कलाइयों के बंधन चाकू पर रगड़कर काट लेना और फिर हम सबके बंधन काट देना। सावधानी से काम करना है हमें। उन दोनों कुत्तों को खबर ना लगे कि हम क्या कर रहे हैं।"

हंसा, प्रेमी और जंवाई की आंखें चमक उठी।

तीनों की नज़रें मिली।

"ये बात तो मेरे दिमाग में आई ही नहीं थी।" हंसा कह उठा—"मैं भी कितना बड़ा उल्लू का पट्ठा हूं।"

तभी दरवाजे पर आहट उभरी और रुस्तम राव ने भीतर प्रवेश

किया। सबकी निगाह उसकी तरफ उठी। रुस्तम राव ने वारी-वारी सबको देखा फिर कह उठा।

"चाकू की बात क्या होईला?"

दो पलों के लिए तो चुप्पी उभरी रही फिर जंवाई दांत फाड़कर बोला।

"हम प्लानिंग कर रहे थे।"

"क्या?" रुस्तम राव की शांत निगाह जंवाई पर जा टिकी थी।

"अगर हमारे पास चाकू होता तो हम किस तरह अपने बंधन काटने में कामयाब हो सकते थे।" जंवाई ने दांत दिखाते कहा—"हमारा एक काम करोगे।"

"आराम से इसी तरह पड़ेला बाप। फालतू की बात नेई हांकने का—।" रुस्तम राव का स्वर शांत था।

"तुम हमें एक चाकू ला दो। बाकी का काम हम निपटा लेंगे।" जंवाई पहले जैसे स्वर में कह उठा।

रुस्तम राव बिना कुछ कहे बाहर निकल गया।

चारों ने एक-दूसरे को देखा।

कुछ देर उनके बीच खामोशी रही।

"ये खतरे वाली बात है कि उन्होंने हमारी बात सुन ली। पर आधी ही सुनी।" पाटिल धीमे स्वर में कह उठा—"अब हम काम की बात धीमी आवाज में करेंगे। वैसे बेशक ऊंचे में बातें करो। हमें बहुत सतर्कता से काम करना होगा।"

"सालों के कान बहुत पतले हैं। सब बातें सुन रहे हैं हमारी।" प्रेमी ने गहरी सांस ली।

"अब शुरू हो जाओ।" जंवाई धीमे से बोला—"मैं जल्दी से आजाद होना चाहता हूं।"

"जल्दी मत करो।" प्रेमी ने कहा—"हमे पहले पाटिल साहब से बात फिक्स कर लेनी चाहिये।"

"क्या?" जंवाई ने प्रेमी को देखा।

पाटिल की निगाह भी प्रेमी पर जा टिकी।

"पाटिल भाई।" प्रेमी की आवाज धीमी थी—"पाँच करोड़ का क्या रहेगा?"

"क्या मतलब?"

"मतलब कि हम यहाँ से निकलेंगे तो हमारे साथ देवेन साठी का परिवार होगा। हम तो उसी चक्कर में मारे-मारे फिर रहे हैं कि पाँच करोड़ कमा सकें। यहाँ से निकलने के बाद तुम साठी से कहोगे

कि उसके परिवार को तुमने आजाद कराया है। पाँच करोड़ तुम ले लोगे। हम तो ऐसे ही रह जायेंगे।"

"ऐसा नहीं होगा।" पाटिल बोला।

"क्यों नहीं होगा, तुम ऐसा— ।"

"ये पाँच करोड़ का इनाम मेरे लिए नहीं है। मैं साठी साहब का सबसे खास आदमी हूं। मैं क्या इनाम लूंगा।" पाटिल ने कहा—"ये इनाम तो दूसरे लोगों के लिए है, जो नीचे काम करते हैं या तुम जैसे लोगों के लिए।"

"पक्का?"

"भरोसा करो मेरा। पाँच करोड़ मेरे लिए कोई मायने नहीं रखता।"

"बाद में मुकरोगे तो नहीं?"

"मेरे एक बार कहने पर मान लिया करो। यहाँ मेरी बुरी गत बनी हुई है। वैसे मैं दमखम वाला बंदा हूं।"

"बात तो ये ठीक कहता है कि ये इनाम उसके लिए नहीं है।" हंसा कह उठा—"ये साठी का राइट हैंड है।"

"राइट हो या लैफ्ट। हमें तो पाँच करोड़ से मतलब है।" जंवाई ने सोच भरे स्वर में कहा—"साठी की पत्नी और बच्चे, यहां से निकलने के बाद हमारे कब्जे में रहेंगे। उन्हें हम ही साठी के हवाले करेंगे।"

"ये बात ठीक कही।" हंसा ने सिर हिलाया।

"क्यों पाटिल साहब, बात मंजूर है।"

"मुझे क्यों एतराज होगा। यहां से निकलकर मैं तुम लोगों को सुरक्षित ठिकाने पर ले जाऊंगा, जहां देवराज चौहान या उसके साथी नहीं पहुंच सकते। बस यहां से निकल जाये, उसके बाद कोई चिन्ता नहीं।" पाटिल ने गम्भीर स्वर में कहा।

तभी दरवाजे पर सोहनलाल दिखा।

"तो यहां से निकलने जा रहे हो तुम लोग।" सोहनलाल कड़वे स्वर में बोला।

"प्लानिंग तो कर रहे हैं।" जंवाई मुस्करा पड़ा।

"चाकू चाहिये?" सोहनलाल ने घूरा।

"चाकू होगा तो तभी प्लानिंग सफल होगी। तुम ला दो चाकू। सरबत सिंह का लाल चाकू किचन में पड़ा है वो— ।"

"जिससे पिछली बार हमने मुर्गा काटा था।" प्रेमी कह उठा।

"वो ही।"

सोहनलाल आगे बढ़ा और झुककर जंवाई की तलाशी लेने लगा।

"क्या कर रहे हो?" जंवाई कह उठा।

"देख रहा हूं तुम्हारे पास चाकू तो नहीं है। चाकू के सपने तुम्हें बहुत आ रहे हैं।" सोहनलाल बोला।

सोहनलाल की बात पर उन्हें सांप सूंघ गया।

अब तलाशी में हंसा के पास से चाकू बरामद हो जाना था।

पाटिल गहरी सांस लेकर रह गया।

जंवाई की तलाशी लेकर सोहनलाल पीछे हटा और बोला।

"सलामती चाहते हो तो आराम से इसी तरह रहो। आजाद होने के ख्याली पुलाव मत बनाओ।"

"तुम हमारे सोचने पर पहरा नहीं लगा सकते।" प्रेमी ने मुंह बनाकर कहा—"खामखाह, यहां आकर फंस गये।"

"साठी की पत्नी और बच्चों को तो तुम लोग ठीक से रख रहे हो ना?" पाटिल बोला।

"तुम्हें इससे क्या?" सोहनलाल ने पाटिल को देखा।

"साठी को पसन्द नहीं आयेगा, अगर तुम लोगों ने उसके परिवार की देख-रेख में कोई लापरवाही की तो—।"

"तुम अपनी चिन्ता करो।" कहकर जगमोहन बाहर निकल गया।

खामोशी सी आ ठहरी वहां।

"बच गये।" हंसा फुसफुसाकर बोला—"अगर वो मेरी तलाशी लेता तो चाकू हाथ से निकल जाता।"

"चुप रहो।" पाटिल आहिस्ता से गुर्राया—"तुम लोगों की इन्हीं बेवकूफियों से ये नौबत आई।"

"सरबत्त सिंह की गर्दन हाथ में आ जाये तो एक ही झटके में अलग कर दूं।" प्रेमी ने गुस्से से कहा।

"मैं तेरे पास आऊं क्या?" हंसा ने कम आवाज में कहा—"तू मेरी जेब से चाकू निकालकर... ।"

"वहीं रहो और चुप रहो।" पाटिल ने होंठ भींचकर कहा—"जल्दी मत करो। अभी वो फिर इधर का चक्कर लगा सकते हैं। कुछ वक्त निकल जाने दो। मेरे ख्याल में रात को ये काम करना ठीक होगा, जब सब नींद में होंगे।"

□□□

□□□

चौथे दिन विलास डोगरा गोवा से कर्नाटक के शहर हवेरी के लिए रवाना हुआ। गोवा में उसका सारा वक्त बहुत शान्ति से बीता था। सारे काम आराम से निपटा लिए थे। ना तो देवराज चौहान की तरफ से कोई समस्या आई थी, ना विपुल कैस्टो की तरफ से। हालांकि

इस सारे वक्त के दौरान रमेश टूडे, डोगरा के आस-पास ही रहा था।
परन्तु सब ठीक रहा।
टूडे और डोगरा को भरोसा हो गया था कि देवराज चौहान मुम्बई वापस चला गया है और कैस्टो की तरफ से भी कुछ ना होने के कारण डोगरा को लगा कि उसे भ्रम हुआ होगा कि कैस्टो को बम वाले पैंन का पता चल गया है। रमेश टूडे की कार, डोगरा की क्वालिस के पीछे लगी रही और वे छः घंटों का सफर करके, हवेरी जा पहुंचे। डोगरा के हवेरी स्थित आदमियों को उनके आज आने की खबर गोवा से चलते समय डोगरा ने दी थी। ऐसे में हवेरी में उनके स्वागत की तैयारी पूरी थी।

शाम पाँच बजे वे हवेरी के महंगे इलाके के एक बंगले में पहुंचे। हवेरी में गोवा की अपेक्षा गर्मी थी। मौसम मुम्बई जैसा ही था। बंगले में उनके पन्द्रह-बीस आदमी मौजूद थे। जिनमें से सात बंगले के पहरे पर लगे थे। डोगरा का हवेरी स्थित सबसे खास आदमी रामानन्द कुट्टी खुद वहाँ मौजूद था। टूडे वहाँ पहुँचने के बाद बंगले के भीतर-बाहर हर तरफ के हालात देखने लग गया। डोगरा ने कुट्टी से कहा कि नहा-धोकर घंटे बाद वे उसे चाय पर मिलेगा।

डोगरा और रीटा एक कमरे में जा पहुंचे।

"मुझे कर्नाटक पसन्द है डोगरा साहब—।" रीटा कह उठी—"यहाँ का मौसम, पेड़-पौधे, यहां के लोग, सब कुछ मुझे जंचता है।"

"जो तुझे पसन्द, वो मुझे भी पसन्द है रीटा डार्लिंग।" डोगरा ने मुस्कराकर कहा।

"यहाँ हम ज्यादा रहेंगे।"

"अभी तो नहीं।" डोगरा ने उसकी कमर में हाथ डाला—"यहाँ का काम निपटने के बाद मुझे चिकमंगलूर पहुँचना है। अगर तुम यहाँ रहना चाहती हो तो रहो। वापसी पर तुम्हें ले लूंगा।"

"मैं तो आपके साथ रहूंगी।" रीटा इठलाकर कह उठी।

"मेरे साथ—?" डोगरा ने उसके होठों को चूमा।

"हाँ। आपके बिना मेरा दिल नहीं लगता।" रीटा मुस्करा पड़ी।

"तेरा भी मेरे जैसा हाल है।" डोगरा हंसा—"तेरे बिना मेरे भी दिल नहीं लगता। तू तो मेरी जान है।"

उसके बाद डोगरा नहा-धो आया।

रीटा भी नहाई। और टॉवल लपेटे बाहर आकर डोगरा के पास पहुंचकर बोली।

"कुछ आराम कर लें डोगरा साहब?" रीटा ने अदा से कहा।

डोगरा ने रीटा को सिर से पांव तक देखा और आंखें नचाकर बोला।

"जैसा आराम तू चाहती है वैसा ही रात को ही होगा। तेरा जलवा रात को देखूंगा।"

"वैसा ही करना, जैसा गोवा में किया था।"

"तू जो कहेगी रीटा डार्लिंग। वैसा ही होगा।" डोगरा कमीज डालता कह उठा—"मैं तो तेरा गुलाम हूं। अब जल्दी से तैयार हो जा। कुट्टी मेरा इन्तजार कर रहा होगा। देर हुई तो वो नाराज हो जायेगा।"

रीटा तैयार होने में लग गई और बोली।

"देवराज चौहान तो दुम-दबाकर गोवा से भाग गया। लगता है जगमोहन की मौत ने उसकी हिम्मत तोड़ दी होगी।"

"मुझे तो उसके चले जाने का राज समझ नहीं आया।" डोगरा ने सोच भरे स्वर में कहा—"करवार के समन्दर में जगमोहन मरा और अगले दिन सुबह देवराज चौहान गोवा से चलता बना। मेरे ख्याल में तो तब तक उसे जगमोहन की मौत की खबर भी नहीं मिली होगी।"

"आपका मतलब कि लापता जगमोहन को छोड़कर वो गोवा से चला गया?" रीटा बोली।

"लगता तो ऐसा ही है।"

"बात गले से नीचे नहीं उतरती डोगरा साहब।"

"बोला तो—मुझे उसके गोवा से चले जाने का मतलब समझ नहीं आया। अजीब सा लगा।"

"और वो कैस्टो? लगता है पैन वाला मामला कैस्टो को समझ नहीं आया। जबकि हम सोच रहे थे कि वो नाराज होकर कुछ करेगा।"

"कैस्टो का कोई इन्तजाम करना होगा।"

"इन्तजाम तो कर ही दिया है आपने बॉब गोवा में आ चुका होगा कैस्टो को खत्म करने के लिए।"

"हाँ। अब जल्दी से चलो। कुट्टी के पास पहुँचना है।"

रामानंद कुट्टी ने एक बड़े से टेबल पर चाय का इन्तजाम किया था। कहने को तो चाय थी, परन्तु खाने-पीने का सामान बहुत ज्यादा था। सांभर, इडली, डोसा, बड़ा, उप्पम के अलावा और भी कई चीजें थी खाने को।

रीटा खाने में व्यस्त हो गई।

डोगरा ने भी थोड़ा-बहुत खाया।

खाने में कुट्टी ने डोगरा का साथ दिया। जब चाय पीना शुरू की तो कुट्टी ने वहाँ खड़े अपने दोनों आदमियों को जाने का इशारा किया तो वे वहाँ से बाहर निकल गये। डोगरा ने चाय का घूंट भरकर कहा।

"क्या खबर है कुट्टी?"

"नाथ को मैंने आपके आने के बारे में बताया। पर वो नहीं माना।" कुट्टी ने कहा।

डोगरा ने चाय का घूंट भरा।

"वो स्वामी से ही हथियार लेगा।"

"वजह नहीं बताई उसने?"

"नहीं। वो इस बारे में मुझसे ज्यादा बात नहीं करता। अचानक ही उसे कुछ हुआ है। वरना चार साल से वो हमारे से ही हथियार ले रहा था। सब कुछ ठीक चल रहा था कि अचानक ही वो बदल गया। मैंने उसके बारे में कल ही कुछ सुना है।"

"क्या?" डोगरा ने कुट्टी को देखा।

"पता चला है कि स्वामी की बहन ने उसे अपने चक्कर में फंसा रखा है। वो उसकी बात मानता है।"

"धंधे में औरत का इस्तेमाल करता है स्वामी। वो भी बहन का। ये तो गलत बात है डोगरा साहब।" खाते-खाते रीटा कह उठी।

"तो स्वामी ने अपनी बहन को आगे करके नाथ को फंसाया।" डोगरा ने चाय का घूंट भरा।

कुट्टी ने सिर हिला दिया।

"इससे हमें कितना नुकसान हो रहा है कुट्टी?"

"हर साल बीस करोड़ का नुकसान होगा। बाजार में हमारी पकड़ भी कमजोर होगी। पाकिस्तान और चीन से आप हथियार लेते हैं और आगे देते हैं। दोनों देशों में आपकी पूछ खत्म हो जायेगी। चलती गाड़ी को ही सब सलाम करते हैं।" कुट्टी ने कहा।

"हमें नुकसान नहीं होना चाहिये।" डोगरा ने कहा—"स्वामी की बहन हमारा काम बिगाड़ रही है। कहाँ रहती है वो?"

"इधर ही, हवेरी के एक इलाके में।"

"नाथ से मेरा मिलने का वक्त कब का फिक्स है?"

"आज रात दस बजे पार्क होटल में आप नाथ से मिलेंगे। नाथ तो मिलना ही नहीं चाहता था। मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी, उसे मुलाकात के लिए तैयार करने में। यूं समझिये कि मैंने जबरदस्ती नाथ को इस मुलाकात के लिए खींचा है।"

डोगरा ने चाय का प्याला खत्म करके टेबल पर रखते कहा।

"स्वामी की बहन को आज रात साढ़े नौ और दस बजे के बीच खत्म करवा देना— ।"

कुट्टी फौरन सतर्क दिखने लगा।

"ठीक है डोगरा साहब।" वो बोला।

"इससे स्वामी से आपकी दुश्मनी हो जायेगी डोगरा साहब।" रीटा खाना छोड़ते कह उठी।

"ऐसा होगा कुट्टी?" डोगरा ने पूछा।

"हो सकता है।" कुट्टी ने सिर हिलाया—"स्वामी को बहुत खतरनाक समझा जाता है इधर।"

"तो उसकी बहन को इस तरह मारना कि स्वामी ये ना सोच सके कि हमने मारा है।" डोगरा ने कहा।

कुट्टी ने सिर हिलाया।

"ये काम आज रात साढ़े नौ और दस बजे के बीच हो जाना चाहिये। जब मैं नाथ से मिलूं तो स्वामी की बहन जिन्दा ना हो।"

कुट्टी ने पुनः सिर हिलाया।

"बात छिपेगी नहीं कि स्वामी की बहन आपके इशारे पर मारी गई है।" रीटा कह उठी।

डोगरा ने कुट्टी को देखा तो कुट्टी ने कहा।

"बात छिप जायेगी। स्वामी सोच भी नहीं सकेगा कि इसमें हमारा हाथ है।"

डोगरा ने सिग्रेट सुलगा ली।

"व्यास के बारे में अभी बात करूंगा... ।"

"नाथ से मिलने के बाद।" डोगरा ने हाथ उठाया—"ये मामला हमारे लिए ज्यादा जरूरी है।"

□□□

□□□

हरीश खुदे उस वक्त, उसी बंगले के बाहर डेढ़ सौ मीटर की दूरी पर, बारह बजे से मौजूद था। देवराज चौहान पहले से, विलास डोगरा का सारा प्रोग्राम जानता था। ये ही वजह थी कि वो आज बारह बजे बंगले पर नज़र रखने का आ गया था। देवराज चौहान ने उसे बताया था कि आज विलास डोगरा हवेरी पहुंचेगा।

देवराज चौहान, खुदे, नगीना, देवेन साठी, बांकेलाल राठौर, सरबत सिंह, मोना चौधरी और पारसनाथ तीन दिनों से हवेरी में मौजूद थे। वे अलग-अलग ही हवेरी पहुंचे थे। परन्तु वो गोल्डन होटल में अलग-अलग ठहरे थे। थ्री स्टार होटल था और दूसरी मंजिल पर ही उन्होंने कमरे लिए थे। साठी के चार लोग गोकुल, शेखर, शिंदे और

घंटा, अलग कमरे में उसी फ्लोर पर ठहरे थे। साठी, नगीना के साथ बहुत नाराजगी से पेश आ रहा था कि उसके परिवार को कैद कर रखा है और उसे इस प्रकार जगह-जगह घुमाया जा रहा है। परन्तु साठी खुद पर काबू रखे हुए था। वो भूला नहीं था कि उसका परिवार इनकी कैद में था। जगमोहन, महाजन के साथ, उसके दो दिन बाद हवेरी पहुंचा था। जगमोहन ठीक हाल में था परन्तु टूडे को वो बहुत याद करता था। जगमोहन इसी बात में सुलग रहा था कि टूडे ने पहले देवराज चौहान की जान लेने की चेष्टा की और फिर उसे मारने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। देवराज चौहान ने उसे होटल से बाहर ना निकलने की हिदायत दी कि उसे सलामत देखकर, डोगरा सतर्क ना हो जाये। वो खुद भी बहुत कम बाहर निकलता था।

इस वक्त खुदे उस बंगले पर नज़र रखे था और एक घंटा पहले उसने उसी क्वालिस में डोगरा को वहाँ पहुँचते देखा। पीछे-पीछे एक और कार देखी, जिसे कि रमेश टूडे खुद चला रहा था। वो बंगले में चले गये। घंटाभर उसने इन्तजार किया। बंगले से कोई बाहर नहीं निकला। पहरेदारी में टहलते लोग उसे दिख रहे थे। उसने देवराज चौहान को फोन किया।

"डोगरा आ पहुंचा है।" खुदे ने कहा।

"ये ठीक रहा।" देवराज चौहान की गम्भीर आवाज़ उसके कानों में पड़ी—"क्या पोजीशन है?"

"वो बंगले में है। रमेश टूडे भी साथ है। वो मुझे दो बार नज़र आ चुका है। बंगले का हाल-चाल देखता घूम रहा है। यहाँ पर मैं पन्द्रह से ऊपर लोगों को देख रहा हूँ। पाँच-सात तो पहरे पर तैनात हैं।" हरीश खुदे की नज़रें, बात करते हुए भी घूम रही थी।

"तुम वहीं रहो। नज़र रखो। कोई खास बात हो तो बताना। अंधेरा होने पर मैं तुम्हारे पास आऊंगा। दुलेरा के बताये प्रोग्राम के मुताबिक डोगरा रात दस बजे, नाथ नाम के आदमी से मिलने पार्क होटल जायेगा।"

"तो क्या हमें उसके पीछे पार्क हॉटल जाना होगा?"

"तुम जाओगे। तब तुम उस पर नज़र रखोगे। मुझे बताते रहोगे कि डोगरा अभी वहाँ व्यस्त है। रात दस बजे तक मैं जगमोहन को वहाँ बुला लूंगा और बंगले में प्रवेश करेंगे। चूंकि डोगरा बंगले पर नहीं होगा। ऐसे में पहरा ना के बराबर ही होगा और जो पहरा होगा, वो भी लापरवाही से भरा होगा।" उधर से देवराज़ चौहान ने कहा।

"मतलब कि रात जब डोगरा वापस लौटेगा तो उसका शिकार करोगे।" खुदे बोला।

"अभी तक तो प्रोग्राम यहीं है।"

"डोगरा को आसानी से पार्क होटल में मारा जा सकता है।"

"बेहतर होगा कि उसकी मुलाकात साठी से हो जाये।"

"ये भी जरूरी है।" खुदे ने फोन पर सिर हिलाया।

"बंगले में डोगरा काबू में आ गया तो उसे रिवॉल्वर के दम पर वहाँ से ले जायेंगे और साठी के सामने खड़ा करेंगे।"

"वहाँ रमेश टूडे भी होगा।" खुदे ने जैसे याद दिलाया।

"डोगरा कब्जे में होगा तो वो कुछ नहीं कर सकेगा। अंधेरा होने पर मिलेंगे।" कहकर देवराज चौहान ने उधर से फोन बंद कर दिया।

❑❑❑

❑❑❑

रात साढ़े नौ बजे तीन कारें बंगले से निकली। एक कार में डोगरा, रीटा और कुट्टी थे। आगे-पीछे की कारें आदमियों से भरी हुई थी। बंगले पर सिर्फ पाँच आदमी ही रह गये थे।

"रीटा डार्लिंग।" विलास डोगरा कह उठा—"जरा मालूम तो करो कि मुम्बई में साठी को, उसका परिवार मिला कि नहीं?"

रीटा ने तुरन्त फोन किया और आधा मिनट बात करके, फोन बंद करते कहा।

"नहीं मिला।"

"लगता है बढ़िया जगह देवराज चौहान ने उसके परिवार को रखा है।" डोगरा मुस्कराया—"लेकिन देवराज चौहान हार जायेगा। देर-सवेर में साठी अपने परिवार को ढूंढ लेगा और देवराज चौहान को बुरी मौत मारेगा। कुट्टी—।"

"जी डोगरा साहब—।" कुट्टी ने गर्दन घुमाकर पीछे देखा।

"वक्त क्या हुआ है?" डोगरा ने अर्थपूर्ण स्वर में कहा।

बात का मतलब समझते ही, कुट्टी विश्वास भरे स्वर में कह उठा।

"दस बजे से पहले ही स्वामी की बहन की जिन्दगी खत्म हो जायेगी।"

"तेरे को कैसे पता चलेगा?"

"फोन आयेगा।"

"पार्क होटल हम कितने बजे पहुँचेंगे?"

"दस से पाँच मिनट पहले।"

डोगरा सिर हिलाकर रह गया।

कारे दौड़ती रही। दौड़ती कारें जब पार्क होटल के पोर्च में रुकी तो कुट्टी का फोन बज उठा।

"हाँ—।" कुट्टी ने बात की।

कुछ सुनने और सिर हिलाने के बाद कुट्टी फोन बंद करता कह उठा।

"काम हो गया डोगरा साहब।"

"कैसे?"

"उसने फाँसी लगा ली। गले में फंदा डाला और पंखे के साथ लटक गई।" कुट्टी बोला।

"डोगरा साहब।" रीटा कह उठी—"आजकल लोग फाँसी बहुत लगाने लगे हैं।"

"लम्बे रास्ते को, जल्दी से तय करने की कोशिश में लोग फाँसी लगा बैठते हैं। सब्र नहीं रहा आजकल लोगों में रीटा डार्लिंग। अगर स्वामी ने मर्दों की तरह खेल, खेला होता तो उसकी बहन फाँसी ना लगाती।" डोगरा मुस्कराया।

"नाथ का क्या होगा उसकी महबूबा तो गई—।"

"उसे समझा दूंगा।" डोगरा कार से बाहर निकलता कह उठा—"वो मेरी बात जल्दी समझ जायेगा।"

•

पार्क होटल की तीसरी मंजिल पर एक कमरे में नाथ से मिलने का प्रोग्राम रखा गया था। नाथ और डोगरा लगभग साथ-साथ ही उस कमरे में पहुँचे थे। डोगरा के साथ रीटा और कुट्टी थे तो नाथ के साथ चोंचदार नाक वाला, छोटे बालों वाला, सपाट-कठोर चेहरे वाला व्यक्ति था जो कि देखने में ही हत्यारा लगता था। नाथ चालीस बरस का, सांवले रंग वाला, गठे शरीर का मालिक था। वो क्लीन शेव्ड था। पाँच-दस लम्बाई थी। वो इस वक्त काली पैंट और सफेद रंग की चार खाने वाली कमीज पहने था। चेहरे पर गम्भीरता और उखड़ेपन के भाव फैले थे। डोगरा को देखकर वो अपने चेहरे पर जबरदस्ती की मुस्कान लाया और हाथ मिलाते वक्त कोई उत्साह नहीं दिखाया।

"कैसे हो डोगरा साहब?" नाथ बोला।

"मैं तो पहले की तरह जवान हूँ। पर तुम भी वैसे ही हो। बढ़िया दिख रहे हो।" डोगरा कमरे में मौजूद सोफे पर बैठता कह उठा—"दो सालों बाद हम मिल रहे हैं, पर लगता है जैसे कल की ही बात हो।"

नाथ भी बैठ गया। उसका आदमी कमरे में एक तरफ खड़ा हो गया।

"कुट्टी।" डोगरा बोला—"वक्त कम है और काम बहुत करने

हैं। तुम जाओ और डिनर यहाँ भिजवाने का इन्तजाम करो। कमरे में आने की जरूरत नहीं। मैं नहीं चाहता, मेरे और नाथ के बीच कोई तीसरा मौजूद हो।"

नाथ ने बेचैनी से पहलू बदला।

"जी डोगरा साहब।" कहने के साथ ही कुट्टी बाहर निकल गया।

हमेशा की तरह ऐसे मौके पर रीटा, डोगरा के पीछे खड़ी थी।

डोगरा ने नाथ को देखा फिर उसके आदमी को देखता कह उठा।

"क्या तुम्हारा आदमी हमारी बातों के बीच मौजूद रहेगा?" स्वर शांत था।

नाथ फौरन कुछ ना कह सका।

"मुझे कोई एतराज नहीं। पर तुम्हें परेशानी हो सकती है कि बात बाहर निकल गई।" डोगरा ने कहा।

ना चाहते हुए भी नाथ ने अपने आदमी को बाहर जाने का इशारा किया।

वो आदमी बाहर निकल गया। दरवाजा बंद हो गया।

विलास डोगरा एकाएक मुस्कराया। सिग्रेट निकाली और पैकिट नाथ की तरफ बढ़ाया।

नाथ ने इन्कार कर दिया।

डोगरा ने सिग्रेट सुलगाई और कश लेकर बोला।

"मैं आज ही, शाम को हवेरी पहुँचा। सबसे पहले तुमसे मिलना चाहता था।"

"मेरा मन नहीं था यहाँ आने का। कुट्टी ने मजबूर किया कि आप मिलना चाहते हैं।" नाथ बोला।

"तो क्या तुम नहीं मिलना चाहते थे?" डोगरा हंसा।

"हमारे मिलने की कोई जरूरत नहीं थी।" नाथ ने डोगरा को देखा।

"बिजनेस तुम स्वामी के साथ कर रहे हो तो इसका ये मतलब तो नहीं कि तुम मेरे से मिलो ही नहीं। ये तो गलत है। हममें रिश्तें तो बने रहने चाहिये। क्या पता फिर कब, किसे, किसकी जरूरत पड़ जाये।"

"मैं बहुत व्यस्त रहता हूँ।"

"मुझे खुशी है कि तुमने अपनी व्यस्तता के बीच में से, मेरे लिए वक्त निकाला। स्वामी की बहन कैसी है नाथ?"

नाथ पल भर के लिए चौंका। फिर सामान्य हो गया।

"ये मेरा व्यक्तिगत मामला है डोगरा।" नाथ बोला—"इस बात को अलग रहने दो।"

"उसका नाम क्या है?" डोगरा मुस्करा रहा था।

"मैंने कहा ना, उसकी बात मत करो।"

"मैं तुम्हें तुम्हारे काम की बात बताने वाला हूँ। नाराज होने की जरूरत नहीं। नाम क्या है उसका?"

"सुमन।" नाथ के होंठ भिंच गये।

"खूबसूरत भी बहुत होगी। तभी तो वो तुम्हें फाँस सकी।" डोगरा ने सिर हिलाया—"तुम।"

"डोगरा।" नाथ का स्वर सख्त हो गया—"हम लोगों में बिजनेस संबंध है। व्यक्तिगत बातों को हमारे बीच...।"

"स्वामी ने तुम्हें अपनी तरफ खींचने लिए अपनी बहन को चारा बनाया कि तुम उससे हथियार लो और आतंकवादी संगठनों और दूसरे गिरोहों को सप्लाई करते रहो। तुमने एकदम मेरे से किनारा कर लिया। परन्तु सुमन भी—।"

"ये मेरा व्यक्तिगत मामला...।"

"परन्तु सुमन को तुम्हारे साथ अपना रिश्ता स्वीकार नहीं है। वो अपने भाई के इशारों पर ज्यादा नहीं चलना चाहती। उसे कोई और लड़का पसन्द है और वो उससे शादी करना चाहती है।" डोगरा मुस्करा रहा था।

नाथ एकटक डोगरा को देखने लगा।

"समझे मेरी बात को नाथ।"

"तुम्हें ये बात कैसे पता?" नाथ के होठों से निकला।

"क्या सुमन ने तुमसे ये बात कही?"

"ऐसा तो कुछ नहीं है। होता तो वो मुझसे कह देती। लेकिन...।" नाथ थम सा गया कहते-कहते।

"लेकिन क्या?"

"कुछ दिनों से मैं उसके व्यवहार में आया बदलाव महसूस जरूर कर रहा हूँ।" नाथ जैसे अपने आप से बोला। वो बहुत बेचैन हो उठा था।

"तो तुम समझ रहे हो ना कि मैं सच कह रहा हूँ।" डोगरा खुश था कि यूँ ही चलाया तीर निशाने पर जा लगा है।

"ऐसे रिश्ते ज्यादा चलते भी नहीं है डोगरा साहब।" रीटा कह उठी—"ये तो स्वामी ने अपना उल्लू सीधा किया नाथ साहब को बेवकूफ बना कर। एक दिन तो सुमन को अकल आनी ही थी कि वो अपनी जिन्दगी देखे।"

"नहीं।" नाथ कह उठा—"ऐसा कुछ नहीं है। सुमन मेरे से शादी करने वाली है।"

"वहम मत पालो।" डोगरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"सुमन किसी ओर को चाहती है। अब सीन ये है कि स्वामी, सुमन को इस बात के लिए तैयार करने पर लगा हुआ है कि तुम्हें फंसाये रखे। स्वामी जानता है कि सुमन तुम्हारे हाथ से गई तो तुम स्वामी के हाथ से निकल कर वापस मेरे पास आ जाओगे। कई दिनों से स्वामी और सुमन के बीच तगड़ा तनाव चल रहा है। सुमन अब तुम्हें छोड़ देना चाहती है। ये महसूस करके स्वामी ने अपनी बहन को धमकी दे दी कि अगर उसकी बात नहीं मानी तो उसे जान से मार देगा। ऐसे में तुम सोच ही सकते हो कि सुमन की मानसिक स्थिति किस हाल से गुजर रही होगी। अब वो तुम्हें पसन्द नहीं करती। अपने भाई को पसन्द नहीं करती। वो अपनी पसन्द के लड़के के साथ शादी कर लेना चाहती है परन्तु स्वामी उसकी इच्छा में दीवार बनकर खड़ा है। स्वामी को ये चिन्ता है कि कहीं तुम उससे हथियार लेना बंद ना कर दो। तुम ही बताओ नाथ ये जबरदस्ती का रिश्ता कब तक चलेगा।"

"तुम बकवास कर रहे हो डोगरा।"

"सुना रीटा डार्लिंग।" डोगरा ने अपने कंधे पर पड़े रीटा के हाथ को थपथपाया—"इसें मेरी बात का भरोसा नहीं हो रहा।"

"फिर तो बढ़िया ये ही है कि नाथ साहब, सुमन से सीधा-सीधा पूंछ ले कि उसका भाई उसे क्यों परेशान कर रहा है। मुझे भरोसा है कि नाथ साहब प्यार से पूछेंगे तो सुमन सारी बात इनसे कह देगी।" रीटा सामान्य स्वर में कह उठी।

"ये बातें झूठ हैं। सुमन ने सप्ताह पहले ही मुझसे वादा किया है अगले महीने वो मुझसे शादी कर लेगी।"

"सप्ताह पहले।" डोगरा ने सिर हिलाया—"सप्ताह बहुत लम्बा होता है किसी के भी विचार बदलने या जीवन में नया साथी आ जाने के लिए। वैसे स्वामी और सुमन के बीच ये सब कुछ पाँच-छः दिनों से चल रहा है।"

"सुमन आपको बेवकूफ बना रही है नाथ साहब।" रीटा बोली—"वो जल्दी ही अपनी शादी का कार्ड आपको भेज देगी।"

"क्या बकवास है। क्या हम इन्हीं बातों के लिए मिले हैं।" नाथ भड़क उठा—"मेरा वक्त बरबाद कर—।"

"होश में आओ नाथ।" डोगरा शांत स्वर में बोला—"ये जरूरी बातें हैं। तुम्हारी जिन्दगी में महत्वपूर्ण जगह रखती है सुमन। परन्तु तुम जिन बातों से अनजान हो, हम वो बातें तुम्हें बता रहे हैं। ये ठीक है कि मुझे पसन्द नहीं आया कि तुम स्वामी से हथियार लेने लगे। उसने अपनी बहन के द्वारा तुम्हें फांसा और तुम्हें, मुझसे छीन लिया।

परन्तु तुम धोखे में हो। ये भाई-बहन का खेल है और वो तुम्हें बेवकूफ बनाकर अपना मतलब निकाल रहे हैं। परोसा सामान ज्यादा देर थाल में नहीं टिकता और सुमन परोसा माल ही है। सच बात मैंने तुम्हें बता दी है और तुम अच्छी तरह मालूम कर सकते हो कि मैंने गलत कहा था...।"

उसी पल नाथ उठ खड़ा हुआ।

"मैं चलूंगा डोगरा।" नाथ गुस्से में और परेशान दिखा।

"ऐसे कैसे, अभी तो हमने डिनर करना...।"

"मैं माफी चाहता हूँ, इन बातों के बाद डिनर की इच्छा मन में नहीं...।"

तभी नाथ का मोबाइल फोन बज उठा। बात अधूरी रह गई। उसने फोन निकाल कर बात की। उधर से जो कहा जा रहा था, वो सुनने लगा। उसका चेहरे का रंग, हाव-भाव बदलने लगे। देखते ही देखते उसका चेहरा फक्क पड़ गया।

"क्या कहा?" नाथ के होठों से निकला—"सुमन ने आत्महत्या कर ली।"

विलास डोगरा उसी पल खड़ा हो गया।

नाथ ने फोन कान से हटा लिया। चेहरे पर लुट जाने के भाव थे।

"ये तो बहुत बुरा हुआ।" डोगरा ने दुःख भरे स्वर में कहा—"स्वामी ने सुमन के लिए सब दरवाजे बंद कर दिए होंगे कि उसे हर हाल में तुम्हारे साथ ही रहना है। उस बेचारी को कोई रास्ता ना सूझा और उसने आत्महत्या कर ली।"

नाथ की आँखें भर आईं। वो धप्प से वापस सोफे पर जा बैठा।

डोगरा और रीटा उसे देखते रहे। चेहरो पर दुःख की छाप ओढ़ ली थी।

"ये क्या हो गया।" नाथ तड़प भरे स्वर में कह उठा—"सुमन ने मुझसे कहा होता। स्वामी ने मेरे से बात की होती। मैं सुमन को आजाद कर देता। मैं सच में प्यार करता था सुमन से। वो बहुत अच्छी लड़की थी। ये-ये क्या हो गया।" उसकी आँखों से आंसू निकल गये।

"मैं जानता हूँ बहुत बुरा हुआ। स्वामी को तुमसे बात करनी चाहिये थी कि सुमन किसी और से शादी करना चाहती है। परन्तु स्वामी ये सोच कर चुप रहा कि तुम उससे हथियार लेना बंद कर दोगे। स्वामी सिर्फ अपने मतलब का है। उसने अपनी बहन की भी परवाह नहीं की।"

नाथ बैठा रहा। उसकी आँखों से आंसू बहते रहे।

तभी दरवाजा खुला और कुट्टी ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा।

"डिनर हाजिर है।" उसके पीछे दो वेटर खाने की ट्राली लिए दिखे।

"डिनर वापस ले जाओ।" डोगरा ने हाथ उठाकर गम्भीर स्वर में कहा।

कुट्टी ने एक निगाह नाथ पर डाली फिर बाहर निकलते हुए दरवाजा बंद कर दिया।

कमरे में लम्बे पलों तक शान्ति रही।

नाथ के आंसू बहते रहे। वो सोफे पर पस्त हाल में अधलेटा सा था।

"कुछ कहिये डोगरा साहब।" रीटा अफसोस भरे स्वर में बोली—"बेचारे नाथ साहब तो हिम्मत हार बैठे हैं।"

"अपने को संभालो नाथ। तुम तो मजबूत आदमी हो। अकसर मैं तुम्हारी तारीफ करता हूं।" डोगरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"अगर मुझे ज़रा भी इस बात का एहसास होता कि वो लड़की आत्महत्या कर लेगी तो मैं इस मुलाकात का इन्तजार नहीं करता तीन दिन पहले ही सारे हालात तुम्हें फोन पर बता देता। ताकि तुम स्वामी को समझाकर सुमन की सहायता करते। वो जिससे शादी करना चाहती है, उसे करने देते। परन्तु अब वक़्त हाथ से निकल चुका है। सुमन जिन्दा नहीं रही। खेल खत्म हो गया। स्वामी को चाहिये था कि वक्त रहते वो तुमसे बात कर लेता तो सब ठीक हो जाता। तब शायद सुमन को तुम समझा पाते और वो तुमसे ही शादी करने को तैयार हो जाती। जो हुआ, उसका मुझे बड़ा अफसोस है नाथ साहब। तुमसे ये बात करने आया था कि स्वामी से हथियार मत लो। मेरे पास चीन के बनाये नये हथियार आये हैं जो कि आतंकवादियों को बहुत पसन्द आयेंगे। परन्तु अभी वक्त नहीं है ऐसी बातें करने का। मैं तुम्हारे दुःख में शामिल हूं। मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूं तो बताओ।"

नाथ ने आंसू पोंछे। सीधा होकर बैठा। बेचैन दिखा वो।

"सुमन मेरी जिन्दगी में बहुत ज्यादा जगह रखती थी।" भर्राये स्वर में बोला नाथ—"स्वामी को मेरे से बात करनी चाहिये थी कि सुमन का इरादा कुछ और है। मेरे से बात ना करके स्वामी ने बहुत गलत किया।"

"डोगरा साहब।" रीटा कह उठी—नाथ साहब की कुछ समस्या तो मैं हल कर सकती हूं।"

"वो कैसे?"

"मेरी मुंह बोली बहन है। बीस साल की है और अभी तक उसने

किसी से प्यार भी नहीं किया। नाथ साहब चाहें तो अपनी बहन का रिश्ता मैं नाथ साहब से जोड़ सकती हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी बहन ला-जवाब है और नाथ साहब उसे जरूर पसन्द करेंगे।"

"ये तो अब नाथ साहब की मर्जी पर है।" डोगरा ने शांत स्वर में कहा।

कुछ खामोशी के बाद, नाथ ने सिर उठाया और दोनों को देखकर कहा।

"ऐसी कोई बात नहीं। लड़कियों की कमी नहीं है मुझे। परन्तु सुमन के साथ मेरा मन लग गया था। स्वामी ने बहुत गलत किया। मैं उसे कभी भी माफ नहीं कर सकता।" नाथ उठ खड़ा हुआ—"मेरा मन ठीक नहीं है डोगरा साहब। अब मैं चलूंगा।"

"मैं समझता हूँ।" डोगरा ने सिर हिलाया—"इस वक्त तुमसे कोई बात नहीं हो सकेगीं। भगवान ना करे रीटा को कुछ हो जाये तो मेरी हालत तुमसे भी बुरी हो जायेगी। शायद मैं अपने कामों को ठीक से संभाल भी ना सकूं। हम फिर मिलेंगे नाथ। नहीं तो फोन पर बात कर ही लेंगे। वैसे मेरा ख्याल है कि अब तुम स्वामी से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहोगे। अगर उसने सुमन पर सख्ती ना की होती तो सुमन ने कभी भी आत्महत्या जैसा कदम नहीं उठाना था।"

नाथ चला गया।

दरवाजा बंद होते ही रीटा मुस्कराकर कह उठी।

"आपने तो कमाल कर दिया डोगरा साहब। क्या ड्रामा किया है नाथ के सामने। मुझे तो नहीं लगता कि अब वो स्वामी से हथियार ले। वो तो स्वामी की शक्ल देखना भी पसन्द नहीं करेगा। सुमन की आत्महत्या को, स्वामी के गले में डाल दिया।"

"मेरे ख्याल में अब नाथ सीधा हो जायेगा।"

"ख्याल में क्या, पक्का सीधा हो जायेगा एक बात तो बताइये डोगरा साहब—।"

"कहो।"

"वो आपने सच कहा था कि मुझे कुछ हो गया तो आपकी हालत बुरी हो जायेगी।"

डोगरा ने मुस्कराकर रीटा को देखा।

रीटा करीब आ गई। डोगरा ने कमर में हाथ डाला और उसे अपने से सटा लिया।

"रीटा डार्लिंग तुम तो मेरी जान हो। नाथ के लिए सुमन क्या अहमियत रखती होगी, जो तुम मेरे लिए रखती हो। तुम्हारे बिना तो

मैं अधूरा हूं और आशा करता हूं कि तुम्हारे साथ सौ साल की जिन्दगी बिताऊंगा।"

"सच डोगरा साहब— ।"

"अपनी जान के टुकड़े की कसम।" डोगरा ने प्यार से रीटा के गाल को मसला।

रीटा ने गहरी सांस ली।

डोगरा ने उसकी कमर से हाथ हटाया तो रीटा कह उठी।

"आपके बिना तो मर ही जाऊंगी डोगरा साहब।"

"जानता हूं।"

"क्या?"

"पहले जमाने में जब औरतें अपने पति के मरने पर, जलती चिता में कूदकर जान दे देती थी, मेरे मरने पर तू भी ऐसा ही करेगी।"

"आपको कैसे पता?"

"मुझे पता है तू मुझे कितना चाहती है। लेकिन घबरा मत मुझे कुछ नहीं होगा। सौ साल की उम्र तक हम इकट्ठे रहेंगे।"

"बच्चे भी होंगे हमारे?"

"नहीं बच्चे होते ही हमारा प्यार बंट जायेगा। तेरे को बच्चों की चिन्ता होने लगेगी। बच्चों की जरूरत नहीं है रीटा डार्लिंग। तेरा-मेरा साथ बना रहे, ये ही शानदार रहेगा। हम दोनों बहुत खुश रहेंगे।"

"आप कितनी अच्छी बातें करते हैं डोगरा साहब— ।"

"तू सामने हो तो ऐसी बातें खुद-ब-खुद ही मुंह से निकलती है।" डोगरा ने कहा और सिग्रेट सुलगा ली—"नाथ को हमने अच्छी तरह संभाला। वो स्वामी का मुंह भी नहीं देखेगा अब। नाथ मेरे हाथों से निकल जाये। ये बात मुझे पसन्द नहीं आई थी।"

रीटा कुछ कहने लगी कि तभी दरवाजा खुला और कुट्टी ने भीतर प्रवेश किया।

❑❑❑
❑❑❑

रात के 11.35 हो रहे थे।

डोगरा की कार पार्क होटल से चली तो आदमियों से भरी दो कारें आगे-पीछे लग गई। पीछे वाली सीट पर डोगरा और रीटा मौजूद थी। आगे सीट पर कुट्टी था। एक अन्य आदमी कार चला रहा था। रात के वक्त कर्नाटक के हवेरी शहर में ट्रेफिक कम हो गया था फिर भी मुख्य सड़कों पर वाहन दौड़ते दिखाई दे रहे थे। सड़क के किनारे लगी लाइटें सड़कों को रोशन किए हुए थी।

"व्यास क्या कहता है कुट्टी?" डोगरा ने एकाएक पूछा।

"वो ड्रग्स का काम छोड़ना चाहता है।" कुट्टी ने कहा।

"क्यों?"

"कहता है थक गया है। बाकी की जिन्दगी आराम से वितायेगा। अब नोटों की कमी नहीं रही उसके पास।"

"साउथ इंडिया में मेरे ड्रग्स के धंधे को 10 सालों से व्यांस ही संभाल रहा है। अब वो धंधे से अलग कैसे हो सकता है। तुमने उसे समझाया नहीं कि धंधे से अलग हो जाने का क्या मतलब होता है।" डोगरा ने नाराजगी से कहा।

"मैंने उसे कुछ नहीं कहा। सोचा आप ही उससे बात करें तो बेहतर है।" कुट्टी बोला।

"कहाँ है व्यास?"

"कोट्टुरू गया है। अपने गाँव। बूढ़े माँ-बाप से मिलने। परिवार तो उसका हवेरी में रहता है।"

"उसे बोला नहीं कि मैं आने वाला हूँ।"

"सब पता था उसे। दो दिन पहले कोट्टुरू चला गया। मुझे तो बाद में पता चला। उसने फोन भी बंद कर रखा है।"

"ये तो गलत कर रहा है व्यास।" डोगरा ने सिर हिलाया।

कुट्टी कुछ नहीं बोला।

"कोट्टुरू कितनी देर का रास्ता है?" डोगरा ने पूछा।

"दो-ढाई घंटे लगेंगे, वहाँ पहुंचने में।"

"कोट्टुरू चलो। व्यास से मिलना जरूरी है।"

कुट्टी ने ड्राइवर को कोट्टुरू चलने को कहा फिर आगे-पीछे आने वाली कारों को बताया कि अब हम कोट्टुरू जा रहे हैं। डोगरा ने फोन निकाला और अलग कार में पीछे आते रमेश टूडे से बात की।

"हम कोट्टुरू जा रहे हैं टूडे। दो-ढाई घंटे का रास्ता है।"

"ठीक है। वहाँ क्या काम पड़ गया डोगरा साहब?"

"व्यास उधर है। मेरे आने की खबर पाकर दो दिन पहले ही अपने गाँव कोट्टुरू चला गया। वो धंधा छोड़ना चाहता है।"

"समझ गया। मैं आपके पीछे ही आ रहा हूँ।"

बातचीत खत्म हुई तो रीटा कह उठी।

"डोगरा साहब। व्यास काम का आदमी है। दस सालों से बखूबी साउथ इंडिया के ड्रग्स का काम संभाले हुए है और आपको हमेशा ही तगड़ा फायदा कमाकर दिया है। उससे आराम से बात करनी पड़ेगी।"

डोगरा ने मुस्कराकर बगल में बैठी रीटा को देखा और बोला।

"तू कितना ध्यान रखती है मेरा रीटा डार्लिंग, अगर तू न होती तो मैं कहीं का नहीं होता। तूने मुझे संभाल रखा है।"

"कुट्टी बैठा है। उसका तो ख्याल कीजिये।"

"गलत तो मैंने कुछ भी नहीं कहा।" डोगरा ने प्यार से रीटा की टांग थपथपाई।

"व्यास को संभालना जरूरी है। वरना साऊथ इंडिया में ड्रग्स का काम हल्का हो जायेगा।" रीटा पुनः कह उठी।

"वो मान जायेगा मेरी बात।" डोगरा ने विश्वास भरे स्वर में कहा—"व्यास मेरी इज्जत करता है।"

कार तेजी से दौड़े जा रही थी।

तभी कुट्टी कह उठा।

"नाथ से अच्छी बात हुई डोगरा साहब?"

"हाँ। मैंने उसे बता दिया कि सुमन उसे नहीं किसी और से प्यार करती थी। परन्तु स्वामी चाहता था कि उसकी बहन, उसे ही फंसाये रखे। इस बात का उस पर दबाव बना रहा था जिसकी वजह से वो हताश हो चुकी है। तभी नाथ को फोन आ गया कि सुमन ने आत्महत्या कर ली है। मतलब कि मेरी बात पर मुहर लग गई कि मैं सही कह रहा हूँ। अब जो हालात पैदा हुए हैं उसकी वजह से नाथ, स्वामी से हथियार नहीं लेगा। वो स्वामी को ही दोषी मानेगा सुमन की मौत का। सुमन की मौत ने उसे हिला दिया है।"

"नाथ ने हमसे हथियार लेने को कहा?"

"वो जरूर फोन करेगा। चार महीने से नाथ, स्वामी से हथियार ले रहा है। इतने वक्त में तुमने क्या किया कुट्टी?"

"मैंने कई आतंकी संगठनों से सम्पर्क किया है कि वो हमसे हथियार लें। इसके लिए मुझे दूर-दूर तक जाना पड़ा। परन्तु ज्यादा सफलता नहीं मिली। कुछ को ही थोड़े-बहुत हथियार सप्लाई कर सका। ये संगठन सीधे सम्पर्क नहीं चाहते। दलाल के द्वारा ही हथियार लेना पसन्द करते हैं। इस तरह वो खुद को सुरक्षित समझते हैं। यूं सीधे उनके पास जाना, खतरा उठाने वाली बात है।"

"गोदाम की क्या हालत है?"

"पूरा गोदाम हथियार की पेटियों से भरा पड़ा है। माल हमारे पास पहुंच रहा है। परन्तु आगे नहीं जा रहा।"

"स्वामी की चालाकी से हमारा काम रुक गया। परन्तु अब सब ठीक हो जायेगा।"

"नाथ अगर अब भी हमारे पास नहीं आया तो?" कुट्टी बोला।

"तो स्वामी को खत्म करना पड़ेगा। नाथ पर हम दबाव नहीं

बना सकते कि वो हमारा माल ही आतंकवादियों को सप्लाई करे। इस तरह नाथ उखड़ जायेगा। परन्तु उसके सब रास्ते बंद कर सकते हैं कि वो हमसे ही हथियार ले।" डोगरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

□□□

□□□

कोट्टुरू!

कर्नाटक की एक छोटी सी जगह, जहाँ खेती-बाड़ी को ही ज्यादा तजरीह दी जाती थी। कोट्टुरू कस्बा गाँव से चार किलोमीटर दूर था। शहर कितने भी बदल गये हों, परन्तु कोट्टुरू नहीं बदला था। वो ही खेती-बाड़ी। वो ही गाय-भैंसे। मिट्टी से भरी कच्ची सड़कें। आठ बजे सो जाना और सुबह चार बजे उठकर गाय-भैंसों का काम करना फिर उजाला होते ही खेती में चले जाना।

रात के सवा दो बज रहे थे जब वो कारें कोट्टुरू गाँव की कच्ची सड़कों पर धूल उड़ाती आगे बढ़ती हुई, कुट्टी के इशारे पर एक जगह कारें रुकती चली गई। ये गाँव के भीतर का खुला इलाका था। कहीं-कहीं बल्ब जल रहा था, नहीं तो अंधेरा ही था। कुत्तों के भौंकने की आवाजें सुनाई दे रही थी या कभी गाय-भैंस की आवाज सुनाई दे जाती। ठण्डी हवा चल रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। ऐसे गाँव आजकल कम ही देखने को मिलते थे।

सब कारों से बाहर निकलने लगे।

"कुट्टी।" डोगरा बोला—"मैं व्यास को डराना नहीं चाहता। सब आदमी यहीं रहेंगे और सिर्फ तुम ही मुझे व्यास के पास छोड़कर वापस आ जाओगे। कहाँ है उसका घर?"

"सामने वाला।" कुट्टी ने एक घर की तरफ इशारा किया।

"उसके माँ-बाप वहीं रहते हैं।"

"जी।"

तभी रमेश टूडे पास आया तो डोगरा कह उठा।

"अभी तुम्हारी जरूरत नहीं टूडे। मैं उस घर में व्यास से मिलने जा रहा हूं। घंटाभर तो लग ही जायेगा।"

डोगरा, रीटा और कुट्टी उस घर के बंद दरवाजे पर पहुँचे।

कुट्टी ने दरवाजा खटखटाया। तीन-चार बार दरवाजा खटखटाने पर भीतर लाइट जली और एक बूढ़े से व्यक्ति ने दरवाजा खोला। डोगरा ने इन्सानों की भांति उस बूढ़े के पाँव छुए और कहा कि वो व्यास का दोस्त है। वे-वक्त आने के लिए माफी चाहता हूं। उसने भीतर चलने और सामने वाले कमरे में जाकर बैठने को कहा।

कुट्टी वापस चला गया।

डोगरा और रीटा सामने दिखाई दे रहे कमरे में जा बैठे, जहाँ तीन कुर्सियां थी और एक चारपाई थी।

तीन मिनट भी नहीं बीते कि नींद भरी आँखें से व्यास वहाँ पहुँचा। उसने कुर्ता-पायजामा पहन रखा था। वो पैंतालिस बरस का सांवले रंग का सामान्य सेहत का व्यक्ति था। क्लीन शेव्ड चेहरा था।

"आप यहाँ डोगरा साहब—।" व्यास डोगरा को वहाँ पाकर चौंका।

"आना पड़ा। तू जो मेरे से मिलना नहीं चाहता था। हवेरी से दो दिन पहले ही यहाँ आ गया।" डोगरा मुस्कराकर बोला।

"ये बात नहीं, मुझे कुछ काम था।" व्यास बैठता हुआ कह उठा।

"काम भी तो पड़ सकता है डोगरा साहब। बूढ़े माँ-बाप यहाँ हैं। आप गलत ना सोचा करें।"

"मैंने तो ज़रा भी गलत नहीं सोचा रीटा डार्लिंग।" डोगरा बराबर मुस्करा रहा था फिर व्यास से कहा—"अभी मेरे पास वक्त था तो सोचा मैं कोट्टुरू घूम आता हूँ। तेरे से मुलाकात भी हो जायेगी। सब ठीक है ना?"

"बढ़िया है, डोगरा साहब।" व्यास कुछ सतर्क था।

"धंधा कैसा चल रहा है?"

"एकदम बढ़िया।"

"तू सब कुछ बढिया संभाला हुआ है। याद है, जब तू इस धंधे में मेरे साथ लगा था तो तेरे पास खाने को रोटी तक नहीं थी। अब तूने अपनी मेहनत से इतनी तरक्की कर ली कि नोट ही नोट हैं तेरे पास। तेरे को इस हाल में देखकर मुझे बहुत खुशी होती है और तूने भी मेरे को तगड़े नोट कमा कर दिए। मैं तो तेरी तारीफ रीटा से हमेशा करता रहता हूँ।" डोगरा ने अपने पन से कहा।

"डोगरा साहब सही कह रहे हैं।" रीटा फौरन कह उठी।

कुर्सी पर खामोशी से बैठा रहा व्यास।

"कुट्टी कह रहा था कि तू मेरा काम छोड़ने की सोच रहा है। ऐसा कुछ है क्या?" डोगरा प्यार से बोला।

"हाँ।" व्यास के होठों से निकला।

"तो क्या करेगा?"

"कुछ भी नहीं। अपने परिवार को गाँव ले आऊँगा। आराम से जिन्दगी बिताऊँगा।" व्यास ने धीमें स्वर में कहा।

"ये अच्छी बात है क्या जो तू मेरा काम छोड़ देगा। मुझे तेरी ये बात अच्छी नहीं लगी व्यास।"

"काम कर-करके मैं थक गया हूँ।"

"ऐसा है तो तीन महीने आराम कर ले। मेरा काम क्यों छोड़ता है। साऊथ इंडिया में तू ही तो ड्रग्स फैलाता है मेरी। सबसे तेरे बढ़िया कांटैक्ट हैं। तू धंधे से हट गया तो मेरा धंधा बैठ जायेगा। कुछ तो सोच के बात कर। मेरा नुकसान करता है तू। वो दिन भूल गया कि जब तू पेट भरने को तरस रहा था और मैंने तेरे कंधे पर हाथ रखा था।"

"भूला नहीं हूँ।" व्यास ने बेचैनी से कहा।

"तो ऐसा क्यों बोलता है कि तू धंधे से अलग होना चाहता है। ये ऐसा धंधा तो है नहीं कि तू हट गया तो कोई दूसरा इसे संभाल लेगा। ये धंधा तो आवाज पहचान कर चलता है। शक्ल देख कर चलता है। तू पुराना है। तेरे दम पर ही ये सब चलेगा। तू हटा तो काम खत्म। मेरा नुकसान करायेगा तू। कोई दूसरा मैदान में उतर आयेगा।"

व्यास ने सिर उठाकर डोगरा को देखकर कहा।

"पर मैं अब आराम से जिन्दगी बिताना चाहता हूँ। थक गया हूँ।"

डोगरा ने सोच भरी निगाहों से व्यास को देखा।

"डोगरा साहब।" रीटा कह उठी—"ये ठीक है कि नुकसान होगा आपको। साऊथ इंडिया हाथ से निकल जायेगा। परन्तु आपको व्यास के बारे में भी कुछ सोचना चाहिये। वो दस साल से काम कर रहा है। थक गया है।"

"तो मुझे क्या करना चाहिये?" डोगरा गम्भीर स्वर में बोला।

"अपने किसी खास आदमी को व्यास के साथ लगा दीजिये, जो कि बाद में व्यास की जगह ले लेगा। चार-पाँच साल व्यास अपनी तरफ से उसे मैदान में रखेगा। लोगों से मिलवा देगा। इस तरह लोग उसे भी जानने लगेंगे। फिर व्यास धीरे-धीरे पीछे हटता जायेगा और वो आदमी व्यास की जगह पर आता जायेगा और व्यास की जगह वो टिक जायेगा।"

"गुड आइडिया रीटा डार्लिंग। तू ना होती तो मेरा काम कैसे चलता।" डोगरा मुस्करा पड़ा।

"मैं तो सौ साल की उम्र तक आपके साथ हूँ।"

डोगरा ने व्यास से कहा।

"ऐसा करना ठीक रहेगा व्यास?"

"ये ठीक होगा।"

"मैं तेरे पास किसी को भेजूंगा। चुन लूंगा कि किस आदमी को भेजना है। कुट्टी से भी सलाह लूंगा। तू धीरे-धीरे अपनी जगह उसे

देते जाना। मार्किट में उसको अपने परिवार के तौर पर परिचित करवाना। उसे हर जगह पर अपने साथ रखना कि ड्रग्स लेने वाली पार्टियां तेरी ही तरह, उस पर भी विश्वास करने लगे... ।"

"मैं समझ गया डोगरा साहब।"

"इसमें लम्बा वक्त लगेगा। ये जल्दी का काम नहीं है। चार-पाँच साल लगेंगे।" डोगरा बोला।

"आपके लिए मैं ये करूँगा। चार-पाँच साल और काम कर लूंगा।" व्यास ने कहा।

"तो, बात बन गई डोगरा साहब।" रीटा कह उठी।

"तुमने तो मुझे डरा ही दिया था व्यास। ये सुनकर मैं हिल गया कि तू ड्रग्स के काम से हट जाना चाहता है।" डोगरा ने गहरी सांस लेकर कहा—"पर अब ठीक है। चार-पाँच साल तू और काम करेगा और तब तक दूसरे आदमी को अपनी जगह लेने के लिये तैयार कर देगा। तेरे को कोई भी समस्या हो तो सीधा मुझे फोन कर। सोचने की भी जरूरत नहीं है। मेरे से भाइयों की तरह सलाह-मशवरा कर। मैं तेरी बहुत इज्जत करता हूँ। तेरी हर बात पर मैं ध्यान दूंगा।"

"शुक्रिया डोगरा साहब।" व्यास अब तनाव मुक्त दिखा।

"तू कुछ महीने आराम कर ले। दो-तीन महीने यहीं रह, गाँव में। काम तो चलता ही रहेगा।"

"आप फिक्र ना करें। मैं सब संभाल लूंगा।" व्यास मुस्कराया।

"बस, ऐसे ही मुस्कराते रहना।" डोगरा हौले से हंसा—"इसी महीने मैं तेरे पास किसी को भेज दूंगा। उसको धंधे में ट्रेंड कर देना और बाजार में जान-पहचान करवा देना। अपना बोझा धीरे-धीरे उसके हवाले करते जाना। ये तो कोई समस्या ही नहीं थी। फोन पर ही बात कर लेता तो हल निकल आता। अब मैं चलता हूँ। इधर अभी बोत काम करने हैं।" डोगरा उठ खड़ा हुआ।

व्यास से विदा लेकर दोनों बाहर निकले और सामने खड़ी कारों की तरफ़ बढ़े।

"काम बन गया डोगरा साहब।" रीटा बोली—"वो अभी धंधा नहीं छोड़ेगा।"

"हाँ। पाँच साल तो और करेगा। उसके बाद फिर तैयार कर लूंगा कि मेरा काम करता रहे। पर किसी को व्यास के पास भेजना होगा जो कि पार्टनर के तौर पर मार्किट से मिल ले। ताकि कभी समस्या आये तो साऊथ इंडिया संभालने वाला कोई तो हो।"

वे दोनों कार की पिछली सीट पर जा बैठे।

वो काफिला वापस हवेरी की तरफ चल पड़ा।

"सब ठीक है कुट्टी व्यास काम करता रहेगा।"

"ये तो अच्छी बात रही।" कुट्टी ने सिर हिलाया—"व्यास समझदार इन्सान है।"

"पर किसी को व्यास के साथ काम पर लगाना है कि उसे साऊथ इंडिया में होने वाले धंधे, लोगों की, पार्टियों की पूरी जानकारी रहे। तुम मुझे सलाह देना कि किसे इस काम के लिए व्यास के साथ लगाऊँ?"

"सोच कर बताऊँगा। क्या व्यास उसके लिये तैयार है?" कुट्टी ने पूछा।

"हाँ। ऐसा करने से वो खुश है, तुम... ।"

तभी डोगरा का फोन बजने लगा।

"हैलो।" डोगरा ने तुरन्त फोन निकाल कर बात की।

"विलास डोगरा।" ये आवाज नई थी डोगरा के लिए।

"हाँ।" डोगरा के होंठ सिकुड़े।

"तुमने नाथ के क्या कान भर दिए हैं।" इस बार लहजे में गुर्राहट आ गई।

"नाथ के?" डोगरा फौरन संभला—"तुम कौन हो?"

"स्वामी।"

"ओह स्वामी। माफ करना मैंने तुम्हें पहचाना नहीं। शाम को ही नाथ ने तुम्हारा जिक्र किया... ।"

"तुमने क्या कहा नाथ को कि मेरी बहन किसी और से प्यार करती... ।"

"गलत क्या कह दिया?" डोगरा ने शांत स्वर में कहा।

"हरामजादे। तूने नाथ को मेरे खिलाफ क्यों भड़काया। तूने... ।"

"ऐसी भाषा मत बोल स्वामी।"

"तू इसी लायक है।" उधर से स्वामी के दाँत किटकिटाने की आवाज आई—"ये सब तेरी चाल है। मैं समझ चुका हूँ। तू शाम को ही हवेरी पहुँचा और आनन-फानन मेरी बहन की हत्या का इन्तजाम कर दिया। उधर नाथ से मुलाकात की और उसे झूठी कहानी सुनाई। तभी उसे खबर मिल गई कि सुमन मर गई तो वो तेरी बात को सच मान गया।"

"सच मान गया? क्या बात करता है स्वामी मैंने उसे सच ही तो बताया।"

"बकवास मत कर।" उधर से स्वामी की गुर्राहट कानों में पड़ी—"तेरे को ये बात ज़रा भी पसन्द नहीं आ रही थी कि नाथ मेरे

से हथियार लेने लगा है। तूने शातिर चाल चली। सब कुछ तूने सोच समझ कर किया। मेरी बहन की हत्या...।"

"पर मुझ तो नाथ ने बताया कि सुमन ने आत्महत्या की है।"

"बकवास।" उधर से स्वामी चीखा—"वो आत्महत्या नहीं कर सकती थी। उससे आधा घंटा पहले ही उसने फोन पर मेरे से बात की थी। वो खुश थी कि नाथ से शादी करने वाली है। नाथ को वो पसन्द भी करती थी। उसे जिन्दा ही फंदे में फंसाकर पंखे के साथ लटका दिया गया। फिर आत्महत्या का नाम दे दिया। मैं इस बात को कभी ना समझ पाता, अगर नाथ ने मुझे तुम्हारी झूठी कहानी ना सुनाई होती। तुम्हें इस मामले में पाकर मैं समझ गया कि तुम्हारे इशारे पर सुमन को मारा गया है। क्योंकि सुमन की वजह से ही नाथ मेरे करीब आया और मुझसे हथियार लेने लगा। तुम्हें ये बात पसद कहाँ से आती और।"

"तू झूठ बोल रहा है स्वामी।" डोगरा को लगा कहीं स्वामी ये बातें फोन पर नाथ को ना सुना रहा हो—"तीन दिनों से मैं तुम्हारी बहन के बारे में खबर सुन रहा था कि वो नाथ से नहीं, किसी और से शादी करना चाहती है, परन्तु तुमने उसे मजबूर कर रखा है कि वो नाथ से ही शादी करे, ताकि नाथ तुमसे हथियार लेता रहे और तुम्हें करोड़ों का फायदा होता रहे। परन्तु सुमन ने फैंसला कर लिया था कि वो अब तुम्हारी बात और नहीं मानेगी। तुमने उसे देख लेने की भी धमकी दी। वो तुम्हारी वजह से बुरे हालातों में इस तरह फंस गई कि उसे आत्महत्या कर लेनी पड़ी।"

"वो मेरी बहन थी। मैं उस पर जान देता था। उसकी खुशी में ही मेरी खुशी...।"

"ये बातें मुझे क्यों बता रहा है।" डोगरा ने शुष्क स्वर में कहा।

"तेरी सारी बातें झूठी हैं। तूने नाथ को मेरे खिलाफ भड़काया...।"

"मैंने जो कहा, पूरी तरह सच कहा है।" डोगरा ने कठोर स्वर में कहा।

"बकवास मत कर हरामजादे। अगर तेरी बातें सच हैं तो तुझे सुमन की बातें किसने बताई?"

"मेरे अपने सोर्स है।"

"नाम बता सोर्स का।"

"नहीं। नाम नहीं बताया जाता। ऐसे लोगों को पीछे ही रखा जाता है।" डोगरा ने तीखे स्वर में कहा—"तूने नाथ को अपनी बहन की आड़ में बहुत बेवकूफ बना लिया। अब अगर वो ज़रा भी समझदार

हुआ तो तेरी तरफ देखेगा नहीं। सुमन को नाथ से ज़रा भी प्यार नहीं था। पर तेरे दबाव की वजह से उसने नाथ को फँसा रखा था और आगे उसके सब करने को पता लगा तो तूने।''

''हरामजादे, मैं तेरी जान ले लूंगा।'' उधर से स्वामी चीखा—''झूठे-मक्कार। तेरे ही इशारे पर सुमन को फाँसी पर लटकाया गया है। उस वक्त बंगले पर कोई आया था। एक नौकर को सिर के पीछे चोट करके बेहोश कर दिया गया था और... ।''

''बहुत खूब स्वामी।'' डोगरा जहरीले स्वर में कह उठा—''अब आई तेरी समझ में बात कि क्या हुआ था। ये नौकर वाली बात तूने पहले क्यों नहीं बताई। हुआ ये था कि तेरी और सुमन की तकरार बढ़ गई थी। सुमन तेरे काबू में नहीं रही थी। तेरे को इस बात का एहसास हो गया था कि सुमन अपनी करके ही रहेगी और नाथ को छोड़कर दूसरे से शादी कर लेगी। ऐसे में तेरी शैतानी दिमाग में ये योजना आई कि सुमन को खत्म कर दिया जाये। इससे नाथ की सहानुभूति तेरे को मिलेगी और वो तेरे से हथियार लेता रहेगा। परन्तु मेरे बीच में आ जाने से तेरी योजना बेकार हो गई। असल बात नाथ तक पहुँच गई कि... ।''

''तू बहुत जलील इन्सान है जो इतना बड़ा सफेद झूठ बोल रहा है और मेरे पर ही मेरी बहन की हत्या का इल्जाम लगा रहा है। मैं तेरे को नहीं छोडूंगा। हवेरी में तेरे को कुत्ते की मौत... ।

तभी डोगरा को लगा जैसे उधर से नाथ की आवाज भी आई हो। नाथ की आवाज, स्वामी की आवाज के साथ मिल गई थी। ठीक से नहीं सुन पाया डोगरा, परन्तु उसे वो नाथ की आवाज ही लगी थी। इसका मतलब वो फोन पर होने वाली बातचीत नाथ को भी सुना रहा था। ऐसे में उसने ठीक जवाब दिए स्वामी को।

उधर से फोन बंद हो गया।

डोगरा के होठों पर जहरीली मुस्कान नाच उठी। उसने फोन कान से हटाया।

''स्वामी क्या कह रहा था डोगरा साहब?''

''चालाक बन रहा था। वो इस बातचीत को, नाथ को सुना रहा था।'' डोगरा हंसा।

''फिर तो अच्छा हुआ, आपने वो ही कहा, जो नाथ से कहा था। नाथ अब समझ गया होगा कि आप सच्चे हैं।''

''स्वामी अभी बच्चा है मेरे सामने।'' डोगरा व्यंग से बोला—''डोगरा को वो जानता ही कितना है।''

"ओह।" रीटा डोगरा की बाँह पकड़ कर कह उठी—"आपको तो अभी मैं भी नहीं जानती डोगरा साहब।"

"रीटा डार्लिंग। तेरे लिए तो मैं खुली किताब हूँ। तेरे से ज्यादा मुझे जानता ही कौन है। कुट्टी।"

"जी।" कुट्टी ने फौरन कहा।

"स्वामी हारा हुआ लग रहा था। उसकी बहन ने आत्महत्या कर ली। नाथ ने भी शायद उसके लिए कोई परेशानी खड़ी कर दी हो। ऊपर से उसकी ये चाल भी सफल नहीं रही कि मेरी बातें नाथ को सुनाकर सच सामने ला सके। क्योंकि मैंने उसे भी फोन पर वो ही कहा, जो नाथ से कहा था। अब नाथ को यकीन हो गया होगा कि मैं सच कह रहा हूँ। बाजी अपने हाथ से निकलते पाकर हो सकता है स्वामी मुझे खत्म करवाने की कोशिश करे।"

"रहने के लिए किसी और ठिकाने का इन्तजाम करूँ डोगरा साहब।" कुट्टी फौरन कह उठा।

"ये ही मैं कहना चाहता था।" डोगरा ने सिर हिलाया—"हम उस बंगले पर नहीं जायेंगे।"

"ओह, आप कितनी दूर की सोचते हैं डोगरा साहब।" रीटा डोगरा का कंधा चूमते कह उठी।

"बंगले पर हमारे कितने लोग मौजूद हैं?" डोगरा ने पूछा।

"पाँच हथियार बंद लोग।" कुट्टी कह उठा।

❑❑❑
❑❑❑

हरीश खुदे उस बंगले के बाहर अंधेरे में डटा, बंगले पर नज़र रख रहा था। इस वक्त वो सिर्फ सौ फीट के फांसले पर था। बंगले में दो-तीन जगह रोशनी हो रही थी। आस-पास के बंगलों का भी ये ही हाल था। सड़क की रोशनी नहीं जल रही थी। अभी तक विलास डोगरा नहीं लौटा था। ऐसे में बंगले पर कोई पहरा नहीं था। एक आदमी बंगले के गेट के भीतरी तरफ कभी-कभाद टहलता दिख जाता था। उसके बाद वो फिर गायब हो जाता था, जैसे कि कहीं पर कुर्सी रखी हो, उस पर बैठकर सुस्ताने लगता हो। दूसरा आदमी कभी-कभाद बंगले की छत पर दिखाई दे जाता था। उन दोनों के अलावा, तीसरा कोई नहीं दिख रहा था जबकि खुदे जानता था कि भीतर पाँच-छः आदमी हैं।

सुबह के चार बजने वाले थे।

देवराज चौहान और जगमोहन साढ़े ग्यारह बजे दीवार फांद कर बंगले में प्रवेश कर गये थे और बंगले में कहीं दुबके पड़े डोगरा के

वापस आने का इन्तजार कर रहे थे। जब वे दोनों भीतर गये थे, तब खुदे का दिल जोरों से धड़क रहा था कि कहीं वो भीतर के लोगों की नज़रों में ना आ जायें। गोलियाँ ना चलने लगे।

परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ। आधे घंटे की शान्ति के बाद खुदे समझ गया था कि देवराज चौहान और जगमोहन बंगले के भीतर किसी अंधेरे में खामोशी से सैट हो चुके हैं। वो बंगले पर नज़र रखे रहा और वक्त बीतने के साथ-साथ बेचैन होने लगा कि डोगरा अभी तक वापस लौटा क्यों नहीं? अब सुबह के चार बजने पर खुदे बहुत ज्यादा, परेशान हो उठा था। बेचैनी से खुदे की नज़रें इधर-उधर घूमने लगी कि तभी उसकी आँखें सिकुड़ी। होंठ भिंच गये। उसके देखते ही देखते, बंगले से सत्तर कदम पहले सड़क के किनारे तीन कारें रुकी और उनकी हैडलाइटें बंद थी। यही वजह थी कि खुदे को बात अटपटी लगी थी।

हरीश खुदे कारों की तरफ देखता रहा।

अगले ही पल कारों के दरवाजे खुलने लगे और देखते ही देखते वहाँ पन्द्रह के करीब आदमी दिखने लगे। जिनके हाथों में, कुछ के पास गनें भी दिखी। खुदे सतर्क हो गया कि गड़बड़ है। वो लोग बिना देरी के तेजी से दबे पाँव उसी बंगले की तरफ बढ़ने लगे, जिसमें कि डोगरा ठहरा हुआ था।

खुदे हक्का-बक्का रह गया।

तो क्या डोगरा को पता चल गया है कि भीतर देवराज चौहान और जगमोहन मौजूद हैं और उन्हें खत्म करने के लिए डोगरा ने आदमी भेजे हैं। पर बंगले में तो शान्ति है। अगर किसी को पता होता कि बंगले में वे दोनों हैं तो भीतर से कब का शोर-शराबा उठ जाना था। खुदे ने जल्दी से मोबाइल निकाला और देवराज चौहान को फोन किया। देवराज चौहान और जगमोहन के फोन वाईब्रेशन (कम्पन) पर थे, इसलिये बेल की आवाज वहाँ नहीं गूंजनी थी।

अंधेरे में बैठे खुदे की निगाह बंगले की तरफ बढ़ते हथियार बंद लोगों पर थी।

"कहो।" देवराज चौहान की मध्यम सी आवाज खुदे के कानों में पड़ी।

"बाहर गड़बड़ है कुछ। पन्द्रह के करीब हथियार बंद लोग बंगले पर पहुँचे हैं। अभी बाहर ही हैं, उनके हाथों में हथियार हैं। लगता तो नहीं कि वो डोगरा के आदमी हों। मुझे तो उनका इरादा हमला करने का लगता है।"

"कौन हैं वो लोग?" देवराज चौहान की मध्यम सी आवाज खुदे के कानों में पड़ी।

"क्या पता।" बात करते खुदे की बेचैन निगाह उन आदमियों पर जा रही थी जो बंगले के गेट पर आ पहुँचे थे।

तभी गेट के भीतर, वो आदमी थोड़ा सा दिखा जो पहरेदारी में टहल रहा था।

उसी पल 'ठाँ-ठाँ' वातावरण में गोलियाँ चलने की आवाज आई।

उस पहरेदार को खुदे ने उछल कर पीछे की तरफ गिरते देखा। इसके साथ ही आने वाले लोगों ने गेट खोला और भीतर प्रवेश करने लगे कि छत पर मौजूद गनमैन ने गोलियाँ बरसानी शुरू कर दी। खुदे ने गेट पर खड़े तीन-चार लोगों को गिरते देखा, चीखें गूंजी। वहाँ भगदड़ मच गई। छः सात लोगों ने पोज़िशन ले ली। बाकी पहले ही भीतर प्रवेश कर चुके थे। पोज़िशन ले चुके आदमियों ने छत की तरफ फायरिंग करनी शुरू कर दी। छत पर से भी नीचे की तरफ गोलियाँ चलने लगी।

चंद पलो में ही शांत माहौल, गोलियों में बदला चुका था।

खुदे दूर मौजूद सब देख रहा था। उसे देवराज चौहान और जगमोहन की चिन्ता थी। आस-पास के बंगलों में गोलियों की आवाजें सुनने के बाद, रोशनियाँ जलने लगी थी। जाग हो गई थी। खुदे व्याकुल था कि जो हमलावर भीतर प्रवेश कर गये थे वो देवराज चौहान और जगमोहन को नुकसान ना पहुँचा दें। खुदे को ये बात तो अब तक समझ आ गई थी कि हमलावर ये सोचकर बंगले पर पहुँचे थे कि वहाँ पर विलास डोगरा मौजूद होगा, उसे खत्म करने आये थे वे।

खुदे होंठ भींचे वहीं टिका, सब कुछ देखता रहा।

फायरिंग की आवाज बराबर गूंज रही थी। फायरिंग भी इस तरह हो रही थी कि जैसे हमलावर सब कुछ फौरन करके वहाँ से निकल जाना चाहते हों। इन हालातों में खुदे, चाहकर भी देवराज चौहान और जगमोहन के लिए कुछ नहीं कर सकता था। हमलावरों की संख्या ज्यादा थी। आगे जाना मौत के मुँह में जाने के बराबर था। मन ही मन वो ये सोचकर ज्यादा परेशान हो रहा था कि अगर देवराज चौहान को कुछ हो गया तो डकैती करने का प्रोग्राम खत्म हो जायेगा। देवराज चौहान ने उससे वादा कर रखा है कि ये काम खत्म होते ही, उसे लेकर डकैती करेगा और उसे काफी मोटा पैसा इकट्ठा करके देगा।

देखते ही देखते दस मिनट बीत गये।

तभी खुदे की आँखें सिकुड़ी। उसने अंधेरे में किसी को देखा जो कि दीवार फांद कर कूद रहा था। वो समझ नहीं पाया कि वो कौन हो सकता है। उसी पल एक ओर को उसी प्रकार दीवार फांद

कर बाहर कूदते देखा। खुदे को लगा हो—ना हो दोनों देवराज चौहान और जगमोहन हो सकते हैं। खुदे ने अपनी जगह छोड़ी और तेजी से उस तरफ दौड़ा, जिस तरफ वे दोनों खिसक रहे थे।

मिनट भर में खुदे उनके पीछे पहुँच गया। तब तक वो समझ चुका था कि वो देवराज चौहान और जगमोहन ही है। एक घर से आती रोशनी में दोनों को स्पष्ट रूप से देखा था।

"निकल आये तुम दोनों वहाँ से।" खुदे ने पीछे से कहा।

वो देवराज चौहान और जगमोहन ही थे। खुदे की आवाज सुन कर वे ठिठके।

खुदे पास जा पहुँचा।

तीनों आगे बढ़ने लगे। जगमोहन ने पूछा।

"कार किधर है?"

"उस तरफ। हमें घूम कर उस तरफ जाना होगा।" खुदे ने कहा—"भीतर क्या हुआ?"

"डोगरा तो नहीं आया?" देवराज चौहान ने पूछा।

"नहीं। सिर्फ ये ही हमलावर आये हैं।" खुदे ने कहा—"मेरे ख्याल में ये लोग डोगरा को मारने आये थे।"

"और डोगरा बंगले पर वापस आया ही नहीं।" जगमोहन ने कहा।

"पार्क होटल में, नाथ नाम के आदमी से मिलकर उसने वापस बंगले पर ही आना था।" जगमोहन ने कहा—"हमें डोगरा पर भी नज़र रखनी चाहिये थी कि उसका प्रोग्राम पता चलता रहे। पता तो चलता कि वो बंगले पर वापस आया क्यों नहीं?"

"वो शायद पार्क होटल से, किसी और काम के लिए निकल गया होगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं तो डर रहा था कि तुम लोगों को भीतर कुछ हो ना जाये।" खुदे बोला।

"कठिनता से ही निकल पाये हम। उन लोगों ने हमें देखा नहीं, वरना गड़बड़ हो जाती।" जगमोहन ने कहा।

तीनों तेजी से अंधेरे में आगे बढ़े जा रहे थे।

"अगर डोगरा हाथ लग जाता तो काम निपट जाता।" जगमोहन गुर्रा उठा।

"अगर डोगरा कहीं और निकल गया है और यहाँ पर कुछ लोगों ने हमला कर दिया है तो अब हम उसे कहाँ ढूंढेंगे।" खुदे बोला—"वो यहाँ वापस तो लौटेगा नहीं। कल वो कहाँ जायेगा, कुछ पता है?"

"कल क्रिस्टन रोड पर माल्टा होटल ग्यारह बजे डोगरा ने

नसीमबानो नाम की औरत से मिलना है, जो कि साऊथ इंडिया में ड्रग्स के धंधे की बेताज बादशाह है। मल्लिका है। हम वहाँ से डोगरा को अपनी नज़र में ले सकते हैं।" देवराज चौहान ने कहा—"प्रकाश दुलेरा का बताया प्रोग्राम हमारी बहुत सहायता कर रहा है, वरना हम इतनी देर तक डोगरा का पीछा ना कर पाते।"

"आज रात डोगरा लौटा नहीं बंगले पर।" जगमोहन कह उठा—"वरना काम खत्म हो गया होता अब तक।"

"ये शुक्र करो कि उन हमलावरों से बचकर निकले आये बंगले से।" खुदे बोला—"वरना तुम्हारा काम हो गया होता। पता नहीं वो कौन थे, पर आये पूरी तैयारी से थे कि डोगरा को खत्म करके ही लौटना है। बच गया डोगरा, जो वहाँ नहीं था।"

❑❑❑

❑❑❑

हवेरी में ही, काफी बड़ा फार्म हाऊस था, जो कि हवेरी की सीमा पर स्थित था। फार्म हाऊस में रंग बिरंगे फूलों की कतारें दूर तक लगी नज़र आ रही थी। फार्म हाऊस की दीवारें दस फीट ऊँची थी फिर उस पर कंटीले तार लगे हुए थे। दो मंजिला शानदार बंगला बना हुआ था और जरूरत की हर चीज वहाँ मौजूद थी। ये जगह कुट्टी की आरामगाह थी। रात को वो डोगरा के साथ उसी फार्म हाऊस में पहुँचे थे और छः आदमी पहरे पर लग गये थे, बाकी सब सोने चले गये थे कि सुबह तरोताजा होकर, सुरक्षा देने का काम कर सकें।

कुट्टी भी रात भर बंगले पर ही रहा था। वो मात्र तीन घंटे ही सो सका था फिर सुबह उठकर वहाँ के सारे इन्तजामों को देखने लगा और फोन पर भी व्यस्त हो गया था।

सुबह के दस बजे रीटा ने चाय के प्याले के साथ डोगरा को नींद से उठाया।

"आज दिन भर सोने का ही इरादा है डोगरा साहब।" रीटा ने मीठे स्वर में कहा।

डोगरा ने आँखें खोली। रीटा को देखा।

रीटा दिलकश मुस्कान के साथ कह उठी।

"उठ भी जाइये। गर्मा-गर्म चाय हाजिर है।"

"भाई रीटा डार्लिंग।" डोगरा उठकर बैठता कह उठा—"तुम मेरा कितना ख्याल रखती हो। इस तरह हर रोज़ मुझे आँखें खोलते ही तुम्हारा चेहरा देखने को मिल जाये और गर्मा-गर्म चाय मिले तो मै हर वक्त नींद में ही रहूँ।"

"आप हुक्म तो कीजिये।" रीटा हंसी—"हर रोज के लिए ये इन्तजाम भी हो जायेगा।"

डोगरा चाय का प्याला थामता कह उठा।

"इस तरह हंसते हुए तुम कितनी खूबसूरत लगती हो। मैं यूँ ही तो नहीं, तुम्हें साथ-साथ सौ बरस तक रहने के सपने देखता हूँ। तुममें बहुत कुछ है। अदा है। खुशी है। प्यार है। खूबसूरती है, तुम्हें देखते ही मेरी परेशानियाँ दूर चली जाती हैं और।"

"बस भी कीजिये। इतनी तारीफ करना अच्छा नहीं होगा। नज़र लग जाती है।"

"किसकी?"

"अपनी ही नज़र लग जाती है।" रीटा, डोगरा के सिर के बालों में उंगलियां फिराती कह उठी।

डोगरा ने चाय का घूंट भरा।

"स्वामी ने तो बहुत जल्दी दिखाई रात।" रीटा बोली।

"अच्छा।" डोगरा ने चाय का दूसरा घूंट भरा—"क्या हो गया?"

"कुट्टी ने बताया। रातों रात उसने उस बंगले पर अपने आदमी भेज दिए। गोलियाँ बरसा दी वहाँ। छः आदमी थे हमारे उधर। सब मारे गये। अच्छा ही हुआ डोगरा साहब जो आप उधर गये ही नहीं रात में।" रीटा डोगरा के सामने आ बैठी।

"मुझे रात में ही शक हो गया था कि स्वामी कुछ करेगा। तभी तो मैंने जगह बदल ली थी।"

"वो अपनी बहन का हत्यारा आपको मानता है।"

"स्वामी की मैं परवाह नहीं करता। जरा कुट्टी को तो बुलाना रीटा डार्लिंग। स्वामी के बारे में उससे बात करनी पड़ेगी।"

रीटा ने कुट्टी को बुला लिया।

"स्वामी ने तो बुरा किया रात।" डोगरा बोला—"रात मेरी जान लेने के लिए बंगले पर आदमी भेज दिए।"

"अच्छा हुआ जो आप वहाँ नहीं थे।" कुट्टी का चेहरा सख्त हुआ।

"ये स्वामी तो मुझे हमेशा काँटे की तरह चुभता रहेगा। वो तो मेरे पर हाथ डालने की सोच बैठा है। ये तो गलत बात है।"

"हुक्म कीजिये।"

"कैसे खत्म करेगा स्वामी को?"

"मुरली ये काम कर सकता है। लेकिन वो पैसे ज्यादा लेगा।"

"मुरली?" डोगरा ने चाय का खाली प्याला, रीटा की तरफ बढ़ाया।

रीटा ने प्याला लेकर, टेबल पर रख दिया।

"ये हत्यारा है। पेशेवर हत्यारा। पैसे लेकर हत्या करता है। भाव ज्यादा है इसके। पर काम पूरा करता है। मैंने कई बार मुरली से काम लिया है और मुझे शिकायत का मौका नहीं दिया। स्वामी की हत्या के लिए एक करोड़ से कम नहीं लेगा।"

"दे दे करोड़।" डोगरा ने कहा—"स्वामी को खत्म हो जाना चाहिये। जो आदमी धंधे में अपनी बहन का इस्तेमाल करे, वो तो मुझे वैसे भी पसन्द नहीं। मुरली को आज-कल में ही काम पर लगा दे।"

"मैं अभी उससे बात करता हूँ।" कुट्टी बोला।

"डोगरा साहब, ग्यारह बजे नसीमबानो से माल्टा होटल में मिलना है।" रीटा बोली—"साढ़े दस तो यहीं बज रहे हैं।"

"कुट्टी।" डोगरा बोला—"जब तक मैं हवेरी में हूँ, मेरे आसपास सुरक्षा के तगड़े इन्तजाम रखना। स्वामी की तरफ से समस्या खड़ी हो सकती है। हम कब तक हवेरी में हैं रीटा डार्लिंग?"

"कल तक। परसों सुबह हमारे टूर का आखिरी पड़ाव चिकमंगलूर है।" रीटा कह उठी।

"टूडे किधर है?" डोगरा ने कुट्टी को देखा।

"बाहर। फूलों के पास कुर्सी रखे बैठा है।" कुट्टी ने कहा।

"ठीक है। माल्टा होटल चलने की तैयारी कर कुट्टी। आधे घंटे में हम यहाँ से चल रहे हैं।" डोगरा ने सोच भरे स्वर में कहा।

❑❑❑

❑❑❑

किस्टन रोड की शान था माल्टा होटल।

सफेद पत्थरों से बहुत ही शानदार और विशाल बिल्डिंग थी। पाँच मंजिला था होटल और काफी बड़ी जगह में फैला हुआ था। भीतर प्रवेश करते ही किसी राजा के महल होने जैसा एहसास होता था। 11:40 बजे डोगरा वहाँ पहुँचा। उसकी सुरक्षा में लगे सब लोग होटल के बाहर ही रह गये और डोगरा, रीटा, कुट्टी भीतर आ गये थे। कुट्टी की अगवानी में डोगरा और रीटा होटल की तीसरी मंजिल के एक छोटे से हाल में पहुँचे जहाँ फानूस रोशन थे। बहुत अच्छे ढंग से उनकी रोशनी वहाँ फैली हुई थी। कमरे की बीचो-बीच लकड़ी की काफी बड़ी गोल टेबल मौजूद थी, जिसके गिर्द पन्द्रह कुर्सियों रखी थी। टेबल की शान देखते ही बनती थी। टेबल के लकड़ी के टॉप के भीतर, कहीं-कहीं मध्यम सी लाल-नीली रोशनियाँ रोशन थी। उस हाल की खिड़कियों पर पर्दे पड़े थे। वो पैंतालिस बरस की औरत थी जो कि पहले से ही

वहाँ मौजूद थी। उसने कमीज-सलवार के ऊपर बुर्का पहन रखा था। वो लम्बी-चौड़ी थी। चेहरे पर से बुर्का हटा रखा था। उसका रंग गोरा और बहुत खूबसूरत थी वो। उसके साथ वहाँ सूट पहने दो लम्बे-चौड़े व्यक्ति मौजूद थे। उनके अलावा वहाँ पर कोई नहीं था। होटल का कोई कर्मचारी भी नहीं था।

कुट्टी ने हाल का शीशे का दरवाजा बंद कर लिया कि आवाज बाहर ना जा सके।

"सलाम वालेकुम डोगरा साहब।" वो औरत मुस्करा कर कह उठी।

"वालेकुम सलाम। नसीमबानो जी।" डोगरा भी मुस्कराया—"तीन सालों के बाद हमारी मुलाकात हो रही है।"

"आप तो ज़रा भी नहीं बदले।" नसीमबानो बोली।

"ऊपर वाले की मेहरबानी से आप तो और भी हसीन हो गई लगती हैं।"

नसीमबानो कुर्सी पर बैठी।

डोगरा भी बैठा रहा। हमेशा की तरह रीटा डोगरा के कंधों पर हाथ रखे पीछे खड़ी हो गई।

कुट्टी पास ही सतर्कता से भरे अंदाज में खड़ा था।

इसी तरह नसीमबानो के दोनों आदमी, दो-दो कदमों की दूरी पर सतर्क थे।

"आपने तो हवेरी में कदम रखते ही हंगामा बरपा दिया।" नसीमबानो बोली—"रात स्वामी ने आपके उस बंगले पर हमला कराया, वो तो अच्छा हुआ कि आप वहां नहीं थे, वरना आज हमारी मुलाकात न होती।"

"आपको इतना भरोसा है उस पर कि वो मेरी जान ले लेगा।" डोगरा मुस्कराया।

"बात भरोसे की नहीं डोगरा साहब। लेकिन स्वामी बहुत दम-खम रखता है। ये मुम्बई नहीं हवेरी है।"

"मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि ये हवेरी है। मेरे लिए सब जगह एक सी ही हैं।"

"मैं आपकी ताकत कम नहीं आंक रही।"

"आपके आंकने से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। स्वामी मेरे सामने कुछ भी नहीं है।" डोगरा मुस्कराकर बोला।

"स्वामी की बहन ने आत्महत्या कर ली।"

"ये सब स्वामी की गलती से हुआ।"

"मुझे क्या।" नसीमबानो, डोगरा की आंखों में झांकती कह

उठी—"उसने आत्महत्या क्यों की और कैसे की हमें अपनी बात करनी चाहिए।"

डोगरा ने कुट्टी की तरफ इशारा करके कहा।

"कुट्टी को लगता है कि आप हमारे साथ नाराज हैं?"

"ऐसा क्या हो गया?"

"बोलो कुट्टी।"

"इनकी बहन ने हमारी आठ पार्टियां तोड़ ली हैं, जो हमसे ड्रग्स लेती थी।" कुट्टी बोला।

डोगरा की निगाह नसीमबानो पर टिकी थी।

नसीमबानो पहले मुस्कराई फिर कह उठी।

"डोगरा साहब, आप तो ड्रग्स के बादशाह हैं। जितना माल हम आपसे लेते हैं, उतना कोई नहीं लेता। हमारा इलाका बहुत बड़ा है ड्रग्स के धंधे का। इस पूरे कर्नाटक में ही नहीं, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, केरला, तमिलनाडु, को हम ही कवर करते हैं। हमारा पूरा परिवार इस काम में लगा है और ड्रग्स आपसे लेते हैं अब तो मेरी शिकायत है आपसे कि आप ड्रग्स का फुटकर धंधा क्यों करते हैं वो सब हमारे लिए रहने दीजिए और माल हमें देते रहिए। मेरी बहन का कहना है कि वो आपकी सब पार्टियां तोड़ लेगी, जहां भी फुटकर माल आप देते हैं। जानते हैं मेरी बहन ने खुद नुकसान में रहकर आपकी पार्टियों को सस्ते में माल सप्लाई किया। और आगे भी वो ये ही इरादा रखती है। उसका कहना है कि आप पार्टियों को फुटकर माल देना बंद कर दें और सिर्फ हमें ही दें। जितनी ड्रग्स आप देंगे हम लेंगे। अगर आप भी फुटकर माल पार्टियों को देते रहे तो नुकसान हमें ही होगा। बादशाह को बादशाह बनकर रहना चाहिए। थोड़े से लालच के लिए जनता को मुंह नहीं लगाना चाहिए। उसके लिए हम हैं डोगरा साहब।"

डोगरा ने अपना कान खुजाया।

कुट्टी की गंभीर निगाह डोगरा पर थी।

"डोगरा साहब। मुझे तो लगता है मैडम ने सही कहा है। फुटकर धंधा इन्हें ही करने दीजिए।" रीटा कह उठी।

"कुट्टी हमारे पास फुटकर पार्टियां कितनी हैं?" डोगरा ने पूछा।

"चार सौ से ऊपर हैं।" कुटी ने कहा।

"उनमें से हमारे लिए जरूरी कितनी हैं?"

"कनार्टक, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, तमिलनाडु और केरला को मिलाकर करीब तीस पार्टियां हमारे लिए जरूरी हैं। उन्हें तो हर हाल में हम ही माल देंगे। वरना हमें काफी बड़ा नुकसान होगा।" कुट्टी ने सोच भरे स्वर में कहा।

"इन खास तीस पार्टियों को अपने लिए रख लो, बाकी सब नसीमबानो के हवाले कर दो।" डोगरा बोला।

"जी।"

डोगरा ने नसीमबानो को देखा।

"थैंक्स डोगरा साहब। आपने तो बहुत जल्द फैसला कर दिया।" नसीमबानो कह उठी।

"कुट्टी आपको मिलेगा और सब पार्टियों के नाम-पते दे देगा। परंतु जो तीस पार्टियां हमारे पास हैं उस तरफ देखना तो क्या सोचना भी नहीं है आपके परिवार ने। ऐसा हुआ भी तो हमें पसंद नहीं आएगा।" डोगरा बोला।

"हमें उन तीस पार्टियों के नाम-पते दे दीजिए, उन्हें माल देना तो दूर अगर उनमें से कोई हमारे पास ड्रग्स लेने आया तो भी हम उसे नहीं देंगे। ये हमारा वादा रहा।" नसीमवानो ने कहा।

"समझे कुट्टी?" डोगरा बोला।

"समझ गया डोगरा साहब।"

"मैं आपको किसी भी हालात में नाराज नहीं करना चाहता नसीमबानो जी, जब तक आपकी डिमांड हमें सही लगती है।"

"शुक्रिया।" नसीमबानो ने कहा।

"और क्या समस्या है कुट्टी?" डोगर ने पूछा।

"तीन महीनों से मैडम ने हमसे बहुत कम ड्रग्स ली, जबकि आगे ये ड्रग्स की सप्लाई बराबर कर रहे हैं।" कुट्टी ने कहा—"मुझे पता चला है कि इन्होंने साठी ब्रदर्स से ड्रग्स लेनी शुरू कर दी है। हालांकि पूरबनाथ साठी को महीना भर पहले देवराज चौहान ने मार दिया था।"

डोगरा की निगाह नसीमबानो पर जा टिकी।

"ये तो गलत बात है नसीमबानो। सालों से तुम हमसे ड्रग्स ले रही हो और अब?"

"साठी हमें सस्ते में ड्रग्स दे रहा है।" नसीमबानो कह उठी।

"उस कीमत पर हम भी ड्रग्स दे सकते हैं। ऐसा कुछ करने से पहले तुम्हें हमसे बात करनी चाहिए थी।" डोगरा ने शिकायत की।

"मेरी बहन को आप पर नाराजगी थी कि आप फुटकर क्यों ड्रग्स देते हैं?"

"अब तो नाराजगी दूर हो जानी चाहिए।"

"हो गई। साठी के भाव में हम आपसे ही ड्रग्स लेंगे।" नसीमबानो ने सिर हिलाया—"परंतु दो बार कुट्टी की भेजी ड्रग्स कम निकली है। हम बुरा धंधा जरूर करते हैं, परंतु बेईमानी नहीं करते।"

"तो इसी कारण तुमने हमारी सौ करोड़ की पेमेंट रोक रखी है?" डोगरा कह उठा।

"कुछ भी समझिए।"

"डोगरा साहब।" रीटा, डोगरा का कंधा थपथपाते कह उठी—"माल का कम निकलना तो बुरी बात है।"

"बहुत ही बुरी बात है।" डोगरा ने गर्दन घुमाकर कुट्टी को देखकर कहा—"ऐसा क्यों हुआ?"

"मैडम की ये शिकायत मुझ तक पहुंची थी। मैंने अपने सब ठिकानों पर छानबीन की, जहां-जहां से माल निकलता था। परंतु हमारी तरफ से माल पूरा भेजा गया है।" कुट्टी ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

"लेकिन हमें माल कम मिला।" नसीमबानो ने कहा।

"माल रास्ते में भी गायब किया जा सकता है।" डोगरा ने कहा।

"माल लाने वाले हमारे सब आदमी भरोसे के हैं और पुराने हैं।" उसने कहा।

"हेरा-फेरी भरोसे का ही आदमी करता है। नए आदमी को हेराफेरी का मौका नहीं मिलता।" डोगरा ने नसीमबानो से कहा—"ये मामला ऐसा है कि हम आपको कहते रहेंगे, आप हमें। हल नहीं निकलेगा। माल तभी गायब होता है, जब किया जाए ये काम आपके या हमारे आदमी, कोई भी कर सकते हैं। बातों से ही इसका हल नहीं निकलेगा।"

"डोगरा साहब।" रीटा कह उठी—"मेरे ख्याल में इनका आज तक जितना माल कम निकला है, उसका आधा आपको इन्हें दे देना चाहिए। और भविष्य में कुट्टी साहब की निगरानी में माल भेज जाएगा और मैडम की तरफ से दो खास भरोसेमंद आदमी माल को कुट्टी से लेंगे। इस तरह हेराफेरी जहां भी हो रही है, रुक जाएगी।"

दो पलों के लिए चुप्पी रही।

फिर डोगरा ने सिर हिलाकर नसीमबानो से कहा।

"ये रास्ता ठीक है। आपको मंजूर है?"

'हां। ऐसा करना ही मुनासिब होगा।" नसीमबानो कह उठी।

"कोई और बात कुट्टी?" डोगरा कह उठा।

"नहीं।"

"तो नसीमबानो जी। सौ करोड़ की हमारी पेमेंट जल्द-से-जल्द हो जानी चाहिए। हमें भी लोगों की पेमेंट देनी होती है।"

"शाम को चार बजे वैसे ही पेमेंट मिल जाएगी, जैसे कि हमेशा मिलती रही है। पैसा आपका तैयार रखा है, बल्कि संभालने में हमें ही दिक्कत हो रही है।" नसीमबानो उठते हुए बोली—"जनाब कुट्टी

साहब से जब भी हमारी बहन का सामना होता है तो ये उन पर डोरे डालने की कोशिश में रहते हैं। धंधे में ऐसा नहीं होना चाहिए।"

"अच्छा।" उठते हुए डोगरा मुस्करा पड़ा—"मुझे नहीं मालूम था कि कुट्टी जवान हो गया है। इसमें नाराजगी की कोई बात नहीं आपने कह दिया कुट्टी ने भी सुन लिया। अब आपको शिकायत नहीं होगी।"

नसीमबानो, दोनों आदमियों के साथ बाहर निकल गई।

डोगरा वापस कुर्सी पर बैठा। रीटा भी बैठती हुई कह उठी।

"अभी तक नाश्ता नहीं किया डोगरा साहब? हो जाए क्या?"

"क्यों नहीं रीटा डार्लिंग।" डोगरा मुस्कराकर बोला—"कुट्टी अभी नाश्ते का इंतजाम कर देगा।"

"मैं अभी इंतजाम करता हूं।" कहकर कुट्टी जाने को हुआ।

"नसीमबानो की बहन बहुत सुंदर है क्या?" डोगरा ने एकाएक पूछा।

"ज...जी...जी हां।" कुट्टी ठिठका। सकपकाया कह उठा।

"धंधे में ये बातें नहीं होनी चाहिए। जा नाश्ता लेकर आ।"

कुट्टी वहां से बाहर निकल गया।

"मेरी रीटा डार्लिंग से सुंदर कोई भी नहीं है। नसीमबानो की बहन भी नहीं।" डोगरा मुस्कराकर रीटा को देखता बोला।

"रहने दीजिए मैं तो कुछ भी नहीं। मेरे से भी ज्यादा सुंदर... ।"

"मेरी नज़रों से तुम्हें कोई देखे तो उसे तुमसे ज्यादा सुंदर कोई भी नहीं लग सकता।" डोगरा बोला।

रीटा भी हँस पड़ी।

"आपकी बातें सुनकर तो कोई भी आप पर जान न्यौछावर कर देगी।" रीटा ने कहा—"इतनी प्यारी बातें आप... ।"

तभी डोगरा का फोन बजा।

"हैलो।" बात की फोन पर डोगरा ने।

"डोगरा साहब। मैं गोवा से गोरा बोल रहा... ।" आवाज में बेहद हड़बड़ी थी।

"कहो गोरे तुम।"

"गजब हो गया डोगरा साहब। कैस्टो ने गोवा में काम करने वाले आपके हर आदमी पर हमला कर दिया है। ये काम रात तीन बजे चुपके से उसके आदमियों ने शुरू किया। वो आपके आदमियों को मारते जा रहे और लाशें भी हाथों-हाथ उठाते जा रहे हैं। आपका हर खास आदमी गायब हो चुका है। सब काम पूरी योजना के साथ हो रहा है। पुलिस तो ऐसे सोई पड़ी है, जैसे उन्हें कुछ पता ही ना

हो। कैस्टो के आदमी साईलेंसर लगे हथियारों का इस्तेमाल कर रहे हैं कि शोर ना उठे। खामोशी से पूरे गोवा में खूनी खेल हो रहा है। आपके ड्रग्स के गोदाम लूट लिए गए हैं। मैंने बहुतों को फोन किया है, पर किसी से भी मेरी बात नहीं हो सकी। डेढ़ घंटा पहले मुझे पता चला कि क्या हो रहा है। मैं उसी पल अंडरग्राउंड हो गया। कैस्टो ने गोवा में आपके खिलाफ जंग छेड़ दी है। वो शाम तक ही आपका धंधा खत्म कर देगा।"

"ये...ये नहीं हो सकता।" डोगरा के होठों से निकला।

"ये हो गया है।" गोरे की सूखी आवाज कानों में पड़ी—"मेरी राय है कि आप गोवा में अभी पैर न रखें। कैस्टो बहुत गुस्से में है वो आपको भी नहीं छोड़ेगा। मेरे ख्याल में गोवा का धंधा तो आपके हाथों से गया।"

डोगरा के दांत भिंच गए।

"कैस्टो ने अपनी पूरी ताकत दिखा दी है। इस वक्त तो उसका मुकाबला कोई नहीं कर सकता। वो आपके हर आदमी को मारे... जा रहा है, जो ड्रग्स के धंधे में शामिल है।" गोरे की आवाज पुनः आई।

डोगरा ने फोन बंद कर दिया। चेहरे पर गुस्सा था।

"क्या हुआ डोगरा साहब?" रीटा कह उठी।

"कैस्टो गोवा में मेरे धंधे का तख्ता पलट रहा है। वो मेरे आदमियों को मार रहा है। ड्रग्स के गोदाम लूट लिए हैं उसने।"

कहने के साथ ही डोगरा फोन से नम्बर मिलाने लगा।

"तो कैस्टो समझ चुका था कि वो पैन, उसे खत्म करने के लिए ही आपने उसे दिया था। जिससे माईकल मारा गया।" रीटा सिर हिलाकर होंठ सिकोड़ कह उठी—"वरना कैस्टो की हिम्मत नहीं थी कि ऐसा करता।"

डोगरा की फोन पर गोवा के कमिश्नर से बात हो गई।

"कमिश्नर... ।" डोगरा बोला—"कैस्टो ने क्या कर डाला गोवा में? तुमने उसे रोका क्यों नहीं?"

"रॉंग नंबर... ।" उधर से कह कर फोन बंद कर दिया गया।

डोगरा ने गहरी सांस ली और फोन वाला हाथ नीचे हो गया।

"क्या बोला कमिश्नर?" रीटा बोली।

"रांग नम्बर।"

"मतलब कि गोवा आपके हाथ से निकलकर कैस्टो के हाथ में पहुंच गया?" रीटा कह उठी।

ठीक उसी समय होटल के बाहर भी कुछ हो रहा था।

माल्टा होटल के बाहर इधर-उधर तीन कारें खड़ी थीं, जिसमें कि डोगरा को सुरक्षा देने वाली आदमी बैठे हुए थे। वो कारों से बाहर नहीं निकले थे। कुट्टी उन्हें हिदायत देकर गया था कि जब तक उसका फोन ना.आए तो तब तक खामख्वाह वे सड़क पर ना टहलें और भीतर बैठे ही वो बाहर का जायजा लेते रहें। सबसे पीछे एक तरफ रमेश टूडे की कार खड़ी थी। कुछ देर तो टूडे कार में ही बैठा रहा। फिर बाहर निकलकर इधर-उधर टहलने लगा और अपनी कार से कुछ दूर चला गया था।

सड़क पर से ट्रैफिक बराबर आ-जा रहा था। सूर्य की तीखी धूप वहां फैली थी।

सड़क के दूसरी तरफ पहले से ही.खड़ी कार में देवराज चौहान, जगमोहन और हरीश खुदे थे। वो दस बजे ही वहां पहुंच गए थे और विलास डोगरा के आने का इंतजार करने लगे थे। उन्हें पूरा यकीन नहीं था कि डोगरा वहां आएगा। परंतु दुलेरा की कही बातें अब तक सही थी तो डोगरा के माल्टा होटल ग्यारह बजे आने की बात भी सही हो सकती थी।

11:40 पर उन्होंने डोगरा को कारों में घिरे आता देखा।

डोगरा की कार होटल में चली गई। बाकी कारें बाहर ही बिखर कर ठहर गईं।

''लगता है कि डोगरा ने हवेरी में किसी के साथ पंगा ले लिया है। जगमोहन बोला—''तभी वो इतने लोगों को अपने आगे-पीछे रखे घूम रहा है तभी रात उसके बंगले पर हथियारबंद लोगों ने जबरदस्त हमला किया, उसे मारने के लिए।''

''रात की बात मत करो।'' खुदे ने गहरी सांस ली—''तुम लोग बच आए, ये यही बहुत है।''

देवराज चौहान की निगाह हर तरफ फिर रही थी।

उन्होंने रमेश टूडे को भी कार से निकलकर टहलने के अंदाज में इधर-उधर बढ़ते देखा।

''इसे देखकर तो मुझे डर लगने लगता है।'' खुदे कह उठा।

''तुम...।'' जगमोहन ने गंभीर निगाहों से देवराज चौहान को देखा—''इस हत्यारे को मारने क्यों नहीं देते?''

''अभी नहीं...।'' देवराज चौहान की कठोर निगाहें टूडे पर थीं—''इसके मरते ही डोगरा जरूरत से ज्यादा सावधान हो जाएगा।'' या हो सकता है कि वो कहीं छिप जाए। डोगरा को इस हत्यारे का बहुत सहारा है, ये है भी खतरनाक।''

''ये दो बार हमें मारने की कोशिश कर चुका है। एक बार तुम्हें

फिर मुझे। मैं तो किस्मत से, महाजन की वजह से बच...।''
इस हत्यारे की परवाह मत करो। लेकिन पहले डोगरा...।''
''हर बार ये ही कहते हो।''
''एक बात बार-बार मत कहो।'' देवराज चौहान आस-पास देखता कह उठा—''हमें डोगरा के ठिकाने का पता करना है। अगर हम इनके पीछे जाएंगे तो इनकी निगाहों में आ सकते हैं क्योंकि ये काफी लोग हैं।''

''तो...?'' जगमोहन की आंखें सिकुड़ी।

''मैं टूडे की कार की डिग्गी में बैठने जा रहा हूं।'' देवराज चौहान बोला—''आखिरकार हमें पता चल ही जाएगा कि डोगरा कहां पर टिका हुआ है। अभी हम नहीं जानते कि डोगरा ने यहां से कहीं और भी जाना है या नहीं। ज्यादा देर हम कार से इनके पीछे रहेंगे तो इन्हें पीछा होने का पता चल जाएगा। अगर हमें डोगरा का ठिकाना पता चल गया तो रात को हम वहां हमला कर सकते हैं। आसानी से डोगरा तक पहुंच जाएंगे। मतलब कि मेरा डिग्गी में बैठना ही मुनासिब होगा।''

''मैं बैठूं डिग्गी में?'' जगमोहन बोला।

''एक ही बात है, मुझे वहां बैठने दो। तुम दोनों मेरे फोन का इंतजार करना।'' देवराज चौहान ने नज़रें घुमाकर रमेश टूडे को देखा जो अपनी कार को काफी आगे सड़क के किनारे-किनारे चला गया था—'वो दूर है, ये मौका अच्छा है। जब मैं कार की डिग्गी में बैठ जाऊं तो तुम लोग यहां से चले जाना। मैं नहीं चाहता कि टूडे तुम लोगों को देख ले। मेरे फोन का इंतजार करना और पीछे लगे रहने की गलती मत करना।'' कहने के साथ ही देवराज चौहान ने कार का दरवाजा खोला और बाहर निकलकर दरवाजा बंद करते हुए तेजी से टूडे की कार की तरफ बढ़ गया।

सड़क पर ट्रेफिक आ-जा रहा था।

लोग पैदल चले जा रहे थे।

देवराज चौहान भी उसी भीड़ में शामिल हो गया और मिनट भर में टूडे की कार के पास जा पहुंचा। कार की डिग्गी खोलनी चाही परंतु वो बंद थी। देवराज चौहान ने अपने जूते की एड़ी में चार इंच लंबी लोहे की सींख निकाली, जो कि आगे से चपटी थी और उससे आधे मिनट में कार की डिग्गी खोली ली। डिग्गी के भीतर झांका वहां स्टैपनी पड़ी थी। परंतु पर्याप्त जगह थी कि भीतर सिकुड़कर टेड़ा होकर बैठ सकता था। उसने आते-जाते लोगों पर निगाह मारी। थोड़ा इंतजार किया। वो उस तरफ भी देख रहा था जिधर टूडे गया था। उसे इस बात का भी ध्यान था कि टूडे वापस ना लौट आए। तभी आस-पास

से निकलते लोगों को चंद पलों के लिए गायब पाया तो फौरन ही डिग्गी में जा बैठा और डिग्गी बंद कर ली।

❑❑❑
❑❑❑

विलास डोगरा के चेहरे पर परेशानी दिखाई दे रही थी। रह-रहकर होंठ भिंच जाते थे। गुस्सा चेहरे पर दिखने लगता। टेबल पर खाने का ढेर सारा सामान पड़ा था। वो ज़रा-ज़रा करके कुछ-कुछ खा रहा था। परंतु खाने का मन ही नहीं हो रहा था उसने रीटा पर निगाह मारी, जो कि धड़ाधड़ खाये जा रही थी। कुट्टी चंद कदमों की दूरी पर टहल रहा था। रीटा ने डोगरा को अपनी तरफ देखते पाया तो बोली—

"खाने पर ध्यान दीजिए डोगरा साहब गोवा की चिंता मत कीजिए। ये ठीक है कि कैस्टो ने बहुत खतरनाक गेम खेली। पर आप भी तो खेल खेलना जानते हैं। हम कैस्टो के पर ही काट डालेंगे। खाने पर ध्यान दीजिए। डोगरा साहब।"

"रीटा डार्लिंग। मैं बहुत परेशान हूं गोवा की हालत पर। खाना भी नहीं खाया जा रहा।"

"आपने तो दिल छोटा कर लिया डोगरा साहब। मुझे देखिए। गोवा की बात सुनकर मुझे इतनी घबराहट हो रही है कि मैं खाए जा रही हूं। पर सोच भी रही हूं कि गोवा के हालातों को कैसे सुधारा जाए। खाये बिना सोचा भी तो नहीं जाता। पुलिस कमिश्नर ने तो आपकी आवाज सुनते ही रॉंग नम्बर कहकर फोन बंद कर दिया। बहुत मोटा माल चढ़ाया होगा कैस्टो ने पुलिस को, आप ठीक कहते थे कि पुलिस की रजामंदी के बिना कुछ नहीं हो सकता। पुलिस जिसे चाहेगी, वो ही गोवा में ड्रग्स का धंधा कर सकेगा।"

"कुछ समझ में नहीं आता।" डोगरा ने दांत भींचकर कहा।

"कैस्टो ने तो कमाल ही कर दिया। जब तक आप गोवा में रहे, वो चुप रहा। आपके निकलते ही शुरू हो गया।" रीटा ने पुनः खाना शुरू कर दिया—"मैंने कुछ सोचा है डोगरा साहब।"

"क्या?"

"आपने कुछ नहीं सोचा?" रीटा ने खाना छोड़कर प्लेट सरका दी और डोगरा को देखा।

"अभी मैं कुछ भी सोचना नहीं चाहता। रात तू मुझे अपने हाथों से पिलाना। उसके बाद सोचूंगा कि...।"

"तो फिर मेरा सोचना सुनिए।"

"बता रीटा डार्लिंग?"

"आपका अभी गोवा में कदम रखना खतरनाक है। इसलिए आप तो गोवा से दूर ही रहिए।" रीटा ने कहा—"परंतु अपने खास-खास आदमियों को चुपके से वहां भेजना शुरू कर दीजिए। वो पुलिस के छोटे-बड़े आफिसरों से मिलेंगे। उनके घर भर देंगे। नोटों से भरे ब्रीफकेस उनके पास पहुंचाते रहिए। महंगे तोहफे, जैसे कि हीरे जवाहरात से जड़े गहने, अंगूठियां ऐसा सब कुछ पुलिस को देना शुरू कर दें और कैस्टो के खिलाफ उन्हें पटाइये।"

डोगरा ने होंठ भींचे। सिग्रेट सुलगाकर कश लिया।

"उस पुलिस कमिश्नर को इतने नोट दे दीजिए कि वो दोबारा कभी आपकी आवाज सुनकर रांग नंबर कहकर फोन ना रख सके। दोबारा कभी कैस्टो जैसा कोई, पुलिस को अपनी तरफ ना कर सके। गोवा के गोदाम में कितनी ड्रग्स थी?"

"सौ करोड़ के आस-पास। कुछ दिन पहले ही माल पहुंचा था।" डोगरा गुर्रा उठा।

"कैस्टो ने सौ करोड़ का आपका माल लूटा। उसमें से पंद्रह-बीस करोड़ पुलिस वालों को दे दिया होगा तो उसका क्या गया। आपकी दौलत से आपका ही गला काट दिया। हद हो गई डोगरा साहब ये तो।" रीटा गंभीर स्वर में कह रही थी—"कैस्टो ने सच में कमाल का काम किया, लेकिन आपको उससे भी बड़ा कमाल करना है। गोवा में धंधे के बारे में मत सोचिए, सिर्फ पुलिस के बारे में सोचिए। नये सिर से नई शुरुआत कीजिए। पुलिस अपने हाथ में होगी तो कैस्टो बेकार हो जाएगा। इसी बीच टूडे जैसे कुछ लोग गोवा जाएंगे और कैस्टो के साथ-साथ उसके हर खास आदमी को खत्म कर देंगे। वैसे बॉब तो गोवा में, कैस्टो के पीछे लग चुका होगा। मेरे ख्याल में तो सब ठीक किया जा सकता है, चिंता की कोई बात नहीं।"

चेहरे पर कठोरता समेटे, डोगरा कश लेता रहा।

"कहां खो गए डोगरा साहब?"

"तुमने तो सोच लिया, रीटा डार्लिंग।" डोगरा शब्दों को चबाकर कह उठा—"लेकिन मेरा सोचना अभी बाकी है। मैं अब वापस जाऊंगा। आराम करूंगा। कैस्टो के बारे में सोचूंगा। सोचना ही पड़ेगा। कुट्टी।" डोगरा ने कुट्टी को पुकारा।

"जी।" कुट्टी फौरन पास पहुंचा।

"वापस जाना है मैंने अभी फार्म हाऊस पर। आज के बाकी के सारे प्रोग्राम कैंसिल करके शायद कल मुम्बई वापस ही जाना पड़े। यहां से चलो।"

"आपने तो अपना मूड ऑफ कर लिया डोगरा साहब।" रीटा गहरी सांस लेकर कह उठी।

डोगरा ने जवाब में कुछ नहीं कहा और उठ खड़ा हुआ।

❑❑❑

❑❑❑

1:25 बजा था।

विलास डोगरा का छोटा-सा काफिला अब हवेरी से बाहर जाता जा रहा था। फार्म हाऊस हवेरी शहर की सीमा पर स्थित था, जहां पर भीड़-भाड़ ना के बराबर थी। आगे एक कार थी उसके पीछे डोगरा की कार थी। उसके पीछे दो कारें और आदमियों से भरी चल रही थी। सबसे पीछे रमेश टूडे कार चलाता आ रहा था। सड़क के दोनों तरफ अब जंगल जैसा इलाका था। सुनसानी थी। पांच-सात मिनट में फार्म हाऊस आने वाला था। टूडे की सतर्क निगाह हर तरफ थीं। वो इस बारे में सतर्क था कि कोई, खासतौर से स्वामी के आदमी उनका पीछा ना कर रहे हों। परंतु सब ठीक था। उसे तसल्ली थी कि कोई पीछे नहीं है। टूडे कुछ थकान महसूस कर रहा था। और सोच रहा था कि फार्म हाऊस पर पहुंचकर शाम तक सोएगा, लेकिन पहले खाना खाएगा। जब से डोगरा के साथ मुम्बई से निकला है तब से भागता ही रहा है। ठीक तरह आराम नहीं कर पाया। तभी सड़क के बीचों-बीच गड्ढा आया। गड्ढे से बचने का वक्त नहीं था। पहले कार का अगला पहिया गड्ढे में पड़ा, कार बुरी तरह उछली फिर पिछला पहिया गड्ढे में पड़ा तो कार उछली। कार गड्ढे को छोड़कर आगे निकल गई। परंतु टूडे की आंखें सिकुड़ी, उसी पल उसने कार रोक दी। आगे जाती कारों को देखने लगा, जो कि धीरे-धीरे नज़रों से ओझल हो गई। वो कई पलों तक कार की सीट पर बैठा रहा। हाथ स्टेयरिंग पर टिके थे। कार को जब गड्ढे ने उछाला तो उसके कानों में मध्यम सी कराह पड़ी थी कि किसी की कराह उस आवाज को कार के इंजन के शोर में सुन पाना आसान नहीं थी, परंतु टूडे के कानों ने उस कराह को सुन लिया था और समझ गया था कि कार में कोई है। उसे हैरानी हुई कि उसकी कार में कोई है और उसे पता तक नहीं। टूडे के चेहरे पर सर्द भाव आ ठहरे। उसने शांत भाव से कार का दरवाजा खोला और बाहर आ गया।

सड़क के दोनों तरफ जंगल जैसी जगह थी। ये सुनसान इलाका था और कोई आता-जाता नज़र नहीं आ रहा था। टूडे ने जेब में हाथ डालकर रिवॉल्वर निकाली और दो कदम पीछे उठाकर कार के भीतर झांका। पीछे की सीट पर या आगे पीछे की सीटों के बीच कोई नहीं

था। अगले ही पल उनकी नज़र डिग्गी पर पड़ी वो आगे बढ़ा और डिग्गी के पास पहुंचा।

कई पल खड़ा डिग्गी को घूरता रहा।

फिर रिवॉल्वर की नाल से डिग्गी को ठकठकाया।

परंतु जवाव में किसी भी प्रकार की कोई आहट उसे नहीं मिली।

टूडे लगभग आधा मिनट बंद डिग्गी को देखता रहा फिर हाथ आगे बढ़ाकर डिग्गी का हैंडिल थामा और तेजी के साथ डिग्गी खोलते हुए रिवॉल्वर वाला हाथ आगे कर दिया। परंतु डिग्गी के भीतर मौजूद देवराज चौहान उसकी आशा से कहीं ज्यादा तेजी से हरकत में आया। टूडे ठीक से कुछ देख भी नहीं पाया था कि डिग्गी में उकड़ूं बैठा देवराज चौहान उछलकर किसी मेंढक की भांति टूडे से आ टकराया। जो हुआ था, उसकी टूडे को आशा जरा भी नहीं थी।

टूडे के पांव उखड़ गए।

वो पीछे को जा गिरा। देवराज चौहान उसके ऊपर गिरा। टूडे के होठों से चीख निकली। रिवॉल्वर हाथ से निकालकर दूर फिसलती चली गई। इस वक्त वो पेट के बल कच्ची-पक्की सड़क पर जा पड़ा था। ऊपर मौजूद देवराज चौहान ने खुद को संभाला और फुर्ती से रिवॉल्वर निकाल कर नाल टूडे की गर्दन पर रख दी।

टूडे थम सा गया।

देवराज चौहान के दांत भिंचे हुए थे। माथे से खून की धार बहकर आंख के बालों तक आ रही थी। कार जब गड्ढे में उछली थी तो उसका माथा बंद डिग्गी से टकराया था, तभी उसके होठों से तीव्र कराह निकली थी।

टूडे ने सिर घुमाकर उसे देखना चाहा, परंतु देवराज चौहान ने उसका सिर दबा दिया।

चंद पल इसी मौत भरी खामोशी में निकल गए।

''कौन हो तुम?'' टूडे के होठों से निकला।

''मैं हूं देवराज चौहान।'' देंवराज चौहान के होठों से गुर्राहट निकली।

''तुम? नहीं, तुम तो गोवा से मुम्बई चले गए थे।'' टूडे ने जैसे तड़पकर कहा।

''तुम्हें दिखाने के लिए।'' देवराज चौहान उसी स्वर में बोला—''जबकि मैं हवेरी आ गया था।''

टूडे उसी प्रकार पड़ा रहा।

''तुमने जगमोहन को मार दिया। ये ही सोचते हो ना? पर वो जिंदा है।'' देवराज चौहान ने दरिंदगी से कहा—''अब तुम मरने जा

रहे हो, मैं गोली चलाने जा रहा हूं। गर्दन पर लगी मेरी एक गोली से तुम्हारा काम हो जाएगा। तुमने सोचा था कभी कि इस तरह... ।"

उसी पल टूडे ने अपने हाथ नीचे टिका खुद को जोरों से झटका दिया और उसकी पीठ पर मौजूद देवराज चौहान तीव्र झटके से पीछे को होता चला गया। झटका जरा जोरदार था कि रिवॉल्वर हाथों से निकल गई। वो एक तरफ लुढ़कता चला गया। परंतु उसी पल खुद को संभालते हुए फुर्ती से उछलकर खड़ा हो गया।

सामने टूडे खड़ा था। खूनी निगाहों से उसे देख रहा था।

दोनों के पास रिवॉल्वर नहीं थी।

देवराज चौहान की आंखों में मौत नाच रही थी।

दोनों घायल शेरों की तरह एक-दूसरे को देख रहे थे।

कई पल यूं ही बीत गए।

फिर देवराज चौहान मौत भरे अंदाज में टूडे की तरफ बढ़ा।

टूडे के दांत भिंच गए।

देवराज चौहान जब पास पहुंचा तो टूडे खतरनाक अंदाज में उस पर झपट पड़ा। टूडे का घूंसा देवराज चौहान के चेहरे पर लगा, जबकि देवराज चौहान ने उसके पेट पर घूंसा मारा और उसे पीछे उछाल दिया।

टूडे पीछे की तरफ लड़खड़ाया और संभल गया। देवराज चौहान पुनः टूडे पर झपटा। टूडे फूर्ती से झुका और सिर की ठोकर देवराज चौहान के पेट से मारते, दोनों हाथों ने उसकी टांगों को पकड़कर झटक दिया।

देवराज चौहान बुरी तरह कूलहों के बल नीचे जा गिरा।

टूडे ने उसी पल उस पर छलांग लगा दी।

टूडे देवराज चौहान के ऊपर जा गिरा। देवराज चौहान के होठों से कराह निकली। दोनों गुत्थम-गुत्था हो गए। टूडे अपने हाथ का पंजा उसकी गर्दन पर टिकाने की फिराक में था कि देवराज चौहान ने अपने ऊपर पड़े टूडे की कमर में जोरों से घूंसा मारा टूडे तड़पा जरूर परंतु अपनी कोशिश में लगा रहा और एकाएक उसका पंजा देवराज चौहान की गर्दन पर जा टिका।

टूडे ने पंजे का दबाव बढ़ा दिया।

देवराज चौहान का दम घुटने लगा। चेहरा लाल होता चला गया। वो तड़पा और बहुत तेजी से अपने ऊपर पड़े टूडे की गर्दन पर पीछे से अपने टांगों की कैंची डाली और झटके के साथ उसे पीछे को लुढ़का दिया।

टूडे धूल भरी सड़क पर लुढ़कता हुआ सड़क किनारे ढलान पर चला गया।

देवराज चौहान उठा और टूडे पर झपटा।

टूडे को उठने का मौका नहीं मिला था कि पास आ चुके देवराज चौहान की टांगों पर अपनी दोनों टांगें मारकर देवराज चौहान को गिरा दिया और नीचे पड़े ही पड़े उस पर झपट पड़ा। वो देवराज चौहान से टकराया। उठने की कोशिश में लगा देवराज चौहान संभल ना सका और पुनः लुढ़क गया। तभी टूडे की बांहें उसकी गर्दन से लिपट गईं।

देवराज चौहान तड़पा।

टूडे की बांह ने देवराज चौहान की गर्दन को भींच लिया। दरिंदा लग रहा था टूडे। चेहरे पर खतरनाक भाव नाच रहे थे। दांत भिंचे थे। वो लगातार बांह से देवराज चौहान की गर्दन पर दबाव बढ़ाता जा रहा था।

देवराज चौहान की सांस रुकने लगी। चेहरा लाल-सा हो गया। आंखें फटती जा रही थी। वो तड़पा कि आज़ाद हो सके, परंतु टूडे की बांह का दबाव उसकी गर्दन पर हर पल बढ़ता ही जा रहा था। एकाएक देवराज चौहान की आंखों के सामने अंधेरे से भरे काले बादल उभरने लगे। वो जानता कि हर पल मौत की तरफ बढ़ता जा रहा है। नीचे पड़े उसकी टांगें आजाद थीं और उसी पल उसने अपनी दोनों टांगों से टूडे को मारने की असफल चेष्टा की।

टूडे का दबाव और बढ़ गया।

जिंदगी मौत की लकीर को छूने का प्रयत्न कर रही थी।

तभी देवराज चौहान के जूते की एक एड़ी टूडे की टांगों के बीच जा लगी। ऐसी लगी कि टूडे गला फाड़कर चीखा और देवराज चौहान की गर्दन से लिपटी बांह फौरन हट गई। उसने दोनों हाथ अपनी टांगों के बीच रखे और लुढ़कता हुआ तीन-चार कलाबाजियां खाता चला गया। चेहरे पर दर्द के भाव आ गए थे।

गर्दन को आजाद होते पाकर देवराज चौहान मुंह खोले लंबी-लंबी सांसें लेने लगा। चेहरा अभी भी लाल सुर्ख था। उसने टूडे को देखा जो अभी भी टांगों के बीच में हाथ रखे उसे पीड़ा भरी निगाहों से देख रहा था। देवराज चौहान ने निगाह घुमाई और उठने लगा था कि थम सा गया। सामने झाड़ियों में उसकी रिवॉल्वर फंसी थी।

टूडे ने देवराज चौहान की नज़रों का पीछा किया और उसने भी रिवॉल्वर को देख लिया।

देवराज चौहान तेजी से उठा और रिवॉल्वर की तरफ लपका।

टूडे ने बैठे ही बैठे छलांग लगाई और देवराज चौहान की पिंडली पकड़कर झटका दिया। देवराज चौहान लड़खड़ाकर नीचे जा गिरा। टूडे फुर्ती से उठकर रिवॉल्वर की तरफ दौड़ा। देवराज चौहान ने दो-तीन

कलाबाजियां खाई और टूडे के रास्ते में आ गया। टुडे लड़खड़ाकर नीचे आ गिरा। देवराज चौहान उस पर झपट पड़ा। दोनों गुत्थम-गुत्था हो गए।

वो ऐसे लड़ने लगे जैसे दो भैंसे लड़ रहे हो। मुंह से खतरनाक आवाजें निकलने लगीं। तभी टूडे ने देवराज चौहान को टांगों पर रखकर उछाल दिया। देवराज चौहान तीन कदम पीछे जाकर गिरा। टूडे फुर्ती से उठकर झाड़ियों की तरफ दौड़ा, जहां रिवॉल्वर पड़ी दिख रही थी। देवराज चौहान उठकर टूडे को रोकने के लिए भागा। तभी टूडे ने रिवॉल्वर पर लंबी छलांग लगा दी और झाड़ियों पर जा गिरा। अगले ही पल उसके हाथ में रिवॉल्वर थी। वो फुर्ती से देवराज चौहान की तरफ घूमा जो कि तीन कदमों की दूरी पर था। टूडे ने उसी पल गोली चला दी।

जल्दबाजी में चलाई गोली देवराज चौहान के कानों को हवा देती निकल गई और देवराज चौहान सीधा टूडे पर आ गिरा। टूडे को झाड़ियां चुभीं तो कराह निकली होठों से। देवराज चौहान ने उसकी रिवॉल्वर वाली कलाई को पकड़ा। उस हाथ को जोरों से जमीन पर मारा परंतु टूडे ने रिवॉल्वर नहीं छोड़ी। देवराज चौहान ने तभी एक उंगली उसकी आंख में दे मारी।

टूडे गला फाड़कर चीख उठा। रिवॉल्वर हाथ से छूट गई। उसकी आंखों से खून निकलने लगा।

देवराज चौहान ने रिवाल्वर थामी और उठकर खड़ा हो गया।

टूडे दोनों हाथों से अपनी आंख को दबाए कराहने लगा। हाथ खून से रंगते जा रहे थे। उसने दूसरी आंख से देवराज चौहान को देखा जो दांत भींचे पांच कदमों के फासले पर खड़ा उसे देख रहा था। परंतु टूडे की हिम्मत अभी भी कायम थी। वो उठा और देवराज चौहान पर पागलों की तरह झपट पड़ा। देवराज चौहान ने ट्रेगर दबा दिया। फायर का तेज धमाका हुआ और गोली टूडे के पेट में जा लगी। टूडे के शरीर को झटका लगा वो रुक गया देवराज चौहान ने पुनः फायर किया।

इस बार गोली उसके माथे के ठीक बीचों-बीच जा घुसी थी।

देवराज चौहान ने जगमोहन को फोन करके बता दिया था कि टूडे उसके हाथों मारा गया और इस वक्त वो उस जगह के आसपास ही है, जहां पर विलास डोगरा मौजूद है। जगमोहन ने वहां आने को

कहा, परंतु देवराज चौहान ने ये कहकर मना कर दिया कि अभी जरूरत नहीं। पहले वो आस-पास की जगहों की छानबीन कर ले। उसके बाद देवराज चौहान ने सड़क पर खड़ी रमेश टूडे की कार को सड़क से उतारकर, टूडे के पास ही पेड़ों और झाड़ियों के बीच खड़ा कर दिया फिर अपनी कार लेकर आगे चल पड़ा।

कुछ आगे जाने के बाद उसे फार्म हाउस बने दिखे। चार दीवारियां उठी देखी। देवराज चौहान समझ गया कि डोगरा का ठिकाना इस वक्त इन्हीं फार्म हाउसों में से ही कोई है। परंतु ये पता लगाना आसान नहीं था कि वो किस में है। देवराज चौहान कार पर से फार्म हाउसों की छोटी सी कच्ची सड़क से आगे बढ़ने लगा। साथ ही वो रास्ते में पड़ने वाले फार्म हाउस पर नज़र मारता रहा।

घंटे भर बाद उसे ऐसा फार्म हाउस दिखा, जिसके लोहे के गेट के भीतर उन सब कारों को कतार में खड़े देखा, जिनके पीछे-पीछे वो इस तरफ आया था। कारों के पास तीन-चार आदमी भी दिखे। देवराज चौहान रुका नहीं, आगे बढ़ता चला गया। डोंगरा के इस नए ठिकाने का उसे पता चल गया था।

❑❑❑

❑❑❑

रात 9:10 बजे।

फार्म हाउस का सारा इलाका सन्नाटे से घिरा हुआ था। कहीं पर कोई लाइट नहीं जल रही थी। यहां सड़कों पर स्ट्रीट लाइटें नहीं थीं। फार्म हाउसों के भीतर अवश्य रोशनियां हो रही थी। वो भी किसी-किसी में। करीब आधे फार्म हाउसों में लाइटें जल रही थी, आधो में नहीं। बीते एक घंटे से कोई कार आते-जाते नहीं देखी गई थी। जिस फार्म हाउस में विलास डोगरा मौजूद था, वहां भी खूब रोशनी थी। ऊपर की मंजिल के दो कमरों में रोशनी हो रही थी और नीचे भी पर्याप्त रोशनी थी। गेट से भीतर नज़र मारने पर रोशनी के अलावा दो-तीन लोगों की झलक मिल जाती थी जो कि पहरा देते वहां तैनात थे। परंतु भीतर से कोई आवाज नहीं उठ रही थी।

देवराज चौहान, जगमोहन, हरीश खुदे बांके लाल राठौर, नगीना, सरबत सिंह, देवेन साठी और साठी के चार आदमी शाम ढलते ही बाहर मौजद थे। साठी वहां से दो सौ कदम दूरी पर वैन में मौजूद्र था और उसके पास बांकेलाल राठौर और सरबत सिंह मौजूद थे। कभी-कभाद नगीना भी वहां चक्कर मार जाती था। पास ही एक कार में साठी के चारों आदमी बैठे थे। साठी ने उन्हें कार के भीतर रहने को ही कहा था। मोना चौधरी, महाजन और पारसनाथ कुछ दूर अंधेरे

में खड़ी कार में मौजूद थे और हर तरफ नज़र रखे थे। देवराज चौहान, जगमोहन, नगीना और हरीश खुदे अंधेरे में अलग-अलग बिखरे दो घंटों से फार्म पर नज़र रख रहे थे। कोई उस फार्म हाउस में आया-गया नहीं था तब से।

9:30 से कुछ ऊपर का वक्त था कि वो इकट्ठे हुए।

"हम फार्म हाउस पर हमला करेंगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"अभी?" खुदे के होठों से निकला।

"अभी क्या परेशानी है?"

"मेरा मतलब है कुछ रात हो जाए तो तब हमारा भीतर घुसना सही होगा।" खुदे बोला।

"इस वक्त फार्म हाउस में वो लोग निश्चिंत हैं कि कोई वहां हमला नहीं कर सकता। ये खानां खाने का वक्त है। हो सकता है कि हथियार उन्होंने एक तरफ रखे हुए हों। ये बेहतर वक्त है।" देवराज चौहान ने कहा—"हम लोग साइलेंसर लगे हथियारों का इस्तेमाल करेंगे ताकि शोर ना हो और हम आसानी से डोगरा तक जा पहुंचेंगे। देखो और मारो की नीति पर हमे चलना होगा। जो भी दिख जाए, उसे खत्म करते जाओ नहीं तो वो हमें शूट कर देंगे। हमें इस तरह काम करना है कि शोर डोगरा तक ना पहुंचे। बहुत तेजी से हमें काम करना होगा।"

"हम ऐसा ही करेंगे।" जगमोहन गुर्रा उठा।

"तुम तैयार हो नगीना?" देवराज चौहान ने पूछा।

"एकदम से।" नगीना के स्वर में कठोरता थी सतर्कता थी।

"बांके और सरबत सिंह को साथ लें क्या?" खुदे बोला।

"नहीं। उन्हें साठी के पास रहने दो।" देवराज चौहान बोला।

"मैं ज़रा उनके पास होकर आती हूं।" कहने के साथ ही नगीना दूर खड़ी वैन के पास जा पहुंची। उसने वैन का दरवाजा खटखटाया। तो भीतर से दरवाजा खोला गया वैन के भीतर अंधेरा था।

"साठी"—नगीना बोली।'

"हां।" साठी की आवाज आई।

"हम बंगले में जा रहे हैं। फार्म हाउस के बंगले में। तुम यहां से भागने की कोशिश मत करना।"

"मेरा परिवार तुम लोगों के पास कैद है। मैं क्यों भागूंगा?" साठी ने रूखे स्वर में कहा—"लेकिन मैंने अब ये भी सोच लिया है कि अब तुम लोगों की बात मानकर इस तरह साथ नहीं रहूंगा। बहुत हो गया। देवराज चौहान ने मेरे भाई को शूट किया है। मैं इस बात को अच्छी तरह से जानता हूं। इसलिए...।"

"तुम यहीं रहना साठी।" नगीना बोली—"मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है।"

"अंम भी थारे साथो चलत बहणों।" बांकेलाल राठौर कठोर स्वर में कह उठा।

"तुम दोनों साठी के पास रहो।" कहने के साथ ही नगीना वहां से हटी और दूर खड़े देवराज चौहान के पास जा पहुंची।

"आओ।" देवराज चौहान एक तरफ अंधेरे में बढ़ता कह उठा—"हमें कार तक जाना है कि वहां से साइलेंसर लेकर, रिवाल्वरों पर लगा सकें।"

गेट से मात्र दस-बारह कदम भीतर, कार के पास, दीवार पर लगी, लाइट के नीचे वो तीन आदमी खड़े बातें कर रहे थे। उनके हाव-भाव में भरपूर लापरवाही थी, जैसे कि उन्हें पूरा यकीन था कि वहां पर परिंदा भी पर नहीं मार सकता। तभी बे आवाज सी गोली एक के सिर में जा लगी। वो बातें करता-करता एकाएक अपने साथी पर जा गिरा। उसके साथी ने उसे संभालने की चेष्टा की लया वो मजाक कर रहा है कुछ। तीसरा अभी तक आराम से खड़ा था कि एक गोली उसके सिर में आ धंसी। वो उसी पल कार से टकराता नीचे जा गिरा। ये देखकर दूसरा वाला चौंका, उसका जो साथी उस पर गिरा था, वो उसके हाथों से निकलकर नीचे जा गिरा था। तभी उसे अपनी कमीज पर गीलापन सा महसूस हुआ तो उसे समझते देर ना लगी कि कुछ गड़बड़ है। कुछ हो रहा है। परंतु तभी एक गोली उसके सिर में आ लगी और वो भी नीचे लुढ़कता चला गया। इस सारे काम में कोई आहट नहीं उठी थी।

गेट पर से जगमोहन ने भीतर हाथ डाला और सावधानी से बे-आवाज़ गेट का कुंडा खोलने में मिनट-भर लगाया और पल्ले धकेलकर एक-सवा फीट भीतर को किया और उसके पीछे हरीश खुदे, देवराज चौहान, नगीना प्रवेश करते चले आए। हाथों में साइलेंसर लगी रिवॉल्वरें दबी थीं और चेहरों पर खतरनाक भाव नाच रहे थे।

डोगरा की आंखें नशे से लाल हो रही थीं। रीटा उसे पिला रही थी और वो पीता जा रहा था। गोवा उसके दिमाग से नहीं निकल रहा था। कैस्टों को वो बार-बार मार देने को कह रहा था। तभी कुट्टी ने

भीतर प्रवेश किया और खड़ा हो गया। रीटा ने कुट्टी को देखा तो डोगरा से कह उठी।

"कुट्टी आया है डोगरा साहब...।"

कुर्सी पर बैठे-बैठे डोगरा ने सिर घुमाया और लाल आंखों से कुट्टी को देखा।

"हुक्म डोगरा साहब...।"

"नसीमबानो से नोट आ गये...?" डोगरा ने पूछा।

"जी हां...शाम को नसीमबानो की बहन हमारे आदमी को नोटों के पैकेट दे गई थी।" कुट्टी बोला—"फोन पर पता किया है मैंने, हमने जिन लोगों को पैसा देना है, उन्हें दिया जा रहा है। कल तक अस्सी करोड़ बच जाएगा हमारे पास।"

"ठीक है।" डोगरा ने हाथ में पकड़ा गिलास खाली कर दिया। रीटा ने गिलास ले लिया। डोगरा बोला—"रमेश टूडे किधर है?"

"वो दोपहर में हमारे साथ यहां तक नहीं आया। मेरे आदमियों का कहना है कि उसकी कार पीछे आ रही थी लेकिन अचानक ही दिखनी बंद हो गई। हो सकता है कि उसे कोई काम याद आ गया...।"

"हवेरी में तो उसे कोई काम नहीं है।" डोगरा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"आ जाएगा डोगरा साहब...आता ही होगा टूडे।" रीटा समझाने वाले स्वर में कह उठी।

"मुझे बताए विना वो गया ही क्यों, उसका फोन नहीं लग रहा।" डोगरा बोला।

"टूडे की तलाश करवाऊं डोगरा साहब?" कुट्टी बोला।

कुछ पल सोचने के बाद डोगरा ने कहा।

"रहने दो। रीटा डार्लिंग ठीक कहती है। टूडे आ जाएगा। मुझे उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। स्वामी के बारे में बता?"

"उसके आदमी आपको ढूंढते फिर रहे...।"

"तूने स्वामी को साफ करने के लिए...।"

"कह दिया है, काम हो जाएगा...।"

"फिर ठीक है...।" डोगरा अपने कान को मसलता कह उठा—"सुन कुट्टी, मैं कल वापस जा रहा हूं, सारे प्रोग्राम कैंसिल। गोवा में कुछ गड़बड़ हो गई है। मुम्बई पहुंचकर गोवा का मामला ठीक करना है। कल सुबह मैं निकल जाऊंगा। तू मेरे रीटा डार्लिंग और टूडे के लिए प्लेन में सीटें बुक करा दे। वक्त कम है प्लेन से मुम्बई पहुंचना होगा।"

"मैं अभी बुकिंग करा देता हूं।" कुट्टी ने सिर हिलाया।

"जो पैसा बचेगा, वो गोवा में मेरे होटल पहुंचा देना। अभी काफी पैसा गोवा में लगेगा। उधर जरूरत है।"

"जी...मैं डी-गामा में पैसे पहुंचा दूंगा।" कुट्टी ने कहा।

"जा अब कुछ और याद आया तो दोबारा बुलाऊंगा।"

कुट्टी बाहर निकल गया।

"डोगरा साहब, आप तो गोवा को लेकर बहुत परेशान हो गए हैं।" रीटा ने डोगरा के गले में बांह डालीं।

"परेशान? मैं तो पागल हो जाता रीटा डार्लिंग, ये तो तूने संभाल रखा है नहीं तो....।"

तभी दरवाजे की तरफ से तेज आवाज उभरी और कुट्टी भड़ाक से भीतर आ गिरा।

रीटा चौंककर डोगरा के पास से हटी।

डोगरा ने हैरानी से कुट्टी को देखा।

कुट्टी जल्दी से उठने को हुआ कि 'पिट' की आवाज के साथ गोली उसकी छाती में आ धंसी।

डोगरा और रीटा की निगाहें उसी पल दरवाजे की तरफ उठीं।

दरवाजे पर देवराज चौहान रिवॉल्वर थामें खड़ा था। चेहरे पर कठोरता थी।

देवराज चौहान को देखते ही विलास डोगरा और रीटा हक्के-बक्के रह गए। तभी देवराज चौहान के पीछे से जगमोहन रिवॉल्वर थामे कमरे में आ पहुंचा। कुट्टी जो अभी थोड़ा हिल रहा था, जगमोहन ने रिवॉल्वर वाला हाथ सीधा किया और गोली चला दी। दूसरी गोली से कुट्टी शांत हो गया।

"हैलो डोगरा।" देवराज चौहान शब्दों को चबाकर बोला—"तबीयत कैसी है?"

डोगरा जड़।

रीटा धीरे-धीरे डोगरा से पांच-छः कदम दूर खिसक गई।

"रीटा डार्लिंग...।" डोगरा की आंखें अभी तक फैली हुई थीं—"हमारे आदमियों ने इन्हें मारा क्यों नहीं?"

"सब मर गए...।" जगमोहन ने खतरनाक स्वर में कहा।

"सब मर गए...।" डोगरा जैसे अभी तक झटके खा रहा था—"ये कैसे हो सकता है, टूडे...टूडे को यहां होना चाहिए था।"

"वो दोपहर को मर गया था...।" जगमोहन बोला—"देवराज चौहान ने उसे खत्म कर दिया...।"

"टूडे मर गया, रीटा डार्लिंग ये मैं क्या सुन रहा...?"

"मैं भी यही सुन रही हूं डोगरा साहब...आपको भी मेरी तरह इनकी बातों का भरोसा कर लेना चाहिए।" रीटा कह उठी।

"रीटा डार्लिंग, ये सब क्या हो रहा है? मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा है...।"

"पर मेरी समझ में आ गया है...।"

"क्या...?" डोगरा की नज़र देवराज चौहान और जगमोहन पर थी। वो कुर्सी पर बैठा था।

"अब आपका काम तमाम होने वाला है...।" रीटा ने कहा।

डोगरा की निगाहें रीटा की तरफ घूमी।

रीटा का चेहरा शांत था।

"तू बोली...मेरा काम तमाम होने वाला है...!"

"मुझे पूरा विश्वास है कि मैंने सही कहा है।" रीटा ने भावहीन स्वर में कहा।

"लेकिन हमने तो सौ साल तक इकट्ठे जीना है रीटा डार्लिंग, मेरा काम कैसे हो सकता है...!"

"इसका जवाब देवराज चौहान और जगमोहन देंगे।" रीटा बोली।

"एक बढ़िया-सा पैग बना...आज का दिन बोत खराब...।"

"तुम अपनी जगह से हिलोगी भी नहीं।" जगमोहन रीटा को देखकर गुर्रा उठा।

"न...न...नहीं हिलूंगी...।" रीटा बोली।

"मेरे को एक पैग नहीं देगी...?" डोगरा ने रीटा से कहा।

"वो मेरे को गोली मार देगा...।"

"तू मेरे लिए गोली नहीं खा सकती रीटा डार्लिंग...?" डोगरा ने रीटा को घूरा।

"मुझे गोली लग गई तो मैं सौ साल तक कैसे जिऊंगी...?"

तभी देवराज चौहान ने गर्दन घुमाकर दरवाजे के बाहर सतर्क खड़ी नगीना से कहा—

"साठी को बुला...।"

"फोन कर दिया है...बांके और सरवत सिंह उसे लेकर आ रहे हैं।" नगीना ने बिना पीछे देखे उनसे कहा।

"खुदे किधर गया...?" देवराज चौहान ने मुंह वापस घुमा लिया।

"बाहर गेट पर गया है।" पीछे से नगीना की आवाज आई।

"सुना डोगरा साहब।" रीटा कह उठी—"साठी भी आया है।"

"मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।" डोगरा का नशा अब काफी हद तक उतर गया था।

"अभी आप सब कुछ समझ जाएंगे...। देवराज चौहान सब समझा देगा।" रीटा ने कहा।

रिवॉल्वर थामे देवराज चौहान दो कदम भीतर आया और दरिंदगी भरे स्वर में कह उठा।

"डोगरा तेरे को मारना मेरे लिए जरा भी मुश्किल नहीं था, पर तू बचा इसलिए रहा कि तेरी मुलाकात साठी के साथ करानी थी। साठी तेरे मुंह से सुनना चाहता है कि तूने किस प्रकार कठपुतली का इस्तेमाल मुझ पर और जगमोहन पर किया और कैसे हमें ये आदेश दिया कि पूरबनाथ साठी और मोना चौधरी की जान ले लें। कठपुतली नामक नशे ने हमारे होश पूरी तरह छीन लिए थे। तू सब जानता है जब हमारे दिमाग ने उस नशे की वजह से काम करना बंद किया तो तूने हमारे खाली दिमाग में पूरबनाथ साठी और मोना चौधरी को खत्म करने की बात डाल दी। पूरबनाथ साठी का हत्यारा मैं नहीं तुम हो...।" देवराज चौहान ने रीटा की तरफ देखा—"तुमने बहुत चालाकी से स्क्वैश में कठपुतली मिलाकर हमें दी...।" ये सब जानने के लिए पढ़े अनिल मोहन का, रवि पॉकेट बुक्स में प्रकाशित उपन्यास 'सबसे बड़ा गुण्डा'।"

"मैं तो हुक्म की गुलाम हूं देवराज चौहान जी।" रीटा मुंह लटकाकर कह उठी—"जो मुझे चिराग में रखेगा, उसी का तो हुक्म मानूंगी, मेरी अपनी पसंद और नापसंद की बात ही क्या है।"

डोगरा ने रीटा को घूरा।

"मैंने क्या गलत कह दिया डोगरा साहब...?" रीटा बोली।

डोगरा ने देवराज चौहान को देखा।

"तो तुम मुझसे साठी के सामने कठपुतली वाला सच बुलवाना चाहते हो...?" डोगरा कह उठा।

"तुम बोलोगे...।" देवराज चौहान के दांत भिंच गए।

"मैं बोलूं या ना बोलूं, तुमने मुझे मार ही देना है, फिर क्यों बोलूं, तुम्हें भी तो साठी के हाथों फंसाए रखूं।"

देवराज चौहान कुछ कहने लगा, कि तभी जगमोहन कह उठा।

"हो सकता है सच बोलकर तुम बच जाओ...।"

देवराज चौहान ने होंठ भींच लिए।

"बच जाऊं...!" डोगरा ने जगमोहन को देखा—"कैसे बचूंगा, तुम लोग मुझे छोड़ दोगे?"

"हाथ-पांव पर गोली मारकर चले जाएंगे।" जगमोहन बोला—"जान तो बचेगी तुम्हारी।"

"हां कह दीजिए डोगरा साहब...।" रीटा जल्दी से कह उठी—"जान तो बच रही है।"

"तुम मुझे संभाल लोगी रीटा डार्लिंग...ये मुझे लंगड़ा करने को कह रहे हैं।"

"मैंने क्या संभालना है, डोगरा साहब, लेकिन आपका इंतजाम कर दूंगी, नर्स रखवा दूंगी वो आपको संभालेगी।"

"तू नहीं संभालेगी रीटा डार्लिंग...!"

"मुझे चलते-फिरते लोग अच्छे लगते हैं, टूटी टांग वाले नहीं डोगरा साहब...।" रीटा बोली।

"बहुत जल्दी रंग बदल रही है रीटा डार्लिंग।"

"आपकी संगत में रहकर ही सब सीखा है, वरना पहले तो मैं बेवकूफ ही हुआ करती थी...।" रीटा ये कहकर जगमोहन से बोली—"डोगरा साहब को मंजूर है हाथ-पांव पर गोली चलाकर चले जाना...।"

तभी दरवाजे पर आहट गूंजी।

"हम हैं...।" नगीना की आवाज आई।

फिर कमरे में देवेन साठी, मोना चौधरी, महाजन पारसनाथ, सरवत सिंह और बांके ने प्रवेश किया।

डोगरा ने गंभीर निगाहों से साठी और मोना चौधरी को देखा।

"मोना चौधरी भी है डोगरा साहब...।" रीटा कह उठी।

देवेन साठी ने गहरी निगाहें से डोगरा को देखा।

मोना चौधरी शांत थी।

"बोलो डोगरा...।" देवराज चौहान गुर्राया—"पूरबनाथ साठी की मौत का सच क्या है...?"

"अगर मैंने बताया तो मेरी जान बख्श दी जाएगी...!" डोगरा ने गंभीर निगाहों से देवराज चौहान से कहा।

"पक्का...!" जगमोहन ने फौरन कहा—"मेरी जुबान है, डोगरा जो सच है, वो साठी और मोना चौधरी को कह दे, ताकि साठी के मन से हमारे लिए गलतफहमी दूर हो जाए, उसके बाद तुम आजाद हो...।"

"गोली तो नहीं मारोगे...?"

"शायद हाथ-पांव में भी ना मारें...।" जगमोहन ने कहा—"बस हम चाहते हैं कि तुम सच बोलो।"

"कह दीजिए डोगरा साहब।" रीटा कह उठी—"मौका अच्छा है, वक्त भी मुनासिब है, शायद जान बच ही जाए...।"

"साठी भी तो मेरे से नाराज हो सकता है...।" डोगरा ने गंभीर निगाहों से साठी को देखा।

किसी के कुछ कहने से पहले ही जगमोहन ने कहा—

"तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा, तुम्हारी जान कोई नहीं लेना चाहता। तुम बस हकीकत सामने रखो।"

कुर्सी पर बैठे डोगरा ने गंभीर निगाहों से मोना चौधरी और साठी को देखा।

कुछ खामोशी-सी आ ठहरी वहां।

"कहो...।" देवराज चौहान कठोर स्वर में गुर्राया।

डोगरा ने पहलू बदला और कह उठा।

"मैं मोना चौधरी से नाराज था, मोना चौधरी ने दुबई से बंदा उठा लाने की बात मेरे से की। सब कुछ तय हो गया कि इसने वो काम एकाएक पूरबनाथ के हवाले करके मेरे मुंह पर जैसे थप्पड़ मारा। ऐसा हो जाना मेरे लिए बेइज्जती की बात थी, मुझे ये लगा कि पूरबनाथ ने जान-बूझकर मुझे नीचा दिखाने के लिए, मेरे से ये काम छीना है। तब मैंने फैसला किया कि मोना चौधरी और पूरबनाथ साठी को नहीं छोड़ूंगा, परंतु इन दोनों के मुकाबले पर उतारने के लिए मुझे सख्तजान बंदा चाहिए था। ऐसे में मैंने देवराज चौहान और जगमोहन को इस्तेमाल करने की सोची।"

देवेन साठी ने मोना चौधरी से पूछा—

"डोगरा जो कह रहा है क्या वह सच है...?"

"हां...ऐसा हुआ था।" मोना चौधरी ने गंभीर स्वर में कहा।

"फिर तुमने क्या किया डोगरा कैसे हमारा इस्तेमाल किया?" जगमोहन ने कहा।

फिर डोगरा ने सब कुछ बताया। कठपुतली नाम के नशे के बारे में बताया। उसके इस्तेमाल के बारे में बताया। हर वो बात बताई, जो उसने देवराज चौहान और जगमोहन के साथ की थी।

सब सुनते रहे।

सब कुछ बताकर डोगरा खामोश हो गया। फिर रीटा को देखकर बोला—

"रीटा डार्लिंग, मैंने सब कुछ बता दिया ना... कुछ रह तो नहीं गया?"

"डोगरा साहब, आपने तो कमाल कर दिया एक-एक बात इतने बढ़िया ढंग से बताई है कि मैं तो हैरान रह गई कि आपका दिमाग

कितना तेज है, किसी भी बात को भूलते नहीं...।" तभी रीटा ने देवेन साठी को रिवॉल्वर निकालते देखा। साठी के चेहरे पर दरिंदगी नाच रही थी—"आप तो गए काम से डोगरा साहब...।"

देवेन साठी ने उसी पल रिवॉल्वर वाला हाथ सीधा किया और दांत भींचकर ट्रेगर दबा दिया।

"धायं...।" गोली का जबरदस्त धमाका कमरे में गूंजा और डोगरा की छाती पर लाल रंग का धब्बा-सा उभरने लगा। डोगरा की आंखें फटकर फैल गईं। साठी ने एक और फायर किया। एक और धमाका हुआ और दूसरी गोली भी डोगरा की छाती में जा लगी। डोगरा के शरीर को तीव्र झटका लगा। गर्दन नीचे को लटक गई फिर उसका शरीर कुर्सी से फर्श पर लुढ़कता चला गया और एकदम शांत पड़ गया वो।

साठी चेहरे पर खतरनाक भाव समेटे रिवॉल्वर थामें डोगरा के पास आया और उसकी बांह पकड़कर उसे सीधा किया। डोगरा मर चुका था। आंखें बंद थीं उसकी। साठी के होठों से गुरार्हट निकली वो नीचे झुका और रिवॉल्वर की नाल उसके सिर से सटाकर फायर कर दिया। पुनः फायर की आवाज गूंजी और डोगरा की खोपड़ी में सुराख दिखने लगा।

साठी सीधा हुआ और रीटा को देखा।

"म...मेरा कोई कसूर नहीं...।" रीटा कांपते स्वर में कह उठी—"म...मैंने डोगरा को बहुत समझाया था, पर इसने मेरी एक नहीं सुनी फिर मैं तो इसकी गुलाम थी, बांदी थी, नौकरानी थी। मेरी औकात ही क्या है जो ये मेरी सुनता। बहुत घटिया इंसान था ये। मैं तो कब का इसे छोड़कर भाग जाना चाहती थी, परंतु जाती भी कहां, ये मुझे ढूंढकर मेरा बुरा हाल कर देता। आप तो बहुत बढ़िया इंसान हैं साठी साहब, मैं सारी उम्र बिना तनख्वाह के ही आपकी नौकरी करने को तैयार हूं। हुक्म तो दीजिए, फिर देखिए मैं क्या कमाल दिखाती हूं। आपको इतना खुश कर दूंगी कि...।"

"यहां से दफा हो जाओ।" साठी ने दांत भींचकर कहा—"फिर कभी भी मुझे दिखी तो तुम्हें मार दूंगा...।"

"मैं जानती थी साठी साहब, आप ये ही कहने वाले हैं ज...जाती हूं। अपना फोन नंबर दे जाऊं क्या? कभी मेरी जरूरत पड़ी तो मिस्ड काल ही कर दीजिएगा, बांदी हाजिर हो ...।"

"साली, कुतिया...!" साठी ने गुर्राकर रिवॉल्वर वाला हाथ सीधा किया।

रीटा तीर की भांति भीतर से निकलती चली गई।

मोना चौधरी के चेहरे पर शांत भाव थे।

देवराज चौहान ने रिवॉल्वर जेब में रख ली।

"अब बोल साठी... ।" जगमोहन गंभीर स्वर में बोला—"अभी भी तेरे को कुछ कहना है तो बता।"

"मैंने अपने भाई की मौत का बदला ले लिया, अब मुझे तुमसे या देवराज चौहान से कुछ नहीं कहना।" साठी ने दांत भींचकर कहा—और रिवॉल्वर जेब में रख ली—"मैं गलती पर था अब सब बातें मैंने समझ ली हैं।"

"तुम हरीश खुदे को भी कुछ नहीं कहोगे।" देवराज चौहान बोला।

"मैं तुम्हारे किसी साथी को कुछ नहीं कहूंगा। ये मामला डोगरा की मौत के साथ पूरी तरह खत्म हो गया... ।" साठी ने गंभीर स्वर में कहा—"तुम जब भी ठीक समझो, मेरे परिवार को और पाटिल को आजाद कर देना।" कहकर साठी बाहर निकलता चला गया।

❑❑❑

❑❑❑

रात 12:40 बजे। सरबत सिंह का घर। मुम्बई!

"कर-कर। जरा धीरे तू ऐसे ही पकड़े रह, मैं करता हूं।" हंसा धीमी आवाज में फुसफुसाया।

पाटिल ने अपने बंधे हाथों में खुला चाकू पकड़ रखा था। हंसा उस पर कलाइयों के बंधनों को रगड़कर बंधन काट रहा था। दोनों की पीठे आपस में जुड़ी हुई थीं। इस कोशिश में चाकू हंसा की कलाई में लग चुका था। और खून निकलने लगा था, परंतु हंसा तो जैसे अपने बंधन हर हाल में काट लेना चाहता था।

जंवाई और प्रेमी सांस रोके बंधनों में जकड़े पड़े ये सब देख रहे थे। बार-बार उनकी निगाहें खुले दरवाजे की ओर जा रही थीं कहीं सोहनलाल या रुस्तम राव इधर ना आ जाएं। दूसरे कमरे की रोशनी भी जल रही थी। यदा-कदा सोहनलाल और रुस्तम की बातें करने की आवाज उन्हें सुनने को मिल रही थीं।

और आखिरकार हंसा की कलाइयों के बंधन कट गए।

हंसा तेजी से सीधा हुआ और पाटिल के हाथ से चाकू लेकर पिंडलियों पर बंधी डोरी भी काट ली।

अब वो आजाद था। वो जल्दी से पाटिल की कलाइयों के बंधन काटने लगा।

"पहले मेरे काट।" जंवाई बोला—"उसे तो बाद में भी खोल देंगे।"

कलाइयों के बंधन काटने के बाद उसकी पिंडलियों के बंधन भी काटे फिर जंवाई और प्रेमी की तरफ आ पहुंचा और उनके बंधन काटने लगा। पहले नंबर प्रेमी को लगा।

"अबे पहले मेरे काट।" जंवाई झल्लाकर बोला—"प्रेमी के तो बाद में भी कट जाएंगे।"

"चुपकर उल्लू के पट्ठे...।" प्रेमी ने तीखे स्वर में कहा।

फिर जंवाई के बंधन भी कट गए।

अब वे सारे आजाद थे। अपने हाथ-पांवों को रगड़ने लगे।

चारों की नज़रें मिली। आंखों-ही-आंखों में बातें हुईं।

"मेरी बात सुनो...।" पाटिल धीमें स्वर में कह उठा—"दूसरे कमरे में साठी की पत्नी और दो बच्चे हैं, उन्हें ले चलना है साथ में और...।"

"पांच करोड़ की बात है याद है ना...?" जंवाई बोला—"जो साठी ने इनाम।"

"वो तुम्हारा होगा। मैं भूला नहीं हूं...।"

"तुम इनाम पर अपना दावा नहीं ठोकोगे।" प्रेमी ने कहा।

"वो इनाम मुझे मिल भी नहीं सकता। आखिर मैं साठी का राइट हैंड हूं...इनाम दूसरे लोगों के लिए होता है।" पाटिल बोला।

"हम जैसे लोगों के लिए...?" हंसा ने दांत दिखाए।

"पांच करोड़ तुमको ही मिलेगा।" पाटिल ने कहा।

"लेकिन उन दोनों का क्या करें, उनके पास रिवॉल्वर भी है।" प्रेमी ने पाटिल को देखा।

"हमारे पास चाकू है।" जंवाई ने फौरन नीचे पड़ा चाकू उठा लिया।

"ऐसे मौके पर चाकू कोई खास काम नहीं करेगा...।" पाटिल ने गंभीर स्वर में कहा—"हम सबने इकट्ठे होकर उन पर झपट पड़ना है। बहुत आसान है । यहां तुम लोग ऊंची आवाज में बातें करोगे या उन्हें पुकारोगे तो उनमें से कोई यहां आएगा तो हमने उसे पकड़ लेना है। चाकू उसकी गर्दन से लगा देते हैं फिर देखेंगे कि दूसरा क्या करता है। मेरे ख्याल में रिवॉल्वर बड़े वाले के पास है।"

"उसका नाम सोहनलाल है।"

तभी दूसरे कमरे में मोबाइल की बैल बजने लगी।

"हमें ऐसा मौका दोबारा नहीं मिलेगा...।" पाटिल उन्हें समझाता हुआ कह उठा—"हमने अच्छे ढंग से पक्के इरादे के साथ काम करना...।"

"पांच करोड़ का मामला है... ।" जंवाई दृढ़ स्वर में बोला—"ये मौका हाथ से तो जाने नहीं देंगे।"

"सवा-सवा करोड़... ।" हंसा ने कहना चाहा।

"सवा-सवा क्यों... ?" प्रेमी ने फौरन कहा—"सरबत सिंह का इस मामले में कोई मतलब नहीं, वो तो देवराज चौहान के साथ है। मुझे कहता था कि तुम लोगों का बंधे रहना ही ठीक है। आज से वो हमारी दोस्ती से बाहर... ।"

"साले को एक रुपया भी नहीं देंगे... ।" जंवाई ने सिर हिलाया।

"पांच करोड़ हम तीनों में बंटेगा।" हंसा ने कहा—"कभी-कभार सरबत सिंह को मुर्गा खिला दिया करेंगे और बोतल भी पिला देंगे। साले को सबक तो मिलेगा कि हमारे सामने उड़ने का कितना नुकसान हो गया उसे।"

"रोएगा अपनी किस्मत को।"

"तुम लोग ये बातें बाद में कर लेना... ।" पाटिल ने झल्लाकर कहा—"काम की तरफ ध्यान दो... ।"

उधर से सोहनलाल के फोन पर बातें करने की आवाज आ रही थी।

चारों ने पुनः एक-दूसरे को देखा।

"हम ऊंची-ऊंची बोलेंगे तो वो जरूर देखने आएंगे कि हम शोर क्यों डाल रहे हैं।" प्रेमी ने कहा—"जो भी आएगा, उसकी गर्दन पर चाकू लगा देंगे। और आने वाला वो सोहनलाल हुआ तो उसकी जेब से तुरंत रिवॉल्वर निकाल लेनी है... ।"

"तैयार... ?" हंसा बोला।

"तैयार... ।" जंवाई ने सिर हिलाया।

ठीक इसी पल दरवाजे पर सोहनलाल आ खड़ा हुआ।

चारों इसके लिए तैयार नहीं थे। वो सकपका से गए।

उन्हें आजाद पाकर सोहनलाल की आंखें सिकुड़ीं। पलभर के लिए उसे लगा जैसे जंवाई उसकी तरफ लपकने वाला हो, ऐसे में सोहनलाल ने उसी पल रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली।

"हिलना मत... ।" सोहनलाल ने कठोर स्वर में कहा।

उनकी ये हालत थी जैसे रंगे हाथों पकड़े गए हों।

"तो मौजें हो रही हैं... ।" सोहनलाल ने कड़वे स्वर में कहते हुए जंवाई के हाथ में थमें चाकू को देखा—"खिसकने की तैयारी में हो?"

चारों की नज़रें आपस में मिलीं।

तभी पीछे से रुस्तम राव भी वहां आ पहुंचा।

"क्या हांइला बाप...?" उसने कमरे में झांका।

"इन्हें यहां से जाने की बहुत जल्दी है।" सोहनलाल मुस्करा पड़ा।

"तो छोड़ेला बाप... अब अपुन को कष्ट नहीं होईला, इनके बंधनों को खोलने का...।"

"पाटिल...।" सोहनलाल ने कहा—"अभी देवराज चौहान का फोन आया। वो तुम्हें सबको छोड़ देने को बोला।"

"क्या...?" पाटिल के होठों से निकला—"तुम हमको छोड़ रहे हो...।"

"हां...। देवराज चौहान और साठी में मामला खत्म हो गया। तुम लोग आजाद हो और साठी के परिवार को भी ले जा सकते हो।"

"अपुन साठी की पत्नी और बच्चे को बाहर निकाईला।" कहकर रुस्तम राव बाहर चला गया वहां से।

जंवाई हड़बड़ाकर कह उठा।

"ये...ये कैसे हो सकता है, साठी के परिवार को तो हम आजाद कराने वाले थे...!"

"हम उसे आजाद नहीं कराएंगे तो हमें पांच करोड़ कैसे मिलेंगे...?" हंसा बोला।

"तुम साठी की पत्नी और बच्चे को नहीं छोड़ सकते।" प्रेमी ने कहा—"उन्हें हम आजाद कराने वाले थे।"

"तुम लोग लेट हो गए।" सोहनलाल ने मुस्कराकर रिवॉल्वर जेब में रख ली—"अब वो आजाद है।"

"पाटिल।" जंवाई ने जल्दी से कहा—"हमें पांच करोड़ तो मिलेंगे ना...हमने कितनी मेहनत की है साठी के परिवार को छुड़ाने की खातिर हम यहां हाथ-पांव बंधवा कर पड़े रहे और अब बंधन काटकर आजाद हुए कि साठी के परिवार को छुड़ाया जा सके। तुम तो सब जानते ही हो। अगर ये पंद्रह मिनट देर से आता तो हम यहां से निकल भी चुके होते, उन्हें लेकर...।"

"पंद्रह मिनट बहुत ज्यादा होते हैं।" पाटिल मुस्कराकर कह उठा—"हमारे धंधे में तो पंद्रह सैकिण्डों में वक्त बदल जाता है।"

"तुम-तुम अब धोखेबाजी कर रहे हो।" प्रेमी गुस्से से कह उठा।

"तुम लोगों ने कुछ किया भी तो नहीं।" फिर पाटिल, सोहनलाल से बोला—"साठी का परिवार मेरे हवाले करो।"

"आओ...।" सोहनलाल ने कहा और पलटकर वहां से चला गया।

पाटिल दरवाजे की तरफ बढ़ा तो जंवाई कह उठा—

"ये तो गलत बात है। पांच करोड़ ना सही, कुछ तो हमें मिलना चाहिए।"

पाटिल ने ठिठककर जंवाई के लटके चेहरे को देखा और सिर हिलाकर जेब में हाथ डालते, उनकी तरफ बढ़ा और जेब से नोट निकालकर तीनों के हाथों में पांच-पांच सौ रुपये का नोट रखा।

"ये क्या...?" हंसा सकपकाया।

"कुछ दे रहा हूं रख लो...।" पाटिल ने मुस्कराकर कहा—"तुम लोग इसी काबिल हो...।" कहकर पाटिल बाहर निकल गया।

तीनों अपने हाथों में रखे पांच सौ के नोट को देखने लगे।

"ये हमारे साथ क्या हो रहा है...?" जंवाई रो देने वाले स्वर में कह उठा—

"हमारे पास तो पांच करोड़ आने वाले थे और ये पांच सौ?" हंसा हक्का-बक्का था।

"खाली हाथ तो नहीं रहे। इसी में तसल्ली करो और निकल लो। कहीं ये हमें फिर बांधकर बिठा ले।" प्रेमी ने उखड़े स्वर में कहा।

❑❑❑

❑❑❑

दिन के बारह बजे थे।

देवराज चौहान, जगमोहन, नगीना, हरीश खुदे, सरबत सिंह, बांकेलाल राठौर दो कारों में मौजूद हवेरी से मुम्बई के रास्ते जा रहे थे। कारें तेजी से दौड़ रही थीं। देवेन साठी अपने आदमियों के साथ रात को ही मुम्बई के लिए निकल गया था। मोना चौधरी पारसनाथ और महाजन उनसे दो घंटे पहले ही मुम्बई के लिए रवाना हो गए थे। उनकी भाग-दौड़ खत्म हो गई थी। डोगरा खत्म हो चुका था और जैसा कि वो चाहते थे कि विलास डोगरा देवेन साठी के सामने कठपुतली नाम के नशे को लेकर सारी बात कह दे, वैसा हो चुका था। अब सब शांत थे कि इस सिलसिले में कोई काम बाकी नहीं रहा था, परंतु हरीश खुदे की बेचैनी तो काम समाप्त हो जाने पर शुरू हुई थी वो देवराज चौहान से बोला—

"अब तो तुम्हारा सारा काम खत्म हो गया देवराज चौहान...।"

"हां...।" देवराज चौहान ने गहरी सांस ली।

"देवेन साठी भी हमारे पीछे से हट गया और डोगरा भी नहीं बचा। सब कुछ अच्छे से हो गया है।" खुदे ने कहा।

"हां...तुमने हमारा शुरू से ही काफी साथ दिया...।"

"मैंने खुद को खतरे में डालकर तुम्हारा साथ दिया, कभी भी पीछे नहीं हटा...।"

"ऐसी बातें मैं भूलता नहीं हूं।" देवराज चौहान ने हरीश खुदे को देखा।

"फिर तो तुम्हें ये भी याद होगा कि तुमने वादा किया था कि इस काम से निपटकर तुम डकैती करोगे। उस डकैती में मुझे साथ लोगे और मेरे लिए इतना पैसा इक्ट्ठा कर लोगे कि सारी जिंदगी मजे से कटे मेरी।" खुदे ने बेचैनी से कहा।

"याद है...।"

"डकैती करोगे ना...?"

"हां...। तुम डकैती में मेरे साथ रहोगे, मैं तुम्हें इतना पैसा दूंगा कि पूरी जिंदगी मौज कर सको।"

"क...कब करोगे...?"

"मुम्बई पहुंचकर तैयारी करेंगे। उस जगह का चुनाव करेंगे, जहां से हमें दौलत मिल सके। प्लान बनाएंगे। तुम हर कदम पर मेरे साथ रहोगे। मैंने जो वादा तुमसे किया है वो हर कीमत पर पूरा होगा खुदे...।" देवराज चौहान ने कहा।

खुदे की आंखें चमक उठीं।

"थ...थ...थैंक्यू देवराज चौहान! तुमने तो मेरी जिंदगी बना दी, तुमने तो...।"

"जिंदगी तो तेरी जरूर बनेगी। पहले डकैती हो जाने दे। थैंक्यू बाद में करना।" जगमोहन मुस्कराकर कह उठा।

"मैं...मैं तो कब से बड़ा हाथ मारना चाहता था, परंतु मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या काम करूं। कहां हाथ मारूं, लेकिन अब तुम लोगों के साथ रहकर, मैं पैसे वाला बन जाऊंगा। टुन्नी भी खुश हो जाएगी। सारी जिंदगी मौज से रहेंगे और...।"

तभी खुदे का मोबाइल बजने लगा। उसने बात की। दूसरी तरफ टुन्नी थी।

"टुन्नी मेरी जान...!" हरीश खुदे उसकी आवाज सुनकर ही खुशी से कह उठा—"तेरी उम्र कितनी लंबी है, तुझे ही याद किया अभी और तेरा फोन आ गया। अब तो तुझे देखे कितनी देर हो गई।"

"तो आ जाओ ना...।" टुन्नी की शिकायतभरी आवाज आई।

"अभी...।"

"अपनी पत्नी के पास आने के लिए भी क्या सोचना पड़ता है, मेरा तो दिल नहीं लगता तुम्हारे बिना...।"

"तो मेरा कहां लगता है। वो तो काम का चक्कर था, इसलिए...।"

"काम खत्म हुआ कि नहीं...?"

"हो गया समझो हाथी निकल गया, पूंछभर ही निकलनी बाकी है।" खुदे बहुत खुश था।

"क्या मतलब...!"

"देवराज चौहान और जगमोहन के साथ जो काम कर रहा था वो तो निपट गया टुन्नी...।"

"सच। फिर तो तुम आ रहे हो ना...?"

"बस पूंछ का चक्कर है। वो निपटाकर एक बार ऐसा घर आऊंगा कि फिर नहीं जाऊंगा। हर वक्त तेरे पास ही...।"

"पूंछ का क्या चक्कर है?"

"तेरे को बताया तो था टुन्नी।" खुदे ने प्यार से कहा—"देवराज चौहान अब डकैती करेगा। वो बड़ा डकैती मास्टर है। देवराज चौहान मेरे को डक़ैती में अपने साथ रखेगा और बाद में मेरे को इतना पैसा देगा कि हम जिंदगी भर ऐश करेंगे...।"

"सच?"

"तेरी कसम...!"

"लेकिन तुम घर आ जाओ मेरा दिल नहीं लग रहा।" टुन्नी ने उधर से नाराजगी से कहा।

"अब दस-बीस दिन की तो बात है टुन्नी, जहां इतने दिन इंतजार किया है, दस-बीस दिन और सही, फिर तो सारी जिंदगी हमने एक-दूसरे का हाथ पकड़े साथ ही रहना है। अच्छा-सा बंगला खरीदेंगे। कारें होंगी हमारे पास। नौकर होंगे, सब कुछ कितना अच्छा लगेगा जब...।"

"तुम मुझे झूठे सपने दिखा रहे हो...।" टुन्नी ने उधर से मुंह फुलाकर कहा।

"तेरी कसम टुन्नी...ये सच्चा सपना है, मैं तेरे को...।"

"रात बिल्ला आया था...।" एकाएक उधर से टुन्नी बोली।

हरीश खुदे के हाथ से मोबाइल निकलते-निकलते बचा।

"बि...बिल्ला...।" खुदे के गले में जैसे खराश उभर आई—"व...वो तो मर चुका है...।"

"पता है, सपने में आया था...।"

"सपने में...!" खुदे एकाएक भड़क उठा—"तो मरने के बाद उसने तेरे सपनों में आना शुरू कर दिया, साला, हरामजादा...!"

"अपने पास बुला रहा था, पर मैंने मना कर दिया।"

"अच्छा किया, फिर क्या किया उसने?"

फिर मेरी आंखें खुल गई, मैं उठ बैठी।

"ये ठीक है, जब भी बिल्ला सपनों में आए तो तू उठ जाया कर। ये बस ज़रा हाथी की पूंछ निकल जाए, उसके बाद में घर आकर

तेरी झाड़-फूंक करा दूंगा कि बिल्ला तेरे सपनों में ना आ सके... ।"

आगे-पीछे कारें तेजी से मुम्बई की तरफ दौड़ती जा रही थीं। पीछे वाली कार में सरबत सिंह, बांकेलाल राठौर थे। नगीना, देवराज चौहान के साथ आंखें बंद किए बैठी थी। जगमोहन कार ड्राइव कर रहा था और खुदे उसकी बगल वाली सीट पर बैठे टुन्नी से जहान भर की गप्पे हांके जा रहा था। वो नहीं जानता था कि अब होने वाली डकैती में किस्मत उसके सामने कैसा खौफनाक हादसा पेश करने वाली है।

—समाप्त—